

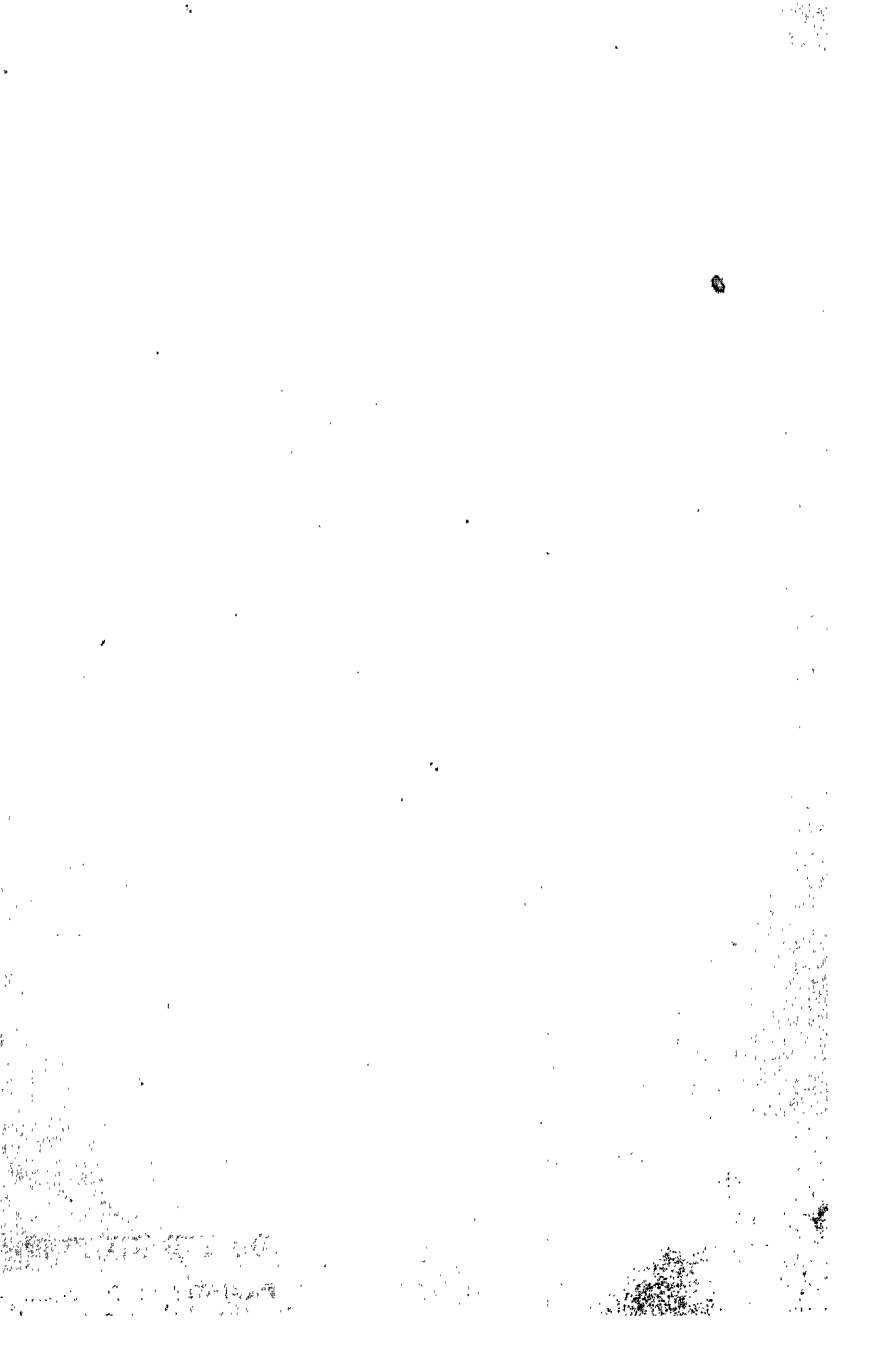
GOVERNMENT OF INDIA  
DEPARTMENT OF ARCHAEOLOGY  
CENTRAL ARCHAEOLOGICAL  
LIBRARY

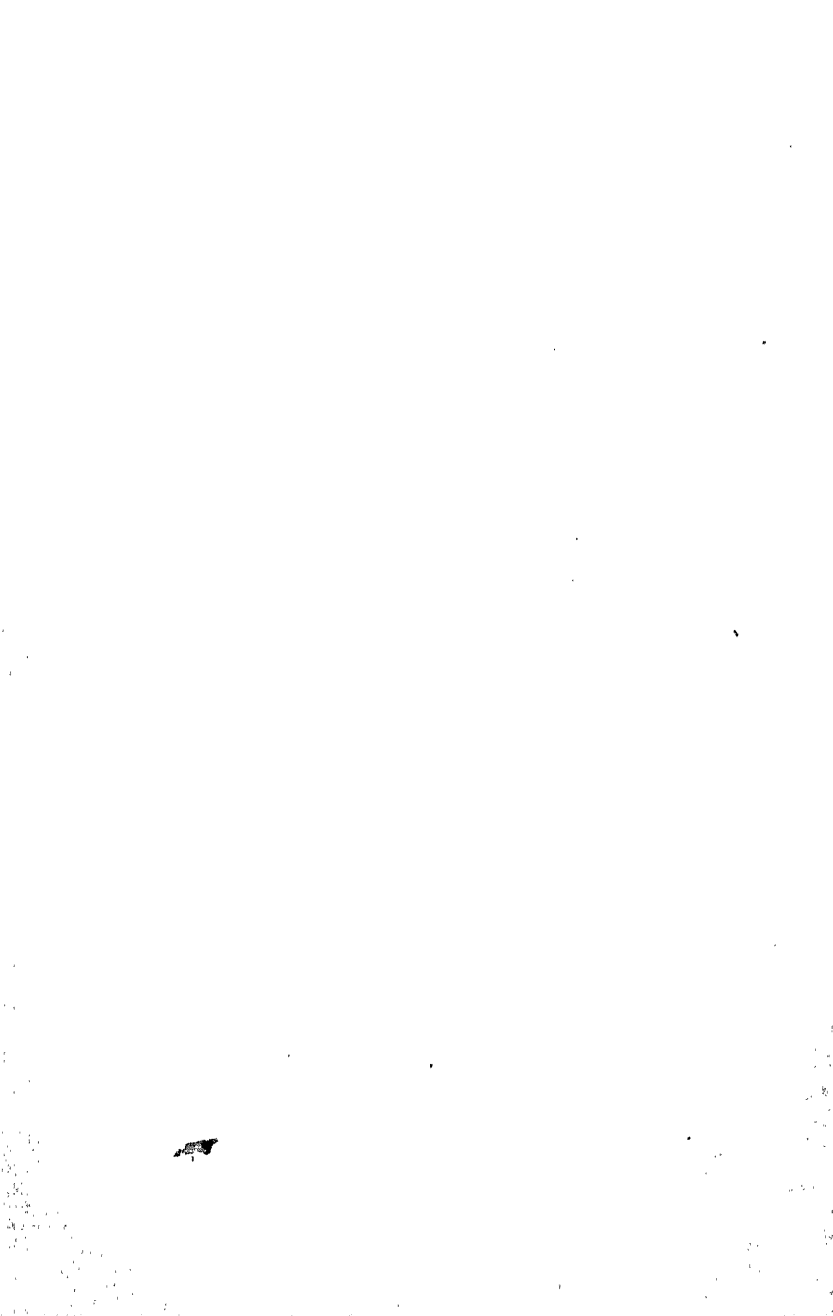
---

CLASS 29065

CALL No. 491.35 Mis

D.G.A. 79.





॥ श्रीः ॥

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

३२

॥ श्रीः ॥

प्राकृत-व्याकरण

78065

लेखक :-

आचार्य श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र

अध्यक्ष, अनुसन्धान विभाग, अरेराज

तथा

सदस्य, बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना ।

491.35  
PWA



चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी-१





प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण : प्रथम, वि० संवत् २०१७

मूल्य : ५-००

29065.

9/12/60.

491.351 Mics.

(पुनर्मुद्रणादिकाः सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः )

The Chowkhamba Vidya Bhawan,  
Chowk, Varanasi.

( INDIA )

1960

Phone Branch. 3076  
H. Office. 3145

# भूमिका

( श्री भ्रुवनारायण त्रिपाठी शास्त्री

सभापति, जिला कांग्रेस समिति, मोतिहारी

तथा श्री सोमेश्वरनाथसञ्चालक मण्डल, अरेराज )

संस्कृत भाषा की अपेक्षा प्राकृत भाषा अधिक कोमल तथा मधुर होती है। 'परुसा सक्कभ-बंधा पाउअ-बंधो वि होइ सुउमारो । पुरिसमहिलानं जेत्तिअ मिहन्तरं तेत्तिअमिमाणं' अर्थात् संस्कृत भाषा परुष ( कठोर ) तथा प्राकृत भाषा सुकुमार होती है। और इन दोनों भाषाओं में परस्पर उतना ही भेद है जितना एक पुरुष और स्त्री में ।

भाषा के अनुसार आज तक के समय को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—संस्कृत, प्राकृत और आजकल की भाषायें; यथा—हिन्दी, मराठी, गुजराती और बँगला आदि। संस्कृत भाषा में हिन्दुओं के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों से लेकर काव्यों तक के ग्रन्थ सम्मिलित हैं। प्राकृत भाषा में बौद्धों तथा जैनियों के धार्मिक ग्रन्थ एवं कुछ काव्य ग्रन्थ भी हैं। इस भाषा का विकास ईसा से ६०० वर्ष पहले हो चुका था।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति के निर्णय के पूर्व यह विचारना आवश्यक है कि 'किसी भी नई भाषा के जन्म की क्यों आवश्यकता पड़ती है?' यदि हम लोग इस प्रश्न पर गौर से विचार करें तो यह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि मनुष्य कष्टसाध्य प्रयत्न करना नहीं चाहता। वह जिह्वा, कण्ठ, तालु आदि स्थानों से अधिक प्रयत्न द्वारा शब्दों का उच्चारण करना पसंद नहीं करता। यही कारण है कि धीरे-धीरे भाषा में कुछ विकृतियाँ उत्पन्न होती जाती हैं। कुछ दिनों के बाद उसी का एक स्वरूप बन जाता है, वही प्रधान बोलचाल की भाषा बन बैठती है और उसी में काव्य आदि की रचना प्रारम्भ हो जाती है। वैदिक

Recd. from: Mrs. Shree Ram and Sons, Delhi-8 on 1.12.1937 to Mr. B. S. S.

काल से लेकर आज तक की परिवर्तित भाषाओं पर ध्यान देने से इस बात की पूर्ण पुष्टि हो जाती है। नीचे कुछ दृष्टान्त दिये जाते हैं—

संस्कृत के 'ग्राम' तथा 'मध्य' दो शब्दों के मिलने से 'ग्राममध्य' एक शब्द बना। अब इसी शब्द का उच्चारण करते समय एक अशिक्षित आदमी, जिसे उच्चारण का ज्ञान नहीं है और जो स्वभाव से ही कष्टसाध्य उच्चारण करना नहीं चाहता, जीभ को कष्ट से बचाने के लिए एक विलक्षण ही शब्द-स्वरूप का जनक हो जायगा। वह उक्त शब्द के मध्य के स्थान में 'मज्झ', 'माझ', 'माध', 'माह', 'मह', 'मा' और 'मे' तथा ग्राम शब्द के स्थान में 'गाम' और 'गांव' कहेगा। इस प्रकार ग्राममध्य के स्थान में 'गाम में' और 'गांव में' बन गया। इसी प्रकार 'कुम्भकार' के स्थान में 'कुम्भार', 'कुंहार' और 'कोंहार' शब्द बन गये। इनके अतिरिक्त मुख = मुह, अर्प = अप्प ( हि०—आप ); यष्टि = लट्टी, लाठी; द्वादश = बारह आदि अनेक शब्द हैं। कभी-कभी तो शब्दों का परिवर्तन इतना हो जाता है कि उनका पता लगाने में बड़े-बड़े शब्दशास्त्रियों को भी चक्कर खाना पड़ता है। जैसे अंग्रेजों के समय में राजकीय कोषागार के प्रहरी 'हू कम्स देअर' ( Who comes there ) के स्थान में 'हुकुम दर' कहते थे। तात्पर्य यह कि किसी किसी शब्द के शुद्ध रूप का पता लगाना असम्भव सा हो जाता है। अस्तु।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति के विषय में भारतीय वैयाकरणों तथा आलङ्कारिकों का कथन है कि इस भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। संस्कृत ही इसकी जननी है। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रकृति' से की जाती है। प्रकृति शब्द का अर्थ बीज अथवा मूल तत्त्व है। इस शब्द का निर्वचन है—'प्रक्रियते यया सा प्रकृतिः' अर्थात् जिससे दूसरे पदार्थों की उत्पत्ति हो। 'मूलप्रकृतिरविकृतिः' ( साङ्ख्य ) अर्थात् मूल प्रकृति अविकृत रहती है। सारांश यह हुआ कि 'प्रकृति' उसे कहते हैं जो दूसरे पदार्थों का उत्पादक तथा स्वयं अविकृत हो। यहाँ

आचार्यों के मत में संस्कृत ही प्रकृति है। प्राकृत के प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र अपने प्राकृत व्याकरण के आठवें अध्याय के प्रथम सूत्र में कहते हैं कि—‘प्रकृतिः संस्कृतम् । तत्र भवं तत् आगतं वा प्राकृतम् ।’ अर्थात् मूल संस्कृत है और संस्कृत में जिसका उद्भव है अथवा जिसका प्रादुर्भाव संस्कृत से हुआ है उसे ‘प्राकृत’ कहते हैं। वररुचि ने प्राकृत का व्याकरण लिखते हुए प्राकृत-प्रकाश में लिखा है कि ‘शेषः संस्कृतात्’ (वर० १।१८) अर्थात् बताये हुए नियमों के अतिरिक्त शेष संस्कृत से आये हुए हैं। इसी प्रकार मार्कण्डेय ‘प्राकृतसर्वस्व’ के प्रथम पाद के प्रथम सूत्र में लिखते हैं—‘प्रकृतिः संस्कृतं, तत्र भवं प्राकृतमुच्यते ।’ अर्थात् संस्कृत मूल भाषा है और उससे जन्म लेनेवाली भाषा को प्राकृत कहते हैं। दशरूपक के टीकाकार धनिक परिच्छेद २, श्लोक ६० की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—‘प्रकृतेः आगतं प्राकृतम् । प्रकृतिः संस्कृतम् ।’ यही मत ‘कर्पूरमञ्जरी’ के टीकाकार वासुदेव, ‘प्राकृतप्रकाश’ के रचयिता चण्ड और ‘षड्भाषाचन्द्रिका’ के लेखक लक्ष्मीधर को भी अभिमत है। ‘प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता ।’ ( लक्ष्मीधर पृ० ४, श्लोक २५ ) अर्थात् मूल भाषा संस्कृत से प्राकृत की उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार सब भारतीय विद्वानों ने भिन्न-भिन्न शब्दों में इन्हीं मतों की पुष्टि की है। आधुनिक विद्वानों में डा० रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर तथा चिन्तामणि विनायक वैद्य जी को भी यह मत अभिप्रेत है।

परन्तु इसके विपरीत पश्चिमी विद्वान् पिशल आदि का विचार भी विचारणीय है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् पिशल का, जिन्होंने प्राकृत के क्षेत्र में बड़े ही परिश्रम और पाण्डित्य से काम करके हम लोगों का बड़ा ही उपकार किया है, कथन है कि—संस्कृत शिष्ट समाज की भाषा थी और प्राकृत अशिक्षित जनों की। प्राकृत भाषा वह थी जिसे साधारण जन बोला करते थे और उसी का संस्कार से सम्पन्न रूप ‘संस्कृत’ कहा-लाया। जैसे किसी लकड़ी का एक टुकड़ा पहले अपनी प्राकृतिक अवस्था

में पढ़ा हुआ रहता है, किन्तु जब उसे संस्कारों द्वारा काट, छाँट एवं खराद कर मेज, कुर्सी आदि बनाते हैं तो वही अपना संस्कृत रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार जो अपरिष्कृत भाषा अपनी प्राकृतिक अवस्था में पढ़ी हुई जन-साधारण द्वारा उच्चरित होती थी, वही प्राकृत थी और उसी की शुद्ध एवं परिष्कृत आकृति संस्कृत भाषा कही जाने लगी। इसके प्रमाण में इनका कहना है कि यदि प्राकृत संस्कृत से निकली हुई होती तो उसके कुल शब्द संस्कृत से सिद्ध हो जाते, किन्तु अनुसन्धान द्वारा विदित होता है कि सिद्ध होते नहीं हैं। इसलिए प्राकृत की उत्पत्ति केवल संस्कृत से मानना युक्तिसङ्गत नहीं। पिशाल के इसी मत का समर्थन सभी पश्चिमी विद्वान् करते हैं।

पाली भी प्राकृत के अन्दर ही मानी जाती है। इसे 'प्राचीन प्राकृत' कहते हैं। भगवान् बुद्ध ने इसी भाषा में अपने धर्म का प्रचार किया था। आजकल बौद्धों के धार्मिक ग्रन्थ तथा अनेक शिला-लेख आदि भी इसी भाषा में पाये जाते हैं। पाली और प्राकृत में कुछ अन्तर पड़ गया है, इसलिए अब पाली को अन्य भाषा मानते हैं और प्राकृत कहने से पाली को अलग समझते हैं। प्राकृत के वैयाकरणों तथा अलङ्कार-शास्त्रज्ञों ने पाली को पृथक् मान कर प्राकृत-व्याकरण आदि लिखते समय इसका कुछ भी उल्लेख नहीं किया है।

प्राकृत के भेदों में 'महाराष्ट्री' उत्तम तथा प्रधान प्राकृत के रूप में समझी जाती है। दण्डी ने 'काव्यादर्श' के प्रथम परिच्छेद के चौतीसवें श्लोक में लिखा है—'महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः।' अर्थात् महाराष्ट्री भाषा श्रेष्ठ प्राकृत समझी जाती है। कतिपय भारतीय विद्वानों ने प्राकृत शब्द का प्रयोग केवल महाराष्ट्री ही के लिए किया है। जैसे हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत के व्याकरण में महाराष्ट्री के लिए प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है! 'शेषं प्राकृतवत्' (हिम० ४-२८६)। प्राकृत के व्याकरण ग्रन्थों में महाराष्ट्री को ही प्रधानता दी गई है। वररुचिने नव परिच्छेदों

में चार सौ चौबीस सूत्रों द्वारा महाराष्ट्री का विचार किया है। अन्य तीन प्राकृतों का विचार एक-एक परिच्छेद में क्रम से १४, १७ और ३२ सूत्रों द्वारा किया है। इसी प्रकार सब वैयाकरणों ने पहले महाराष्ट्री का उल्लेख किया है। महाराष्ट्री में प्रवरसेन-विरचित सेतुबन्ध नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध है। इस पुस्तक के संबन्ध में बाण ने हर्षचरित में लिखा है—

‘कीर्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।

सागरस्य परं पारं कपिलेनेव सेतुना ॥’

अर्थात् कुमुद के समान उज्ज्वल प्रवरसेन का यश सेतुबन्ध के द्वारा समुद्र के पार तक विख्यात हो गया जैसे वानरों की सेना सेतु (पुल) के द्वारा समुद्र पार कर विख्यात हो गई थी। सेतुबन्ध संस्कृत नाम है। प्राकृत में इसे रावणवहो या दहमुहवहो कहते हैं। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्री में हाल की सतसई तथा वज्जालता और गडवहो आदि काव्य-ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

प्राकृत के कितने भेद और उपभेद हैं, इस संबन्ध में भी एक मत नहीं है। वररुचि के अनुसार प्राकृत के चार भेद हैं। महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी और पैशाची। इन्हीं चारों का उल्लेख प्राकृत-प्रकाश में हुआ है। हेमचन्द्र ने इन चारों के अतिरिक्त आर्ष, चूलिकापैशाची और अपभ्रंश को भी प्राकृत ही के अन्तर्गत माना है। अर्थात् महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, आर्ष, चूलिकापैशाची और अपभ्रंश ये सात भेद उन्हें अभिप्रेत हैं। त्रिविक्रम हेमचन्द्र की तरह उपर्युक्त भेदों में से आर्ष के अतिरिक्त छ को मानते और उन्हीं का उल्लेख करते हैं। इन वैयाकरणों के अतिरिक्त मार्कण्डेय, जो वररुचि के अनुयायी हैं, प्राकृत के प्रधानतः चार विभाग करते हैं—भाषा, विभाषा, अपभ्रंश और पैशाच। अब इनके उपभेदों के साथ प्राकृत को सोलह भागों में विभक्त करते हैं। वे सोलह भेद इस प्रकार हैं—भाषा के पाँच भेद—महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, आवन्ती और मागधी (मार्क० १-५); विभाषा के पाँच भेद—शाकारी, चाण्डाली, शबरी, आभीरिका और टकी; अपभ्रंश

के तीन भेद—नागर, ब्राह्मण और उपनागर; पैशाच के तीन भेद—कैकेय, शौरसेन और पाञ्चाल । इस तरह प्राकृत के सोलह भेद हुए ।

मार्कण्डेय ( १-४ ) की वृत्ति लिखते हुए किसी ने भाषा के आठ, विभाषा के छ, अपभ्रंश के सत्ताईस और पैशाच के ग्यारह भेद माने हैं । इनके मत से प्राकृत के बावन भेद हुए । परन्तु मार्कण्डेय स्वयं इतने भेदों को नहीं मानते । वे अर्द्धमागधी को मागधी के तथा बाह्लीकी को आवन्ती के अन्तर्गत मानते हैं । दक्षिणात्य का कोई लक्षण नहीं मिलने से उसे भाषा के भीतर नहीं मानते । इस प्रकार उक्त वृत्तिकार द्वारा बतलाये आठ प्रकारों वाली भाषा का खण्डन कर छ प्रकार की विभाषा में औढी को शावरी में अन्तर्भावित मानते तथा द्राविडी की जगह ढक्की भाषा का प्रतिपादन करते हैं क्योंकि द्राविडी ढक्क देश की भाषा के भीतर आ जाती है ।

‘ढक्कदेशीयभाषायां दृश्यते द्राविडी तथा ।

अत्रैवायं विशेषोऽस्ति द्रविडेनादृता परम् ॥’ (मार्क० १. ६.)

एवं प्रकारेण मार्कण्डेय ने सत्ताईस प्रकार के अपभ्रंश तथा ग्यारह प्रकार के पैशाच का एक का दूसरे में अन्तर्भाव मानकर क्रम से तीन-तीन भेद माने हैं । इस तरह बावन प्रकार के बदले उसके केवल सोलह ही भेद स्थिर किये हैं । दण्डी ने ‘काव्यादर्श’ में चार प्रकार की भाषा बतलाई है—संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मिश्र ।

‘तदेतद् वाङ्मयं भूयः संस्कृतं प्राकृतं तथा ।

अपभ्रंशश्च मिश्रश्चेत्याहुरार्याश्रतुर्विधम् ॥’ (काव्या० १. ३६)

इनके अनुसार संस्कृत से देवताओं की भाषा, प्राकृत से तद्भव, तत्सम और देशी भाषा, अपभ्रंश से आभीर आदि जातिविशेष की भाषा और मिश्र से मिली हुई भाषाओं का बोध होता है । शास्त्र में संस्कृत से इतर सब भाषायें अपभ्रंश कहलाती हैं । इनके अनुसार प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी, गौडी, लाटी और भूतभाषा ( पैशाची ) ये पाँच भेद हैं । प्राकृत के ये और भी अन्य भेद मानते हैं । दूसरे कई आचार्यों

ने प्राकृत के अन्य भी कई भेद बतलाये हैं, परन्तु सब ने महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी को बिना किसी दलील के स्वीकार किया है। वास्तव में ये ही तीनों प्रधान हैं और काव्य-नाटकों में इन्हीं तीनों का समावेश है। अतः ये ही तीन प्रधान प्राकृत हैं।

संस्कृत साहित्य में ऐसा कोई भी नाटक नहीं है जो केवल संस्कृत ही में हो और उसमें प्राकृत न हो। नाटकों में कुलीन, श्रेष्ठ तथा शिक्षित पुरुष संस्कृत भाषा का व्यवहार करते हैं तथा कुलीन और शिक्षिता स्त्री शौरसेनी में गद्य तथा महाराष्ट्री में पद्य का व्यवहार करती हैं। मतलब यह कि साधारण बात-चीत तो शौरसेनी में और कुछ गान आदि महाराष्ट्री में करती हैं। शौरसेनी गद्य की तथा महाराष्ट्री पद्य की भाषा है। किसी भी नाटक अथवा प्राकृत के काव्यग्रन्थ में गद्य महाराष्ट्री में और पद्य शौरसेनी में दृष्टिगोचर नहीं होते। नाटकों में निम्न लोगों की तथा नीच वर्णों की बोली मागधी भाषा में पाई जाती है। नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी ये तीन प्रकार ही प्रधान हैं और इन्हीं का व्यवहार अधिकता से पाया जाता है। इनके अतिरिक्त और भी आवन्ती, ढक, शावरी, प्राच्या और चाण्डाली भाषायें देखने में आती हैं, परन्तु कई आचार्यों के मत से आवन्ती और प्राच्या शौरसेनी के तथा ढक, शावरी और चाण्डाली मागधी के अन्तर्गत हैं। केवल विक्रमोर्वशीय में कुछ पद्य अपभ्रंश के भी आये हैं। इसके विषय में कुछ लोगों का कहना है कि अपभ्रंश के वे पद्य पीछे से जोड़े गये हैं।

महाराष्ट्री भाषा का नाम महाराष्ट्र के नाम पर पड़ा। महाराष्ट्र की भाषा महाराष्ट्री कहलाई। इसमें अक्षरों का लोप बहुत होता है, इसलिए इसका व्यवहार पद्य के लिए उत्तम माना गया। इसमें अक्षरों का इतना लोप होता है कि भाषा की जटिलता बढ़ जाती है इसलिए इसका गद्य समझना बड़ा कठिन होता है। इस भाषा के विषय में ऊपर लिखा जा चुका है।



शौरसेनी भाषा का नाटकों में प्रयुक्त गद्यभाषाओं में प्रथम स्थान है। शूरसेनों की भाषा का नाम शौरसेनी पड़ा। शूरसेनों की राजधानी मथुरा थी और मथुरा के आस-पास बोली जाने वाली भाषा शौरसेनी कहलाती थी।

मागधी से वररुचि के अनुसार मगध देश की भाषा समझी जाती है। 'मागधानां भाषा मागधी' (वर० ११. १. वृत्ति)। पटने के समीप-वर्ती स्थलों को मगध कहते थे। आज भी बिहार राज्य में बोली जाने-वाली भोजपुरी आदि भाषाओं का मागधी से बहुत कुछ सामीप्य है। मार्कण्डेय का कथन है कि राक्षस, भिक्षु, क्षपणक और चेटी आदि की भाषा का नाम मागधी है—'राक्षसभिक्षुक्षपणकचेटाद्या मागधीं प्राहुः' (मा० १२. १. वृ०)। भरत के अनुसार अन्तःपुर में रहने वालों की भाषा मागधी है। इनके अनुसार नपुंसक, स्नातक और कञ्चुकी अन्तःपुर में नियुक्त होते थे। दशरूपक के अनुसार पिशाच और अत्यन्त नीच लोग पैशाची और मागधी बोलते हैं—'पिशाचात्यन्तनीचादौ पैशाचं मागधं तथा।'

अवन्ति देश की भाषा आवन्ती कहलाती है। अवन्ति देश में च्चेदि, मालव, उज्जयिनी आदि देश सम्मिलित थे—'चेदिमालवो-ज्जयिन्यादिरवन्तीदेशः' तद्गवा आवन्ती दाण्डिकादि भाषा' (मार्क० ११११ की वृत्ति)। आवन्ती महाराष्ट्री और शौरसेनी के सांकर्य से सिद्ध होती है। 'भरत' के अनुसार नाटकों में यह सदा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त होती है। मार्कण्डेय के अनुसार यह भाषा का एक भेद है।

प्राच्या मार्कण्डेय के अनुसार विदूषक और विट आदि हँसोड़ पात्रों की भाषा है। भरत नाट्यशास्त्र के अनुसार विदूषक आदि की भाषा प्राच्या है—'प्राच्या विदूषकादीनाम्।' पृथ्वीधर ने मृच्छकटिक की टीका में इसी मत का समर्थन करते हुए लिखा है कि—'प्राच्यभाषापाठको विदूषकः' अर्थात् विदूषक प्राच्य भाषा का पाठक होता है।

ढक्क भाषा पृथ्वीधर के अनुसार मृच्छकटिक में माथुर और घूतकर की बोली है। ढक्क शब्द से जान पड़ता है कि यह ढाका के आस-पास की भाषा थी।

चाण्डालों की भाषा चाण्डाली तथा शबरों की भाषा शावरी कहलाती थी। अस्तु।

शूद्रक के मृच्छकटिक में प्राकृत के नाना प्रकार देखने में आते हैं। अन्य नाटकों में महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी ये तीन ही भाषायें पाई जाती हैं। किसी-किसी नाटक में एक पात्र चाण्डाल भी है जो चाण्डाली बोलता है। मृच्छकटिक में अन्य प्राकृत के अतिरिक्त ढक्क और आवन्ती भी आती हैं। माथुर तथा घूतकर ढक्क और वीरक तथा चन्दनक आवन्ती भाषा बोलते हैं। विदूषक की भाषा किसी-किसी के विचार से प्राच्या है। कर्णपूरक और वीरक के पद्य महाराष्ट्री में हैं। नटी, मैत्रेय, वसन्तसेना, चेटी, रदनिका, मदनिका, कर्णपूरक आदि के गद्य की भाषा शौरसेनी है। शकार, चेट, चारुदत्त का लड़का और भिबु की बोली, मागधी में है।

प्राकृत भाषा में कर्पूरमञ्जरी नामक एक ही सट्टक है। इसमें महाराष्ट्री और शौरसेनी दो ही भाषायें हैं। जितने पद्य हैं, वे सब महाराष्ट्री में और जितने गद्य हैं सब शौरसेनी में लिखे गये हैं। कहीं-कहीं इन दोनों की खिचड़ी भी दिखाई पड़ती है। जैसे—‘गेण्डिअ के’ स्थान पर ‘वेत्तूण’ का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार अनेक स्थलों पर ऐसे उदाहरण मिलते हैं। मालूम नहीं, यह कवि का प्रमाद है या झापेखानों की भूल। कर्पूरमञ्जरी के अनेक संस्करण निकल चुके हैं परन्तु प्राकृत भाषा की दृष्टि से ‘हार्वार्ड ओरिण्टल सीरीज’ द्वारा संपादित तथा चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी से प्रकाशित संस्करण सर्वोत्तम है।

संस्कृत नाटकों में प्राकृत की दृष्टि से मृच्छकटिक के अतिरिक्त विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशाकुन्तल, वेणीसंहार, मुद्राराक्षस, उत्तररामचरित आदि प्रसिद्ध नाटक हैं।

नाटकों में सूत्रधार का पाठ सबसे पहले आता है। सूत्रधार की भाषा संस्कृत है, परन्तु महाकवि भास-प्रणीत 'चारुदत्त' में यह शौरसेनी में बोलता है। 'मृच्छकटिक' में भी नटी के साथ बातचीत करते समय सूत्रधार ने शौरसेनी का ही व्यवहार किया है।

नटी की भाषा सब नाटकों में शौरसेनी ही है। पर यह स्मरण रहे कि शौरसेनी गद्य की भाषा है। इसलिए नटी को जहाँ गाने की आवश्यकता पड़ी है, वहाँ गान महाराष्ट्री भाषा में है। यथा शाकुन्तल में—'नटी गायति—

ईसीसि चुम्बिआइं भमरेहिं सुउमारकेसरसिहाइं ।

ओदंसअन्ति दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाणि ॥'

पारिपार्श्वक की भाषा संस्कृत में ही पाई जाती है। इसका पाठ विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, वेणीसंहार तथा माधवभट्ट-रचित सुभद्राहरण आदि नाटकों में आया है।

विदूषक की बोली सब नाटकों में एक सी ही है। इसकी भाषा हेमचन्द्र और त्रिविक्रम के अनुसार शौरसेनी तथा मार्कण्डेय के अनुसार प्राच्या है। इसका पाठ मृच्छकटिक, अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र आदि नाटकों में आया है। मालविकाग्निमित्र में इसका पाठ प्रधान रूप से आया है और प्रत्येक अङ्क में है।

सूत की बोली संस्कृत में पाई जाती है। जहाँ-जहाँ सूत का पाठ है, वहाँ वह संस्कृत ही बोलता पाया जाता है। अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, प्रतिमा, वेणीसंहार तथा कंसवध आदि नाटकों में सूत का पाठ पाया जाता है।

राजा की भाषा अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, प्रतिमा, मुद्रा-राक्षस, मालविकाग्निमित्र, वेणीसंहार, कर्णसुन्दरी तथा कंसवध आदि नाटकों में संस्कृत ही पाई जाती है। केवल विक्रमोर्वशीय के चौथे अङ्क में पुरुरवा नामक राजा ने उर्वशी के लिए विचित्र हो कर हंस, भौरे तथा

चक्रवाक आदि ने बातचीत करते हुए महाराष्ट्री और अपभ्रंश का भी प्रयोग किया है। चौथे अङ्क के ६, ११, १४, १९, २०, २४, २८, २९, ३५, ३६, ४१, ५३, ५४, ५९, ६३, ६८, ७१ और ७५ संख्यावाले श्लोकों को महाराष्ट्री तथा १२, ४३, ४५, ४८ और ५० संख्यावाले श्लोकों को अपभ्रंश भाषा में कहते हैं। यथा—

राजा—‘मर्मररणिअमणोहरए; कुसुमिअतरुवरपल्लविए ।

दइधाविरहुम्माइअओ; काणणं भमइ गइंदओ ॥’

[ मर्मररणितमनोहरे कुसुमिततरुवरपल्लविते ।

दयिताविरहोन्मादितः कानने अमति गजेन्द्रः ॥ ]

( विक्र० ४३५ )

‘हउं पइं पुच्छिअमि अख्खहि गअवरु; ललिअपहारे णासिअतरुवर ।

दूरविणिज्जिअ-ससहरुकन्ती, दिट्ठी पिअ पइं संमुह-जन्ती ॥’

[ अहं त्वां पृच्छामि आचचव गजवर; ललितप्रहारेण नाशिततरुवर ।

दूरविनिर्जित-शशधर-कान्तिर्दृष्टा प्रिया त्वया संमुखं यान्ती ॥ ]

पिछले पृष्ठ के वर्णित दोनों श्लोक क्रमशः महाराष्ट्री और अपभ्रंश भाषा के हैं।

कञ्चुकी की बोली संस्कृत भाषा में पाई जाती है। इसका पाठ अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, उत्तररामचरित, प्रतिमा, मुद्राराक्षस, मालविकाग्निमित्र तथा वेणी-संहार आदि नाटकों में आया है।

प्रतीहारी, चेटी, तापसी आदि की बोली शौरसेनी में है। ये पात्र प्रायः सभी नाटकों में आये हैं। दौवारिक की भाषा भी शौरसेनी ही पाई जाती है। परन्तु कंसवध में हेमाङ्गद नाम के एक दौवारिक ने एक स्थान पर एक श्लोक संस्कृत में भी कहा है। सुभद्राहरण, अभिज्ञानशाकुन्तल आदि अनेक नाटकों में दौवारिक का पाठ है।

अभिज्ञानशाकुन्तल में रक्षियों ( सिपाहियों ), धीवर और शकुन्तला के पुत्र की; चारुदत्त में शकार की; मृच्छकटिक में शकार, चेट, चारुदत्त के पुत्र, संवाहक और भिन्नु की; वेणीसंहार में राक्षस

और राक्षसी की तथा कंसवध में कुब्जक और रजक की बोली मागधी भाषा में है। मागधी गद्य और पद्य दोनों की ही भाषा है। यद्यपि उच्च कुल की एवं शिक्षित नारियाँ गद्य-पद्य में क्रमशः शौरसेनी, महाराष्ट्री का ही व्यवहार करती हैं, तो भी कई नाटकों में नारी का पाठ संस्कृत भाषा में भी मिलता है। जैसे उत्तररामचरित में तापसी, आत्रेयी, वासन्ती, तमसा, सुरला, अरुन्धती, पृथिवी, भागीरथी और गङ्गा की; कर्णसुन्दरी में सखी और नायिका के पद्य की; कंसवध में दूती विलासवती, देवकी और केवल कुछ स्थलों पर कुब्जा की बोली संस्कृत भाषा में पाई जाती है। प्रतिमा में भट एक स्थान पर शौरसेनी तथा दूसरे पर संस्कृत का प्रयोग करता है। किसी-किसी नाटक में ऐसा भी देखा जाता है कि जब कोई पात्र किसी दूसरे का अनुकरण करता है, तो वह अपनी भाषा छोड़कर अनुकार्य व्यक्ति की ही भाषा बोलता है। जैसे मुद्राराक्षस में संस्कृत का बोलने वाला विराध आहितुण्डिक का अनुकरण करने पर शौरसेनी भी बोलता है। वेणी-संहार में मुनिवेषधारी राक्षस संस्कृत भाषा का भी व्यवहार करता है।

मृच्छकटिक में स्थावरक और रोहसेन नामक चाण्डालों तथा मुद्राराक्षस में आये चाण्डालों की बोली चाण्डाली कहलाती है। इन सब के अतिरिक्त जिन पात्रों की चर्चा नहीं की गई है, उनके साथ वे ही साधारण नियम लागू हैं।

साहित्यदर्पण में श्रेष्ठ चेट और राजपुत्रों की भाषा अर्द्धमागधी बतलाई गई है। परन्तु किसी नाटककार ने किसी भी पात्र के लिए इस भाषा का व्यवहार नहीं किया है। चेट का पाठ मृच्छकटिक में आया है, जो मागधी में है। इसी प्रकार राजपुत्रों की भाषा भी अर्द्धमागधी में नहीं है—‘चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठानाञ्चार्द्धमागधी’ (साहि० ६, १६०)।

साहित्यदर्पण में विश्वनाथ ने भाषा-विभाग का वर्णन करते हुए लिखा है कि शिक्षित मध्यम तथा उच्च वर्ग के मनुष्यों की भाषा संस्कृत

तथा मध्यम और उत्तम वर्ग की स्त्रियों की भाषा शौरसेनी है। योद्धा और नागरिकों की भाषा दाक्षिणात्या है। परन्तु यह भाषा भी प्रयुक्त हुई दृष्टिगोचर नहीं होती। विश्वनाथ ने बालकों की बोली का विधान करते हुए लिखा है कि बालक कभी-कभी संस्कृत भी बोलते हैं। परन्तु किसी भी नाटक में कोई बालक संस्कृत बोलता नहीं पाया जाता। कवियों ने उपर्युक्त नियम का बिलकुल पालन नहीं किया है।

ऐश्वर्य से पागल, दरिद्र, भिद्य एवं वल्कल धारण करने वाले पुरुषों की भाषा प्राकृत बतलाई गई है। पर उत्तम संन्यासियों के लिए संस्कृत का विधान है। कभी-कभी वेश्या के लिए भी संस्कृत भाषा के व्यवहार का विधान है।

साहित्यदर्पण के अनुसार व्यापक नियम यह है कि जिस पात्र के देश की जो भाषा है, वह उसी को बोलता है और कार्यवश उत्तम आदि पात्र भाषा का परिवर्तन भी करते हैं—

‘यद्देश्यं नीचपात्रं तु तद्देश्यं तस्य भाषितम् ।

कार्यतश्चोत्तमादीनां कार्यो भाषा-विपर्ययः ॥’

भाषा का परिवर्तन करना मुद्राराक्षस आदि नाटकों में पाया जाता है।

स्त्री, सखी, बालवेश्या, धूर्त तथा अप्सरार्ये अपनी चतुरता प्रदर्शित करने के लिए बीच में संस्कृत बोल सकती हैं—

‘योषित्-सखी-बालवेश्याकितवाप्सरसां तथा ।

वैदग्ध्यार्थं प्रदातव्यं संस्कृतं चान्तराऽन्तरा ॥’

कर्णसुन्दरी में सखी और नायिका, कंसवध में दौवारिक और कुब्जा तथा सुभद्राहरण में नटी भी विदग्धता दिखलाने के लिए संस्कृत भाषा बोलती हैं।

मालविकाग्निमित्र में परिव्राजिका कार्यवश संस्कृत बोलती है।

वाह्लीक भाषा जो उत्तर-देशवासियों के लिए और द्राविडी जो द्रविड-देशवासियों के लिए कही गई है, उनका नाटकों में कहीं भी अस्तित्व देखने में नहीं आता—‘वाह्लीकभाषोदीच्यानां द्राविडी द्रविडादिषु’ (साहि० ६, १६२)।

एक बात और उल्लेखनीय है। प्रायः देखा जाता है कि एक ही घर में पुरुष संस्कृत, स्त्री शौरसेनी और लड़का मागधी बोलता है। इसका क्या कारण है ? लड़के तो ऐसे होते नहीं कि बचपन में ही कोई स्वतन्त्र भाषा सीख लें। जो भाषा उनकी माता तथा घरवाले बोलते हैं, वही भाषा वे सीखेंगे और बोलेंगे। माता की भाषा से भिन्न भाषा कभी भी उनसे उच्चारित नहीं हो सकती। फिर नाटकों में ऐसी विचित्रता क्यों देखने में आती है ? शकुन्तला में दुष्यन्त आदि संस्कृत में, शकुन्तला तथा उसकी सखियाँ शौरसेनी में बोलती हैं। तब दुष्यन्त का लड़का मागधी कैसे सीख गया ? इसी प्रकार मृच्छकटिक में चारुदत्त का लड़का भी मागधी बोलता है। इस प्रकार नाटकों के सहारे ठीक विचार नहीं किया जा सकता, क्योंकि बोली दूसरी होने पर भी विशेष स्थल के लिए अन्य बोली बोलनी पड़ती है। किन्तु यह भी देखने में आता है कि लड़कों की बोली स्वभावतः ही मागधी होती है। आजकल के लड़के भी प्रायः मागधी ही बोलते हैं। जैसे :—‘ए ताता ताल लोपेया द।’ इसकी हिन्दी ‘ऐ चाचा, चार रुपया दो’ होगी। इस प्रकार सब लड़के के स्थान में ल का प्रयोग करते हैं। अतः इस सम्बन्ध में उक्त सन्देह अनावश्यक है।

पहले प्राकृत की उत्पत्ति के विषय में मैंने अपनी सम्मति न देकर केवल भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का ही उल्लेख किया है। अब अपनी सम्मति देना आवश्यक समझ अपना निर्णय दे रहा हूँ।

मेरे विचार से प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत ही से जान पड़ती है क्योंकि भाषा-विज्ञान की ओर दृष्टि डालने से मालूम होता है कि मनुष्य कष्टसाध्य प्रयत्न न कर सुखोच्चार्य शब्द की ओर ही ढुलक जाता है। अतः जो अशिक्षित जन संस्कृत बोलने की चेष्टा तो करते थे, किन्तु बोल नहीं पाते थे उन्हीं के उच्चारण-दोष से बिगड़-बिगड़ कर एक अन्य भाषा बन गई। सारांश यह कि संस्कृत ही का अशुद्ध स्वरूप प्राकृत है। इसके विरोध में कुछ लोगों का यह कहना

कि प्राकृत के सब शब्द संस्कृत से ही सिद्ध नहीं होते इसलिये उसकी जननी संस्कृत नहीं है। यह कहना ठीक प्रतीत नहीं होता क्योंकि आज भी कुछ शब्द ऐसे देखने में आते हैं जिनका मूल मालूम है, पर उनमें इतना परिवर्तन हो गया है कि उनके मूल शब्द का अनुमान भी नहीं होता। जैसे—‘हू कस्स देअर’ के स्थान में ‘हुकुमदर’ या ‘हुकुम सदर’, ‘सिगनल’ के स्थान में ‘सिकन्दर’, ‘कृष्णाष्टमी’ के स्थान में ‘किसुन आँठी’ ( यह बोली नेपाल की तराई के पास सुनने में आती है ) ‘इजलास’ के स्थान में ‘गिलास’ और ‘सेवासमिति’ के स्थान में ‘सेवा सपाठी’ कहते हुए लोग देखने में आते हैं। इन उदाहरणों से यह अनुमान किया जाता है कि संस्कृत ही प्राकृत की जननी है। कुछ शब्द जो सिद्ध नहीं होते इसका कारण यह है कि उनमें बहुत परिवर्तन हो गया है। जब प्राकृत के प्रायः सभी शब्दों के मूल का पता संस्कृत से लग जाता है तब थोड़े शब्दों के न मिलने के कारण प्राकृत को स्वतन्त्र मानना ठीक नहीं है।

विक्रमोर्वशीय में अपभ्रंश के जो पद्य आये हैं, उनके विषय में कुछ लोगों का कथन है कि वास्तव में ये पद्य पहले के नहीं हैं, बाद में जोड़े गये हैं। इसके प्रमाण में वे कहते हैं कि राजा उत्तम पात्रों में गिना जाता है। उत्तम पात्रों की बोली संस्कृत है। इसके अतिरिक्त एक ही पद्य की कई बार आवृत्ति की गई है, जिससे ज्ञात होता है कि ये पीछे से जोड़े गये हैं। परन्तु यह बात नहीं है। यद्यपि राजा उत्तम पात्रों में है और इसकी बोली संस्कृत है तो भी कार्यवश वह अन्य भाषाओं को भी बोल सकता है। आज भी हम सभ्य-समाज में यदि शिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं तो आवश्यकता पड़ने पर साधारण जनों से ग्राम्य बोलियों में भी बात करना नहीं छोड़ते। पुरुरवा ने अपनी प्रिया के लिए आकुल होकर हाथी, भौंरे, चक्रवाक आदि से कहा था। उन्होंने समझा होगा कि विना महाराष्ट्री तथा अपभ्रंश में बोले वे लोग समझेंगे नहीं, और नहीं समझने के कारण कदाचित्



उत्तर नहीं दे सकेंगे। इसलिये लाचारीवश ही उन्होंने प्राकृत का आश्रय लिया होगा, इसमें संदेह नहीं। एक ही बात की आवृत्ति भी साधारण बात है। जब किसी को उत्तर नहीं मिलता तो वह पुनः-पुनः उसी प्रश्न को दुहराता ही है। इसलिए मेरे विचार से ये पद्य पीछे के नहीं हैं।

प्राकृत के वैयाकरणों के दो वर्ग हैं—एक त्रिविक्रम का और दूसरा मार्कण्डेय का। त्रिविक्रम के अनुयायी हेमचन्द्र, लक्ष्मीधर और सिंहराज हैं। लक्ष्मीधर ने त्रिविक्रम के सूत्रों पर अपनी वृत्ति लिखी है जैसे पाणिनि के सूत्रों पर वामन, माधव आदि कितने ही वृत्तिकारों की वृत्तियाँ रची गई हैं। लक्ष्मीधर के ग्रन्थ का नाम पद्मभाषा-चन्द्रिका है। मार्कण्डेय के अनुयायी वररुचि हैं। पहले लिखा जा चुका है कि किस ग्रन्थ में किन-किन प्रकार की प्राकृतों का वर्णन मिलता है।

सब वैयाकरणों ने महाराष्ट्री को प्रधान मान कर सर्वप्रथम उसी का निरूपण किया है अतः यहाँ भी प्रस्तुत प्राकृत व्याकरण के विद्वान् लेखक ने पहले महाराष्ट्री के ही लक्षण दिये हैं। उसके बाद शौरसेनी, मागधी, पैंशाची और अपभ्रंश के भी विशेष-विशेष नियम बतला दिये गये हैं, जिनसे शब्दों के निर्वचन के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेना अतिशय सरल हो गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मेरी ही प्रेरणा से श्रीसोमेश्वरनाथ संचालक मण्डल, अरेराज ( चम्पारन ) के अनुसन्धान विभाग की ओर से पूर्ण परिश्रम एवं खोज के साथ निर्मित हुआ है। इसके लेखक ने इस ग्रन्थ को अरेराज जैसे साधनहीन स्थान में, जहाँ न कोई अच्छा पुस्तकालय ही है और न सुयोग्य परामर्शदाता ही, अकेले जुटकर इस ग्रन्थ का इस रूप में निर्माण किया है। एतदर्थ विद्वान् लेखक को इस सम्बन्ध में जितनी भी बधाई दी जाय, थोड़ी होगी।

संभव है इस पुस्तक में कुछ लोगों को अपूर्णता दिखलाई दे, किन्तु जितना भर लिखा जा चुका है, उतने से ही हिन्दी द्वारा प्राकृत पढ़ने वाले छात्रों का अतिशय उपकार होगा, इसमें तनिक भी संदेह नहीं ।

मुझे अपने छात्र-जीवन में हिन्दी में एक प्राकृत व्याकरण की आवश्यकता प्रतीत हुई थी । आज उस इच्छा की पूर्ति से मुझे बड़ी प्रसन्नता है । इस ग्रन्थ के लिखने में लेखक को उत्साहित करनेवालों में मेरे अतिरिक्त तिरहुत प्रमण्डल के आयुक्त श्री श्रीधर वासुदेव सोहोनी तथा चम्पारन के कर्मठ-साहित्यिक श्री गणेश चौबे रहे हैं । अतः ये दोनों ही महानुभाव मेरे लिए धन्यवादार्ह हैं ।

ग्रन्थों के न मिलने से जो कठिनाइयाँ आईं, उन्हें बहुत कुछ विहार रिसर्च सोसाइटी पटना, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय मुजफ्फरपुर एवं सोमेश्वरनाथ संस्कृत महाविद्यालय अरेराज के पुस्तकालयों ने दूर किया है, अतः इन संस्थाओं के अध्यक्ष भी धन्यवादार्ह हैं ।

ध्रुवनारायण त्रिपाठी

# विषय-प्रवेश

प्रथम अध्याय	...	...	पृ०
संज्ञा-सन्धि-विवेक	...	...	१
लिङ्गानुशासन	...	...	१७
द्वितीय अध्याय			
स्वर-सन्धि-विवेक	...	...	४४
तृतीय अध्याय			
व्यञ्जनसन्धि-विवेक	...	...	५६
चतुर्थ अध्याय			
शब्दलिङ्ग-विवेक	...	...	७४
पञ्चम अध्याय			
अव्यय प्रकरण	...	...	१०७
षष्ठ अध्याय			
तिङन्त विचार	...	...	११७
सप्तम अध्याय			
कुछ विशिष्ट पद	...	...	१४०
अष्टम अध्याय			
शौरसेनी	...	...	१८२
नवम अध्याय			
मागधी	...	...	१९५
दशम अध्याय			
पैशाची	...	...	२००
एकादश अध्याय			
अपभ्रंश	...	...	२०४
परिशिष्ट	...	...	
अक्षरानुक्रम शब्द-सूची	...	...	२३१
सहायक ग्रन्थ-सूची	...	...	२९८

प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र के अनुसार 'प्रकृति' (=संस्कृत) से प्राकृत शब्द की निष्पत्ति मानी गई है। 'प्रकृतिः संस्कृतम् । तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्।' अर्थात् जिसकी उत्पत्ति संस्कृत में हुई हो अथवा संस्कृत से निकलकर जो अलग निर्मित हुआ हो वही प्राकृतः है।

कुछ भाषा-शास्त्री 'प्रकृत्या (स्वभावेन) सिद्धं प्राकृतम्' इस व्युत्पत्ति के अनुसार स्वभावसिद्ध को ही 'प्राकृत' मानते हैं।

---

\* देखिए—हेम० ८. १. १. अथ प्राकृतम् और उसी सूत्र पर शङ्कर पाण्डुरङ्ग परिणत का अंग्रेजी नोट—Hemachandra's system of grammar consists of eight chapters; the first seven deal with Sanskrit grammar and the last chapter with six dialects of Prakrit, viz., महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची and अपभ्रंश. The word Prakrit is derived from प्रकृति which according to the author, means Sanskrit. Hemachandra classifies Prakrit words into तद्भव, तत्सम, and देशी. He does not treat of तत्सम here as he has already done so in the preceding chapters. He does not speak of देशी words here but discusses only तद्भव words of both types, सिद्ध and साध्यमान।

विवादग्रस्त\* इन दोनों व्युत्पत्तियों को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है। किन्तु हम यहाँ हेमचन्द्रवाली व्युत्पत्ति को ही मानकर चलेंगे।

अब आगे चलकर हम नियम, उदाहरण, विशेष तथा पादटिप्पणी के सम्मिलित क्रमों से प्राकृत शब्दों की निरुक्ति का प्रयास करेंगे।

(१) लोक में प्रचलित वर्णसमाम्नाय ही प्राकृत में भी गृहीत है, किन्तु नीचे लिखे ऋ, ॠ, लृ, ऐ, औ ये पाँच स्वर वर्ण और ङ, ज, श, ष, न, य ये छ व्यञ्जन प्राकृत में नहीं होते†। हाँ, अपने वर्णवाले अक्षरों से संयुक्त ङ और ज का व्यवहार देखने को मिलता है। जैसे—पङ्को (पङ्कः), सङ्को (शङ्कः), सङ्का (शङ्का), कञ्चुओ (कञ्चुकः), वञ्जनं (वञ्जनम्)।

\* इस सम्बन्ध में श्रीहृषीकेश शास्त्री भट्टाचार्य के संस्कृत-इङ्गलिस प्राकृत व्याकरण (१८८३ ई०) के प्रिफेस की नीचे उद्धृत पङ्क्तियाँ प्रकाश डालती हैं—Modern philologist have not yet satisfactorily solved the question whether these dialects are derived directly from the Sanskrit or (through) some of its corruptions. It is contended by some that Pali was the medium through which all the Prakrit dialects come into existence.

† हेमचन्द्र के अनुसार ऋ, ॠ, लृ, लृ, ऐ औ ये छ स्वर और ङ, ज, श, ष, विसर्जनीय और प्लुत प्राकृत के वर्ण-समाम्नाय में नहीं होते। किन्हीं-किन्हीं शब्दों में हेमचन्द्र के अनुसार ऐ और औ भी देखे जाते हैं। जैसे—कैअवं (कैतवम्), सौअरिअं (सौन्दर्यम्) कौरवा (कौरवाः)

( २ ) भिन्न वर्गवाले व्यञ्जन वर्णों का परस्पर संयोग नहीं होता अर्थात् त्+क, प्+क, क्+त, क्+य, क्+र, क्+ल, ल्+क और क्+व इनका परस्पर संयोग न होकर केवल 'क्' रूप ही होता है। उसी तरह ङ्+ग, ङ्+ग, ग्+न, ग्+य, ग्+र, र्+ग और ल्+ग का परस्पर संयोग न होकर केवल ग्ग रूप ही रहता है। जैसे—उक्कंठा (उत्कण्ठा), अक्कंवलं (अप्कमलम्), राक्कंचरो (नक्तञ्चरः), जण्णवक्केण (याज्ञवल्क्येन), सक्को (शक्रः), विक्कवो (विक्रवः), उक्का (उल्का), पिक्कं (पक्कम्), खण्णो (खड्गः), अग्गिणी (अग्नीन्), जोग्गो (योग्यः), कअग्गहो (कचग्रहः), मग्गो (मार्गः) वग्गा (वल्गा) ।

**विशेष**—इसी तरह दूसरे भिन्नवर्गीय वर्णों के बारे में भी जानना चाहिए। जैसे—सत्तावींसा (सप्तविंशतिः), कण्णउरं (कर्णपुरम्)

( ३ ) वर्ग के पाँचवें अक्षरों का अपने वर्ग के अक्षरों के साथ भी कहीं-कहीं संयोग देखा जाता है, किन्तु सर्वत्र नहीं। यथा—अङ्को (अङ्कः), इङ्गालो (अङ्गारः), तालवेण्टं (तालवृन्तम्), वञ्जणीयम् (वञ्जनीयम्), फन्दनं (स्पन्दनम्), उम्बरं (उदुम्बरम्)

( ४ ) प्राकृत में ऐसा व्यञ्जन नहीं मिलता जो ( संस्कृत के यावत्, तावत्, ईषत् के तकार के समान ) स्वर-रहित हो ।

( ५ ) प्राकृत में प्रकृति, प्रत्यय, लिङ्ग, कारक, समाससंज्ञा आदि संस्कृत के समान ही होते हैं ।

( ६ ) प्राकृत में द्विवचन नहीं होता। इसी प्रकार संप्रदान कारक में आनेवाली चतुर्थी विभक्ति भी प्राकृत में नहीं होती है। हिन्दी और अंग्रेजी की तरह द्विवचन का काम बहुवचन

से और चतुर्थी का काम षष्ठी से पूरा कर लिया जाता है\* ।  
द्विवचन के बदले बहुवचन का उदाहरण जैसे—वच्छा चलन्ति  
( वत्सौ चलतः ); चतुर्थी के बदले षष्ठी जैसे—विप्पस्स देहि  
( विप्राय देहि )

( ७ ) समास में कभी-कभी दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर के रूप में और ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर के रूप में बदलता हुआ देखा जाता है । दीर्घ का ह्रस्व जैसे—जहद्विञ्चं ( यथा स्थितम् ), अन्तावेइ ( अन्तर्वेदी ); ह्रस्व का दीर्घ जैसे—सत्तावीसा ( सप्त-विंशतिः ) ।

( ८ ) कभी-कभी दीर्घ और ह्रस्व के क्रमशः ह्रस्व और दीर्घ रूप समास में विकल्प से होते देखे जाते हैं । जैसे—  
णइसोत्तं, णईसोत्तं ( नदीस्रोतः ), बहुमुहं बहूमुहं ( वधूमुखम् ),  
पिआपिअं, पीआपीअं ( प्रियाप्रियम् )

**विशेष :**—कभी कभी स्वरों के उक्त परिवर्तन नहीं भी देखे जाते हैं । जैसे—जुवइ-अणो ( युवतिजनः )

( ९ ) दो पदों में सान्निध्य रहने पर संस्कृत के लिए विहित कुल सन्धि-कार्य प्राकृत में विकल्प से किये जाते हैं । जैसे—  
वास+इसी, वासेसी ( व्यासर्षिः ); दहि+ईसरो, दहीसरो  
( दधीश्वरः )

---

\* देखिए वररुचिसूत्र द्विवचनस्य बहुवचनम् ६.३३. और चतुर्थ्याः षष्ठी ६.६४. अर्द्धमागधी में चतुर्थी देखी जाती है । जैसे—  
अधम्माय कुज्झइ ( अधर्माय क्रुध्यति ), संसाराए सुखं ( संसाराय सुखम् ), अट्टाए दण्डो ( अर्थाय दण्डः ) इत्यादि ।

**विशेष :—**(क) एक पद में सन्धि-कार्य नहीं होता । जैसे—  
पाओ (पादः), पई, वच्छाओ, मुद्दाए इत्यादि ।  
(ख) कहीं कहीं एक पद में भी शब्दों के स्वभाव-  
वश सन्धि होती देखा जाती है । जैसे—काहिइ,  
काही; बिइओ, बीओ ।

( १० ) 'इ' और 'उ' का विजातीय स्वर के साथ कभी सन्धि-कार्य नहीं होता । जैसे—विअ ( इव ), महुई ( मधूनि ), न वेरिवग्गे वि अवयासोः ( न वैरिवर्गेऽप्यवकाशः ), दणु इन्द्ररुहिरलित्तो ( दनुजेन्द्ररुधिरलितः )

( ११ ) सजातीय स्वर के साथ सन्धि हो जाती है । जैसे—  
पुहवी+ईसो = पुहवीसो ( पृथिवीशः ); कुलद+अहिपो = कुल-  
दाहिपो ( कुलूताधिपः ) ।

( १२ ) 'ए' और 'ओ' के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो उनमें सन्धि नहीं होती है । जैसे—देवीए+एत्थ, एओ+एत्थ ( देव्या अत्र, एकोऽत्र ); वहुआइ नहुल्लिहणे आवन्धन्तीए कञ्चुअं अङ्गे ( बध्वा नखोल्लेखने आवधन्त्या कञ्चुकमङ्गे ), तं चेव मलिअ विसदण्ड विरसमालभिखमो एहिंह ( तदेव मृदित-  
विसदण्डविरसमालक्षयामह इदानीम् )

\* भीय परित्ताणमइं पइएण मसिणो तुहाधिरूढस्स ।

( भीतपरित्राणमयीं प्रतिज्ञामसेस्तवाधिरूढस्य । )

मन्ने संकाविद्धुरे न वेरिवग्गे वि अवयासो ।

( मन्ये शङ्काविधुरे न वैरिवर्गेऽप्यवकाशः ॥ )

† दणु इन्द्र रुहिरलित्तो सहइ उइन्दो नहप्पहावलि-अरणो ।

( दनुजेन्द्ररुधिरलितः शोभते उपेन्द्रो नखप्रभावल्ल्यरुणः )



( १३ ) व्यञ्जनघटित स्वर से व्यञ्जन का लोप हो जाने पर जो स्वर वैचा रह जाता है उसे प्राकृत के वैयाकरण लोग 'उद्वृत्त' कहते हैं। कोई भी 'उद्वृत्त' स्वर किसी भी स्वर के साथ सन्धि-कार्य को नहीं प्राप्त करता है। जैसे—गन्ध-उडिं ( गन्धकुटीम् ), निसाञ्चरो ( निशाचरः ), रयणीञ्चरो ( रजनीचरः )

**विशेषः**—कहीं कहीं इस नियम के प्रतिकूल उद्वृत्त स्वर का दूसरे स्वर के साथ सन्धिकार्य विकल्प से होता है। और कहीं कहीं सन्धि अवश्य होती है। विकल्प से जैसे—सुउरिसो, सूरिसो ( सुपुरुषः ); नित्य जैसे—चक्काञ्चो ( चक्रवाकः ), सालाहणो ( सातवाहनः )

( १४ ) 'तिप्' आदि प्रत्ययों के स्वर किसी भी स्वर के साथ सन्धि-कार्य प्राप्त नहीं करते हैं। जैसे—होइ इह ( भवतीह )

( १५ ) किसी स्वर वर्ण के पर में रहने पर उसके पूर्व के स्वर ( उद्वृत्त अथवा अनुद्वृत्त ) का वैकल्पिक लुक् होता है। जैसे—तिञ्चस ( त्रिदश ) के सकार के आगेवाले अकार ( अनुद्वृत्त ) का 'ईसो' ( ईशः ) के ई के पर में रहने पर लुक् हो गया। अब स् और ई के मिल जाने से 'तिञ्चसीसो' हुआ। वैकल्पिक होने के कारण 'तिञ्चस ईसो' भी होता है। इसी प्रकार 'राउलं' ( उद्वृत्त अस्वर का लुक् ) और राञ्ज-उलं ( राजकुलम् ) भी जानना चाहिए ।❧

\* तुलना कीजिए—अरणावअणुक्कणठो ( आज्ञावचनोत्करठः ) अभि० शा०, २ अं. ), सलिलसेअसंभमुग्गदो ( सलिलसेकसंभमोद्गतः ) अभि० शा०, २ अं. ।

**विशेषः**—(क) शौरसेनी आदि प्राकृत के अन्य भेदों में उक्त नियम लागू नहीं होता ।

(ख) प्राकृत प्रकाश के अनुसार किसी भी संयुक्ताक्षर के पूर्व में वर्तमान स्वर से पूर्ववर्ती स्वर का सब जगह लोप होना माना जाता है ।  
जैसे—णस्थि ( नास्ति )

( १६ ) शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का सर्वत्र लुक् होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
जाव	यावत्
तावक्क	तावत्
जसो†	यशः
णहं‡	नभः
सिरं	शिरः

**विशेषः**—समास में उक्त नियम विकल्प से होता है ।

सभिक्ष्व् ( लुक् ) सज्जणो ( अलुक् )

( १७ ) 'श्रत्' और 'उत्' इन दोनों के अन्त्य व्यञ्जन का लुक् नहीं होता । जैसे—सद्धा ( श्रद्धा ) ; उण्णयं ( उन्नयम् )

( १८ ) 'निर्' और 'दुर्' के अन्तिम व्यञ्जन र् का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—निस्सहं ( लुगभाव ), नीसहं ( लुक् ); दुस्सहो ( लुगभाव ), दूसहो ( लुक् ) । सं. निस्सहम्, दुस्सहः ।

\* शौरसेनी में दाव होता है ।

† नसान्तप्रावृट्सरदः पुंसि । वर. सू. ४.१८. नान्त, सान्त प्रावृष् और सरद् शब्दों का प्रयोग पुल्लिङ्ग में होता है ।

‡ न सिरोनभसी । वर० सू० ४.१९. शिरस् और नभस् शब्दों के पुल्लिङ्ग में प्रयोग का निषेध है ।

( १६ ) स्वर वर्ण के पर में रहने पर 'अन्तर्' 'निर्' और 'दुर्' के अन्त्य व्यञ्जन ( रेफ ) का लुक् नहीं होता । जैसे— अन्तरप्पा ( अन्तरात्मा ), अन्तरिदा\* ( अन्तरिता ), नि (णि) रुत्तरं ( निरुत्तरम् ) गिराबाधं† ( निराबाधम् ), दुरुत्तरं ( दुरुत्तरम् ) दुरागदं§ ( दुरागतम् ) ।

**विशेष :**—कहीं कहीं 'निर्' के रेफ का लुक् देखा भी जाता है । जैसे—मुद्राराक्षस के पाँचवें अङ्क में क्षपणक कहता है 'ता जइ भाउराअणस्स मुदाला-च्छिदोऽसि तदो गच्छ वीसत्थो, अण्णधा णिवत्तिअ णिउक्कण्ठं‡ चिट्ठ । ( तद् यदि भागुरायणस्य मुद्रालाच्छितोऽसि तदा गच्छ विश्वस्तः । अन्यथा निवृत्य निरुत्करणं तिष्ठ । )

\* तेन हि लदाविडवन्तरिदा सुण्णिस्सं ( तेन हि लताविटपान्तरिता श्रोप्ये । ) विक्र० अ० २ में देवीवचन ।

† वअस्स, गिरुत्तरा एसा ( वयस्य, निरुत्तरा एषा ) विक्र० अ० ३ में चित्रलेखावचन ।

‡ इमिणा दब्भोदएण गिराबाधं एव्व दे सरीरं भविस्सदि ( अनेन दर्भोदकेन निराबाधमेव ते शरीरं भविष्यति । ) अभि० शा०, अ० ३ में गौतमीवचन ।

§ दुरागदं दाणिं संबुत्तं ( दुरागतमिदानीं संवृत्तम् ) विक्र० अ० २ में देवीवचन ।

‡ वररुचि के ( ३.१ ) मत से क्, ग्, ङ्, त्, द्, प्, ष्, स्यदि संयोग के आदि में हों तो उनका लोप हो जाता है । और

( २० ) विद्युत् शब्द को छोड़कर स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान सभी व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का आत्व होता है । जैसे— सरिआ ( सरित् ); संपआ ( संपद् ); वाआळ ( वाक् ); अछराा ( अप्सरः )

उन्हीं के अन्य सूत्र ( ३. ५० ) के अनुसार आदि में नहीं रहनेवाले जो संयुक्त के शेष अथवा आदेशभूत अक्षर हों उनका द्वित्व माना गया है । इस प्रकार उत्कण्ठा में त् का लोप और क् का द्वित्व करके 'उक्कण्ठा' बनता है । उत्पातः का 'उप्पाओ' बनता है । यह प्रकार उत्तम है । प्राकृतप्रकाश में दूसरे भी लोपविधायक सूत्र देखे जाते हैं । जैसे—( १ ) उदुम्बरे दोर्लोपः । वर० २. ४ उदुम्बर शब्द में दु का लोप होता है । उवरं ( उदुम्बरम् ) ( २ ) कालायसे यस्य वा । वर० ३. ४ कालायस में य का लोप विकल्प से होता है । कालासं- काला-असं ( कालायसं ) ( ३ ) भाजने जस्य । वर० ४. ४ भाजन शब्द में ज का वैकल्पिक लोप होता है । भाणं, भाअणं ( भाजनम् ) ( ४ ) यावदादिषु वस्य । वर० ५. ४ यावत् प्रभृति शब्दों में 'व' का वैकल्पिक लोप होता है । जा, जाव; ता, ताव; पाराओ, पारावओ; अनुत्तेन्तो, अनुवत्तन्तो; जीअं, जीविअं; एअं एव्वं; एअ एव्व; कुलअं, कुवलअं; ( यावत्, तावत्, पारावतः, अनुवर्तमानः, जीवितम् एवं, एव, कुवलयम् )

\* एत्तिअं जेव अत्थि मे वाआच्छलं ( एतावदेवास्ति मे वाक्छलम् ) मुद्रा० अ० १. में चन्दनदासवचन । णत्थि में वाआविहवो ( नास्ति मे वाग्बिभवः ) विक्र० अ० २ में उर्वशीवचन ।

† सहि, अछरावावारपज्जाएण तत्र भअदो सुजस्स उवहाणे वट्ठंती ( सखि, अप्सरोव्यापारपर्यायेण तत्र भवतः सूर्यस्पोपस्थाने वर्तमाना ) विक्र० अ० ४ में चित्रलेखावचन ।

**विशेष—**(क) यह नियम इसी अध्याय के नियम १६ का अपवाद है ।

(ख) विद्युत् शब्द का प्राकृत रूप विज्जू होता है ।

(ग) उक्त नियम से जो आ होता है, उसका उच्चारण कभी-कभी ईषत्स्पृष्टतर या के के समान भी होता है । सरिया, पाडिवया, संपया ।

(घ) अप्सरस् का एक रूप अच्छरसा भी होता है ।

( २१ ) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान रेफान्त शब्द के अन्तिम रू का आदेश होता है । जैसे—धुराः, गिराः, पुरा ( धूः, गीः, पूः )

( २२ ) 'लुध्' शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का 'हा' आदेश होता है । जैसे—छुहा ( लुत् )

( २३ ) 'शरत्' प्रभृति शब्दों के अन्तिम व्यञ्जन के स्थान में 'अ' आदेश होता है । जैसे—सरअ, भिसअ ( शरत्, भिषक् )

\* दुव्वोज्झा वि अवलम्बिआ कज्जधुआ । राव० ४. ४४

† पासम्मि ठिआ तस्स य महुअगोरीओ महुअमहुरगिरा । ( पार्श्वे स्थिताः तस्य याः मधूकगौर्यो मधूकमधुरगिरः । ) कुमा० पा० १. ७५

‡ प्राकृत प्रकाश के 'शरदो दः' वर० सू० ४. १० के अनुसार शरत् के अन्तिम व्यञ्जन का 'द' आदेश होता है । इसके अनुसार शरत् के लिए 'सरअ' न होकर 'सरदो' रूप होता है ।

§ सीआ वाह विहाओ दहमुहवज्झ दिअहो उवगाओ सरओ  
राव० १. १६

( २४ ) 'दिश' और 'प्रावृष्' शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों के स्थान में 'स' आदेश होता है । जैसे—दिसा, † पाउसो† ( दिक्, प्रावृट् )

( २५ ) 'आयुप्' और 'अप्सरस्' के अन्त्य व्यञ्जनों का 'स' आदेश विकल्प से होता है । जैसे—दीहाउसो, ‡ दीहाऊ, अच्छरसा, § अच्छरा() ( अप्सराः )

( २६ ) ककुम्भ शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का ह आदेश होता है । जैसे—कउहा ( ककुम्भ )

( २७ ) धनुष् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन के स्थान में ह आदेश विकल्प से होता है । जैसे—धगुहं, धगू □ ( धनुः )

( २८ ) अन्त्य 'म्' का अनुस्वार होता है । जैसे—जलं, फलं, वच्छं, गिरिं पेच्छ ( जलम्, फलम्, वत्सम्, गिरिम्, प्रेक्षस्व ) ।

\* फुरइ फुरिअइहासं उद्धपडित्तिमिरं मिव दिसा-अक्कं ।  
रावण० १. ५

† दिसाण पाउस-किलत्ताण । ( दिशां प्रावृट्क्लान्तानाम् । ) कुमा०  
पा० १. ६

‡ दीहाऊ वि अदीहाउसमाणी सइ विवेइ-जणो । ( दीर्घायुरपि  
अदीर्घायुर्मानी सदा विवेकिजनः । ) कुमा० पा० १. १०.

§ जीअ-विढत्तच्छरसं । रावण० १३. ४७

() गअण-णिराअ-भिएण-घण मेसि अच्छरेहिं । रावण० ७. ४५.

□ कुसुमधगू धगूहधरो कउहा-मुह-मण्डणम्मि चन्दंमि †  
( कुसुमधनुर्धनुधरः ककुम्भमुखमण्डने चन्द्रे । ) कुमा० पा० १. ११

(२९) कहीं-कहीं अनन्त्य मकार का वैकल्पिक रूप से अनुस्वार होता है। जैसे—वणम्मि, वणंमि (वने)

(३०) स्वर के पर में रहने पर अनन्त्य मकार का अनुस्वार विकल्प से होता है। जैसे—फलं अवहरइ, फलमवहरइ (फल-मवहरति)

**विशेष**—अनुस्वार के अभाव पक्ष में म् का म् ही रह गया। लुक् का अपवाद होने से लुक् (१.१६) नहीं हुआ।

(३१) कभी-कभी 'म्' के अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जनों के स्थान में भी पाक्षिक मकार होता देखा जाता है। जैसे—वीसुंꣳ, पिहं, सम्मं, सक्खं, जं, तं, (विष्वक्, पृथक्, सम्यक्, साक्षात्, यत्, तत्,)

(३२) व्यञ्जन वर्णों के पर में रहने पर ङ् ञ् ण् न् के स्थान में अनुस्वार होता है। जैसे—पंत्ती, परंमुहो, कंचुओ, वंचणं; संमुहो, उक्कंठा; कंसो, अंसो (पङ्क्तिः, पराङ्मुखः, कञ्चुकः, वञ्चनम्; णमुखः, उत्कण्ठा; कंसः, अंशः)

(३३) वक्रप्रभृति शब्दों में कहीं प्रथम, कहीं द्वितीय तथा कहीं तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है।

\* वीसुं वासा-नीसित्त-महि-अले ऊस-मालि-तेअस्स (विष्वग्वर्षानि-षित्तमहीतले उखमालितेजसः। कुमार पा० १.३२.

† वक्रव्यस्रवयस्याश्रु श्मश्रुपुच्छातिमुक्तौ ;

शृष्टिर्मनस्विनी स्पर्शश्रुतप्रतिश्रुतं तथा ।

निवसनं दर्शनञ्चैव वक्रादिष्वेवमादयः ॥

( प्राकृतकल्पलतिका के अनुसार वक्रादि गण । यह गण आकृति गण माना जाता है । )

जैसे—वंकं ( वक्रम् ), तंसं ( त्र्यस्रम् ), अंसुं ( अश्रु ), मंसू ( श्मश्रु ) पुंछं ( पुच्छम् ) गुंछं ( गुच्छम् ), मुंढा अथवा मुंढं ( मूर्द्धा ), फंसो ( स्पर्शः ), बुंधो ( वृध्नः ), कंकोडो ( कर्कोटः ), कुंपलं ( कुट्मलं अथवा कुड्मलम् ), दंसणं ( दर्शनम् ) विंछिओ ( वृश्चिकः ), गिंठी अथवा गुंठी ( गृष्टिः ) मंजारो ( मार्जारः ) \* वयंसो ( वयस्यः ), मणंसिणी ( मनस्विनी ), मणंसिला ( मनःशिला ), पडिसुदं ( प्रतिश्रुतम् ), पडिसुआ ( प्रतिश्रुत् ) † उवरिं ( उपरि ), अहिमुंको ( अभिमुक्तः ) अणित्तयं, अइमुंतयं ( अतिमुक्तकम् ) ‡

( ३४ ) क्त्वा एवं स्वादि के ण और सु के आगे विकल्प से अनुस्वार आता है ।

क्त्वा के आगे जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

काउणं ( अनुस्वार ), काऊण ( अनुस्वार का अभाव ) कृत्वा  
स्वादि के ण के आगे जैसे—

वच्छेणं ( अनुस्वार ), वच्छेण ( अनु० का अभाव ) वृत्तेण  
स्वादि के सु के आगे जैसे—

वच्छेसुं ( अनुस्वार ), वच्छेसु ( अनु० का अभाव ) वृत्तेषु

\* वंकं से मंजारो तक प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का आगम हुआ है ।

† वयंसो से पडिसुआ तक शब्दों में द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

‡ उवरिं से अइमुंतयं तक शब्दों में तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।



( ३५ ) विंशति प्रभृतिः शब्दों के अनुस्वार का लुक् होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
वीसा	विंशतिः
तीसा	त्रिंशत्
सक्कञ्चं	संस्कृतम्
सक्कारो	संस्कारः
सत्तुञ्चं	संस्तुतम्

( ३६ ) मांसादि गणां में अनुस्वार का लुक् विकल्प से होता है। जैसे—

(क) प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत	संस्कृत
मासं, मंसं	मांसम्
मासलं, मंसलं	मांसलम्
किं, किं,	किम्

\* विंशत्यादि गण में विंशति, त्रिंशत्, संस्कृत, संस्कार और संस्तुत शब्द गृहीत हैं।

† मांसादि गण के विषय में प्राकृतप्रकाश में यों लिखा गया है—‘यत्र क्वचित् वृत्तभङ्गभयात् त्यज्यमानः क्रियमाणश्च विन्दुर्भवति स मांसादिषु द्रष्टव्यः।’ अर्थात् छन्दोभङ्ग के भय से जिस किसी शब्द में अनुस्वार छोड़ा जाता या गृहीत होता है, वह शब्द मांसादि गण में माना जाता है।

प्राकृत संस्कृत

कासं, कंसं

कांसम्

सीहो, सिंघो

सिंहः

पासू, पंसू

पांसुः (शुः)

(ख) द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत

संस्कृत

कह, कहं

कथम्

एव, एवं

एवम्

नूण, नूणं

नूनम्

(ग) तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत

संस्कृत

इआणि, इआणिं

इदानीम्

समुहं, संमुहं

सम्मुखम्

केसुअं, किसुअं

किशुकम्

( ३७ ) वर्गों का यदि कोई अक्षर पर में हो तो पूर्व के अनुस्वार के स्थान में पर अक्षर के वर्ग का पञ्चम अक्षर विकल्प से होता है । क, ख, ग, घ के पर में जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

पङ्को, पंको

पङ्कः

सङ्घो संखो

शङ्खः

अङ्गणं, अंगणं

अङ्गनम्

लङ्घणं, लंघणं

लङ्घनम्

च, छ, ज, झ के पर में जैसे—

कञ्चुओ, कंचुओ	कञ्चुकः
लञ्छणां, लंछणां	लाञ्छनम्
व्यञ्जिअं, वंजिअं	व्यञ्जितम्
सञ्जा, संजा	सन्धा

ट, ठ, ड, ढ के पर में जैसे—

कण्टओ, कंटओ	कण्टकः
उक्कण्ठा, उक्कंठा	उत्कण्ठा
कण्डं, कंडं	काण्डम्
सण्ढो, संढो	पण्डः

त, थ, द, ध के पर में जैसे—

अन्तरं, अंतरं	अन्तरम्
पन्थो, पंथो	पन्थाः
चन्दो, चंदो	चन्द्रः
वन्धयो, बंधवो	बान्धवः

प, फ, ब, भ के पर में रहने पर जैसे—

कम्पइ, कंपइ	कम्पते
वम्फइ, वंफइ	काङ्क्षति
कलम्बो, कलंबो	कलम्बः
आरम्भो, आरंभो	आरम्भः

**विशेषः—**(क) पर में वर्ग का अक्षर नहीं रहने से किंसुओं और संहरइ में उक्त नियम लागू नहीं हुआ ।

(ख) प्राकृत के अन्य वैयाकरण उक्त नियम को वैकल्पिक न मान कर नित्य मानते हैं ।

## लिङ्गानुशासन

(३८) प्रावृष्, शरद् और तरणि शब्दों का पुल्लिङ्ग में प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे—पाउसो, ❀ सरओ, † तरणी‡

(३९) दामन्, शिरस् और नभस् से वर्जित सकारान्त तथा नकारान्त शब्द पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

सान्त जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
जसो□	यशः
पओ()	पयः
तमो§	तमः
तेओ△	तेजः
सरो×	सरः

\* जइआ गिहो पयहओ तइअ चिअ किर आसि पाउसो ।  
कुमा० पा० ४. ७८

† दहमुह-वज्भ-दिअहो उवगओ सरओ । रावण० १. १६

‡ न जत्थ दीसइ फुडो तरणी । कुमार० पा० १. २१

□ पारोहो व्व खुडिओ महेन्दस्स जसो । रावण० १. ४

() धीरअं सइ मुहल-घण-पअ-विज्जन्तअं । रावण० २. २४

§ राह-णिहं तमेण व चउदिसं भाविअं । रावण० २. २३

△ देखिए १. ३१ की पादटिप्पणी ।

× अमुणा सरेण हंसाण माणसं तं पि विम्हरिअं । कुमा० पा०

प. ६५

नान्त जैसे—

जम्मो*	जन्म
नम्मो†	नर्म
कम्मो][	कर्म
वम्मो□	वर्म

( ४० ) दामन्, शिरस् और नभस् शब्द नपुंसक लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं । जैसे—दामं( ) ( दाम ), सिरं§ ( शिरः ), नहं × ( नभः )

**विशेषः**—(क) यह नियम पूर्व नियम ( १. ३६ ) में प्रतिषिद्ध दामन् आदि तीनों शब्दों के लिङ्ग का बोधन करता है ।

(ख) नीचे लिखे उदाहरणों में भी उक्त १. ३६ नियम प्रवृत्त नहीं होता है । अर्थान् नपुंसकत्व हो जाता है । जैसे—

\* सहलो जम्मो सभलं च जीवित्रं ताण देव फणि-चिन्ध ।  
कुमा० पा० २. ५६

† इत्र नम्म-पड्ड जल-पाण-रई । कुमा० पा० ४. ३३

□ काही सउहे गमरां संभा-कम्मं च काहीत्र । कुमा० पा० ५;

८७

][ अग्धिअवम्मा ( राजितवर्माणः ) छजिअ सिरक्कया । कुमा०  
पा० ६. ६३

( ) गलिअं घण-लच्छि-रअण-रसणा-दामं । रावण० १. १८

§ उरणांमिअं राणु सिरं जाअं । रावण० ४. ५६

× थाण-प्फिडिअ-सिडिलं पडन्तं व राहं । रावण० ४. ५४

वयं\* ( वयः ), सुमणां† ( सुमनः ), सम्मं‡  
( शर्म ), चम्मं□ ( चर्म )

( ४१ ) अक्षि ( आँख ) के समानार्थक शब्द तथा निम्न निर्दिष्ट वचनादि( )गण के शब्द पुल्लिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं । अक्षि शब्द का पाठ अञ्जल्यादि गण में भी किया गया है, इसलिए स्त्रीलिङ्ग में भी उसका प्रयोग होता है । जैसे—

प्राकृत		संस्कृत
अच्छी§	( पुलिङ्ग )	अक्षिणी
अच्छीइं	( नपुंसक )	अक्षिणी
एसा अच्छी	( स्त्रीलिङ्ग )	एतदक्षि
चक्खू ( पुलिङ्ग )	}	चक्षुषी
चक्खूइं ( नपुंसक )		
णअणो ( पुलिङ्ग )	} Δ	नयनम्
णअणं ( नपुंसक )		

\*. † सन्ववयाणं मञ्जिमवयं व सुमणाण जाइ सुमणां वा ।

कुमा० पा० १. २३

‡ सम्माण मुत्ति-सम्मं न पुहइ-नयराण जंसेयं । कुमा० पा० १. २३

□ चम्मं जाण न अच्छी ।

कुमा० पा० १. २४

( वचनादि गण में वचन, कुल, माहात्मा दुःख, छन्दस्, विजु आदि शब्द गृहीत हैं ।

§ अज्ज वि सा सवइ ते अच्छी । ( अद्यापि सा शपति तेऽक्षिणी )

|| नच्चावियाइँ तेण्ह अच्छीइँ ( नर्तितानि तेनास्माकमक्षिणी )

Δ शाकल्यः शरदं स्त्रीत्वे क्लीबे नान्तञ्च कुरिडनः । पुंक्लीबयोस्तथाख्यातं नयनादि तथा परैः । कल्पलतिका ।

विअसन्ति जत्थ नयणाकि पुण अन्नाण नयणाइँ, कुमा० पा० १. २४.

लोअरणो (पुल्लिङ्ग) } *	लोचनम्
लोअरणं (नपुंसक) }	
वअरणो (पुल्लिङ्ग) } †	वचनम्
वअरणं (नपुंसक) }	
कुलो (पुल्लिङ्ग) }	कुलम्
कुलं (नपुंसक) }	
माहप्पो } ‡	माहात्म्यम्
माहप्पं }	

( ४२ ) किसी किसी आचार्य के मत से पृष्ट, अत्ति और प्रश्न शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—पुट्टी, पुट्टं (पृष्टम्); अच्छी, अच्छं (अत्ति), पण्हा, पण्हो (प्रश्न)।

( ४३ ) गुणादि() शब्द नपुंसक लिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं। जैसे—गुणं □ गुणो (गुणः); देवाणि, देवा (देवाः); खगं, खगो (खड्गः); मण्डलगं, मण्डलगो (मण्डलाग्रः); कररुहं, कररुहो (कररुह); रुक्खाइं, रुक्खा (वृक्षाः)

( ४४ ) इमान्त (इमन् प्रत्यय जिसके अन्त में आया हो )

\* विहसन्तहिओ विहसेन्त लोअरणो । कुमा० पा० ५. ८४.

† गुरुणो वयणा वयणाइं । कुमा० पा० १. २५.

‡ नेत्र और कमल शब्दों का वचनादि में ग्रहण नहीं है। क्योंकि वे संस्कृत के अनुसार ही हैं।

() गुणादि में गुण, देव, विन्दु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह, और वृक्ष शब्द गृहीत हैं।

□ विहवेहिं गुणाइं मगन्ति ( विभवैर्गुणाःमृग्यन्ते ) हेम० १.३४

और अञ्जल्यादि\* गण के शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

इमान्त में जैसे—

प्राकृत

एसा गरिमा; एसो गरिमा  
एसा महिमा; एसो महिमा†

संस्कृत

एष गरिमा  
एष महिमा

अञ्जल्यादि में जैसे—

एसा अंजली, एसो अंजली‡  
चोरिआ (स्त्री०), चोरिओ (पु०)  
निही (स्त्री०), निही (पु०)△  
विही (स्त्री०), विही (पु०)  
गंठी (स्त्री०), गंठी (पु०)

एष अञ्जलिः  
चौर्यम्  
निधिः  
विधिः  
ग्रन्थिः

(४५) जब वाहु शब्द स्त्री-लिङ्ग में प्रयुक्त होता है, तब उसके उकार के स्थान में आकार आदेश होता है। किन्तु जब

\* अञ्जल्यादि गण में अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, वलि, निधि, विधि, रश्मि और ग्रन्थि शब्द गृहीत हैं। रश्मिः स्त्रियां वेति कल्पलतिका। कल्पलतिकायां काश्मीरोष्म सीम शब्दाः पठिताः।

† एयाए महिमाए हरिओ महिमा सुर-पुरीए।

—कुमा० पा० १. २६

‡ जत्थञ्जलिणा कणयं रयणाइं वि अञ्जलीइ देइ जणो।

—वही। १. २७

△ कणय-निही अक्खीणो रयण-निही अक्खया तह वि।

—वही। १. २७



पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होता है तब आकार आदेश न होकर वाहु रूप ही रह जाता है। जैसे एसा बाहाक्ष्; एसो बाह्वां। (एष वाहुः)

(४६) संस्कृत व्याकरण के अनुसार जब किसी अकार के आगे विसर्ग आया हो, तो उस विसर्ग के स्थान में ओ आदेश हो जाता है और ओ के पूर्व के व्यञ्जन सहित अ का लोप होता है। जैसे—सव्वओ (सर्वतः); पुरओ (पुरतः); अग्गओ (अग्रतः); मग्गओ (मार्गतः)

**विशेष :**—यह सार्वत्रिक नियम नहीं है कि शब्द अकारान्त ही हो। अतः व्यञ्जनान्त शब्दों में भी उक्त नियम लागू हो जाता है। जैसे—भवओ (भवतः); भवन्तो (भवन्तः); सन्तो (सन्तः); कुदो (कुतः)

(४७) माल्य शब्द के पर में रहने पर निर् और स्था धातु के पर में रहने पर प्रति के स्थान में क्रमशः ओत् और परि आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
ओमल्लं अथवा ओमालं (ओ)	निर्माल्यम्
निम्मलं (ओ का अभाव)	
परिद्धा (परि आदेश)	प्रतिष्ठा
पइद्धा (परि का अभाव)	

\* तत्थ सिरि-कुमर-बालो बाहाए सव्वओ वि धरिअ-धरो ।

—कुमा० पा० १. २८.

† बाहुसु सिला-अल-डिएसु णिसण्णो । —रावण० ३. १.

परिद्विञ्चं (परि आदेश)	}	प्रतिष्ठितम्
पइद्विञ्चं (परि का अभाव)		

( ४८ ) त्यद् आदिः सर्वनामों से पर में रहनेवाले अव्ययों तथा अव्ययों से पर में रहनेवाले त्यदादि के आदि स्वर का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
अम्हेव (त्यदादि से पर अव्यय के आदि स्वर का लुक्)	वयमेव
अम्हे एव (लुक् का अभाव)	वयमेव
जइहं (अव्यय से पर में आनेवाले त्यदादि के आदि स्वर का लुक्)	} यद्यहम्
जइ अहं (लुक् का अभाव)	

( ४९ ) पद से पर में रहनेवाले अपि अव्यय के आदि अ का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
तं पि; तमवि	तमपि
किं पि; किमवि	किमपि
केण वि; केणावि	केनापि
कहं पि; कहमवि	कथमपि

(५०) पद से पर में रहनेवाले इति अव्यय के आदि इकार

\* त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु किम् ये ही त्यदादि सर्वनाम माने गये हैं ।

का लुक् विकल्प से होता है और स्वर से पर में रहनेवाले तकार का द्वित्व है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
किं ति	किमिति
यं ति	यदिति
दिद्वं ति	दृष्टमिति
न जुत्तं ति	न युक्तमिति
स्वर से पर रहने पर जैसे—	
तह त्ति	तथेति
पिञ्चो त्ति	प्रिय इति
पुरिसो त्ति	पुरुष इति

**विशेष**—पद से पर में नहीं रहने के कारण नीचे लिखे उदाहरण में न तो इति के आदि इ का लुक् हुआ और न तकार का द्वित्व ही। इञ्च\* विञ्च-गुहानिलयाए।

(५१)—जिन श्, ष्, स् से पूर्व अथवा पर में रहनेवाले य्, र्, व्, श्, ष्, स् वर्णों का प्राकृत के नियमानुसार लोप हुआ हो उन शकार, षकार और सकारों के आदि स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे—

\* देखिए—नियम १.६६

† इस नियम को पूर्णतः समझने के लिए हेमचन्द्र के अधोमनयाम् २. ७८ अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम्। २. ८६ न दीर्घानुस्वारात्। २. ९२ आदि सूत्रों का मनन आवश्यक है।

प्राकृत	संस्कृत
पासइ (य लोप २.७८; द्वि० २.८६; = पस्सइ.सलुक् २.७७; दीर्घ) पश्यति	
कासवो ( " " " " = कस्सवो. " " " ) काश्ययः	
वीसमइ ( र लोप २.७६; दीर्घ )	विश्राम्यति
वीसामो ( " " " )	विश्रामः
संफासो ( " " द्वित्व २.८६; संफस्सो.सलुक् २.७७; दीर्घ) संफासो	
आसो ( व लोप २.७६. " " अस्सो " " " ) अश्वः	
वीससइ ( " " " विस्ससइ " " " ) विश्वसिति	
विसासो ( " " " " विस्सासो " " " ) विश्वासः	
दूसासणो ( श लोप २.७७; दीर्घ )	दुश्शासनः
मणासिला ( श लोप २.७७; दीर्घ )	मनःशिला
सीसो ( य लोप २.७८. द्वित्व २.८६. सिस्सो सलुक् २.७७; दीर्घ ) शिष्यः	
पूसो ( " " " " पुस्सो " " " ) पुष्यः	
मनूसो ( " " " " मनुस्सो " " " ) मनुष्यः	
कासओ ( र लोप २.७६ " " कस्सओ " " " ) कर्षकः	
वासा ( " " " " वस्सा " " " ) वर्षाः	
वीसुं ( व लोप २.७६. उत्त्व १.५२. द्वि, विस्सुं " " " ) विष्वक्	
सासं ( य लोप २.७८. " " सस्सं " " " ) सस्यम्	
कासइ ( य लोप २.७८; द्वित्व २.८६; कस्सइ; सलुक् २.७७; दीर्घ ) कस्यचित्	
ऊसो ( र लोप २.७६; " " " उस्सो " " " ) उन्नः	
विकासरो ( व लोप " " " विकस्सरो " " " ) विकस्वरः	
नीसो ( " " " " निस्सो " " " ) निस्वः	
नीसहो ( स लोप २.७७ दीर्घ )	निस्सहः

( ५२ )—समृद्धथादिऋगण के शब्दों में आदि अकार का दीर्घ विकल्प से होता है। जैसे—सामिद्धी, समिद्धी ( समृद्धिः ); पाअडं, पअडं ( प्रकटम् ); पासिद्धी, पसिद्धी ( प्रसिद्धिः ); पाडि-वआ, पडिवआ ( प्रतिपदा ); पासुत्तं, पसुत्तं ( प्रसुप्तम् ); पाडि-सिद्धी, पडिसिद्धी ( प्रतिसिद्धिः ) सारिच्छो, सरिच्छो ( सदृक्षः ); माणंसी, मणंसी ( मनस्वी ); माणंसिणी, मणंसिणी ( मनस्विनी ); आहिआई, \* अहिआई† ( अभिजातिः ); पारोहो, परोहो ( प्ररोहः ), पावासू, पवासू ( प्रवासी ); पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी ( प्रतिस्पर्द्धी ), आसो अस्सो ( अश्वः ) ।

**विशेष**—प्राकृतप्रकाश ने इस गण को आकृति गण माना है। ऊपर उदाहरणों में इसीलिए मनस्वी, प्ररोहः और अश्वः की उक्त गण के भीतर सिद्धि मानी गई है।

( ५३ ) दक्षिण शब्द में आदि अकार का, ह के पर में रहने पर, दीर्घ होता है। जैसे—दाहिणो ( दक्षिणः )

**विशेष**—ह नहीं रहने पर दक्षिणः का दक्खिणो यही रूप रह जाता है।

( ५४ ) स्वप्न आदि शब्दों में आदि 'अ' का इकार होता है। जैसे—सिविणो ( स्वप्नः ); इसि ( इर्षत् ); वेडिसो ( वेतसः ),

\* समृद्धथादि गण के शब्दों का परिगणन यों है—

समृद्धिः, प्रतिसिद्धिश्च, प्रसिद्धिः प्रकटं तथा;

प्रसुप्तश्च प्रतिस्पर्द्धीं प्रतिपच्च मनस्विनी ।

अभिजातिः, सदृक्षश्च समृद्धथादिरयं गणः ॥—कल्पलतिका ।

\* आहिजाई यह पाठान्तर है ।

† अहिजाई यह पाठान्तर है ।

विलिञ्चं ( व्यलीकम् ); विञ्चणं ( व्यजनम् ); मुङ्गो ( मृदङ्गः );  
किविणो ( कृपणः ); उत्तिमो ( उत्तमः ); मिरिञ्चं ( मरियम् );  
दिण्णं\* ( दत्तम् ) ।

विशेष—जहाँ दत्त के त्त के स्थान में णत्व नहीं हुआ हो,  
वहाँ उक्त नियम में बहुल ( प्रायः ) का अधिकार  
होने से इत्व नहीं होता है । जैसे—दत्तं; देवदत्तो ।

( ५५ ) मयट् प्रत्यय में आदि अ के स्थान में 'अइ' आदेश  
विकल्प से होता है । अइ होने पर जैसे—विसमइओ; अइ के  
अभाव में जैसे—विसमओ (विषमयः)

( ५६ ) अभिञ्जां आदि शब्दों में णत्व करने पर ङ के ही

\* प्राकृत प्रकाश में—'इदीषत्पक्वस्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गा-  
ङ्गारेषु' यह सूत्र है । इस सूत्र में 'वेति निवृत्तम्' ऐसा कहा गया है ।  
इसि ( ईषत् ); पिकं ( पक्कं ); सिविणो ( स्वप्नः ); वेडिसो ( वेतसः );  
विञ्चणो ( व्यजनम् ); मिङ्गो ( मृदङ्गः ); इङ्गालो ( अङ्गारः ) ।  
किन्तु प्राकृतमञ्जरी के अनुसार यह इत्व विकल्प से होता है । ईषत्  
पक्कं तथा स्वप्नो वेतसो व्यजनं पुनः । मृदङ्गश्च तथाङ्गार एषु शब्देषु  
सप्तसु । अत इद्वा भवेदीषदीसि वा पुनरीस वा । पक्कं पिकञ्च पक्कञ्च  
तथान्येष्वपि दृश्यताम् । इत्वमीषत्वदे कैश्चिदीकारस्यापि चेष्ट्यते । 'इसि  
सुम्बिअमित्यादि रूपं तेन हि सिद्धयति । शौर-सेनी में अङ्गार और  
वेतस के आदि अकार का इकार नहीं होता । आर्षं में स्वप्न शब्द के  
आदि अकार का उकार भी होता है । जैसे—सुमिणो । इसके लिए  
देखिए—हेम० १. ४६ ।

† जिनके श का णत्व कर देने पर उत्त्व देखा जाता है, वे ही  
अभिशादि हैं । देखिए हेम० १. ५६ ।

अकार का उत्त्व होता है। जैसे—अहिण्णू (अभिज्ञः); सव्वण्णू\* (सर्वज्ञः); आगमण्णू (आगमज्ञः)

**विशेष**—एत्वाभाव में अहिज्जो (अभिज्ञः) और सव्वज्जो (सर्वज्ञः) रूप होते हैं। अभिज्ञादि से भिन्न स्थल में नियम नहीं लगता। पण्णो (प्राज्ञः)।

(५७) शय्या आदि शब्दों में आदि अकार का एकार आदेश होता है। जैसे—सेज्जा‡ (शय्या); सुन्देरं (सुन्दरम्); उक्केरो (उत्करः); तेरहो (त्रयोदश); अच्छेरं (आश्चर्यम्); पेरन्तं (पर्यन्तम्); वेल्ली (वल्ली)

**विशेष**—कोई-कोई प्राकृत वैयाकरण शय्यादि गण में कन्दुक का भी पाठ मानते हैं। उनके मत से गेण्डुअं (कन्दुकम्) रूप होता है।

(५८) अर्पि धातु के आदि अ का ओ आदेश विकल्प से होता है। ओ जैसे—ओप्पेइ; ओ का अभाव जैसे—अप्पेइ

\* पैशाची में सव्वण्णू न होकर सव्वज्जो और शौरसेनी में सव्वण्णो होता है।

† शय्यादि गण में निम्नलिखित शब्द ही माने गये हैं—

शय्या त्रयोदशाश्चर्यं पर्यन्तोत्करवल्लयः;

सौन्दर्यं चेति शय्यादिगणः शेषस्तु पूर्ववत् ॥

‡ प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र ने एच्छय्यादौ १. ५७ और वल्लयुत्करपर्यन्ताश्चर्ये वा १. ५८ इन दो सूत्रों को बनाकर प्रथम सूत्र से नित्य एत्व करते हुए सेज्जा, सुन्देरं, गेण्डुअं, एत्थ (अत्र) इन उदाहरणों की सिद्धि मानी है। दूसरे से वैकल्पिक एत्व करते हुए वेल्ली, वल्ली; उक्केरो, उक्करो; पेरन्तो, पजन्तो; अच्छेरं, अच्छेरिअं, अच्छअरं, अच्छरिअं, अच्छरीअं उदाहरण दिये हैं।

(अर्पयति); एवं ओ आदेश जैसे—ओप्पिञ्चं; ओ का अभाव जैसे—अप्पिञ्चं (अर्पितम्)

( ५९ ) स्वप् धातु में आदि अ के स्थान में ओत् और उत् आदेश पर्याय (बारी-बारी) से होते हैं। ओत् जैसे—सोवइ; उत् जैसे—सुवइ (स्वपिति) ।

( ६० ) नब् के बाद में आनेवाले पुनर् शब्द के अ के स्थान में आ और आइ आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
ण उणा (आ)	न पुनः
ण उणाइ (आइ)	
ण उण (पक्ष में)	

( ६१ ) अव्ययों में और उत्खात,\* चामर, कालक, स्थापित प्रतिस्थापित, संस्थापित, प्राकृत, तालवृन्त हालिक, नाराच, बलाका कुमार, खादित, ब्राह्मण एवं पूर्वाह्न शब्दों में आदि

\* प्राकृत प्रकाश और कल्पलतिका में उक्त उदाहरणों की सिद्धि के लिए 'अदातो यथादिषु वा' सूत्र मिलता है। कल्पलतिका में यथादि गण में शब्दों की परिगणना यों की गई है—

यथातथातालवृन्त प्राकृतोत्खातचामरम् ।  
 चाटुप्रहावप्रस्तारप्रवाहाहालिकस्तथा ॥  
 मार्जारश्च कुमारश्च मार्जारियुकलोपिनि ।  
 संस्थापितं खादितञ्च मरालश्चैवमादयः ॥

प्राकृतमञ्जरीकार यथादि गण की गणना इस प्रकार करते हैं—

यथा चामरदावाग्निप्रहारोत्खातहालिकाः  
 तालवृन्ततथाचाटु यथादिः स्यादयं गणः ।



आकार का अकार विकल्प से होता है। यथा—जह, जहा (यथा); तह, तहा (तथा); अहव, अहवा (अथवा); उक्खअं, उक्खाअं (उत्खातम्); चमरं, चामरं (चामरम्); कलओ, कालओ (कालकः); ठविअं, ठाविअं (स्थापितम्); परिठविअं, परिष्ठापि (प्रतिष्ठापितम्); संठविअं, संठाविअं (संस्थापितम्) पउअं, पाउअं (प्राकृतम्); तलवेएटं, तालवेएटं (तालवृन्तम्); हलिओ, हालिओ (हालिकः); णराओ, णाराओ (नाराचः); वलाआ, वलाआ (वलाका) कुमरो, कुमरो (कुमारः); खइअं, खाइअं (खादितम्); बम्हणो, बाम्हणो (ब्राह्मणः); पुव्वएण्हो, पुव्वाएण्हो (पूर्वाहः)

(६२) घब् को निमित्त मानकर जहाँ आ रूप वृद्धि हुई हो, उस आदि आकार का अत्व विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

पवहो

प्रवाहः

पवाहो

❖ प्राकृत प्रकाश और कल्पलतिका के अनुसार प्रस्तार प्रहार, दावामि, चाटु, मार्जार, मराल, प्रवाह इन शब्दों के आदि आकार का भी अत्व विकल्प से होता है। कल्पलतिका के अनुसार स्थापित, पांशुर तथा माधुर्य के आदि आकार का नित्य ही अत्व होता है। शौरसेनी आदि प्राकृत के अङ्गों में कहीं अत्व का निषेध देखा जाता है। क्रमशः यहाँ उदाहरण दिये जा रहे हैं।—पत्थरो, पत्थारो (प्रस्तारः), पहरो, पहारो (प्रहारः), दवग्गी, दावग्गी (दवामिः); चडु, चाडु (चाटु); मज्जारो, माज्जारो (मार्जारः); मरलो, मरालो (मरालः); पवहो, पवाहो (प्रवाहः)।—ठविअं (स्थापितम्); पंसुरं (पांशुरम्); मधुरीअं (माधुर्यम्); जधा (यथा); तधा (तथा)।

पञ्चरो }  
पञ्चारो }

प्रकारः

**विशेष**—कुछ घञन्त शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता। जैसे—रात्रो (रागः) इत्यादि।

( ६३ ) मांस जैसे शब्दों में अनुस्वार रहने पर (देखिए नियम १. ३६) आदि आकार का अत्व होता है जैसे—मांसं (मांसम्) पंसू (पांशुः); पंसनो (पांसनः); कंसं (कांसम्); कंसिओ (कांसिकः); वंसिओ (वांसिकः); संसिद्धिओ (सांसिद्धिकः); संजत्तिओ (सांयात्रिकः)

( ६४ ) सदा आदि शब्दों में आकार का इकार आदेश विकल्प से होता है। इकार जैसे—सइ, तइ, जइ, णिसिओ। इकार का अभाव जैसे—सआ, तआ, जआ, णिसाओ ( सदा, तदा, यदा, निशाचरः)

( ६५ ) यदि आर्या शब्द श्चश्रु (सास) के अर्थ में प्रयुक्त हो तो 'र्य' के पूर्ववर्ती आकार के स्थान में ऊ होता है। जैसे—ऊजा (सास अर्थ), अजा (श्रेष्ठ अर्थ); (आर्या)।

( ६६ ) मात्रट् प्रत्यय के आकार के स्थान में एकार विकल्प से होता है। एकार आदेश जैसे—एतिअमेत्तं। एकाराभाव जैसे—एतिअमत्तं (एतावन्मात्रम्)।

**विशेष**—कहीं कहीं मात्र शब्द में भी आकार का एकार होता देखा जाता है। जैसे—भोअणमेत्तं (भोजन मात्रम्)

( ६७ ) संयोग से अव्यवहित पूर्ववर्ती दीर्घ का कभी-कभी ह्रस्व रूप हो जाता है। जैसे—अंबं (आम्रम्); तंबं (ताम्रम्);

विरहग्गी (विरहाग्निः); अस्सं (आस्यम्); मुनिंदो (मुनीन्द्रो)  
 तित्थं (तीर्थम्); गुरुल्लावा (गुरुल्लापाः); चुण्णो (चूर्णः); नरिन्दो  
 (नरेन्द्रः); मिलिच्छो (म्लेच्छः); अहरुट्टं (अधरोष्ठम्); नीलुप्पलं  
 (नीलोत्पलम्)

**विशेष**—संयोग पर में नहीं रहने से आयासं ईसरो,  
 ऊसवो आदि शब्दों में उक्त नियम लागू नहीं  
 होता है।

( ६८ ) आदि इकार का संयोग के पर में रहने पर एकार  
 विकल्प से होता है। एकार होने पर जैसे—पेण्डं, रोदा, सेंदूरं,  
 धम्मेल्लं, वेण्हू, पेट्टं, चेण्हं, वेल्लं। एकाराभाव में जैसे—पिण्डं,  
 णिदा, सिंदूरं, धम्मिल्लं, विण्हू, पिट्टं, चिण्हं, विल्लं (पिण्डम्  
 निद्रा, सिन्दूरम्, धम्मिल्लं, विष्णु, पृष्ठम्, चिह्नम्, विल्लम्)

**विशेष**—इस नियम के अनुसार पिण्डादि में जो एत्व  
 होता है, शौरसेनी आदि में नहीं होता। उसमें  
 पिण्डं, णिदा और धम्मिल्लं ये ही रूप होते हैं।

( ६९ ) जब इति शब्द किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त  
 होता है, तब तकारवाले इकार का अकार हो जाता है जैसे—

### प्राकृत

इअ जं पिअवसाणे  
 इअ उअह अण्णह वअणं

### संस्कृत

इति यत् प्रियावसाने  
 इति पश्यतान्यथा वचनम्

**विशेष**—इति शब्द के वाक्यादि में प्रयुक्त नहीं रहने पर  
 अत्व नहीं होता। जैसे—पिअोक्क ति (प्रिय इति);  
 पुरिसो ति (पुरुष इति)

( ७० ) जहाँ निर के रेफ का लोप होता है, वहाँ नि के इकार का ईकार हो जाता है। जैसे—णीसहो (निस्सहः) णीसासो (निःश्वासः)।

**विशेष**—रेफ के लोप का अभाव रहने पर उक्त ईकार नहीं होता। जैसे—णिरओ (निरयः), णिस्सहो (निःसहः)।

(७१) द्वि शब्द और नि उपसर्ग के इकार का उ आदेश होता है। किन्तु कहीं-कहीं यह नियम नहीं भी लागू होता है। द्वि शब्द के विषय में कहीं विकल्प से उत्त्व होता और कहीं ओत्व भी देखा जाता है। द्वि शब्द के विषय में नित्य उत्त्व जैसे—दुवाई, दुवे, दुवअणं (द्वौ, द्विवचनम्); द्वि शब्द में विकल्प से उत्त्व जैसे—दुउणो, दिउणो; दुइओ, दिउओ (द्विगुणः, द्वितीयः)। द्वि शब्द के विषय में नियम की अप्रवृत्ति—दिओ, द्विरओ (द्विजः, द्विरदः); द्वि शब्द के विषय में ओत्व—दोवअणं (द्विवचनम्)। नि उपसर्ग के विषय में इकार का उत्त्व जैसे—गुमज्जइ, गुमणो (निमज्जति, निमग्नः); नि उपसर्ग के विषय में नियम की अप्रवृत्ति जैसे—णिवडइ (निपतति)

( ७२ ) कृब् धातु के प्रयोग में द्विधा शब्द के इकार का ओत्व और उत्त्व होता है। जैसे—

प्राकृत

दोहा इअं (ओकार) }  
दुहा इअं (उकार) }

संस्कृत

द्विधा कृतम्

दोहा किज्जदि (ओकार) }  
दुहा किज्जदि (उकार) } द्विधा क्रियते

**विशेष—**(क) कृब् का प्रयोग नहीं रहने से दिहा-गयं (द्विधागतम्) में उक्त नियम नहीं लगा ।  
(ख) कहीं कहीं केवल (कृब् रहित) द्विधा में भी उत्त्व देखा जाता है । दुहा वि सो सुर-वहू-सत्थो (द्विधापि स सुरवधूसार्थः)

( ७३ ) पानीयक्क गण के शब्दों में दीर्घ ईकार के स्थान में ह्रस्व इकार होता है । जैसे—पाणिञ्चं ( पानीयम् ); अलिञ्चं ( अलीकम् ); जिञ्चइ ( जीवति ); जिञ्चउ ( जीवतु ); विलिञ्चं ( व्रीडितम् ); करिसो ( करीषः ); सिरिसो ( शिरीषः ); दुइञ्चं ( द्वितीयम् ); तइञ्चं ( तृतीयम् ); गहिरं ( गभीरम् ); उवणिञ्चं ( उपनीतम् ); आणिञ्चं ( आनीतम् ); पलिविञ्चं ( प्रदीपितम् ); ओसिञ्चन्तो ( अवसीदन् ); पसिञ्च ( प्रसीद ); गहिञ्चं ( गृहीतम् ); वम्मिञ्चो ( वल्मीकः ); तयाणि ( तदानीम् ) †

\* कल्पलतिका के अनुसार पानीय गण में निम्नलिखित शब्द संगृहीत हैं—

पानीयव्रीडितालीकद्वितीयं च तृतीयकम्,  
यथागृहीतमानीतं गभीरञ्च करीषवत्  
इदानीं च तदानीं च पानीयादिगणो यथा ।

प्राकृतमञ्जरी में इनसे भी कम संगृहीत हुए हैं—

पानीयव्रीडितालीकद्वितृतीयकरीषकाः

गभीरञ्च तदानीञ्च पानीयादिरयं गणः ।

† प्राकृतप्रकाश पानीयादि गण में उपनीत, आनीत, जीवति,

**विशेष**—बहुल का अधिकार आने से अर्थात् इस नियम के प्रायिक होने से पाणीञ्चं, अलीञ्चं, जीञ्चइ, करीसो, उवणीओ ये रूप भी सिद्ध होते हैं।

( ७४ ) तीर्थ शब्द के ईकार का ऊकार तब होता है, जब कि उसके आगे का 'र्थ' ह हो गया हो। ह होने पर ऊकार जैसे—तूईं। ह नहीं होने पर उत्वाभाव और ह्रस्व जैसे—तित्थं (तीथेम्)

( ७५ ) मुकुलादि गण में आदि उकार के स्थान में अकार आदेश होता है।

[प्राकृतप्रकाश में मुकुलादि गण न कहकर मुकुटादि\* गण कहा गया है। जैसे—अन्मुकुटादिषु]

**मुकुलादि अथवा मुकुटादि के उदाहरण**—मउलं (मुकुलम्); गरुई (गुर्वी); मउडां (मुकुटम्); जहुड्डिलो, जहिड्डिलो (युधिष्ठिर:); सोअमल्लं (सौकुमार्यम्); गलोई (गुड्डची)

**विशेष**—कहीं कहीं प्रथम उकार का आकार भी होता देखा जाता है। जैसे—विद्वाओ (विद्रुतः)

जीवतु, प्रदीपित प्रसीद, शिरीष, गृहीत, वल्मीक और अवसीदन् शब्दों का उल्लेख नहीं करता।

\* मुकुटादि गण में प्राकृतमञ्जरी के अनुसार निम्नलिखित शब्द हैं।

मुकुटं मुकुलं गुर्वी सुकुमारो युधिष्ठिरः —

अगुरुपरि शब्दौ च मुकुटादिरयं गणः।

† तुलना कीजिए—भाजपुरी का 'मउर' शब्द और संस्कृत का 'मौलि' शब्द।

( ७६ ) यदि गुरु शब्द के आगे स्वार्थ में क प्रत्यय किया गया हो, तो उस गुरु शब्द के आदि उकार का अ आदेश विकल्प से होता है। जैसे—गरुओ, गुरुओ (गुरुकः गुरु) स्वार्थिक क के अभाव में गुरुओ (गुरुकः । थोड़ा गुरु) होता है।

( ७७ ) उत्साह और उच्छन्न शब्दों को छोड़कर वैसे ही अन्य शब्दों में 'त्स' और 'च्छ' के पर में रहने पर पूर्व के आदि उकार का दीर्घ उकार होता है जैसे—ऊसुओ (उत्सुकः); ऊसओ (उत्सवः); ऊसित्तो (उत्सित्तः), ऊच्छुओ (उच्छुकः । उद्गताः शुका यस्मात् सः)

**विशेष**—उच्छाहो (उत्साहः), उच्छरणो (उच्छन्नः) में उक्त नियमानुसार दीर्घ उकार नहीं होता।

( ७८ ) दुर् उपसर्ग के रेफ का लोप हो जाने पर ह्रस्व उ का दीर्घ ऊ विकल्प से होता है। उकार जैसे—दूसहो, दूहओ; ऊ का अभाव जैसे—दुसहो, दुहओ (दुःसहः, दुर्भगः)

**विशेष**—दुस्सहो विरहो में रेफ का लोप नहीं रहने से वैकल्पिक उकार नहीं हुआ।

( ७९ ) संयुक्त अक्षरों के पर में रहने पर पूर्ववर्ती प्रथम उकार का ओकर होता है। जैसे—

तोण्डं\* (तुण्डम्); मोण्डं (मुण्डम्); पोक्खरं (पुष्करम्); कोट्टिमं (कुट्टिमम्); पोत्थअं (पुस्तकम्); लोद्धओ (लुब्धकः); मोत्ता (मुक्ता) वोक्कन्तं (व्युत्क्रान्तम्); कोन्तलो (कुन्तलः)

\* प्राकृत प्रकाश में 'उत् ओत्तुण्डरूपेषु' १०. २०. यह सूत्र है। कल्पलतिका के अनुसार तुण्डादिगण के शब्द यों परिगणित हैं—तुण्डकुट्टिमकुहालमुक्तामुद्गरलुब्धकाः । पुस्तकञ्चैवमन्येऽपि कुम्भीकुन्तलपुष्कराः ।

**विशेष**—शौरसेनी में यह ओत्व नित्य नहीं होता ।

(८०) शब्द के आदि ऋकार का अकार होता है । जैसे—  
घञं (घृतम्); तणं (तृणम्); कञं (कृतम्) वसहो (वृषभः)  
मञो (मृगः अथवा मृतः) वड्ढी आदि ।

(८१) कृपादिगण के शब्दों में आदि ऋकार का इत्व होता है । जैसे—किवा (कृपा); दिडं (दृष्टम्); सिट्टी (सृष्टिः); भिरु (भृगुः); सिंगारो (शृङ्गारः); घुसिणं (घुसृणम्); इड्ढी (ऋद्धिः); किसारू (कृशानुः) किई (कृतिः); किवणो (कृपणः); भिंगारो (भृङ्गारः); किसो (कृशः); विश्रुओ (वृश्चिकः); विहिओ (बृंहितः); तिपं (तृप्तम्); किच्चं (कृत्यम्); हिअं (हृतम्); विसी (वृषिः); सइ (सकृत्); हिअअं (हृदयम्); दिट्टी (दृष्टिः); गिट्टी (गृष्टिः); भिंगो (भृङ्गः); सियालो (शृगालः) विड्ढी (वृद्धिः); विणा (घृणा); किच्छं (कृच्छम्); निवो (नृपः); विहा (स्पृहा); गिड्ढी (गृद्धिः); किसरो (कृशरः); धिई (धृतिः); किवणं (कृपाणम्); किसिओ (कृषितः); वित्तं (वृत्तम्); वाहित्तं (व्याहृतम्); इसी (ऋषिः); वितिणहो (वितृष्णः); मिडं (मृष्टम्); सिडं (सृष्टम्); पित्थी

† कृपादिगण के उदाहरणों की सिद्धि के लिए प्राकृतप्रकाश में इट्ट्यादिषु सूत्र आया है । ऋष्यादिगण के शब्दों की गणना कल्पलतिका में इस प्रकार की गई है—ऋष्यादिषु कृतिः कृत्या धृष्टो वृषभ-वृश्चिकः । वृपश्च पृथुलो रभ्रा मृगाङ्को मसृणं कृषिः । सृष्टिर्दो भृतो रष्टिवितृष्णकृतकृत्यः । संशावाजककृष्णोऽयमृष्यादिगण ईदृशः । प्राकृतमञ्जरीकार के मत से ऋष्यादिगण यों है—ऋषिर्दृष्टिः कृशो वृष्टिः कृपाशृङ्गारवृश्चिकाः; मृदङ्गो हृदयं भृङ्गः शृगाल इति सृष्टयः । विमृष्टश्च मृगस्तद्वद् भृत्यश्च कृशरस्तथा । आकृतिः प्रकृतिश्चैव स्यादृश्यादिरयं गणः ।



(पृथ्वी); समिद्धी: (समृद्धि:); किवो (कृप:); विच्ची (वृत्ति:); उक्किट्टं (उत्कृष्टम्)

**विशेष—**कल्पलतिका के अनुसार नीचे लिखे शब्दों में ऋकार का नित्य ही इत्व होता है शेष में विकल्प से—भृङ्गभृङ्गारभृङ्गाराः कृपाणां कृपाणः कृपा । शृगालहृदये वृष्टिर्दृष्टिवृंहितमेव च । समृद्धि-कृशरात्प्रिवृत्ति वृद्धिस्तु कृत्रिमम् । कृकराकुस्तथेत्यादौ नित्यमित्वं ऋतो मतम् । विकल्प जैसे—विसो, वसो (वृषः) किरहो, कणहो (विष्णुवाची कृष्ण)

( ८२ ) पृष्ठ शब्द जहाँ किसी समास आदि में उत्तर पद नहीं हो, वहाँ ऋ का इ विकल्प से होता है जैसे—पिट्टं, पट्टं (पृष्ठम्)

**विशेष—**महिविट्टं (महीपृष्ठम्) में उत्तरपद रहने से पृष्ठ शब्द का वैकल्पिक इत्व नहीं हुआ ।

( ८३ ) ऋतु प्रभृतिः\* शब्दों में आदि ऋ का उकार होता है । जैसे—उदू (ऋतु:); पउत्ती (प्रवृत्ति:); परामुट्टो (परामृष्ट:); पाउसो (प्रावृट्); परहुत्त्रो (परभृत्); णिव्वुत्त्रं, णिव्वुदं (निवृत्तम्); उसहो (ऋषभ:); भाउत्त्रो (भ्रातृक:); पहुदि (प्रभृति); संवुदं

\* कल्पलतिका में ऋत्वादि गण यो माना गया है—

ऋतुर्मृदङ्गो निभृतं वृतः परभृतो मृतः । प्रावृट् प्रवृत्तिर्वृत्तान्तोमातृका भ्रातृकस्तथा । मृणालपृथिवीवृन्दावनजामातृका अपि । वृन्दारकश्च प्रभृतिः पृष्ठ वृद्धादयः परे ॥ अत्र लक्ष्यानुसारतोऽन्येऽपि शब्दा ज्ञेयाः । (यहाँ लक्ष्यों के अनुसार ऐसे ही दूसरे शब्दों को भी जानना चाहिए ।)

(संवृत्तम्); बुद्धो (वृद्धः) मुडालं (मृणालम्); पाहुदं (प्राभृतम्); पुहं (पृष्ठम्); पुहइ, पुहवी (पृथिवी), पाउअं (प्रावृतम्) मुई (भृतिः); विउअं (विवृतम्); बुंदावणं (वृन्दावनम्); जामाउओ, जामादुओ (जामातृकः); पिउओ (पितृकः); णिहुअं, णिहुदं (निभृतम्); णिवुई (निर्वृतिः); बुड्ढी (वृद्धिः); माउआ (मातृका); णिउअं (निवृतम्); वुत्तान्तो (वृत्तान्तः); उजू (ऋजुः); पुहुवी (पृथिवी); वुदं (वृन्दम्); माऊ, मादु (माता)

**विशेष**—मृगाङ्क शब्द में मुअंको और मअंको दोनों रूप होंगे ।

( ८४ ) समास आदि में जो पद प्रधान न होकर गौण होता है, उसके अन्तिम ऋ के स्थान में उकार होता है । जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

माउ मण्डलं }  
मादु-मण्डलं }

मातृमण्डलम्

माउ-हरं }  
मादु-हरं }

मातृगृहम्

पिउ-वणं

पितृवनम्

( ८५ ) गौण (अप्रधान) मातृ शब्द के ऋकार का इकार विकल्प से होता है । जैसे—माइ-मण्डलं, माइ-हरं । पत्र में—माउ (दु)-मण्डलं; माउ (दु)-हरं

**विशेष**—कभी-कभी प्रधान (अगौण) मातृ के ऋकार का भी इत्व हो जाता है । जैसे—माइणो (मातुः)

( ८६ ) व्यञ्जनसे सम्पर्करहित ऋ का रि आदेश कहीं विकल्प

से और कहीं नित्य होता है। जैसे—रिद्धी (ऋद्धिः); रिणं, ऋणं (ऋणम्); रिञ्जू, उञ्जू (ऋजुः); रिसहो, उसहो (ऋषभः); रिऊ, उदू (ऋतुः); रिसो, इसी (ऋषिः)

( ८७ ) जिस दृश धातु के आगे कृत् के क्तिप्, टक् और सक् प्रत्यय आये हों, उसके ऋ का रि आदेश होता है। जैसे—एआरिसो, तारिसो, सरिसो, सरिच्छो, एरिसो, केरिसो अण्णारिसो अम्हारिसो, तुम्हारिसो।

विशेष—शौरसेनी, पैशाची और अपभ्रंश में इन शब्दों के रूप कुछ और ही होते हैं।

शौर०	जादिसं	यादृशम्
	तादिसं	तादृशम्
पै०	जातिसं	यादृशम्
	तातिसं	तादृशम्
अप०	जइशं	यादृशम्
	तइशं	तादृशम्

( ८८ ) किसी भी शब्द में आदि ऐकार का एकार होता है। जैसे—सेलो (शैलः); सेत्तं, सेच्चं (शैत्यम्); एरावणो (ऐरावतः); तेल्लुकं (त्रैलोक्यम्); केलासो (कैलासः); केठवो (कैतवः); वेहव्वं (वैधव्यम्)

( ८९ ) दैत्यादि\* गण में ऐ के स्थान में ए का अपवाद

\* कल्पलतिका के अनुसार दैत्यादि गण के शब्द निम्नलिखित हैं—

दैत्यादौ वैश्यवैशाखवैशम्पायनकैतवाः;

स्वरवैदेहवैदेशक्षेत्रवैषयिका अपि।

दैत्यादिष्वपि विज्ञेयास्तथा वैदेशिकादयः ॥

अइ आदेश होता है। जैसे—\*दइच्चं (दैत्यम्); दइरणं (दैन्यम्); अइसरिअं (ऐश्वर्यम्); भइरवो (भैरवः); दइवअं (दैवतम्); वइआलीओ (वैतालिकः); वइएसो (वैदेशः); वइएहो (वैदेहः); वइअव्भो (वैदर्भः); वइस्साणरो (वेश्चानरः); कैअवं (कैतवम्); वइसाहो (वैशाखः); वइसालो (वैशालः)

( ६० ) वैरादिां गण में ऐत् के स्थान में अइ आदेश विकल्प से होता है। जैसे—वइरं, वेरं (वैरम्); कइलासो, केलासो (कैलासः); कइरवं, केरवं (कैरवम्); वइसवणो, वेसवणो (वैश्रवणः); वइसंपाअणो, वेसंपाअणो (वैशम्पायनः); वइआलिओ, वेआलिओ (वैतालिकः); वइसिओ, वेसिओ (वैशिकः); चइत्तो, चेत्तो (चैत्रः)

( ६१ ) शब्द के आदि औकार का ओकार आदेश होता है। जैसे—कोमुई (कौमुदी); जोवणं (यौवनम्) कोत्युहो (कौस्तुभः); सोहग्गं (सौभाग्यम्), दोहग्गं (दौर्भाग्यम्) गोदमो (गौतमः), कोसंबी (कौशाम्बी), कौचो (कौञ्चः), कोसिओ (कौशिकः)

( ६२ ) सौन्दर्यादिगण के शब्दों में औत् के स्थान में उत्

\* प्राकृतमञ्जरी के अनुसार दैत्यादि गण में निम्नलिखित शब्द परिग्रहीत हैं—

दैत्यः स्वैरं चैत्यं कैटभवेदेहको च वैशाखः;

वैशिकमैरववैशम्पायनवैदेशिकाश्च दैत्यादिः ।

† वैरादिगण में वैर, कैतव, चैत्र, कैलास, दैव और भैरव ग्रहीत हैं। शौरसेनी में दैव शब्द में यह नियम लागू नहीं होता ।

‡ कल्पलतिका के अनुसार सौन्दर्यादिगण के शब्द यों हैं—

सौन्दर्यं शौण्डिको दौवारिकः शौण्डोपरिष्ठकम् ।

आदेश होता है। जैसे—सुन्देरं, सुन्दरिञ्चं (सौन्दर्यम्) सुंडो (शौण्डः); दुवारिञ्चो (दौवारिकः); मुञ्जाय (अ)णो (मौञ्जायनः); सुगन्धत्तरां (सौगन्ध्यम्); पुलोमी (पौलोमी); सुवणिणञ्चो (सौवर्णिकः)

( ६३ ) कौत्सेयक और पौरादि गण के शब्दों में औत् के स्थान में अउ आदेश होता है। जैसे—कउक्खेअञ्चो, कुक्खेअञ्चो (कौत्सेयकः); पउरो (पौरः); कउरञ्चो(वो) (कौरवः); पउरिसं (पौरुषम्); सउहं (सौधम्); गउडो (गौडः); मउली (मौलिः); मउणं (मौनम्); सउरा (सौराः); कउला (कौलाः)।

**विशेष**—कौशल शब्द के विषय में दो रूप होते हैं—  
कोसलो, कउसलो (कौशलम्)

( ६४ ) अव और अप उपसर्गों के आदि स्वर का आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ 'औत्' विकल्प से होता है। जैसे—ओआसो, अवआसो (अवकाशः); ओसरइ,; अवसरइ (अपसरति); ओहरां, अअहरां (अपघनम्)।

**विशेष**—उक्त नियम कहीं पर नहीं भी लागू होता है।  
जैसे—अवगअं (अपगतम्); अवसदो (अपसदः)

कौत्सेयः पौरुषः पौलोमिमौञ्जदौस्याधिकादयः ॥

प्राकृतमञ्जरी के अनुसार—

सौन्दर्यशौण्डकौत्सेयास्तथा मौञ्जायनो ऽपि च ।

तथा दौवारिकश्चेति सौन्दर्यादिरयं गणः ॥

† कल्पलतिका के अनुसार पौरादि निम्नलिखित हैं—

पौरपौरुषशैलानि गौडक्षौरितकौरवाः ।

कोशलमौलिबौचित्यं पौराकृतिगणा मताः ॥

( ६५ ) आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ उप के आदि स्वर के स्थान में ऊत् और ओत् आदेश विकल्प होते हैं । जैसे—  
ऊहसिञ्चं, ओहसिञ्चं (उपहसितम्); ऊआसो, ओआसो  
(उपवासः) ।

❀ प्रथम अध्याय समाप्त ❀



## द्वितीय अध्याय

( १ ) स्वर से पर में रहनेवाले, अनादिभूत तथा दूसरे किसी व्यञ्जन से संयोगरहित क, ग, च, ज, त, द, प, य और व अक्षरों का प्रायः लुक् होता है । कलोप जैसे—लोओ, सअदं,\* मउलो, णउलो, णोआ (लोकः, शकटम्, मुकुलम्, नकुलः, नौका); गलोप जैसे—णओ,† णअरं‡, मअङ्को§, साअरो, भाइरही (नगो, नगरम्, मृगाङ्कः, सागरः, भागीरथी); चलोप जैसे—सई, कअग्गहो,() वअणं, सूई, रोअदि, उइदं, सूअअं (शची, कचग्रहः, वचनम्, सूची, रोचते, उचितम्, सूचकम्); जलोप जैसे—रअओ, पआवई,□ गओ, रअदं (रजकः, प्रजापतिः, गजः, रजतम्); तलोप जैसे—विआणं, किअं, रसाअलं,)( रअणं (वितानम्, कृतम्, रसातलम्, रत्नम्); दलोप जैसे—

\* सयदं पाठान्तर हेम० व्या० में है ।

† हेम० व्या० में 'नओ' पाठान्तर है ।

‡ हेम० व्या० में 'नयरं' पाठान्तर है ।

§ हेम० व्या० में 'मयङ्को' पा० ।

() हेम० व्या० 'कयग्गहो' पा० ।

□ हेम० व्या० 'पयावई' पा० ।

) हेम० व्या० 'रसा-यलं' पा० ।

जइ, नई, गञ्जाः, मञ्जणो, वञ्जणं, मञ्जो (यदि, नदी, गदा, मदनः, वदनम् मदः); पलोप जैसे—रिऊ, सुउरिसो, कई, विउलं (रिपुः, सुपुरुषः, कपिः, विपुलम्); यलोप जैसे—दञ्जालू, णञ्जणं △, विञ्जोञ्जो, वाउणा (दयालुः, नयनम्, वियोगः वायुना); वलोप जैसे—जीञ्जो, दिञ्जहो, लाञ्जणं, (विञ्जोहो, वडञ्जणलो § (जीवः, दिवसः, लावण्यम्, विबोधः, वडवानलः)

**विशेष—**(क) प्रायः कहने से कहीं-कहीं लोप नहीं होता है। जैसे—सुकुसुमं, प्रयाग-जलं, पियगमणं, सुगदो, अगुरु, () सचावं, विजणं, अतुलं, सुतरं, □ विदुरो, आदरो, अपारो, अजसो देवो, दाणवो सवहुमानं इत्यादि।

(ख) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण संकरो, संगमो, णक्कंचरो, ] [ धणंजञ्जो,

\* हेम० व्या० 'गया' पा० ।

† हेम० व्या० 'मयणो' पा० ।

‡ हेम० व्या० 'दयालू' पा० ।

△ 'नयणं' पा० हेम० व्या० ।

) ('लायणं' पा० हेम० व्या० ।

§ 'वलयाणलो' पा० हेम० व्या० ।

○ 'अगरू' पा० हेम० व्या० ।

□ 'सुतारं' पा० हेम० व्या० ।

] [नक्कंचरो पा० हेम० व्या० । नत्तंचरो भी पाठ मिलता है ।



पुरंदरो और संवरो इत्यादि में लोप नहीं होता ।

- ( ग ) अक्को, वग्गो, अग्घो, मग्गो, आदि में संयुक्त होने के कारण लोप नहीं होता है ।
- ( घ ) कालो, गन्धो, चोरो, जारो, तरु, दवो पावं आदि में आद्यक्षर होने के कारण लोप नहीं होता है ।
- ( ङ ) समास में उत्तर पद के आदि का लोप होता और नहीं भी होता है । जैसे—सह अरो, सहचरो, जलअरो, जलचरो, सह-आरो, सहकारो आदि ।
- ( च ) कुछ लोग किन्हीं प्रयोगों में क का लोप नहीं कर के ग आदेश करते हैं जैसे—एगत्तणं (एकत्वम्); एगो (एक:); अमुगो (अमुक:); आगारो (आकार:) आगरिसो (आकर्ष:)
- ( छ ) कहीं आदि के कादि वर्णों का भी लोप, कहीं च का ज और कहीं आष में च का ट आदेश भी होते देखे जाते हैं ।

---

\* शौरसेनी में पताका, व्यापृत, और गर्भित को छोड़ कर अन्य त के स्थान में द आदेश होता है । पताका का पडाआ, व्यापृत का व्यावडो और गर्भित का गग्भिणं में रूप होते हैं । भरत के तकार का धकार होकर भरधो रूप होता है । इसी प्रकार द का प्राथः लोप नहीं

आदि के कादि के लोप जैसे—स उण  
(स पुनः), सो अ (स च,) इन्धं (चिह्नम्);  
च का ज जैसे—पिसाजी ( पिशाची);  
आर्ष में च का ट जैसे—आउण्टणं  
(आकुञ्चनम्)

**विशेष**—जहाँ नियम २.१. के अनुसार कादि वर्णों के लोप हो चुकने पर अ अथवा आ अवशिष्ट हों, वहाँ लघुप्रयत्नतर यकार का उच्चारण जानना चाहिए।

(२) अवर्ण से पर में अनादि प का लुक् नहीं होता है। जैसे—सबहो (शपथः); सावो (शापः)

(३) स्वर से पर में होनेवाले असंयुक्त तथा अनादि ख, घ, थ, ध और भ अक्षरों के स्थान में प्रायः ह आदेश होता है।

होता। जैसे—बदणं, सौदामिणी। प्रायः कहने से हिम्रं में लोप हो जाता है। मागधी में छ के स्थान में श्र आदेश होता है। ज घ के स्थान में य होता है। य का लोप नहीं होता। पैशाची में त और द के स्थान में त होता है। हृदयं का हितयं रूप होता है। अपभ्रंश में स्वर से परे अनादि और असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान में क्रमशः ग, घ, द, ध, व और भ ये ही आदेश होते हैं। पैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान में क्रमशः वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर होते हैं। जैसे नगरं का नकरं तथा भगवती का फकवती। प्रसङ्ग उपस्थित हो जाने के कारण यहाँ इतनी बातें लिखी गई।

ख का ह जैसे—महो, मुहं, मेहला, लिहइ, पमुहेण, सही, आलिहिदा (मखः, मुखम्, मेखला, लिखति, प्रमुखेण, सखी, आलिखिता); घ का ह जैसे—मेहो. जहणं, माहो, लाइअं, लहु (मेघः, जघनम्, माघः, लाघवम्, लघु); थ का ह जैसे—नाहोॐ, गाहा, मिहुणं, सवहो कहेहि, कहं, मणोरहो (नाथः, गाथा, मिथुनम्, शपथः, कथय, कथम्, मनोरथः); ध का ह जैसे—साहू, राहा, वाहो, वहिरो, वाहइ, इंदहणू, अहिअं, माहवीलदा, महुअरो (साधुः, राधा, वाधाः, वधिरः, वाधते, इन्द्रधनुः, अधिकम्, माधवीलता, मधुकरः); भ का ह जैसे—सहा, सहावो, एहं, सोहइ, सोहणं, आहरणं, दुल्लहो (सभा, स्वभावः, नभः, शोभते, शोभनम्, आभरणम्, दुर्लभः)

विशेष—(क) स्वर से पर में नहीं रहने से—संखो (शङ्खः) संघो (सङ्घः) और कंथा (कन्था) में ह आदेश नहीं हुआ।

(ख) संयुक्त होने से—लुम्पइ (लुम्पति) और अक्खइ (अक्षति) में ह आदेश नहीं हुआ।

(ग) आदि में होने के कारण गज्जंतो (गर्जयन्) खे और गज्जइ घणो (गर्जयतिघणः) में आदेश नहीं हुआ।

\* पृथिवी और प्रथम को छोड़कर शौरसेनी में थ का प्रायः घ होता है। जैसे—जघा (यथा), तघा (तथा) और अरणघा (अन्यथा)। पृथिवी के लिए पट्टुबी और प्रथम के लिए पट्टुम होते हैं।

† शौरसेनी में ध क्ष द के समान और भ क्ष व के समान उच्चारण भर होता है लेख में तो ध और भ ही रहते हैं।

(घ) प्रायः कथन के बल से पखलो (प्रखलः), पलंबघणो (प्रलम्बघ्नः), अधीरो (अधीरः), अधण्णो (अधन्यः); जिणधम्मो (जिनधर्मः) इत्यादि में ह आदेश नहीं होता ।

( ४ ) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि ट ठ और ड के स्थान में क्रमशः ड ढ और ल आदेश होते हैं । ट का ड जैसे—णडोक्क, भडो, विडवो, घडो, घडइ ( नटः, भटः, विटपः, घटः, घटते ); ठ का ढ जैसे—मढो, सढो कमढो, कुढारो ( मठः, शठः, कमठः, कुठारः ); ड का ल जैसे—बलवा-मुहं, गरुलो, कीलइ, तलावो, बलही ( बढवामुखम्, गरुडः क्रीडति, तडागः, बलही )

**विशेष**—(क) स्वर से पर में ऐसा कहने से घंटा ( घण्टा ) वैकुंठो ( वैकुण्ठः ); मोंडं ( मुण्डम् ) एवं कौंडं ( कुण्डम् ) में ट, ठ और ड के स्थान में क्रमशः ड, ढ और ल नहीं हुए ।

(ख) संयुक्त रहने के कारण खट्टा, चिट्टइ ( तिष्ठति ) खड्गो के ट, ठ और ड के स्थान में ड, ढ और ल नहीं हुए ।

(ग) अनादि नहीं होने से टंकः, ठाई ( स्थायी ) और डिंभो में ट, ठ ड के ड, ढ, ल नहीं हुए ।

(घ) कहीं पर ट का ड नहीं होता और ग्यन्त पटं धातु में ट का ल आदेश विकल्प से होता है । अटइ ( अटति ) में डादेश का अभाव और फालेइ, फाडेइ ( पाटयति ) में ट के स्थान में ल और ड पर्याय से हुए ।

(ड) ड का ल आदेश प्रायिक है, अतः आगेवाले शब्दों में विकल्प से ल होता है। वलिसं, वडिसं, दालिमं, दाडिमं; गुलो, गुडो; णाली, नाडी; णलं, णडं। प्राकृत-प्रकाशकार दाडिम, वडिस, निविड में ल आदेश नहीं मानते हैं। कल्पलतिका के मत से केवल पीडित और गुड में वैकल्पिक लत्व होता है। वस्तुतः निविडं, पीडिअं और णीडं में ल का अभाव ही उचित है।

(५) 'प्रति' उपसर्ग में तकार के स्थान में प्रायः डकार आदेश होता है। जैसे :—पडिवणं ( प्रतिपन्नम् ); पडिसरो ( प्रतिसरः ); पडिमा ( प्रतिमा )

विशेष—'प्रायः' कहने से आगे के उदाहरणों में डकार विधान वाला नियम नहीं लागू हुआ ! पइवं ( प्रतीपम् ); संपई ( संप्रति ); पइट्टाणं ( प्रतिष्ठानम् ); पइट्टा ( प्रतिष्ठा ); पइण्णा ( प्रतिज्ञा )

( ६ ) ऋत्वादि गणः के शब्दों में तकार का दकार होता है। जैसे :—उदू ( ऋतुः ); रअदं ( रजतम् ); आअदो ( आगतः ); णिवुदी ( निर्वृतिः ); आउदी ( आवृतिः ); संवुदी ( संवृतिः ); सुइदी ( सुकृतिः ); आइदी ( आकृतिः ); हदो ( हतः ); संजदो

\* ऋत्वादिगण के शब्द इस प्रकार उल्लिखित हैं :—

ऋतुः किरातो रजतञ्च तातः सुसङ्गतं संयतसाम्प्रतञ्च  
सुसंस्कृतिप्रीतिसमानशब्दास्तथाकृतिर्निर्वृतिरुल्यमेतत् ।  
उपसर्गसमायुक्ते कृतिवृत्ती वृतागतौ ।  
ऋत्वादिगणने नेया अन्ये शिष्टानुसारतः ॥

(संयतः); विउदं (विवृतम्); संजादो (संयातः); संपदि (संप्रति); पडिवद्दी (प्रतिपत्तिः)।

**विशेष**—उक्त नियम प्राकृतप्रकाश ( २. ७. ) के ऋत्वादिषु तो दः सूत्र के अनुसार बनाया गया है। किन्तु साधारण प्राकृत के लिए इस नियम को नहीं मानते। वे कहते हैं कि—‘स तु शौरसेनी-मागधी-विषय एव दृश्यत इति नोच्यते।’ अर्थात् यतः यह सूत्र शौरसेनी और मागधी भाषाओं में ही लागू होता है अतः हम इसका परित्याग करते हैं।

अतः साधारण प्राकृत में उक्त गण में तकार का दकार आदेश नहीं होता। रूप इस प्रकार के होंगे—उऊ ( ऋतुः ); रअअं (रजतम्); एअं ( एतम् ); गअो ( गतः ); संपअं (साम्प्रतम्); जअो ( यतः ); तअो ( ततः ); कअं ( कृतम् ); हअासो ( हताशः ); ताअो ( तातः )

( ७ ) दंश और दह, प्रदोपि और दीप धातुओं के दकार के स्थान में क्रमशः ड, ल और वैकल्पिक ध आदेश होते हैं। जैसे :—

प्राकृत		संस्कृत
डसइ	( द = ड )	दशति
डहइ	( द = ड )	दहति
पलीवेइ	( द = ल )	प्रदीपयति
पलित्तं	( द = ल )	प्रदीप्तम्
धिप्पइ, दिप्पइ	( वैकल्पिक ध )	दीप्यति

( ८ ) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादिः न का ण आदेश होता है । किन्तु आदि में वर्तमान असंयुक्त न का विकल्प से ण होता है । स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण जैसे:—सअणं ( शयनम् ); कणअं ( कनकम् ); वअणं ( वचनम् ); माणुसो ( मानुषः ) । आदि में असंयुक्त न का वैकल्पिक ण जैसे:—णरो, नरो ( नरः ); णई, नई ( नदी )

**विशेष**—आदि में वर्तमान संयुक्त न का वैकल्पिक णत्व नहीं होता । जैसे:—न्यायः

( ९ ) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि प के स्थान में प्रायः व आदेश हो जाता है । जैसे:—सवहो ( शपथः ) सावो ( शापः ); उवसग्गो ( उपसर्गः ); पईवो ( प्रदीपः ); कासवो ( काश्यपः ); पावं ( पापम् ); उवमा ( उपमा ); महिवालो ( महीपालः ); गोवेइ ( गोपयति ); कलावो ( कलापः ); तवइ ( तपति ); कवोलो ( कपोलः )

**विशेष**—( क ) स्वर से पर में रहनेवाले कहने से कम्पइ ( कम्पते ) में व आदेश नहीं हुआ ।

( ख ) असंयुक्त कहने से अप्पमत्तो ( अप्रमत्तः ) में व आदेश नहीं हुआ ।

\* प्राकृत-प्रकाश २. ४. सर्वत्र ( आदि और अनादि में ) न का ण मानता है । ऊपर का नियम ८ हेमचन्द्र के अनुसार है । पैशाची में णकार का नकार हो जाता है ।

† शौरसेनी में अपूर्व शब्द के स्थान में 'अवर्ख्वं' और अउव्वं ये दो रूप होते हैं ।

( ग ) आदि में रहने के कारण पढइ (पठति) के प का व नहीं हुआ ।

( घ ) प्रायः कहने से रिऊ ( रिपुः ) में व नहीं हुआ ।

( १० ) एयन्त पट धातु में प के स्थान में फ आदेश होता है । जैसे:—फालेइ, फाडेइ ( पाटयति )

( ११ ) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि फ के स्थान में कहीं भ, कहीं ह और कहीं दोनों ( भ और ह ) होते हैं । भ जैसे:—रेभो ( रेफः ); सिभा ( शिफा ), फ का ह जैसे:—मुत्ताहलं ( मुक्ताफलम् ); दोनों जैसे:—सेभालिआ, सेहालिआ ( शेफालिका ); सभरी, सहरी ( शफरी )

विशेष—( क ) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण गुम्फइ ( गुम्फति ) में उक्त नियम नहीं लगा ।

( ख ) संयुक्त होने के कारण पुष्फं ( पुष्पम् ) में नियम लागू नहीं हुआ ।

( ग ) आदि में होने के कारण फणी के फ को उक्त आदेश नहीं हुए ।

( १२ ) स्वर से पर में रहनेवाले, असंयुक्त और अनादि ब का व आदेश होता है । जैसे:—अलावू, अलाऊ ( अलावू ); सवलो ( शबलः )

( १३ ) विसिनी शब्द के व के स्थान में भ आदेश होता है । जैसे:—भिसिणी ( विसिनी )



**विशेष**—उक्त नियम में विस के स्त्रीलिङ्ग रूप विसिनी का उल्लेख हुआ है। अतः विसं ( विग्गम् ) में यह नियम लागू नहीं हुआ।

( १४ ) पद के आदि य का जञ्ज आदेश होता है। जैसे:—  
जसो ( यशः ); जमो ( यमः ); जाइ ( याति )

**विशेष**—( क ) पद के आदि में न होने के कारण अव-  
अवो ( अवयवः ) में नियम नहीं लगा।

( ख ) उपसर्गयुक्त हो जाने पर अनादि य का भी ज आदेश होता है। जैसे:—संजमो ( संयमः );  
संजोत्रो ( संयोगः ); अवजसो ( अपयशः )।

( ग ) कल्पलतिका के मत से सामान्यतः उत्तर  
पदस्थ य का भी ज आदेश होता है। जैसे:—  
गाढ-जोव्वणा ( गाढयौवना ); अजोग्गो ( अयोग्यः )

( घ ) कभी-कभी आदि य का लोप भी हो जाता  
है। जैसे:—अहाजाअं ( यथाजातम् )

( १५ ) तीय एवं कृत प्रत्ययों के यकार के स्थान में द्विरुक्त  
ज ( ज्ज ) आदेश विकल्प से होता है। जैसे:—

प्राकृत	संस्कृत
दीज्जी, दीओ	द्वितीयः
करणिज्जं, करणीअं	करणीयम्
रमणिज्जं, रमणीअं	रमणीयम्
पेज्जं, पेअं	पेयम्

\* मागधी में य का ज आदेश नहीं होता है।

( १६ ) युष्मद् शब्द के य के स्थान में त आदेश होता है ।  
जैसे:—तुम्हारिसो ( युष्माद्दशः )

( १७ ) छाया शब्द में यकार के स्थान में हकार आदेश होता है । जैसे:—छाहा ( छाया )

( १८ ) हरिद्रादिः गण के शब्दों में असंयुक्त र के स्थान में ल आदेश होता है । जैसे:—हलदा (हरिद्रा); दलिदो (दरिद्रः)

( १९ ) संस्कृत वर्णमाला के श और ष के स्थान में प्राकृत में स आदेश होता है । जैसे:—कुसो ( कुशः ); सेसो ( शेषः )

**विशेष**—वस्तुस्थिति तो यह है कि प्राकृत वर्णमाला में श और ष वर्णों के लिए कोई स्थान ही नहीं है ।

( २० ) अनुस्वार से पर में रहनेवाले ह के स्थान में घ आदेश होता है । जैसे:—सिघो, सीहो ( सिंहः ); संधारो, संहारो ( संहारः )

**विशेष**—कहीं-कहीं अनुस्वार से पर में नहीं रहने पर भी ह का घ होता देखा जाता है । जैसे:—दाघो ( दाहः )

### द्वितीय अध्याय समाप्त

\* कल्पलतिका के मत से हरिद्रादि गण यों है:—

हरिद्रामुखराङ्गारमुकुमारयुधिष्ठिराः ।

करुणाचरणञ्चैव परिखापरिधावपि ॥

किरातश्चाङ्गुरी चैव दरिद्रश्चैवमादयः ।

आदि शब्द से पारिभद्र, जठर, निष्ठुर और अपद्वार शब्दों का इस गणःमें संग्रह किया जाता है । चरण शब्द शरीराङ्गवाची गृहीत है । इसलिए 'पद्मस चरणं' में नियम नहीं लगता । मागधी और पेशाची में र के स्थान में ल होता है ।

# प्राकृत व्याकरण

## तृतीय अध्याय

( १ ) क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स व्यञ्जन वर्ण जब किसी संयोग के प्रथम अक्षर हों तो उनका लुक् हो जाता है। और अनादि में वर्तमान शेष वर्णों का द्वित्व होता है।  
जैसे:—

प्राकृत		संस्कृत
मुत्तं	[ कलुक् ; तद्वित्व ]	मुक्तम्
सित्थं	[ कलुक् ; थद्वित्व ]	सिक्थम्
भत्तं	[ कलुक् ; तद्वित्व ]	भक्तम्
मुत्तं	[ कलुक् ; तद्वित्व ]	मुक्तम्
दुद्धं	[ गलुक् ; धद्वित्व ]	दुग्धम्
मुद्धं	[ गलुक् ; धद्वित्व ]	मुग्धम्
सिण्णद्धो	[ गलुक् ; धद्वित्व ]	स्निग्धम्
सप्पओ	[ टलुक् ; पद्वित्व ]	षट्पदः
खग्गो	[ डलुक् ; गद्वित्व ]	खड्गः
सज्जो	[ डलुक् ; जद्वित्व ]	षड्जः
उप्पलं	[ तलुक् ; पद्वित्व ]	उत्पलम्
उप्पाओ	[ तलुक् ; पद्वित्व ]	उत्पातः
मुग्गो	[ दलुक् ; गद्वित्व ]	मुद्गः
मुग्गरो	[ दलुक् ; गद्वित्व ]	मुद्गारः
मग्गू	[ दलुक् ; गद्वित्व ]	मद्गुः

सुत्तं	[ पलुक् ; तद्वित्त्व ]	सुप्तम्
पञ्जत्तं	[ पलुक् ; तद्वित्त्व ]	पर्याप्तम्
गुत्तो	[ पलुक् ; तद्वित्त्व ]	गुप्तः
निञ्चलो	[ शलुक् ; चद्वित्त्व ]	निञ्चलः
चुअइ	[ शलुक् ; द्वित्वाभावः*]	श्च्योतति
गोष्ठी	[ षलुक् ; ठद्वित्त्व ]	गोष्ठी
निष्टुरो	[ षलुक् ; ठद्वित्त्व ]	निष्टुरः
खलिअं	[ सलुक् ; ख का द्वित्वाभावः†]	खलितम्
रोहो	[ सलुक् ; ण का द्वित्वाभावः†]	स्नेहः

( २ ) म, न और य ये व्यञ्जन यदि संयुक्त के अन्तिम अक्षर हों तो उनका लुक् होता है और अनादि में वर्तमान शेष वर्णों का द्वित्व हो जाता है । जैसे:—

प्राकृत

संस्कृत

जुगं	[ मलुक् ; गद्वित्त्व ]	जुग्मम्
रस्सी	[ मलुक् ; सद्वित्त्व ]	रश्मिः
सरो	[ मलुक् ; द्वित्वाभावः†]	स्मरः
नग्गो	[ नलुक् ; गद्वित्त्व ]	नग्नः
भग्गो	[ नलुक् ; गद्वित्त्व ]	भग्नः
लग्गं	[ नलुक् ; गद्वित्त्व ]	लग्नम्
सोम्मो	[ यलुक् ; मद्वित्त्व ]	सौम्यः

( ३ ) ल, व, र ये व्यञ्जन संयुक्त के आद्यक्षर हों अथवा अन्त्याक्षर चन्द्र शब्द को छोड़कर सर्वत्र ( संयुक्त के आदि

\*. †. ‡. आदि में होने से चुअइ, खलिअं और रोहो में द्वित्व नहीं हुए ।

† आदि में होने से सरो के स का द्वित्व नहीं हुआ ।

और अन्त में ) उक्त व्यञ्जनों का लुक् होता है । और अनादि में स्थित शेष वर्णों का द्वित्व होता है । जैसे—

	प्राकृत		संस्कृत
उक्ता	[ संयुक्तादि ललुक् ;	कद्वित्व ]	उल्का
वक्त्रं	[ संयुक्तादि ललुक् ;	कद्वित्व ]	वल्कलम्
सण्हं	[ संयुक्तान्त्य ललुक् ;	द्वित्वाभाव ]	श्लक्ष्णम्
विक्रवो	[ संयुक्तान्त्य ललुक् ;	कद्वित्व ]	विक्रवः
सदो	[ संयुक्तादि वलुक् ;	दद्वित्व ]	शब्दः
अदो	[ संयुक्तादि वलुक् ,	दद्वित्व ]	अब्दः
पिक्रं	[ संयुक्तान्त्य वलुक् ;	कद्वित्व ]	पक्वम्
धत्थं	[ संयुक्तान्त्य वलुक् ;	द्वित्वाभाव*]	ध्वस्तम्
अक्रो	[ संयुक्तादि रलुक् ;	कद्वित्व ]	अर्कः
वर्गो	[ संयुक्तादि रलुक् ;	गद्वित्व ]	वर्गः
चक्रं	[ संयुक्तान्त्य रलुक् ;	कद्वित्व ]	चक्रः
गहो	[ संयुक्तान्त्य रलुक् ;	द्वित्वाभाव*]	ग्रहः
रत्ती	[ संयुक्तान्त्य रलुक् ;	ताद्वित्व ]	रात्रिः

**विशेष—**(क) चन्द्र शब्द का चन्द्रो यही रूप होता है । किन्तु हृषीकेश भट्टाचार्य अपने व्याकरण के पृष्ठ ५६ की पादटिप्पणी में लिखते हैं कि We find the form चंदो, in many Manus cripts.

(ख) द्व इत्यादि में जहाँ दोनों व्यञ्जनों का लुक् प्राप्त हो, वहाँ प्राचीन प्राकृत आचार्यों के रूप दर्शन से कहीं संयुक्त के आदि वर्ण कहीं अन्त्य वर्ण और कहीं बारी-बारी से दोनों वर्णों के लुक्

होते हैं। संयुक्तादिवर्ण का लुक् जैसे:—उव्विग्गो ( उद्विग्गः ) विउणो ( द्विगुणः ); कम्मसं ( कल्मषम् ); सव्वं ( सर्वम् ); संयुक्तान्त्य वर्ण का लुक् जैसे:—कव्वं ( काव्यम् ); कुल्ला ( कुल्या ) मल्लं ( माल्यम् ); दिअो ( द्विपः ); दुआई ( द्विजातिः ) । बारी-बारी से आद्यन्त वर्ण लुक् जैसे:—वारं, दारं ( द्वारम् )

( ४ ) द्र के रेफ का लुक् विकल्प से होता है। जैसे:—दोहो, द्रोहो ( द्रोहः ); रुहो, रुद्रो ( रुद्रः ); भदं भद्रं ( भद्रम् ); समुदो, समुद्रो ( समुद्रः ); द्रहो, दहो\* ( ह्रदः )

( ५ ) 'ज्ञा' धातु सम्बन्धी ज् का लुक् विकल्प से होता है एवं अनादि ज् का द्वित्व होता है। जैसे:—सव्वज्जो, सव्वएण्ण ( सर्वज्ञः ); अप्पज्जो, अप्पएण्ण ( अल्पज्ञः ); अहिज्जो, अहिएण्ण ( अभिज्ञः ); जाणां, णाणं ( ज्ञानम् ); दइवज्जो, दइवएण्ण ( दैवज्ञः ); इङ्गिअज्जो, इङ्गिअएण्ण ( इङ्गितज्ञः ); मणोज्जं, मणोएण्णं ( मनोज्ञम् ); पज्जा, पएण्णा ( प्रज्ञा ); अज्जा, आणा‡ ( आज्ञा ); संजा§, सएण्णा ( संज्ञा )

\* ह्रद शब्द की स्थितिपरिवृत्ति ( इसके लिए देखिए हेम० २, १२० ) के बाद द्रह रूप होता है। यहाँ इसी द्रह में उक्त नियम ( ३. ४. ) लग जाने से दहो और द्रहो रूप हुए। कुछ लोग र का लोप करना नहीं चाहते और कुछ लोग द्रह को संस्कृत मानते हैं।

† आदि में होने से द्वित्व नहीं हुआ।

‡ किसी-किसी पुस्तक में 'अएणा' पाठ मिलता है।

§ स्वर से पर में नहीं होने से द्वित्व नहीं हुआ।

**विशेष**—कहीं-कहीं यह नियम नहीं लागू होता है। जैसे:-  
विष्ण्णाणं ( विज्ञानम् )\*

( ६ ) अनादि एकाकी व्यञ्जन, जो कि पूर्वोक्त नियमों से संयुक्त व्यञ्जन के लुक् होने पर अवशिष्ट रहता है द्वित्वा को प्राप्त करता है। जैसे:—

### प्राकृत                      संस्कृत

दिट्ठी            [ षलुक् ; ठद्वित्व ]      दृष्टिः

हत्थो            [ स लुक् ; थ द्वित्व ]      हस्तः

( ७ ) वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्णों के द्वित्व का प्रसङ्ग हो तो द्वितीय वर्ण के ऊपर उसी वर्ग के प्रथम और चतुर्थ के ऊपर उसी वर्ग के तृतीय अक्षर होते हैं। जैसे:—वक्खाणं ( व्याख्यानम् ); अग्घो ( अर्घः )

( ८ ) दीर्घ स्वर एवं अनुस्वार से पर में रहनेवाले संयुक्तशेष व्यञ्जन ( ऊपर से नियमों से संयुक्ताक्षरों में व्यञ्जन के लुक् हो जाने पर अवशिष्ट व्यञ्जन ) का द्वित्व नहीं होता है। जैसे:—

\* शौरसेनी में ञ के स्थान में ज होता है। मागधी और पैशाची में ञ के स्थान में ज्ज होता है। पैशाची में राजन् शब्द सम्बन्धी ञ चिञ् विकल्प से होता है। शौरसेनी, मागधी और पैशाची में न्य और एय के स्थान में भी ञ्ज होता है।

† हेमचन्द्र ने 'अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम्' २. ८६. सूत्र बनाकर आदेश का भी द्वित्व माना है। जैसे:—उक्को, जक्खो, रग्गो, किच्ची, रुप्पी। कहीं पर यह नियम नहीं लगता है। जैसे—कसिण्णो। अनादि कहने से खलिअं, थेरो, खम्भो में नियम नहीं लगा।

‡ यहाँ दीर्घ और अनुस्वार नियमवशात् सम्पन्न ( लाक्षणिक ) और स्वाभाविक ( अलाक्षणिक ) दोनों गृहीत हैं। लाक्षणिक दीर्घः—छूढो,

ईसरो ( ईश्वरः ); लासं ( लास्यम् ); संकंतो ( संक्रान्तः ); संभ्रा ( संभ्रा )

( ९ ) रेफां और हकार का द्वित्व नहीं होता है । जैसे:— सुदेरं ( सौन्दर्यम् ); बम्हचेरं ( ब्रह्मचर्यम् ); धीरं ( धैर्यम् ); विहलो ( विह्वलः ); कहावणो ( कार्षाणः )

( १० ) वर्णों के द्वित्व करानेवाले पूर्वोक्त नियम समस्त ( समासवाले ) पदों में विकल्प से प्रवृत्त होते हैं । तात्पर्य यह है कि समास में शेष और आदेश व्यञ्जन का द्वित्व विकल्प से होता है । जैसे:— नइ-ग्गामो, नइ-गामो ( नदी ग्रामः ); कुसुम-प्पयरो, कुसुम-पयरो ( कुसुम प्रकरः ); देव-त्थुई; देव-थुई ( देव-स्तुतिः ) इत्यादि ।

**विशेष**—कभी-कभी पूर्वोक्त द्वित्वविधायक नियमों की विषयता नहीं होने पर भी समास में वैकल्पिक द्वित्व होता देखा जाता है । जैसे:—पम्मुक्कं, पमुक्कं ( प्रमुक्तम् ); तेल्लोक्कं, तेलोक्कं ( त्रैलोक्यम् ) इत्यादि ।

( ११ ) तैलादिक्क गण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों

नीसासो, फासो । अलाक्षणिक दीर्घः—पासं, सीसं । लाक्षणिक अनुस्वारः—तंसं अलाक्षणिक अनुस्वारः—संभ्रा, विंभो । यह नियम आदेश में भी लगता है ।

† रेफ शेष नहीं मिलता है । आदेश ही मिलता है । देखो नियम ३. ३.

\* प्राकृत-प्रकाश में तैलादि गण के बदले नीडादि गण से काम लिया गया है । कल्पलतिका में नीडादि गण यों है:—

नीड व्याहृतमण्डकस्रोतासि प्रेमयौवने ।

श्रुजुः स्थूलं तथा तैलं त्रैलोक्यं च गणो यथा ॥



के निर्णयानुसार कहीं अन्त्य और कहीं अनन्त्य व्यञ्जनों का द्वित्व होता है। जैसे:—तेल्लं ( तैलम् ); मंडुक्को ( मण्डुकः ); उज्जू ( ऋजुः ); सोत्तं ( स्रोतः ); पेम्मं ( प्रेम ) विड्डा ( ब्रीडा ); जोव्वणं ( यौवनम् )

( १२ ) सेवादिः गण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के निर्णयानुसार कहीं अन्त्य और कहीं अनन्त्य ( किन्तु अनादि ) व्यञ्जनों का विकल्प से द्वित्व होता है। जैसे:—सेवा, सेवा ( सेवा ); विहित्तो, विहित्तो ( विहितः ); कोउहल्लं, कोउहलं ( कौतूहलम् ); वाउल्लो, वाउलो ( व्याकुलः ); नेड्डं, नीडं, नेडं ( नीडम् ); नक्खा, नहा ( नखाः ); निहित्तो, निहित्तो ( निहितः ); वाहित्तो, वाहित्तो ( व्याहृतः ); माउक्कं माउक्कं ( मृदुकम् ); एक्को, एक्को ( एकः ); थुल्लो, थोरो ( स्थूलः ) हुत्तं, हूत्तं ( हुतम् ); दइव्वं, दइवं ( दैवम् ); तुण्हक्को, तुण्हक्को ( तूष्णीकः ); मुक्को, मूक्को ( मूकः ); खण्णू, खण्णू ( स्थाणुः ); थिण्णं, थीणं ( स्त्यानम् ); अम्हक्करं, अम्हक्करं ( अस्मदीयम् ) इत्यादि।

( १३ ) क्ष के स्थान में ख आदेश होता है। किन्तु कुछ स्थलों में छ और भ आदेश भी होते हैं। ख आदेश जैसे:—

\* कल्पलतिका में सेवादि गण यों है:—

सेवा कौतूहलं दैवं विहितं मखजानुनी ।

पिवादयः सवा ( ? ) शब्दा एतदाद्या यथार्थकाः ॥

त्रैलोक्यं कर्णिकारश्च वेश्या भूर्जश्च दुःखितम् ।

रात्रिविश्वासनिश्वासा मनोऽलेश्वर रश्मयः ॥

दीर्घैकशिवतूष्णीकमित्रपुष्पासि दुर्लभाः ।

दुष्करो निष्कृपः कर्मकरेष्वासपरस्परम् ॥

नायकाद्यास्तथा शब्दाः सेवादिगणसम्मताः ।

खओ ( क्षयः ); लखणं ( लक्षणम् ); छ और ख आदेश जैसे:-  
छीणं, खीणं ( क्षीणम् ); भ और ख आदेश जैसे:-भिज्जइ,  
खिद्यति ( द्विद्यति )

( १४ ) अद्यादिः गण के शब्दों में क्ष के स्थान में ख न  
होकर छ आदेश होता है । जैसे:-अच्छी ( अक्षि ); उच्छू ( इक्षुः )

**विशेष**—स्थगित शब्द के स्थ के स्थान में भी उक्त नियम  
से छ आदेश हो जाता है । जैसे:-छइअं  
( स्थगितम् )

( १५ ) उत्सव अर्थ के वाचक क्षण शब्द में क्ष के स्थान  
में छ आदेश होता है । उत्सव अर्थ में जैसे:-छणो; समय  
अर्थ में जैसे:-खणो ( क्षणः )

( १६ ) संयुक्त कम और डम के स्थान में प आदेश होता  
है । कम में जैसे:-रुप्पं, रुप्पिणी ( रुक्मम् , रुक्मिणी ) ।  
डम् में जैसे:-कुप्पलं ( कुड्मलम् )

**विशेष**—कहीं-कहीं कम के लिए च्म आदेश भी देखा जाता  
है । जैसे:-रुचमी ( रुक्मी )

( १७ ) ष्क और स्क के स्थान में ख आदेश होता है, यदि  
उन संयुक्ताक्षरों से घटित शब्द द्वारा किसी नाम ( संबन्ध ) की  
प्रतीति होती हो । ष्क का ख जैसे:-पोक्खरं ( पुष्करम् ); पोक्ख-

\* कल्पलतिका के अनुसार अद्यादि गण यों हैं:-

अत्राक्षिचक्षुरक्षुणक्षार उच्छित्तमक्षिकैः ।

दक्षो वक्षः सट्टक्षोऽक्ष क्षेत्रक्षीरेक्षुकक्षयः ॥

क्षुधा चेत्यादयः शब्दा अद्यादिगणसम्भवाः ।

रिणी ( पुष्करिणी ); निक्खं ( निष्कम् ) स्क का ख जैसे:—  
खंधो ( स्कन्धः ) खंधावारो ( स्कन्धावारः )

**विशेष**—संज्ञा नहीं होने से दुकरं ( दुष्करम् ) निक्काम्मं  
( निष्काम्यम् ) और सक्कञ्जं ( संस्कृतम् ) में उक्त  
नियम लागू नहीं हुआ ।

( १८ ) उष्ट्र, इष्ट और संदष्ट शब्द के ष्ट को छोड़कर अन्य  
ष्ट के स्थान में ठ आदेश होता है । जैसे:—लट्टी ( यष्टिः ) मुट्टी  
( मुष्टिः ); दिट्टी ( दष्टिः ); सिट्टी ( स्रष्टिः ); पुट्टो ( पुष्टः );  
कट्टं ( कष्टम् )

**विशेष**—उष्ट्र आदि में ठ आदेश नहीं होने से उट्टो, इट्टा-  
चुरण ष्व और संदट्टो रूप होते हैं ।

( १९ ) चैत्य शब्द के त्य को छोड़कर अन्य त्य के स्थान में  
च आदेश होता है । जैसे:—सच्चं ( सत्यम् ); पच्चओ ( प्रत्ययः );  
नित्तं ( नित्यम् ); पच्चच्छं ( प्रत्यक्षम् )

**विशेष**—चैत्य शब्द का चइत्तं रूप होता है ।

( २० ) कुछ स्थलों में त्व, ध्व, द्व और ध्व के स्थान में  
क्रमशः च्च, च्छ, ज्ज और ज्झ आदेश होते हैं । त्व का जैसे—  
भोच्चा, एच्चा, सोच्चा ( मुक्त्वा, ज्ञात्वा श्रुत्वा ); ध्व का जैसे—  
पिच्छी ( पृथ्वी ); द्व का जैसे:—विज्जं ( विद्वान् ); ध्व का  
जैसे:—बुज्झा ( बुद्ध्वा )

( २१ ) धूर्तादि गण के शब्दों को छोड़कर अन्य र्त का ट  
आदेश विकल्प से होता है । जैसे:—केवट्टो ( कैवर्त्तः ); वट्टी  
( वर्त्तिः ); एट्टओ ( नर्त्तकः ); एट्टई ( नर्त्तकी ) संवट्टिञ्जं ( संवर्त्तिकम् )

**विशेष**—धूर्तादि गण में उक्त नियम लागू नहीं होता है । धुत्तो, किच्ची, वत्ता, आवत्तणं, निवत्तणं, पवत्तणं, संवत्तणं, आवत्तओ, निवत्तओ, पवत्तओ, संवत्तओ, वत्तिआ, वत्तिओ, कत्तिओ, उक्त्तिओ, कत्तरी, मुत्ती, मुत्तो, मुहुत्तो ।

( २२ ) ह्रस्व से पर में वर्तमान थ्य, श्र, त्स और प्स के स्थान में छ आदेश होता है । किन्तु निश्चल शब्द के श्र का छ आदेश नहीं होता । थ्य का छ जैसे :—पच्छं ( पथ्यम् ); पच्छा ( पथ्या ); मिच्छा ( मिथ्या ); रच्छा ( रथ्या ) श्र का छ जैसे :—पच्छिमं ( पश्चिमम् ); अच्छेरं ( आश्चर्यम् ); पच्छा ( पश्चात् ) त्स का छ जैसे :—उच्छाहो ( उत्साहः ); मच्छरो ( मत्सरः ); वच्छो ( वत्सः ) प्स का छ जैसे—लिच्छइ ( लिप्सति ); जुगुच्छइ ( जुगुप्सते ); अच्छरा ( अप्सराः )

**विशेष**—(क) ह्रस्व से पर में नहीं रहने से ऊसारिओ ( उत्सारितः ) में उक्त नियम नहीं लगा ।

(ख) निश्चल शब्द का णिञ्चलो रूप होता है ।

(ग) तथ्य का आर्ष प्राकृत रूप तत्थं और तच्चं होता है ।

( २३ ) संयुक्त द्य, द्य्य और द्य्य के स्थान में ज आदेश होता है । द्य का ज जैसे :—मज्जं, अवज्जं, वेज्जं, विज्जा ( मद्यम्, अवद्यम्, वेद्यम्, विद्या ) द्य्य का ज

१. धूर्तादि गण में धूर्त, कीर्ति, वार्ता, आवर्तन, निवर्तन, प्रवर्तन, संवर्तन, आवर्तक, निवर्तक, प्रवर्तक, संवर्तक, वर्तिका, वार्तिक, कार्तिक, उत्कर्तित, कर्तरी, मूर्ति, मूर्त और मुहूर्त शब्द परिगणित हैं ।

जैसे :—जज्जो, सेज्जा ( जज्यः, शय्या ) र्य का ज जैसे :—  
भज्जा, कज्जं, वज्जं, पज्जाओ, पज्जन्तं ( भाज्या, कार्याम्, वर्यन्,   
पर्यायः, पर्यन्तम् )

विशेष—(क) शौरसेनी में र्य के स्थान में ध्य भी  
होता है ।

(ख) पेशाची में र्य के स्थान में कहीं रिय आदेश  
होता है ।

( २४ ) ध्य के स्थान में झ एवं झ और ज्ञ के स्थान  
में ण आदेश होते हैं । ध्य का झ जैसे :—भाणं, उव-  
ज्जाओ, सज्जाओ, मज्जं, विज्जाओ, अज्जाओ ( ध्यानम्, उपा-  
ध्यायः, साध्यायः या स्वाध्यायः, मध्यम्, विन्ध्यः, अध्यायः )  
झ का ण जैसे :—निणं, पज्जुणो, ( निम्नम्, प्रद्युम्नः )  
ज्ञ का ण जैसे :—जाणं, संजा, पणा, विण्णाणं ( ज्ञानम्,  
संज्ञा, प्रज्ञा, विज्ञानम् )

( २५ ) समस्त और स्तम्ब के स्त को छोड़कर अन्य  
स्त के स्थान में थ आदेश होता है । जैसे :—हथ्यो, थोत्तं,  
थोअं, पत्थरो, थुई (हस्तः, स्तोत्रन्, स्तोक्म्, प्रस्तरः, स्तुतिः)

विशेष—(क) मागधी में स्त और र्थ के स्थान में स्त  
ही होता है ।

(ख) समस्त शब्द का रूप समत्तं और स्तम्ब शब्द का  
तंबो होता है ।

( २६ ) संयुक्त न्म के स्थान में म आदेश होता है ।  
जैसे :—जम्मो, मम्महो ( जन्म, मन्मथः )

( २७ ) ष्य और स्प के स्थान में फ आदेश होता है । ष्य का फ जैसे :—पुष्फं, सप्फं, निष्फेसो ( पुष्पम्, शष्पम्, निष्पेपः ) स्प का फ जैसे :—फदंणं, पडिष्फही, फंसो ( स्पन्दनम्, प्रतिस्पद्धी, स्पर्शः )

( २८ ) संयुक्त श्र, षण, स्त्र, ह्र, ल और सूक्ष्म शब्द के द्म के स्थान में ण्ह आदेश होता है । श्र का ण्ह जैसे :—पण्हो ( प्रश्नः ) ; षण का ण्ह जैसे :—विण्हू, कण्हो, उण्हिसं ( विष्णुः, कृष्णः, उष्णीषम् ) स्त्र का ण्ह जैसे :—जोण्ह, ण्हारु, ण्हणं, वण्ही, जण्हू ( ज्योत्स्ना, स्त्रायुः, स्त्रानम्, वह्निः, जहुः ) ह्र का ण्ह जैसे :—पुव्हण्हो, अवरण्हो ( पूर्वाह्नः, अपराह्नः ) क्षण का ण्ह जैसे :—सण्हं, तिण्हं ( श्रद्धणम्, तीक्ष्णम् ) सूक्ष्म के क्ष्म का ण्ह जैसे :—सण्हं ( सूक्ष्मम् )

( २९ ) संयुक्त श्म, ष्म, स्म और ह्र के स्थान में म्ह आदेश होता है । श्म का म्ह जैसे :—कम्हारो ( काश्मीरः ) ष्म का म्ह जैसे :—गिम्हो, उम्हं ( ग्रीष्मः, उष्मा ) ; स्म का म्ह जैसे :—अम्हारिसो, विम्हओ ( अस्मादशः, विस्मयः ) ह्र का म्ह जैसे :—बम्हा, सम्हो, बम्हणो, बम्हचरं ( ब्रह्मा, सुह्रः, ब्राह्मणः, ब्रह्मचर्यम् )

विशेष—(क) ब्रह्मचर्यम् के लिए कभी-कभी वम्भचेरं रूप भी देखा जाता है ।

(ख) रश्मिः और स्मरः में उक्त नियम लागू नहीं होता है । जैसे :—रस्सी, सरो ।

( ३० ) संयुक्त ह्य के स्थान में भ्र आदेश होता है ।  
जैसे :—सभो, मभं, गुब्भं ( सद्यः, मद्यम्, गुद्यम् )

( ३१ ) संयुक्त ह्र के स्थान में ल्ह आदेश होता है ।  
जैसे :—कल्हारं, पल्हाओ ( कल्लारम्, पल्लादः )

( ३२ ) जिस संयुक्त अक्षर का अन्त लकार से होता हो उसका विप्रकर्ष<sup>१</sup> होता है । और पूर्व के अक्षर को इत्व भी होता है । जैसे :—किलिण्णं, किलिट्ठं, सिलिट्ठं, पिलिट्ठं, सिलोओ, किलेसो, मिलानं, किलिस्सइ ( क्तिन्नम्, क्तिष्ठम्, श्लिष्ठम्, प्लुष्ठम्, श्लोकः, क्लेशः, म्लानम् : क्लिश्यति )

**विशेष**—कमो ( क्लमः ); पवो ( प्लवः ) और सुक्क-पक्खो ( शुक्लपक्षः ) में उक्त नियम लागू नहीं होता ।

( ३३ ) उकारान्त किन्तु डीप्रत्ययान्त तन्वी ( तनु+ई ) सदृश शब्दों में वर्तमान संयुक्ताक्षरों का विप्रकर्ष होता है और पूर्व के अक्षर का उकार स्वर से योग होता है । जैसे :—तिण्णवी, तण्णई ( तन्वी ); लहुंवी, लहुई ( लघ्वी ); गुरुवी, गुरुई ( गुर्वी ); पुहुवी ( पृथ्वी )

**विशेष**—उक्त नियम की विषयता नहीं रहने पर भी सुरुघो ( सुन्नः ) में नियम प्रवृत्त हो जाता है । प्राकृत के प्राचीन ऋषियों के अनुसार सूक्ष्म शब्द का सुहुमं रूप हो जाता है ।

१. विप्रकर्ष से तात्पर्य पृथक् होने से है ।

( ३४ ) जब श्वस् और स्व शब्द किसी समास के अङ्ग न होकर पृथक् ही एक पद हों तब इनका विप्रकर्ष हो जाता एवं पूर्व के व्यञ्जन में उ स्वर का योग भी हो जाता है । जैसे :—

प्राकृत

सुवे कअं

सुवे जना

संस्कृत

श्वः कृतम्

स्वे जनाः

**विशेष**—हेमचन्द्र ने २.११४. में एकस्वरवाले पद में श्वस् और स्व शब्दों का उक्त कार्य माना है । उसका भी तात्पर्य पृथक् ही एक पद होने में है । समास का अङ्ग हो जाने पर सयणो ( स्वजनः ) हो जाता है ।

( ३५ ) शील ( स्वभाव, आदत्त ), धर्म ( गुण ) अथवा साधु ( प्रवीण ) अर्थ में जो प्रत्यय आते हैं उनके स्थान में 'इर' आदेश होता है । जैसे :—हसिरो, रोचिरो, लज्जिरो, भमिरो, जम्पिरो, वेविरो, ऊससिरो ( हसनशीलः इत्यादि )

**विशेष**—कोई-कोई तृन् के स्थान में ही 'इर' का आदेश मानते हैं । उनके मत से संस्कृत के नमी और गमी के लिए नमिर और गमिर रूप नहीं सिद्ध होते ।

( ३६ ) क्त्वा प्रत्यय के स्थान में तुम्, अत्, तूण और तुआण ये ४ आदेश होते हैं । जैसे :—



प्राकृत		संस्कृत
दद्धुं	[ त्वा = तुम् ]	दग्ध्वा
मोत्तुं	[ " " ]	मुत्त्वा
भमिअ	[ त्वा = अत् ]	भ्रमित्वा
रमिअ	[ " " ]	रन्त्वा
घेत्तूण	[ त्वा = तूण ]	गृहीत्वा
काऊण	[ " " ]	कृत्वा
भोत्तुआण <sup>१</sup>	[ त्वा=तुआण ]	भुक्त्वा
सीडआण <sup>२</sup>	[ " " ]	सवित्वा

**विशेष—**(क) कहीं-कहीं तुमवाले म् के अनुस्वार का लोप हो जाता है। जैसे:—वन्दित्तु। व का लोप करके वन्दित्वा संस्कृत का वन्दित्ता प्राकृत रूप बनता है।

(ख) शौरसेनी में क्त्वा के स्थान में इय और दूण आदेश होते हैं। कृ और गम धातुओं से अदूय होता है। मागधी-आवन्ती में क्त्वा के स्थान में तूण आदेश होता है। अपभ्रंश में क्त्वा के स्थान में इइ, उइ, विअवि आदेश होते हैं।

( ३७ ) इदमर्थ में प्रयुक्त प्रत्ययों के स्थान में 'केर' आदेश होता है। जैसे:—तुम्हकेरो, अम्हकेरो ( युष्मदीयः, अस्मदीयः )

१. २. हेमचन्द्र २.१४६ में भेतुआण और सेउआण रूप मिलते हैं।

३. किसी से सम्बन्ध रखनेवाला पुरोवर्ती पदार्थ। जैसे—तुम्हारा यह ग्रन्थ, इस अर्थ में संस्कृत में 'युष्मदीयो ग्रन्थः' ऐसा प्रयोग इदमर्थ में है।

**विशेष**—मईअ-पक्खे, पाणिणीआ ( मदीयपत्ते; पाणि-  
नीयाः ) में उक्त नियम नहीं लगता है । पर और राजन्  
शब्दों से पारक्कं और राइक्कं भी बनते हैं ।

( ३८ ) इदमर्थ में युष्मद्-अस्मद् शब्दों से पर में  
रहनेवाले अब् प्रत्यय के स्थान में 'एच्चय' आदेश  
होता है । जैसे :—तुम्हेच्चयं; अम्हेच्चयं ( यौष्माकम्,  
आस्माकम् )

**विशेष**—अपभ्रंश में इदमर्थ प्रत्ययों के स्थान में केवल  
'आर' आदेश होता है । यथा :—अम्हारो ( अस्मदीयः ) ।

( ३९ ) त्व प्रत्यय के स्थान में 'डिमा' और 'त्तण'  
आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे :—पीणिमा, पीणत्तणं  
( पीनत्वम् )

**विशेष**—तल् ( ता ) प्रत्ययान्त पीनता आदि के  
स्थान में पीणआ ( या ) इत्यादि रूप होते हैं । पीणदा रूप  
विशेष प्राकृत में भले ही होता हो, किन्तु सामान्य प्राकृत  
में नहीं होता । हाँ प्राकृतप्रकाशकार कुल प्राकृतों में तल्  
प्रत्यय के स्थान में 'दा' आदेश करते हैं ।

( ४० ) अंकोठवर्जित शब्द से पर में आनेवाले 'तैल'  
प्रत्यय के स्थान में 'डेल्ल' आदेश होता है । जैसे :—इङ्गुदी-  
एल्लं ( इङ्गुदीतैलम् )

**विशेष**—अंकोठ शब्द से अंकोल्लतेल्लं रूप होता है ।

( ४१ ) यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आने-वाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में 'इत्तिअ' आदेश होता है और एतद् शब्द का लुक् भी होता है । जैसे :—जित्तिअं, तित्तिअं, इत्तिअं ( यावत्, तावत्, एतावत् )

( ४२ ) इदम्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आनेवाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में 'इत्तिल' और 'इदह' आदेश होते हैं । इन प्रत्ययों के आने पर एतद् शब्द का लुक् हो जाता है । इदम् शब्द से जैसे :—एत्तिअं, एत्तिलं, एदहं ( इयत् ); केत्तिअं, केत्तिलं, केदहं ( कियत् ); जेत्तिअं, जेत्तिलं, जेदहं ( यावत् ); तेत्तिअं, तेत्तिलं, तेदहं, ( तावत् ), एत्तिअं, एत्तिलं, एदहं ( एतावत् )

( ४३ ) कृत्वस् प्रत्यय ( क्रिया की अभ्यावृत्ति की गणना अर्थ में होनेवाले ) के स्थान में 'हुत्त' आदेश होता है । जैसे :—बहुहुत्तं ( बहुकृत्वः )

( ४४ ) मतुप् प्रत्यय के स्थान में आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त और इन्त आदेश होते हैं । आलु जैसे :—ईसाल्ल, णिहाल्ल ( ईर्ष्यावान्, निद्रावान् ) इल्ल जैसे :—विआरिल्लो, सोहिल्लो ( विकारवान्, शोभावान् ) उल्ल जैसे :—विआरुल्लो, मंसुल्लो ( विकारवान्, मांसवान् ) आल जैसे :—रसालो, जगलो, जोण्हालो ( रसवान्, जडवान्, ज्योत्सा-

१. प्रत्ययों के आदि ड् के इत् अर्थात् लुप्त होने से यद् और तद् के टि अर्थात् अद्भाग का भी लोप हो जाता है ।

२. दे० 'संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ।' पा० सू० ५।४।२७

वान्) वन्त जैसे :—धणवन्तो, भक्तिवन्तो ( धनवान् , भक्तिमान् )

विशेष—(क) हेमचन्द्र के मत से मन्त और इर आदेश भी होते हैं । जैसे :—सिरिमन्तो, पुण्णमन्तो, धणिरो ( श्रीमान् , पुण्यवान् , धनवान् .)

(ख) कुछ लोगों का कइना है कि इल्ल और उल्ल सार्वत्रिक न होकर पाणिनीय व्याकरण के शैषिक प्रकरण में ही आते हैं । जैसे :—पुरिल्लं ( पौरस्त्यम् ), अप्पुल्लं ( आत्मीयम् )

( ४५ ) वति प्रत्यय के स्थान में 'व्व' यह आदेश होता है । जैसे :—महुव्व ( मधुवन् )

स्वार्थिक प्रत्यय ।

प्राकृत	प्रत्यय	संस्कृत	प्राकृत	प्रत्यय	संस्कृत
नवल्लो	ल्ल	नवः	मिसालिअ	डालिअ	मिश्र
एकल्लो, एकल्लो	”	एकः	दीहरं	र	दीर्घः
अवरिल्लो	”	उपरि	विज्जला	ल	विद्युत्
भुमया	मया	भ्रूः	पत्तलं	”	पत्रम्
भमया	डमया		पीवलं	”	पीतम्
सणिअं	डिअं	शनैः	पीअलं	”	अन्धः
मणिअं	”	मनाक्	अंधलो		
मणअं	डअं		जमलं	”	

विशेष—स्वार्थ में सभी शब्दों से क प्रत्यय होता है ।

तृतीय अध्याय समाप्त



## चतुर्थ अध्याय

### [ शब्दसाधन प्रकरण ]

( १ ) प्राकृत में संस्कृत के समान ही पुँलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होते हैं ।

**विशेष**—संस्कृत के जिन शब्दों का प्राकृत में लिङ्ग बदल जाता है, उनके विषय में इस ग्रन्थ के १-३८-४५ तक में विचार किया गया है ।

( २ ) प्राकृत में संस्कृत के समान तीनों वचन न होकर एकवचन और बहुवचन ही होते हैं ।

( ३ ) कर्ता आदि छवों कारकों की चतुर्थीरहित विभक्तियाँ प्राकृत शब्दों के आगे प्रयुक्त होती हैं । चतुर्थी के स्थान की पूर्ति पष्ठी विभक्ति से होती है । विभक्तियों के नाम पाणिनि के नामकरण के अनुसार ही हैं ।

( ४ ) प्राकृत में अवर्णान्त ( अ और आ से अन्त होनेवाले ), इवर्णान्त ( इ और ई से अन्त होनेवाले ), उवर्णान्त ( उ और ऊ से अन्त होनेवाले ), ऋवर्णान्त ( ऋ से अन्त होनेवाले ) तथा हलन्त ( जिनके अन्त में व्यञ्जन अक्षर आये हों ) ये पाँच प्रकार के शब्द पाये जाते हैं ।

**विशेष**—वस्तुतः प्रयोग में ऋकारान्त तथा हलन्त शब्दों की उपलब्धि नहीं होने से तीन ही प्रकार के शब्द रह जाते हैं ।

( ५ ) पुँल्लिङ्ग में वर्तमान ह्रस्व अकारान्त शब्द के आगे आनेवाली प्रथमा के एकवचन की 'सु' विभक्ति के स्थान में 'ओ' आदेश होता है । जैसे :—देवो, हरिअंदो, हदो ( देवः, हरिश्चन्द्रः, हदः )

विशेष—(क) मागधी में सु के पर में रहने पर अन्त के अ का ए हो जाता है और सु का लोप हो जाता है । जैसे :—रुक्खे, एशे, मेशे ( वृक्षः, एषः, मेषः )

(ख) अपभ्रंश में सु और अम् के पर में रहने पर अन्त के अ के स्थान में उ आदेश माना जाता है ।

( ६ ) जस्, शस्, ङसि और आम् इन विभक्तियों के पर में रहने पर पुँल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य अ के स्थान में आ आदेश होता है तथा जस् और शस् विभक्तियों का लोप होता है । जैसे :—देवा, णउला ( देवाः, देवान्, नकुलः, नकुलान् )

( ७ ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्द से पर में आनेवाले अम् के अकार का लुक् हो जाता है । जैसे :—देवं, णउलं ( देवं, नकुलम् )

( ८ ) ह्रस्व अकारान्त शब्द से पर में आनेवाले टा ( तृतीया के एकवचन ) और आम् ( षष्ठी के बहुवचन ) के स्थान में ण आदेश होता है । जैसे :—देवेण, देवाण, अथवा देवाणं ( देवेन, देवानाम् )

विशेष—अपभ्रंश में टा के स्थान में ण और अनु-स्वार होते हैं । तथा टा के पर में रहने पर अ का नित्य.

एत्व होता है एवं भिस् के पर में रहने पर विकल्प से ।  
से अ पर में आम् का हं आदेश होता है ।

( ६ ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्दों के अन्तिम अ के स्थान में ए होता है, यदि उनसे आगे डि ( सप्तमी-एकवचन ) और डस् ( पष्ठी-एकवचन ) से भिन्न विभक्तियाँ आती हों । जैसे :—देवेहिं, देवेसु, णउलेहिं, णउलेसु ( देवैः देवेषु, नकुलैः, नकुलेषु )

( १० ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्द से पर में आनेवाले भिस् के स्थान में केवल ( अनुनासिक एवं अनुस्वार से रहित ), सानुनासिक और सानुस्वार 'हि' आदेश होता है । जैसे—देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं, णउलेहि, णउलेहिँ, णउलेहिं ( देवैः, नकुलैः )

विशेष—'प्राकृतप्रकाश' और 'कल्पलतिका' के अनुसार भिस् के स्थान में केवल हिम् आदेश किया जाता है ।

( ११ ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्द से पर में आनेवाले डसि के स्थान में त्तो, दो, दु, हि और हित्तो आदेश होते हैं । दो और दु के दकार का लुक् भी होता है । जैसे :—देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि और देवाहित्तो ( देवात् )

विशेष—(क) प्राकृतप्रकाश और कल्पलतिका के अनुसार डसि के स्थान में आदो, दु तथा हि आदेश किये जाते हैं ।

१. हेमचन्द्र ( ३. ८. ) के अनुसार डसि का लुक् होकर एक रूप 'देवा' भी होता है ।

(ख) शौरसेनी में डसि के स्थान में 'आदो', और 'आदु' आदेश होते हैं, किन्तु कल्पलतिका के अनुसार केवल 'दो' आदेश होता है ।

(ग) पौशाची में डसि के स्थान में 'आतो' और 'आत्तो' आदेश होते हैं ।

(घ) अपभ्रंश में डसि के स्थान में 'ह' और 'हू' आदेश होते हैं ।

( १२ ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्द से पर में आनेवाले भ्यस् के स्थान में त्तो, दो, दु, हि, हितो और सुंतो आदेश होते हैं । जैसे :—देवत्तो, देवाओ, देवाड, देवाहि, देवेहि, देवाहितो, देवेसुंतो ( देवेभ्यः )

**विशेष**—अपभ्रंश में अदन्त शब्दों से पर में आनेवाले भ्यस् के स्थान में 'हूँ' आदेश होता है ।

( १३ ) अदन्त शब्द से पर में आनेवाले डस् ( पष्ठी-एकवचन ) के स्थान में 'स्स' आदेश होता है । जैसे :—देवस्स, णउलस्स ( देवस्य, नकुलस्य )

**विशेष**—(क) मागधी में डस् के स्थान में विकल्प से 'आह' आदेश होता है ।

(ख) अपभ्रंश में डस् के स्थान में सु, हो, स्तो ये आदेश होते हैं ।

( १४ ) अदन्त शब्द से पर में आनेवाले डि ( सप्तमी-एकवचन ) के स्थान में 'ए' और 'म्मि' आदेश होते हैं । जैसे :—देवे, देवेम्मि, णउले, णउलेम्मि ( देवे, नकुले )



उपर्युक्त नियमों के अनुसार अकारान्त पुँल्लिङ्ग

देव शब्द के रूप—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा देवो	देवा
द्वितीया देवं	देवे, देवा
तृतीया देवेण, देवेणं	देवेहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी ( देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि ( देवाहित्तो इत्यादि	देवाहित्तो, देवासुंतो देवेहित्तो, इत्यादि
षष्ठी देवस्स	देवाण, देवाणं
सप्तमी देवे, देवेम्मि	देवेसु, देवेसुं
संबोधन देव, देवो	देवा

कुल उदन्त शब्दों के रूप उक्त देव शब्द के समान ही प्रायः चलते हैं ।

( १५ ) इदन्त ( इ से अन्त होनेवाले ) और उदन्त ( उ से अन्त होनेवाले ) पुँल्लिङ्ग शब्दों का सु, जस्, भिस् भ्यस् और सुप् विभक्तियों के पर में रहने पर अन्त ( इ और उ ) का दीर्घ होता है ।

**विशेष—**हेमचन्द्र के मत से शस् ( द्वितीया-बहुवचन ) के लुक् हो जाने पर भी इदन्त-उदन्त का दीर्घ होता है ।

( १६ ) इदन्त और उदन्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले जस् के स्थान में ओ और णो आदेश होते हैं । कहीं-कहीं जस् का लुक् भी हो जाता है ।

**विशेष**—हेम० ३, २०, २१, २२ के अनुसार इदन्त-उदन्त से पुँल्लिङ्ग में जस् के स्थान में डित् अउ-अओ आदेश और उदन्त से केवल डित् अओ आदेश विकल्प से होते हैं । णो आदेश भी विकल्प से होता है । डित् होने से पूर्व के 'टि' का लोप जानना चाहिए ।

( १७ ) इदन्त और उदन्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले शस् के स्थान में नित्य और डस् के स्थान में विकल्प से णो आदेश होता है ।

**विशेष**—अपभ्रंश में इदन्त-उदन्त से पर में आनेवाले 'डसि' के स्थान में 'हे', 'भ्यस्' के स्थान में 'हुं' और डि के स्थान में हि आदेश होते हैं ।

( १८ ) इदन्त और उदन्त शब्दों से पर में आनेवाले 'टा' ( तृतीया-एकवचन ) के स्थान में 'णा' आदेश होता है ।

**विशेष**—अपभ्रंश में टा के स्थान में सानुस्वार ए और ण आदेश होते हैं ।

( १९ ) शेष रूपों की सिद्धि अदन्त शब्दों के समान ही जाननी चाहिए ।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार इदन्त-पुँल्लिङ्ग

**गिरि** शब्द के रूप—

**एकवचन**  
 प्रथमा गिरी  
 द्वितीया गिरिं  
 तृतीया गिरिणा

**बहुवचन**  
 गिरीओ, गिरिणो  
 गिरिणो  
 गिरीहि-हिँ-हिँ

पञ्चमी	गिरिन्तो इत्यादि	गिरिहितो, गिरिसुंतो इत्यादि
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरिण, गिरिणं
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु, गिरीसुं
संबोधन	गिरि	गिरीओ

हेमचन्द्र ( ३, १६-२४ ) के अनुसार गिरि शब्द के रूप—

### एकवचन

### बहुवचन

प्रथमा	गिरी	गिरी, गिरवो, गिरउ, गिरिणो,
द्वितीया	गिरिं	गिरी, गिरिणो
तृतीया	गिरिणा	गिरीहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी	गिरिणो, गिरिन्तो	गिरिन्तो, गिरीओ, } गिरीउ, गिरीहितो, } गिरीसुंतो }
	गिरीओ, गिरीउ	
	गिरीहितो	
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण, गिरीणं
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु, गिरीसुं
संबोधन	गिरि, गिरी	गिरिणो, गिरओ, गिरउ, गिरी

उदन्त पुँल्लिङ्ग गुरु शब्द के रूपः—

प्रथमा	गुरू	गुरूओ, गुरूणो
द्वितीया	गुरूं	गुरूणो
तृतीया	गुरूणा	गुरूहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी	गुरून्तो इत्यादि	गुरूहितो इत्यादि
षष्ठी	गुरूणो, गुरूस्स	गुरूणं, गुरूण
सप्तमी	गुरूम्मि	गुरूसु, गुरूसुं
संबोधन	गुरू	गुरूओ

पुँल्लिङ्ग में कुल इकारान्त, उकारान्त शब्दों के रूप गिरि और गुरु शब्दों के समान ही होते हैं ।

हेमचन्द्र के अनुसार गुरु शब्द के रूपः—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा गुरु	{ गुरु, गुरवो, गुरओ   गुरुउ, गुरुणो
द्वितीया गुरुं	गुरु, गुरुणो
तृतीया गुरुणा	गुरुहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी { गुरुणो, गुरुत्तो, गुरुओ   गुरुउ, गुरुहितो	गुरुत्तो, गुरुओ, गुरुउ गुरुहितो, गुरुसुंतो
षष्ठी गुरुणो, गुरुस्स	गुरुण, गुरुणं
सप्तमी गुरुस्मि	गुरुसु, गुरुसुं
संबोधन गुरु, गुरु	गुरु, गुरुणो, गुरवो गुरुउ, गुरओ

( २० ) ऋकारान्त शब्दों के आगे किसी भी विभक्ति के आने पर अन्त्य ऋ के स्थान में 'आर' आदेश होता है और उसका रूप अदन्त शब्दों जैसा पाया जाता है ।

( २१ ) सु और अम् को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों के पर में होने पर ऋकारान्त शब्द के अन्त्य ऋ के स्थान में विकल्प से उकार होता है । उत्त्व पक्ष में उकारान्त शब्दों के जैसे रूप होते हैं ।

( २२ ) संबोधनवाले सु के पर में रहने पर ऋदन्त शब्द-के अन्तिम ऋ के स्थान में 'अ' आदेश विकल्प से होता है ।

किन्तु जो ऋकारान्त शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ हो उसमें उक्त नियम लागू नहीं होता है । जैसे :—हे पिअ, हे पिअर ( हे पितः )

**विशेष**—कर्तृशब्द विशेषणवाची ऋकारान्त है, अतः उक्त नियम लागू नहीं हुआ । इससे 'हे कतार' रूप होगा ।

( २३ ) पितृ, भ्रातृ और जामातृ शब्दों से पर में किसी भी विभक्ति के आने पर ऋकार के स्थान में 'आर' का अपवाद 'अर' आदेश होता है ।

**विशेष**—( क ) 'अर' आदेश होने पर उसके रूप भी अदन्त शब्दों के समान ही चलते हैं ।

( ख ) सु के पर में रहने पर ऋदन्त शब्दों के ऋ के स्थान में 'आ' आदेश विकल्प से होता है ।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार भर्तृ शब्द के रूप :—

एकवचन	वहुवचन
प्रथमा भत्तारो	भत्तुणो भत्तारा
द्वितीया भत्तारं	भत्तुणो, भत्तारे
तृतीया भत्तुणा, भत्तारेण	भत्तारेहिं भत्तुहिं
पञ्चमी भत्तारादो, भत्तुणो, इत्यादि	भत्तारहितो, भत्तुहितो, इत्यादि
षष्ठी भत्तुणो, भत्तारस्स	भत्तुणं, भत्ताराणं
सप्तमी भत्तारे, भत्तारम्मि, भत्तुम्मि	भत्तुसु, भत्तारेसु
संबोधन हे भत्तार	हे भत्तारा

हेमचन्द्र ( ३, ३६, ४०, ४४, ४८ ) के अनुसार भर्तृ  
शब्द के रूपः—

एकवचन		बहुवचन	
प्रथमा	भक्तारो	भक्तारा, भक्तू, भक्तुणो भक्तउ, भक्तओ	
द्वितीया	भक्तारं	भक्तारे, भक्तू, भक्तुणो	
तृतीया	भक्तुणा, भक्तारेण	भक्तूहिं, भक्तारेहिं	
पञ्चमी	भक्तुणो, भक्तूओ, भक्तूउ, भक्तूहि, भक्तूहिंतो, भक्ता- राओ, भक्ताराउ, भक्ताराहि, भक्ता- राहिंतो, भक्तारा	भक्तू, भक्तूओ, भक्तूहिंतो, भक्तूसुंतो, भक्ताराओ, भक्ताराउ, भक्ताराहि, भक्तारेहि, भक्ता- राहिंतो, भक्तारेहिंतो, भक्तारा- सुंतो, भक्तारेसुंती	
		भक्तूणं, भक्तूण, भक्ताराणं, भक्ताराण	
		भक्तूस्मि, भक्तारे, भक्तारस्मि	भक्तूसु, भक्तारेसु
		संबोधन हे भक्तार	हे भक्तारा

कुल ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप भर्तृ शब्द के समान ही चलते हैं ।

ऋकारान्त पितृ शब्द के रूपः—

प्रथमा	पिआ, पिअरो	पिअरा
द्वितीया	पिअरं	पिअरे, पिदुणो
तृतीया	पिअरेण, पिदुणा	पिअरेहिं
पञ्चमी	पिअरादो, पिदुणो, इ०	पिअरहिंतो, पिदुहिंतो, इत्यादि
षष्ठी	पिअरस्स, पिदुणो	पिअराणं, पिदुणं

## एकवचन

## बहुवचन

सप्तमी	पिअरे, पिअरम्मि, पिदुम्मि	पिअरेसु, पिदुसुं
संबोधन	हे पिअ, हे पिअर	हे पिअरा

पितृ शब्द के समान ही भ्रातृ और जामातृ शब्दों के रूप चलते हैं ।

हेमचन्द्र ( ३. ३६-४०, ४४-४८. ) के अनुसार पितृ शब्द के रूप :—

प्रथमा	पिआ <sup>१</sup> , पिअरो	{ पिअरा, पिउणो, पिअवो, पिअओ, पिअउ पिऊ
द्वितीया	पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
तृतीया	पिअरेण, पिअरेणं, पिउणा इत्यादि	पिअरेहि-हिं हिं <sup>२</sup> , पिऊहिं-हिं <sup>२</sup> -हि इत्यादि
संबोधन	पिअ, पिअरं	पिअरा, पिउणो, पिअवो इत्यादि

शेष विभक्तियों के रूपों का ऊह कर लेना चाहिए ।

( २४ ) प्राकृतप्रकाश और प्राकृतकल्पलतिका में ईकारान्त उकारान्त शब्दों के साधन के लिए अलग सूत्र नहीं देखे जाने । इससे सिद्ध होता है कि उनके ( ईकारान्त-उकारान्त के ) कार्य भी क्रमशः इकारान्त-उकारान्त शब्दों के समान ही होते हैं ।

( २५ ) हेमचन्द्र ने सभी विभक्तियों में क्विबन्त ईकारान्त-उकारान्त शब्दों के दीर्घ ईऊ के लिए ह्रस्व का विधान किया है । और केवल संबोधन के एकवचन में अपने नियम को वैकल्पिक माना है ।

१. शौरसेनी में प्रथमा के एकवचन में पिदा रूप होता है । देखिए :  
'तादकण्णो वि एदाए पिदा'-अभिज्ञान-शाकुन्तल

( २६ ) पुँल्लिङ्ग में गो शब्द का गाव यह रूप होता है । इस लिए इसके रूप अदन्त शब्दों के समान ही चलते हैं ।

स्त्री-प्रत्यय

( २७ ) प्राकृत में कुछ ही ऐसे शब्द हैं, जिनमें विशेष नियमों के अनुसार विशेष स्त्री-प्रत्यय आते हैं । शेष शब्दों के आगे संस्कृत के ही अनुसार स्त्री-प्रत्यय आते हैं ।

( २८ ) पाणिनि ( ४-१-१५ ) के अनुसार अण् आदि प्रत्यय निमित्तक जो ङीप् होता है, वह प्राकृत में विकल्प से होता है । जैसे :—साहणी, साहणा, कुरुचरी, कुरुचरा ।

( २९ ) अजातिवाची पुँल्लिङ्ग नाम ( प्रातिपदिक ) से स्त्री-लिङ्ग को बतलाने में विकल्प से ङी प्रत्यय होता है । जैसे :—नीली, नीला; काली, काला; हसमाणी, हसमाणा; सुप्पणही, सुप्पणहा; इमीए, इमाए; इमीणं, इमाणं; एईए, एआए; एईणं, एआणं ।

विशेष—(क) कुमार्यादि में संस्कृत के समान नित्य ही ङी होता है । कुमारी, गौरी इत्यादि ।

(ख) जातिवाची में उक्त नियम के नहीं लगने से करिणी, अया, एलया इत्यादि रूप होते हैं ।

( ३० ) छाया और हरिद्रा शब्दों में 'आप्' का प्रसङ्ग (प्राप्ति) होने पर विकल्प से 'ङी' प्रत्यय होता है । जैसे :—छाही, छाहा<sup>१</sup>; हलही, हलहा ।

( ३१ ) स्त्रीलिङ्ग में स्वस्त्रादि<sup>२</sup> शब्दों से पर में डा प्रत्यय

१. हेमचन्द्र के अनुसार 'छाया' पाठ है । देखें हेम० ३. ३४.

२. स्वस्त्रा तिस्रश्चतस्रश्च ननान्दा दुहिता तथा ।

याता मातेति सप्तैते स्वस्त्रादय उदाहृताः ॥ सिद्धा. कौ. अजन्तस्त्री.



होकर ससा आदि रूप हो जाते हैं और उनके रूप आदन्त शब्दों जैसे चलते हैं। जैसे :—ससा, नणन्दा, दुहिआ।

( ३२ ) सु, अम् और आम्वर्जित<sup>१</sup> सुप् ( सभी विभक्तियों ) के पर में रहने पर किम्, यद् और तद् शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में 'ङी' प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे :—कीओ, काओ; कीए, काए; कीसु, कासु; जीओ, जाओ; तीओ, ताओ।

( ३३ ) स्त्रीलिङ्ग शब्द से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में विकल्प से 'उत्' और 'ओत्' आदेश होते हैं। और उनसे पूर्व के ह्रस्व स्वर का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे :—मालाउ, मालाओ; पक्ष में—माला। बुद्धीउ, बुद्धीओ, पक्ष में बुद्धी। सहीउ, सहीओ, पक्ष में सही। घेराउ, घेराओ, पक्ष में घेरा। वहूउ-वहूओ, पक्ष में वहू।

विशेष—शौरसेनी में स्त्रीलिङ्ग शब्द से जस् का उत् नहीं होता है।

( ३४ ) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान नाम ( प्रातिपदिक ) से पर में आनेवाले टा, डस् और ङी के स्थान में 'अत्' 'आत्' 'इत्' और 'एत्' आदेश होते हैं। पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ भी होता है। आदन्त शब्द से टादि के स्थान में केवल आत् आदेश नहीं होता। उक्त चारों आदेश जब डसि के स्थान में होते हैं, तब उनके पूर्व के ह्रस्व स्वर का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे :—मुद्धाअ, मुद्धाइ, मुद्धाए; बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए।

विशेष—(क) अपभ्रंश में टा के स्थान में एत् होता है।

१. उक्त नियम हेमचन्द्र के अनुसार है। किन्तु एच. भट्टाचार्य अपने प्राकृत व्याकरण में 'अनामि सुपि' लिखते हैं। पृ. १०७, पं. १७

(ख) अपभ्रंश में डसि और डस् के स्थान में हे, भ्यस् और आम् के स्थान में हुं और डि के स्थान में हिँ होते हैं।

(३५) अम् विभक्ति के पर में रहने पर खीलिङ्ग शब्द के अन्तिम दीर्घ को ह्रस्व विकल्प से होता है।

(३६) खीलिङ्ग में वर्तमान दीर्घ ईकारान्त शब्द से पर में आनेवाले सु, जस् और शस् के स्थान में 'आ' आदेश विकल्प से होता है।

(३७) संबोधनवाली विभक्ति के पर में रहने पर आबन्त खीलिङ्ग शब्द के अन्तिम आ को 'ए' आदेश होता है।

आकारान्त खीलिङ्ग लता शब्द के रूप :—

एकवचन		बहुवचन
प्रथमा	लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
द्वितीया	लदं	लदा, लदाओ, लदाउ
तृतीया	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी	लदादो, लदाए, इत्यादि	लदाहितो, इत्यादि
षष्ठी	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाणं, लदाण
सप्तमी	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदासु, लदासुं
संबोधन	हे लदे	हे लदाओ

हेमचन्द्र के अनुसार लता शब्द के रूप :—

प्रथमा	लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
द्वितीया	लदं	लदा, लदाओ, लदाउ

## एकवचन

तृतीया	लदाए, लदाइ, लदाअ
पञ्चमी	लदाए, लदाइ, लदाअ
	लदत्तो, लदाओ, लदाउ
	लदाहितो, इत्यादि
षष्ठी	लदाए, लदाइ, लदाअ
सप्तमी	लदाए, लदाइ, लदाअ
संबोधन	हे लदे, लदा

## बहुवचन

लदाहि-हिँ-हिं
लदत्तो, लदाओ, लदाउ
लदाहितो, लदासुंतो
लदाण, लदाण
लदासु, लदासुं
हे लदा, लदाओ, लदाउ

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग बुद्धि शब्द के रूप :—

प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्वितीया	बुद्धिं	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धिअ	बुद्धीहि-हिँ-हिं
पञ्चमी	बुद्धीए, बुद्धीइ, इत्यादि	बुद्धीहितो, बुद्धीसुन्तो इत्यादि
षष्ठी	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीअ	बुद्धीणं, बुद्धीण
सप्तमी	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीअ	बुद्धीसु, बुद्धीसुं
संबोधन	हे बुद्धी	हे बुद्धी, बुद्धीओ, इत्यादि

हेमचन्द्र के अनुसार बुद्धि शब्द के रूप :—

प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्वितीया	बुद्धिं	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ,	बुद्धीहि-हिँ-हिं
	बुद्धीए	
पञ्चमी	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धित्तो	बुद्धित्तो, बुद्धीओ-उ-
	बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धीओ	हितो-सुंतो
	बुद्धीउ, बुद्धीहितो	

एकवचन	बहुवचन
षष्ठी बुद्धीअ-आ-इ-ए	बुद्धीण-णं
सप्तमी " " "	बुद्धीसु-सुं
संबोधन हे बुद्धि, बुद्धी	हे बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ

कुल इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप उक्त बुद्धि शब्द के समान ही चलते हैं। ऐसे ही हेमचन्द्र के अनुसार धेणु, सही, वहू शब्दों के रूप भी चलते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग धेणु शब्द के रूप :—

प्रथमा धेणू	धेणू, धेणूओ, धेणूउ
द्वितीया धेणुं	" " "
तृतीया धेणूए-इ-आ-अ	धेणूहि-हिँ-हिं
पञ्चमी धेणूओ, धेणूइ, इत्यादि	धेणूहिँतो-सुंतो
षष्ठी धेणूए-इ-आ-अ	धेणूणं, धेणूण
सप्तमी " " " "	धेणूसु-सुं
संबोधन हे धेणु, धेणू	हे धेणू, धेणूओ, इत्यादि

सभी उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप धेणु शब्द के समान ही चलते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नदी शब्द के रूप :—

प्रथमा नई, नईआ	नईओ, नईआ
द्वितीया नईं	नई, नईओ, नईआ
तृतीया नईए-इ-आ-अ	नईहि-हिँ-हिं
पञ्चमी नईए, नईअ, नईओ, इत्यादि	नई, नईहिँतो, नईसुंतो

## एकवचन

षष्ठी नईए, -इ, -आ-अ  
 सप्तमी " " " "  
 संबोधन हे नई, नई

## बहुवचन

नईणं, नईण  
 नईसु, नईसुं  
 हे नई, नईओ, इत्यादि

कुल ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप नदी शब्द के समान ही चलते हैं ।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग वहु ( वधू ) शब्द के रूप :—

प्रथमा वहु	वहु , वहुओ, इत्यादि
द्वितीया वहुं	वहु , वहुओ, इत्यादि
तृतीया वहुए-इ-आ-अ	वहुहि-हिं -हिं
पञ्चमी वहुदो, वहुए, इत्यादि	वहुहिंतो-सुंतो
षष्ठी वहुए-इ-आ-अ	वहुणं, वहुण
सप्तमी " " " "	वहुसु-सुं
संबोधन हे वहु, वहु	हे वहु, वहुओ, इत्यादि

कुल उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप वहु शब्द के समान ही चलते हैं ।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग मातृ शब्द के रूप :—

१. हेमचन्द्र ( ३. ४६ ) के अनुसार मातृ शब्द के दो प्राकृत रूप मिलते हैं—मात्रा ( माता ) और मात्ररा ( देवी, Goddess ) । हमें इस शब्द से ३. ४४. के अनुसार 'माउ' और १. १३५ के अनुसार 'माइ' रूप भी मिलते हैं । इनमें 'मात्रा' और 'मात्ररा' के रूप माला एवं लता शब्दों के अनुसार, माउ के रूप धेगु के अनुसार और माइ के रूप वुद्धि शब्द के अनुसार चलते हैं ।

**एकवचन**

प्रथमा	माआ
द्वितीया	माअ <sup>१</sup>
तृतीया	माआइ, माआअ, इत्यादि
पञ्चमी	माआदो, माआए, इत्यादि
षष्ठी	माआइ, माआअ, इत्यादि
सप्तमी	” ” ”
संबोधन	हे माअ, इत्यादि

**बहुवचन**

माआ
माए
माएहि-हिँ-हिं
माआहितो, माआसुंतो
माआणं, माआण
माआसु-सुं
हे मात्रा, इत्यादि

स्त्रीलिङ्ग में गो शब्द के गावी और गाई ये दो रूप होते हैं। इन दोनों के रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अनुसार चलते हैं।

अजन्त नपुंसक लिङ्ग के शब्दों के सम्बन्ध में नियम :—

( ३८ ) नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले सु ( प्रथमा के एकवचन ) के स्थान में 'म्' होता है। जैसे :—वणं ( वनम् )

( ३९ ) नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् ( प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन ) के स्थान में इँ, इं और णि आदेश होते हैं। जैसे :—कुलाइँ, कुलाइं और कुलाणि।

**विशेष—**(क) शौरसेनी में नपुंसक लिङ्ग में जस्-शस् के स्थान में केवल 'णि' आदेश होता है।

(ख) अपभ्रंश में जस्-शस् के स्थान में 'इं' आदेश होता है।

---

१. शौरसेनी में द्वितीया के एकवचन में 'मादरं' यह रूप होता है।

( ४० ) नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान शब्दों से पर में आनेवाले संबोधन के 'सु' का लोप होता है ।

( ४१ ) सु ( प्रथमा के एकवचन ) के पर में रहने पर इदन्त-उदन्त नपुंसक शब्दों के अन्तिम इ और उ को दीर्घ नहीं होता है ।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग कुल शब्द के रूप :—

	एकवचन	वहुवचन
प्रथमा	कुलं	कुलाई, कुलाईं, कुलाणि
द्वितीया	”	” ” ”
संबोधन	हे कुल	

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान चलते हैं ।

इकारान्त नपुंसक दधि शब्द के रूप :—

प्रथमा	दहिं, दहि	दहीइँ, दहीइं, दहीणि
द्वितीया	” ”	” ” ”
संबोधन	हे दहि	

उकारान्त नपुंसक मधु शब्द के रूप :—

प्रथमा	महुं, महु	महूइँ, महूइं, महूणि
द्वितीया	” ”	” ” ”
संबोधन	हे महु	

शेष रूपों का ऊह पुंलिङ्ग आदि से कर लेना चाहिए ।

हलन्त शब्दों के साधनसंबन्धी नियम एवं उनके रूप :—

प्राकृत में हलन्त शब्द नहीं होते हैं । कुछ हलन्त शब्दों के

अन्त्य व्यञ्जनों का लोप होता है और कुछ हलन्त शब्द अजन्त के रूप में परिणत हो जाते हैं। अतः हलन्त शब्दों के साधनार्थ विशेष नियम नहीं हैं।

केवल आत्मन् और राजन् शब्दों के साधनार्थ प्राकृत के कुछ प्राचीन आचार्यों ने नियम बनाये हैं। वे ही नियम प्रयोग के अनुसार अन्य नान्त शब्दों के लिए भी उपयुक्त माने गये हैं।

राजन् शब्द के रूप:—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा राआ	राआणो, राआ
द्वितीया राअं	राए, राआणो
तृतीया रण्णा, राइणा	राएहि
पञ्चमी राआदो, रण्णो, राआदु, राइणो	राआहितो, राइहितो
षष्ठी रण्णो, राइणो, राअस्स	राआणं, राइणं, राआण्ण
सप्तमी राअम्मि, राए, राइम्मि	राएसु, राएसुं
संबोधन हे राआ, राअं	

हेमचन्द्र ( ३, ४६-५५, ) के अनुसार राजन् शब्द

के रूप:—

प्रथमा राया	राया, रायाणो, राइणो
द्वितीया रायं, राइणं	राये, राया, रायाणो, राइणो
तृतीया राइणा, रण्णा; राएण, राएणं	राएहि-हिं-हिं; राईहि-हिं-हिं
पञ्चमी रण्णो, राइणो, रायत्तो, इ०	रायत्तो, राइत्तो, इत्यादि
षष्ठी रण्णो, राइणो, रायस्स	राईण, राईणं; रायाण, रायाणं



	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी	राये, रायम्मि, राइम्मि	राईसु, राईसुं, राएसु, राएसुं
संबोधन	हे राया, राय	राया, रायाणो, राइणो

### आत्मन् शब्द के रूप :—

प्रथमा	अप्पा, अप्पाणो	अप्पाणा, अप्पाण्णो, अप्पा
द्वितीया	अप्पाणं, अप्पं	अप्पाणो, अप्पणो
तृतीया	अप्पाणोण, अप्पणा	अप्पाणोहिं, अप्पेहिं
पञ्चमी	{ अप्पाणाओ, अप्पणो अप्पाओ, अप्पादो, इ०	अप्पाणाहितो, अप्पाहितो, इत्यादि
षष्ठी	अप्पाणस्स, अप्पणो	अप्पाणाणं, अप्पाणं
सप्तमी	अप्पाणम्मि, अप्पे	अप्पाणोसु, अप्पेसु
संबोधन	हे अप्पं, इत्यादि	

विशेष—हेमचन्द्र ( ३. ५६-५७. ) के अनुसार आत्मन् शब्द के दो प्राकृत रूप अप्प और अप्पाण होते हैं। इनमें अप्प के रूप राजन् शब्द जैसे चलते हैं। और 'अप्पाण' के वच्छ अथवा देव शब्द के अनुसार। तृतीया के एकवचन में उसके दो और अधिक रूप होते हैं—'अप्पणिआ' और 'अप्पणइआ'

( ४२ ) प्राकृत-कल्पलतिका के अनुसार 'भवत्' और 'भगवत्' के अन्तिम तकार के स्थान में सु विभक्ति के पर में रहने पर अनुस्वार किया जाता है। यह नियम यहाँ भी गृहीत है। जैसे:—भवं ( भवान् ), हे भवं ( हे भवन् ), भअवं ( भगवान् ), हे भअवं ( हे भगवन् )

( ४३ ) प्राच्या में भवत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में भोदी यह रूप होता है।

सर्वनाम शब्दों के साधन के नियम और रूप :—

प्राकृत में सर्वनाम के संबंध में सामान्य नियम देखने में नहीं आते हैं। जो भी नियम देखने में आते हैं, विशेष स्थलों के लिए विशेष नियम हैं। केवल अदन्त सर्वनाम शब्दों की सिद्धि के लिए कुछ साधारण नियम हैं, जिनका नीचे उल्लेख हुआ है। अन्य विशेष नियमों का परिज्ञान उदाहरणों द्वारा ही सम्भव है। अदन्त सर्वनाम शब्दों के विषय में नियम ये हैं :—

( ४४ ) सर्वादिगण-पठित शब्दों के अन्तिम अ से पर में आनेवाले जस् के स्थान में 'ए' आदेश होता है।

विशेष—कहीं कहीं सर्वादि के प्रथम अ का वैकल्पिक एत्व होकर सेव्वे और सर्वे रूप होते हैं।

( ४५ ) अदन्त सर्वादि से पर में आनेवाले 'आम्' के स्थान में 'एसिं' आदेश विकल्प से होता है। तथा 'ङि' के स्थान में 'स्सि', 'म्मि' और 'त्थ' ये आदेश होते हैं और इदम् तथा एतद् शब्दों को छोड़कर अन्य सर्वादि शब्दों से आनेवाले ङि के स्थान में 'हिं' आदेश भी होता है।

पुँल्लिङ्ग में सर्व शब्द के रूप :—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा सव्वो	सव्वे
द्वितीया सव्वं	सव्वे
तृतीया सव्वेण	सव्वेहिं
पञ्चमी सव्वदो, सव्वत्तो, इत्यादि	सव्वेहितो, इत्यादि
षष्ठी सव्वस्स	सव्वेसि, सव्वानं

	<b>एकवचन</b>	<b>बहुवचन</b>
सप्तमी	{	सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वेसु, सव्वेसुं
		सव्वहिं
संबोधन	हे सव्व, सव्वो	सव्वे

स्त्रीलिङ्ग में सर्व शब्द के रूप आदन्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के समान तथा नपुंसक में सर्व शब्द के रूप अदन्त नपुंसक लिङ्गवाले शब्दों के समान चलते हैं ।

विश्व आदि सर्वादिगण के शब्दों के रूप इसी सर्व शब्द के रूपों के समान चलते हैं ।

**विशेष—**अपभ्रंश में सर्व के स्थान में साह आदेश होता है । अदन्त सर्वादि से पर में आनेवाले ङसि का 'हां' आदेश होता है । ङि के स्थान में केवल हिं आदेश ही होता है ।

**पुँलिङ्ग में यद् शब्द के रूप :—**

प्रथमा	जो	जे
द्वितीया	जं	जे
तृतीया	जेण, जिण	जेहि
पञ्चमी	जत्तो, जदो, जम्हा, जाओ	जाहितो, जासुंतो, इत्यादि
षष्ठी	जस्स, जासँ	जाणं, जेहि <sup>२</sup>
सप्तमी	जस्सि, जम्मि, जहिं <sup>३</sup> , जत्थ	जेसु .

१. अपभ्रंश में पुँलिङ्ग में 'जासु' और स्त्रीलिङ्ग में 'जेहे' होता है ।

२. शौरसेनी में केवल जाणं और टक्कभाषा में 'जाहं' 'जाणं' ये दो रूप होते हैं ।

३ जब सप्तमी के एकवचन से समय का बोध कराना हो तब यद् शब्द का 'जाहे' और 'जाला' ये रूप हो जाते हैं ।

( ४६ ) यद् शब्द से स्त्रीलिङ्ग में आम्बर्जित विभक्तियों के पर में रहने पर डा विकल्प से होता है। जैसे :—जी, जीया इत्यादि ।

पुंलिङ्ग में तद् शब्द के रूप :—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा सो	ते, दे
द्वितीया तं, णं	ते, दे
तृतीया तेण, तिणो, शेण	तेहिं, शेहिं
पञ्चमी तत्तो, तदो, ता, तम्हा, ताओ	ताहितो इत्यादि
षष्ठी तास, से, तस्स	ताणं, तेसिं, सिं, दाणं
सप्तमी तस्सिं, तम्मिं, तत्थ, तहिं	तेसु इत्यादि

( ४७ ) तद् शब्द का स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा के एकवचन में 'सा' यह रूप होता है और नपुंसक लिङ्ग में 'तं'। आम्बर्जित

१. हेमचन्द्र के अनुसार तद् शब्द के रूप निम्नलिखित हैं :—  
प्रथमा-एक० स, सो; बहु० ते, शे; द्वितीया-एक० तं, णं; बहु० ते, ता, शे, णा; तृतीया-एक० तेण, शेण, तिणा; बहु० तेहिं इत्यादि; पञ्चमी-एक० तम्हा; बहु० तेहिं इत्यादि; षष्ठी-एक० तस्स, तास; बहु० तास, तेसिं; सप्तमी-एक० तस्सिं, ताहे, ताला, तइआ; बहु० तेसु, शेसु, तेसुं, शेसुं ।

२. पैशाची में पुंलिङ्ग में 'नेन' और स्त्रीलिङ्ग में 'नाए' रूप होते हैं ।  
३. शौरसेनी में बस् में तस्स, से और आम् में ताणं होते हैं ।  
अपभ्रंश में बस् के पर में रहने पर पुंलिङ्ग में तह और स्त्रीलिङ्ग में तासु होते हैं । टक भाषा में आम् के पर में रहने पर 'ताहं' और 'ताणं' होते हैं ।

विभक्तियों में तद्शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ङी का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे :—ती, तीआ इत्यादि।

पुंलिङ्ग में एतद् शब्द के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एस, एसो	एते, एदे
द्वितीया	एतं	एते, एदे
तृतीया	एदिणा, एदेण, एणं	एतेहिं, एदेहिं, एएहिं
पञ्चमी	एत्तो, एत्ताहो, एआओ, इ०	एतेहितो इत्यादि
षष्ठी	एअस्स, एदस्स, से	सिं, एएसिं, एदाणं
सप्तमी	{ अयम्मि, एत्थ, इअम्मि, एअम्मि, एअस्सिं	एएसु, एदेसु इत्यादि

विशेष—( क ) हेमचन्द्र ( ३, ८२ ) के अनुसार पञ्चमी के एकवचन में 'एत्तो' और 'एत्ताहे' रूप होते हैं और पक्ष में 'एआओ' 'एआउ' 'एआहि' 'एआहितो' और 'एआ' रूप होते हैं।

( ख ) हेमचन्द्र ( ३, ८४ ) के अनुसार एतद् शब्द से सप्तमी के एकवचन में 'म्मि' के पर में रहने पर 'अयम्मि' ईयम्मि और पक्ष में एअम्मि रूप होते हैं।

( ग ) अन्य रूपों के लिए देखिए हेमचन्द्र के ३. ६६, ८१, ८५.

पुंलिङ्ग में अदस् शब्द के रूप :—

प्रथमा	अमू	अमूणो
द्वितीया	अमुं	अमूणे
तृतीया	अमुणा	अमूहिं

	एकवचन	बहुवचन
पञ्चमी	अमूओ, अमूउ इत्यादि	अमूहितो इत्यादि
षष्ठी	अमुणो, अमुस्स	अमूणं
सप्तमी	अमुम्मि, अयम्मि, इअम्मि	अमूसु इत्यादि

विशेष—( क ) हेमचन्द्र ( ३. ८७ ) के अनुसार तीनों लिङ्गों में अदस् शब्द के प्रथमा एकवचन में 'अह' रूप भी होता है ।

( ख ) शौरसेनी में 'अह' रूप नहीं होता । साधारणतः स्त्रीलिङ्ग में अमू और नपुंसक में अमुं रूप प्रयुक्त होते हैं ।

पुंलिङ्ग में इदम् शब्द के रूप :—

प्रथमा	इमो, अअं	इमे
द्वितीया	इमं, णं	इमे
तृतीया	इमिणा, इमेण, रोण	एहिं, इमेहिं, रोहिं
पञ्चमी	इदो, इमादो, इत्तो इत्यादि	इमेहितो इत्यादि
षष्ठी	अस्स, इमस्स, से	इमाणं, सिं
सप्तमी	अस्सि, इमस्सि, इह, रो	एसु

विशेष—( क ) इदम् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में 'सु' विभक्ति के पर में रहने पर 'इअं', 'इमिआ' और नपुंसक में सु और अम् के पर में रहने पर 'इदं' और 'इणं' रूप होते हैं ।

( ख ) शौरसेनी में स्त्रीलिङ्ग इदम् शब्द के प्रथमा एकवचन में 'इअं' और नपुंसक में 'इदम्' 'इमम्' रूप

होते हैं। पुल्लिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग में षष्ठी के बहुवचन में केवल 'इमाणं' यह रूप होता है।

पुल्लिङ्ग में किम् शब्द के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को	के
द्वितीया	कं	के
तृतीया	किणा, केण	केहिं
पञ्चमी	कीणो, कीस, कम्हा, कत्तो, कदो	केहितो इत्यादि
षष्ठी	कास, कस्स	कास, केसिं, काणं
सप्तमी	{ कहिं, कस्सिं, कम्मि, कत्थ, काहे, काला, कइआ	केसु इत्यादि

विशेष—( क ) अपभ्रंश में किम् के स्थान में 'काइ' और 'कवण' आदेश विकल्प से होते हैं।

( ख ) स्त्रीलिङ्ग में 'का' और नपुंसक में 'किं' रूप होते हैं।

( ग ) शौरसेनी में डसि में 'कदो' और उसी विभक्ति में अपभ्रंश में 'कहाँ' रूप होते हैं।

( घ ) स्त्रीलिङ्ग में डस् के पर में रहने पर 'कस्सा' कीसे, किअ, कीआ, कीई, 'कीए' होते हैं। शौरसेनी में पुल्लिङ्ग में 'कास' नहीं होता है। अपभ्रंश में पुल्लिङ्ग किम् शब्द का डस् में 'कासु' रूप होता है और स्त्रीलिङ्ग में 'कहं'।

युष्मद् शब्द के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुमं, तं, तुं, तुवं, तुह	{ झे, तुज्झ, तुज्झे, तुम्ह, तुम्हे उम्हे, तुह्ये <sup>१</sup>
द्वितीया	{ तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुवे <sup>२</sup>	वो तुज्झे, तुज्झ, तुम्हे, तुह्ये <sup>३</sup>
तृतीया	{ दे, ते, तइ, तुए, तुमं तुमइ, तुमर, तुमे, तुमाइ	तुम्हेहि, तुह्येहि, उम्हेहि उज्झेहि, तुज्झेहि <sup>४</sup> इत्यादि
पञ्चमी	{ तत्तो, तइत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुज्झत्तो, तुम्हत्तो, तुहत्तो, तुह्यत्तो, तदो, तुव, दुहि, तुमहितो <sup>५</sup> इत्यादि	तुम्हाहितो, तुज्झाहितो, तुज्झत्तो, तुम्हत्तो, तेहितो दुहितो <sup>६</sup> इत्यादि

१. हेमचन्द्र ३. ९१ के अनुसार मे, तुम्मे, तुज्झ, तुम्ह, तुम्हे, उम्हे रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. ९२ में तुए रूप बतलाया गया है ।

३. हेमचन्द्र ३. ९३ में वो, तुज्झ, तुम्मे, तुम्हे, उम्हे, मे, रूप वर्णित हैं ।

४. हेमचन्द्र ३. ९४ के अनुसार—मे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे और तुमाइ रूप होते हैं ।

५. हेमचन्द्र ३. ९५ के अनुसार—मे, तुम्मेहिं, तुज्झेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुम्हेहिं, उम्हेहिं ये रूप होते हैं ।

६. हेमचन्द्र ३. ९६ और ९७ के अनुसार—तइत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुहत्तो, तुम्भत्तो, तुम्हत्तो, तुज्झत्तो, तत्तो, तुम्ह, तुम्भतहिन्तो, तुम्ह, तुज्झ इत्यादि रूप होते हैं ।

७. हेमचन्द्र ३. ९८ के अनुसार—तुम्भत्तो, तुम्हत्तो, उम्हत्तो, उम्हत्तो तुम्हत्तो, तुज्झत्तो तथा दोदुहिहितो-सुंतो ये रूप होते हैं ।



	एकवचन	बहुवचन
षष्ठी	तुह, तुज्भ, तुम्म, तुइ, तु, तुम्ह, तुह, तुहं, तुव, तुम, तमे, तुमाइ, दे, तुब्ब <sup>१</sup>	वो, भे, तुज्भ, तुष्माण तुम्हाण, तुमाण, तुहाण उम्हाण, तुवाण <sup>२</sup> इत्यादि
सप्तमी	तइ, तए, तुमए, तुमे, तुमाई, तइ, तुम्मि, तुमम्मि, तुवम्मि, तुहम्मि, तुज्भम्मि <sup>३</sup> इत्यादि	तुसु, तुम्हेसु, तुष्सेसु, तुहसु, तुमसु, तुहेसु <sup>४</sup> इत्यादि

शौरसेनी में युष्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	तुमं	तुम्हे
द्वितीया	तुमं	तुम्हे

१. हेमचन्द्र ३. ९९ के अनुसार—तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह, तुम्ह, तुज्भ, उम्ह, उज्भ, रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. १०० के अनुसार—तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तुब्भाणं, तुवाणं, तुमाणं, तुहाणं, उम्हाणं, तुम्ह, तुज्भ, तुम्हं, तुज्भं, तुम्हाण, तुम्हाणं, तुज्भाण, तुज्भाणं रूप होते हैं ।

३. हेमचन्द्र ३. १०१ के अनुसार—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि, तुम्हम्मि, तुज्भम्मि रूप होते हैं ।

४. हेमचन्द्र ३. १०२ के अनुसार—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु, तुम्हेसु, तुज्भेसु, तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, तुम्हसु, तुज्भसु, तुब्भासु, तुम्हासु, तुज्भासु रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
तृतीया	तए	तुम्हेहिं
पञ्चमी	तुम्हादो	तुम्हाहिंतो
षष्ठी	ते, दे, तह, तुम्ह	तुम्हाणं
सप्तमी	तइ	तुम्हेसुं

अपभ्रंश में युष्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	तुह	तुम्हे, तुम्हाइं
द्वितीया	तइं, पइं	तुम्हेहिं
तृतीया	”	”
पञ्चमी	तउहोंत, तधुहोंत, तुह्युहोंत	तुम्हं
षष्ठी	”	तुम्हं
सप्तमी	”	तुम्हासुं

अस्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	{ अहं, अहम्मि, अम्मि अम्हि, हं, अहअं, म्मि	मे, वअं, अम्ह, अम्हे अम्हो, मो <sup>२</sup>
द्वितीया	{ शोणं, मि, अम्मि, अम्हं मं, ममं, मिमं, अहं <sup>३</sup>	अम्हे, अम्हा, णो, शो, अम्ह <sup>४</sup>

१. हेमचन्द्र ३. १०५ के अनुसार—म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. १०६ के अनुसार—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं और मे रूप होते हैं ।

३. हेमचन्द्र ३. १०७ के अनुसार—शो, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं और अहं रूप होते हैं ।

४. हेमचन्द्र ३. १०८ के अनुसार—अम्हे, अम्हो, अम्ह और शो रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
तृतीया	{ मिमे, ममं, ममए, मए ममाइ, मइ, इणो, मआ	अम्हेहिं, अम्हाहिं अम्ह, अम्हो, रो <sup>२</sup>
पञ्चमी	{ मइत्तो, ममत्तो मत्तो महत्तो, मह्यत्तो, मइदो ममदुहि <sup>३</sup> इत्यादि ।	ममत्तो, अम्हत्तो, ममाहितो, ममासुंतो, ममेसुंतो, अम्हे- हितो <sup>४</sup> इत्यादि ।
षष्ठी	{ मे, मम, मइ, मह महं, मह्य, नह्यं, अम्हं । <sup>५</sup>	रो, णो, मह्य, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, मम, अम्हाणं महाणं, मह्याणं । <sup>६</sup>

१. हेमचन्द्र ३. १०९ के अनुसार—मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. ११० के अनुसार—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, रो रूप होते हैं ।

३. हेमचन्द्र ३. १११ के अनुसार—मइत्तो, ममत्तो, महत्तो, मज्जत्तो, मत्तो रूप होते हैं । इसी प्रकार मइदो, मइदु, इत्यादि रूप बनते हैं । दो, दु, हि, हितो और लुक् पक्ष में भी रूपों का ऊह कर लेना चाहिए ।

४. हेमचन्द्र ३. ११२ के अनुसार—ममत्तो, अम्हत्तो, ममाहितो, अम्हाहितो, ममासुंतो, अम्हासुंतो, ममेसुंतो, अम्हेसुंतो रूप होते हैं ।

५. हेमचन्द्र ३. ११३ के अनुसार मे, मइ, मम, मह, महं, मज्ज, मज्जं, अम्ह, अम्हं रूप होते हैं ।

६. हेमचन्द्र ३. ११४ के अनुसार रो, णो, मज्ज, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्जाण, अम्हाण, ममाणं, महाणं, मज्जाणं रूप होते हैं ।

एकवचन बहुवचन

सप्तमी	{	मी, मइ, ममाइ, मए	अम्हेसु, ममेसु, महेसु
		मे, अम्हम्मि, ममम्मि	मएसु, अम्हसु, ममसु
		महम्मि	महसु <sup>२</sup> इत्यादि

शौरसेनी में अस्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	ही, अहं	अम्हे, वयं
द्वितीया	मं	अम्हे
तृतीया	मए	अम्हेहिं
पञ्चमी	मत्तो, ममादो	अम्हेहितो इत्यादि
षष्ठी	मे, मम, मह	अम्ह, अम्हाणं
सप्तमी	मइ, मए	अम्हेसु

( ४८ ) मागधी में संस्कृत के अहं और वयं के स्थान में क्रमशः हगे और हके आदेश होते हैं ।

अपभ्रंश में अस्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	हउ	अम्हे, अम्हइ
द्वितीया	मइ	अम्हे, अम्हइ
तृतीया	मइ	अम्हेहि
पञ्चमी	महु, मह्य	अम्हेहितो
षष्ठी	महु, महु	अम्हइ
सप्तमी	मयि इत्यादि	अम्हासु

१. हेमचन्द्र ३. ११५. के अनुसार—मि, मह, ममाइ, मए, मे, अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्जम्मि रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. ११७. के अनुसार—अम्मेसु, महेसु, महेसु, मज्जेसु, अम्हसु, ममसु, महसु, मज्जसु अम्हासु, रूप होते हैं ।

द्वि, त्रि और चतुर् शब्दों के रूप :—

	द्विशब्द	त्रिशब्द	चतुर्शब्द
प्रथमा	{ दो, दुवे, दोणि, वेणि, दुणि, विणि	तिण्णि	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
द्वितीया	”	”	”
तृतीया	दोहिं, दोहि, विहि	तीहिं	चऊहिं
पञ्चमी	दोहितो, वेहितो इ०	तीहितो	चऊहितो
षष्ठी	दोएहं, दोण्णं, वेण्णं	तिण्णं	चउएहं
सप्तमी	दोसु, वेसु	तीसु	चउसु

( ४६ ) अन्य संख्यावाचक शब्दों के रूप अदन्त शब्दों के समान चलते हैं ।

( ५० ) स्त्रीलिङ्ग में पञ्चन् शब्द से आप् प्रत्यय होता है । जैसे :—पञ्चा, पञ्चाहिं इत्यादि ।

( ५१ ) तादर्थ्य ( उसके लिए ) अर्थ में षष्ठी विभक्ति विकल्प से आती है ।

( ५२ ) प्राकृत में विभक्तियों के व्यवहार का कोई विशेष नियम नहीं है । कहीं द्वितीया और तृतीया के स्थान में सप्तमी कहीं पञ्चमी के स्थान में तृतीया तथा सप्तमी और प्रथमा के बदले द्वितीया विभक्तियाँ व्यवहृत होती हैं ।

## पञ्चम अध्याय

### [ अव्यय प्रकरण ]

( १ ) वाक्योपन्यास अर्थ में 'तं' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—तं निव-पुच्छिअ-दोआरिएण ( राजा से पूछे गये दौवारिक ने इस प्रकार वाक्य का उपन्यास किया। ) कुमापा. ४. १.

( २ ) अभ्युपगम ( स्वीकार ) अर्थ में आम अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—आम गिम्ह-सिरी ( हाँ, यह सही है कि इस उद्यान में इन दिनों ग्रीष्म ऋतु की शोभा फैली है। ) कुमा. पा. ४. १.

( ३ ) विपरीतता अर्थ में 'णवि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—उएहेह सीअला णवि ( गरम के विपरीत ठंडी अथवा गरम होती हुई भी ठंडी ) कुमा. पा. ४. १.

( ४ ) कृतकरण अर्थात् फिर से उसी क्रिया को करने अर्थ में 'पुणरुत्तं' अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे :—पेच्छ पुणरुत्तम् ( एक बार देख चुकने पर भी फिर से देखो। ) कुमा. पा. ४. १.

( ५ ) विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय और सत्य अर्थों में 'हन्दि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विषाद अर्थ में जैसे :—हन्दि विदेशो ( दुःख है कि हमारे लिए यह विदेश है ? ); विकल्प अर्थ में जैसे :—जीवइ हन्दि पिआ ( पता नहीं मेरी प्रियतमा जीती है अथवा नहीं ! ); पश्चात्ताप अर्थ में जैसे :—हन्दि किं पिआ मुक्का ? ( क्या हमने विरह

दुःख का विना विचार किये ही प्रियतमा को छोड़ दिया ? ); निश्चय अर्थ में जैसे :—हन्दि मरणं ( मरना निश्चित है ); सत्य अर्थ में जैसे :—हन्दि जमो गिम्हो ( ग्रीष्म यमराज है, यह बात सच है । ) कुमा, पा. ४. २.

( ६ ) 'ग्रहण करो', 'लो' इस अर्थ में 'हन्द' और हन्दि अव्यय का भी प्रयोग होता है । जैसे :—हन्द महु हन्दि परिमलमिमं ( पुष्परस लो, यह गन्ध ग्रहण करो । ) कुमा. पा. ४. ३.

( ७ ) इव के अर्थ में मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ, इन अव्ययों का प्रयोग प्राकृत में विकल्प से होता है ।

मिव—जणणि मिव ( माता के समान )

पिव—धूअं पिव ( पुत्री के समान )

विव—सोअरं विव ( सोदर बहन के समान )

व्व—साअरो व्व ( सागर के समान )

व—सहि व ( सखी के समान )

विअ—नत्ति विअ ( पौत्री के समान )

पक्ष में इव जैसे :—

इव—मउडो इव

( ८ ) लक्षण ( लक्ष्य करना ) अर्थ में जेण और तेण अव्ययों का प्रयोग होता है । जैसे :—जेण अहुल्ला लवली ( विना खिली लवली को लक्ष्य करके ); फुल्लं च धूलिकम्बं तेण फुडा चेअ गिम्हसिरी ( खिले हुए धूलि कदम्ब को लक्ष्य करके ग्रीष्म की शोभा स्फुट ही मालूम पड़ती है । ) कुमा० पा० ४. ५.

( ९ ) अवधारण ( अन्ययोग व्यवच्छेद ) अर्थ में णइ, चेअ, चिअ और च अव्ययों का प्रयोग होता है । जैसे :—

णइ—वोलीणा णइ वसन्त-उउ-लच्छी ( वसन्त ऋतु की शोभा वीत ही गई )

चेअ—स्फुटा चेअ गिम्ह-सिरी ( ग्रीष्म की शोभा स्फुट ही मालूम पड़ती है । )

च्चिअ—ते च्चिअ धन्ना ( वे ही धन्य हैं ! )

च्च—स च्च सीलेण ( स्वभाव से अच्छा-सत्-ही )

( १० ) दो में एक के निर्द्धारण तथा निश्चय अर्थों में 'बले' अव्यय का प्रयोग होता है । निर्द्धारण में जैसे :—लयाग नोमालिआ बले रम्मा ( सभी लताओं में नवमल्लिका अथवा नवमालिका मन को आनन्द देनेवाली है । ); निश्चय में जैसे :—बले ते मयणवाणा ( निश्चय ही वे मदन ( कामदेव ), के वाण हैं । )

( ११ ) 'किल' के अर्थ में किर, इर, हिर अव्ययों का विकल्प से प्रयोग होता है । पक्ष में किल ही प्रयुक्त होता है । जैसे :—

किर—जा किर मल्ली ( संभावना करता हूँ कि जो मल्ली है )

इर—जा इर जवा ( संभावना करता हूँ कि जो जपा है )

हिर—सुत्ते जणम्मि जो हिर सहो चीरीण ( लोगों के सो जाने पर जो भीगुरों का शब्द )

पक्ष में किल—एवं किल तेन सिविणए भणिआ ।

विशेष—किल शब्द के अर्थ प्रसिद्ध, संभावना आदि हैं ।



( १२ ) केवल अर्थ में 'णवर' अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । जैसे :—सहो चीरीण सुव्वए णवर ( केवल भीगुरों का शब्द सुनाई पड़ता है ।

( १३ ) आनन्तर्य अर्थ में 'णवरि' अव्यय का प्रयोग होता है । जैसे :—गाअइ किल तस्स मिसा णवरि वसन्तस्स गिम्हसिरी । ( भीगुरों की ध्वनि के बहाने वसन्त के बाद आनेवाली ग्रीष्म-शोभा हर्ष से मानो गान कर रही है ) कुमा० पा० ४. ७.

( १४ ) निवारण अर्थ में 'अलाहि' अव्यय का प्रयोग करना उत्तम है । जैसे :—पहिआ, अलाहि गन्तुं ( पथिको, जाना व्यर्थ है अर्थात् मत जाओ । )

( १५ ) नब् के अर्थ में 'अण' और 'णाइं' अव्ययों का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—अण दइआण ( कान्तारहित जनों का ) । कुसलाइँ इह णाइं ( यहाँ कुशल नहीं है ) ।

( १६ ) मा के अर्थ में 'माइं' इस अव्यय का प्रयोग होता है । जैसे :—माइं इह एध ( यहाँ मत आओ । )

( १७ ) 'हद्धी' यह अव्यय निर्वेद अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है । जैसे :—हद्धी, इअ व्व चीरीहि उल्लविअं

( १८ ) भय, वारण और विषाद अर्थों में वेव्वे का प्रयोग करना चाहिए । जैसे :—समुहोट्टिअम्मि ममरे वेव्वे त्ति भणेइ मल्लिउच्चिणिरी । वारणखेअभएहिं भणिउं वेव्वे वयंसे त्ति ( सम्मुखोत्थिते भ्रमरे वेव्वे इति भणति मल्लिकामुच्चेत्री । वारण-खेदभयैः भणित्वा वेव्वे 'वयस्ये' इति । )

( १६ ) वेव्व और वेव्वे का भी आमन्त्रण अर्थ में प्रयोग किया जाता है। जैसे:—वेव्व सहि चिट्ठसु ( हमारा आमन्त्रण है ! सखि, रुको )

विशेष—आमन्त्रण अर्थ में 'वेव्वे' का प्रयोग नियम १८ के मणिउं वेव्वे वयंसेत्ति में देखा जाता है।

( २० ) सखी द्वारा आमन्त्रण अर्थ में 'हला', 'मामि', और 'हले' अव्ययों का प्रयोग विकल्प से होता है। पक्ष में 'सहि' यह प्रयुक्त होता है। जैसे:—वेव्व सहि चिट्ठसु हला निसीद, मामि रम जासि कत्थ हले ? ( हमारा आमन्त्रण है, सखि, रुको ! सखि बैठो ! सखि, क्रीडा करो ! जाती कहाँ हो सखि ? )  
कुमा. पा. ४. १०.

( २१ ) सम्मुखीकरण अर्थ में और सखी के आमन्त्रण अर्थ में 'दे' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए। सामान्य संबोधन में जैसे:—दे पसिअ ताव सुंदरि; सख्यामन्त्रण में जैसे:—दे पसिअ किमसि रुद्धा ? ( हे सखि, प्रसन्न होओ, रूठी किस लिए हो ? )

( २२ ) दान, प्रश्न और निवारण अर्थों में 'हुं' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। दान में जैसे:—हुं, गिण्हसु कणय-भायणयं ( मैंने दे डाला, अब तुम यह कनक-पात्र ले लो ? ); प्रश्न में जैसे:—हुं, तुह पिओ न आओ ? ( मैं पूछती हूँ अभी तक तेरा प्रियतम नहीं आया ? ); निवारण में जैसे:—हुं, किं तेणज्ज ( अरे हटाओ भी, उससे अब हमारा क्या मतलब ? )

( २३ ) निश्चय, वितर्क, संभावना और विस्मय अर्थों में हुं और खु का प्रयोग किया जाता है । निश्चय में जैसे :—सो हु अन्नरओ ( यह निश्चित है कि वह दूसरी स्त्री में रम गया है । ), तुमयं खु माणइत्ता ( यह निश्चित है कि तुम मानवती हो । ); वितर्क और संभावना अर्थों में जैसे :—तस्स हु जुग्गा सि सा खु न तं ( मैं ऐसा अंदाज करता हूँ और यही संभव भी है कि वह दूसरी स्त्री उसके योग्य है और तुम उसके—प्रियतम के योग्य नहीं हो । ); विस्मय अर्थ में जैसे :—एसो खु तुज्ज रमणो ( आश्चर्य है कि यह तुम्हारा रमण है । ) कुमा. पा. ४. १२

( २४ ) गर्हा, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थों में ऊ का प्रयोग किया जाता है । गर्हा में जैसे :—तुज्ज ऊ रमणो ( तुम्हारा निन्दित रमण ); आक्षेप में जैसे :—ऊ किं मए भणिअं ( अरे मैंने क्या कह डाला ? ); विस्मय अर्थ में जैसे :—ऊ अच्छरा मह सही ( अहो, मेरी सखी अप्सरा है ); सूचन अर्थ में जैसे :—ऊ इअ हसेइ लोओ ( तुम्हारे प्रियतम को दोष दे-देकर सखियाँ हँसती हैं । ) कुमा. पा. ४. १३.

( २५ ) कुत्सा अर्थ में 'थू' अव्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—थू रे निकिड्ड कलहसील ( अरे अधम, भगड़ाळ, तुझे थू है ! )

( २६ ) 'रे' और 'अरे' क्रमशः संभाषण और रतिकलह अर्थों में प्रयुक्त होते हैं । संभाषण अर्थ में जैसे :—रे हिअय

मडह—सरिआ; रतिकलह में अरे जैसे :—अरे मए समं मा करेसु उवहासं ।

२७ ) क्षेप, संभाषण और रतिकलह अर्थों में 'हरे' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । क्षेप में जैसे :—हरे णिलज्ज; संभाषण में जैसे :—हरे पुरिसा; रतिकलह में जैसे :—हरे वहुवल्लह ।

( २८ ) सूचना और पश्चात्ताप अर्थों में 'ओ' अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । सूचना अर्थ में जैसे :—ओ सढो सि ( मैं यह सूचित कर देना चाहता हूँ कि तुम शठ हो । ) पश्चात्ताप में जैसे :—ओ किमसि दिट्ठो ? ( क्या तुम देख लिए गये ? ) कुमा. पा. ४. १३.

( २९ ) सूचना, दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, विषाद, और पश्चात्ताप अर्थों में 'अव्वो' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए ।

सूचना में जैसे :—अव्वो नओ तुह पियो ( यह सूचित करता हूँ कि तुम्हारा प्रियतम नत हो गया । ) ; दुःख में जैसे :—अव्वो तम्मेसि ( खेद है कि तुम उदास हो । ) ; संभाषण में जैसे :—किं एसो अव्वो अन्नासत्तो ( क्या यह दूसरी में आसक्त है ? ) ; अपराध एवं विस्मय में जैसे :—अव्वो तुज्जेरिसो माणो ( प्रणययुक्त प्रणयी में तुम्हारा ऐसा मान ? ) इससे अपराध और आश्चर्य दोनों प्रकट होते हैं । आनन्द में जैसे :—अव्वो पिअस्स समओ ( यह आनन्द की बात है कि प्रियतम के आने का यह समय है । ) ;

आदर में जैसे :—अव्वो सो एइ ( मेरा प्रियतम यह आ रहा है ? ); भय में जैसे :—रूसणो अव्वो ( भय है कि वह थोड़े अपराध पर भी रूठ जानेवाला है । ); खेद और विषाद में जैसे :—अव्वो कट्टं ( मैं खिन्न और विषण्ण हूँ । ); पाश्चात्ताप में जैसे :—अव्वो किं एसो सहि मए वरिओ ( सखि, मैं तो पछता रही हूँ कि मैंने इसे बरा क्यों ? )

( ३० संभावन अर्थ में 'अइ' अव्यय का प्रयोग करना चाहिये । जैसे :—अइ एसि रइ-घराओ ( मेरी ऐसी संभावना है कि तुम रतिगृह से आ रही हो । )

( ३१ ) निश्चय, विकल्प, अनुकम्प्य और संभावन अर्थों में 'वणे' अव्यय का प्रयोग करना चाहिये । निश्चय में जैसे :—वणे देमि ( निश्चय ही देता हूँ ); विकल्प में जैसे :—होइ वणे न होइ ( हो या न हो ); अनुकम्प्य में जैसे :—दासो वणे न मुच्चइ ( अनुकम्पा योग्य दास छोड़ा नहीं जाता ); संभावन में जैसे :—नत्थि वणे जं न देइ विहिपरिणामो ।

( ३२ ) विमर्श अर्थ में ( कुछ के मत से संस्कृत मन्ये अर्थ में ) मणे अव्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—मणे सूरु ( मेरी ऐसी मान्यता है कि यह सूर्य है । )

( ३३ ) आश्चर्य अर्थ में अम्मो अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । जैसे :—स अम्मो पत्तो खु अप्पणो ( वह प्रियतम अपने आप प्राप्त हो गया । आश्चर्य है ? )

( ३४ ) स्वयम् के अर्थ में अप्पणो का प्रयोग विकल्प से

करना चाहिए। देखिए ऊपर के ३३ वें नियम का उदाहरण। पक्ष में 'सयं' होता है।

( ३५ ) प्रत्येकम् के अर्थ में पाडिकं, पाडिएकं और पक्ष में पत्तेअं का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—पाडिकं दइआओ, वाण वयंसीओ पाडिएकं च। पत्तेअं भित्ताइं ( प्रत्येक दयिताएं, उनकी प्रत्येक सखियाँ और प्रत्येक मित्र )

( ३६ ) पश्य के अर्थ में 'उअ' का प्रयोग विकल्प से किया जाता है। जैसे :—उअ एसो एइ ( देखो, यह आ रहा है। )

( ३७ ) इतरथा के अर्थ में इहरा का प्रयोग विकल्प से किया जाता है। जैसे :—कहमिहरा पुलइआ सि दट्टुमिमं ( अन्यथा इसे देखकर तुम पुलकित क्यों हो ? )

( ३८ ) भगिति और साम्प्रतम् के अर्थ में एकसरिअं का प्रयोग होता है। जैसे :—एकसरिअं भगिति साम्प्रतम् वा।

( ३९ ) मुधा के अर्थ में मोरउल्ला का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—मा तम्म मोरउल्ला ? ( व्यर्थ उदास मत होओ ? )

( ४० ) अर्द्ध और ईषत् में 'दर' इस अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—दरविअसिअं ( अर्ध विकसित अथवा ईषद्विकसित )

( ४१ ) प्रश्न अर्थ में किणो अव्यय का प्रयोग करना चाहिए। जैसे :—किणो धुवसि ? ( काँपते हो क्या ? )

( ४२ ) पादपूर्ति के लिए इ, जे, र का प्रयोग करना चाहिए। जैसे :—वारविलया इ एआ; गिम्ह-सुहं माणिउं पयट्टा जे; पिअन्ति पिक्क-दक्ख-रसं।

**विशेष**—अहो, हंहो, हेहो, हा, नाम, अहह, ही, सि, अयि, अहाह, अरि, रि, हो, इत्यादि अव्ययों का प्रयोग प्राकृत में संस्कृत के समान करना चाहिए ।

( ४३ ) अपि के अर्थ में पि और वि का प्रयोग करना चाहिए जैसे :—इअ जंपि तं पि लविराओ ।



## षष्ठ अध्याय

### [ तिङन्त विचार ]

( १ ) प्राकृत में क्यङ्, क्यष् आदि प्रत्ययों के विधान के कोई विशेष नियम नहीं हैं। केवल हेमचन्द्र के व्याकरण में एक सूत्र ( ३.१३८ ) है, जिससे य के लुक् के विषय में ज्ञात होता है। जैसे :—गरुआइ, गरुआअइ; दमदमाइ, दमदमा-अइ; लोहिआइ, लोहिआअइ।

( २ ) प्राकृत में गणभेद ( धातुओं के वर्गीकरण ) की व्यवस्था नहीं की जाती है।

( ३ ) प्राकृत में तिप् आदि तिङ् कहलानेवाले प्रत्ययों के वर्तमान काल में वक्ष्यमाण रूप होते हैं। तथा अदन्त धातुओं को छोड़कर शेष धातुओं में 'आत्मनेपदी' और 'परस्मैपदी' का भेद नहीं माना जाता<sup>१</sup>।

### वर्तमान काल के प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु० इ	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पु० सि	इत्था, ह
उत्तम पु० मि	मो, मु, मा

१. पाणिनि ( ३.४.३८ ) के अनुसार तिप्, तस्, फि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस्; त, आताम्, ऊ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इ, वहिङ्, महिङ्, इनमें ति से ङ् तक तिङ् कहे जाते हैं।

२. शौरसेनी में सभी धातु परस्मैपदी होते हैं।



( ४ ) अकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के प्रथम-मध्यम पुरुषों के एकवचन के स्थान में क्रमशः 'ए' और 'से' आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे :—तुवरए ( त्वरते ); तुवरसे ( त्वरसे )

( ५ ) अदन्त धातु से 'मि' के पर में रहने पर पूर्व के 'अ' का आत्व विकल्प से होता है । जैसे :—हसामि, हसमि इत्यादि ।

( ६ ) अकारान्त धातु से 'मो' 'मु' और 'म' पर में रहें तो पूर्व के अकार के स्थान में 'इ' और 'आ' होते हैं । कहीं कहीं ए भी होता है । जैसे :—हसिमो, हसामो, हसेमो; हसिमु, हसेमु इत्यादि ।

वर्तमान में अकारान्त भण धातु के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	भणइ, भणए	भणन्ति, भणन्ते. भणिरे
मध्यम पु०	भणसि, भणसे	भणह, भणित्था
उत्तम पु०	भणामि, भणमि	भणामो, भणिमो, भणोमो इत्यादि

विशेष—यों ही हस और पठ आदि सभी अकारान्त धातुओं के रूपों को जानना चाहिए । केवल अस धातु के रूप विशेष नियमानुसार सिद्ध होते हैं ।

वर्तमान में अस धातु के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	अच्छइ, अत्थि	अच्छन्ति, अत्थि
मध्यम पु०	सि, अच्छसि, अत्थि	अत्थि, अच्छत्था, अच्छह
उत्तम पु०	म्हि, अत्थि, अच्छामि	म्हो, म्हा, इत्यादि

( ७ ) स्वरान्त धातु से भूत काल में सभी पुरुषों और वचनों में विहित प्रत्यय के स्थान में 'ही' 'सि' और 'हीअ' आदेश होते हैं । जैसे :—कासी, काही, काहीअ; ठासी, ठाही, ठाहीअ ( अकार्षीत्, अकरोत्, चकार; तथा अस्थात्, अतिष्ठत्, तस्थौ )

**विशेष**—प्राकृतप्रकाश में ही और सी का विधान नहीं देखा जाता । उसके अनुसार एकाच धातु से केवल 'हीअ' आदेश होता है । देखिए—वर० ७. २४

( ८ ) व्यञ्जनान्त धातु से भूतकाल में विहित सभी प्रत्ययों के स्थान में 'इअ' आदेश होता है । जैसे :—गण्हीअ ( अग्रहीत्, अगृह्णात्, जग्राह )

**विशेष**—( क ) केवल अस धातु के साथ भूतार्थक कुल पुरुष और वचन के प्रत्ययों के स्थान में 'आसि' और 'अहेसि' आदेश होते हैं । जैसे :—सो, तुमे अहं वा आसि । एवं अहेसि । देखिए—तेनास्तेरास्यहासी । हेम० ३. ६४

( ख ) प्राकृतप्रकाश के अनुसार, अस धातु का, केवल भूतार्थक एकवचन के साथ एकमात्र 'आसि' आदेश होता है । देखिए वर. ७. २५

भविष्यत् काल में तिवादि तिङ् प्रत्ययों के स्वरूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	हिइ	हिन्ति, हिंन्ते, हिरे
मध्यम पु०	हिसि	हित्थ, हिरु
उत्तम पु०	{ हिमि, हामि, स्सामि, स्सम्	हिस्सा, हिहा

१. देखिए—सी-ही-हीअ भूतार्थस्य । हेम० ३. १६२.

भविष्यत् काल में भू धातु के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	होहिइ <sup>१</sup>	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे
मध्यम पु०	होहिसि <sup>२</sup>	होहित्थ, होहिह
उत्तम पु०	होस्सामि, होहामि	होहामो, होस्सामो
	होस्सामो, होहामो हो-	इत्यादि
	स्सामु, होहामु, होस्साम,	
	होहाम, होहिमु, होहिम <sup>३</sup>	

भविष्यत् काल में कृ धातु के रूप :—

प्रथम पु०	काहिइ	काहिंति
मध्यम पु०	काहिसि	काहित्था
उत्तम पु०	काहं, काहिमि	काइमो

भविष्यत् काल में हस धातु के रूप :—

प्रथम पु०	हसिहि	हसिहिनति
मध्यम पु०	हसिहिसि	हसिहित्था
उत्तम पु०	हसिस्सं	हसिस्सामो, हसिहामो

१. प्राकृतप्रकाश के अनुसार प्रथम पुरुष के एकवचन में होहिइ, हवहिइ, होज्ज, होज्जा, होज्जहिइ, होज्जाहिइ, होसइ होही और प्रथम पुरुष के बहुवचन में होहिन्ति, हुविहिनति रूप होते हैं ।

२. प्राकृतप्रकाश के अनुसार मध्यम पुरुष के एकवचन में— होहिहिसि, हुविहिहि, हुविहिसि, होहिहि तथा बहुवचन में होहित्था, होहिहु, हुवित्था, हविहिह रूप होते हैं ।

३. प्राकृतप्रकाश के अनुसार उत्तम पुरुष के एकवचन में होस्सामि, होस्सामो, होहामि, होहिमि, होस्स, होहिमो और बहुवचन में होहिस्सा, होहित्था, होहिओ, होहिमु, होहामो, होहिम, होस्सामो, होस्सामु, होस्साम रूप होते हैं ।

इसी प्रकार से भण, पठ आदि के रूप भी चलते हैं—

( ६ ) कृ, दा, सं + गम, रुद, विद, दृश, वच, भिद बुध, श्रु, गम, मुच और छिद धातु भविष्यत् काल में, उत्तम पुरुष के एकवचन में, नीचे लिखे विशिष्ट रूपों को प्राप्त करते हैं। इतर ( प्रथम और मध्यम ) पुरुषों में श्रु धातु के रूपों के समान रूप प्राप्त करते हैं।

धातुओं के नाम

उत्तम पुरुष के एकवचन के रूप

कृ	काहं, काहिमि
दा	दाहं, दाहिमि
सं + गम	संगच्छं
रुद	रोच्छं
विद	वेच्छं
दृश	देच्छं
वच	वेच्छं
भिद	भेच्छं
बुध	भोच्छं
श्रु	सोच्छं, सोच्छिस्सं, सोच्छिमि
	इत्यादि
गम	गच्छं
मुच	मोच्छं
छिद	छेच्छं

भविष्यत् काल के प्रथम और मध्यम पुरुषों में श्रु धातु के रूप :—

एकवचन

बहुवचन

प्रथम पु० सोच्छिइ, सोच्छिहिइ

सोच्छिन्ति, सोच्छिहन्ति

	एकवचन	बहुवचन
मध्यम पु०	सोच्छिसि, सोच्छिहिसि	सोच्छित्था इत्यादि
उत्तम पु०	सोच्छं	सोच्छिमो, सोच्छिहिमो इत्यादि

विध्याद्यर्थक तिङ् :—

प्रथम पु०	उ	न्तु
मध्यम पु०	सु, हि	ह
उत्तम पु०	मु	मो

हस धातु के विध्याद्यर्थ में रूप :—

प्रथम पु०	हसउ	हसन्तु, हसेन्तु
मध्यम पु०	{ हससु, हसहि, हस, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे	हसह
उत्तम पु०	हसमु	हसामो

इसी प्रकार पठ आदि धातुओं के रूप जाने जा सकते हैं । किन्हीं आचार्यों के मत से विध्यादि में वर्तमान के तुल्य ही रूप होते हैं । जैसे :—जअइ' इत्यादि ।

( १० ) वर्तमान, भविष्यत् और विध्यादि में उत्पन्न प्रत्यय के स्थान में ज्ज और ज्जा ये दोनों आदेश विकल्प से होते हैं । पक्ष में यथाप्राप्त होते हैं । जैसे :—हसेज्ज, हसेज्जा ( हसति, हसिष्यति, हसतु, हसेत् इत्यादि )

विशेष—( क ) हेमचन्द्र के मत से स्वरान्त धातुओं के विषय में ही उक्त नियम लागू होता है ।

( ख ) शौरसेनी में उक्त नियम लागू नहीं होता ।

१. शौरसेनी में जि धातु के विध्यादि में 'जेडु' इत्यादि रूप होते हैं ।

( ११ ) धातु से वर्तमान, भविष्यत् और विध्यादि अर्थवाले तिङ् यदि पर हों तो धातु और प्रत्यय के मध्य में भी उज और उजा विकल्प से होते हैं। होज्जइ, होज्जाइ ( भवति, भविष्यति, भवतु, भूयात् इत्यादि )

( १२ ) शतृ और शानच् इन दोनों में एक-एक के स्थान में न्त और माण ये दो आदेश होते हैं। जैसे :—पढन्तो, पढमाणो; हसन्तो, हसमाणो ( पठन् , हसन् )

( १३ ) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शतृ और शानच् के स्थान में ई, न्ती और माणा आदेश होते हैं। जैसे :—उवहसमाणि सरोरुहं विहसन्ति हसइ व कुमुइणि ( उपहसन्ती; विहसन्तीम्; हसन्तीमिव ) कुमा. पा. ५. १०६

( १४ ) वर्तमान, विध्यादि और शतृ प्रत्ययों के पर में रहने पर अकार के स्थान में एकार विकल्प से होता है। जैसे :—हसेइ, हसइ; हसेउ, हसउ; हसेतो, हसंतो ( हसति, हसेत्, हसन् ) कहीं पर नहीं भी होता है। जैसे :—जअइ। कहीं आत्व भी होता है। जैसे :—सुणाउ।

**विशेष**—शौरसेनी में धातु और तिङ् के मध्य में अधिकतर ए और आ होते हैं।

( १५ ) भाव और कर्म में विहित यक् के स्थान में 'इअ' और 'इज्ज' आदेश होते हैं। जैसे :—हसिअइ, हसिज्जइ ( हस्यते )

**विशेष**—दृश और वच के भाव और कर्म में क्रमशः दीश और वुच्च रूप होते हैं। दीसइ ( दृश्यते ); वुच्चइ ( उच्यते )

( १६ ) क्त्वा, तुम, तव्य और भविष्यत् काल में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर धातु के अन्त्य अ के स्थान में 'ए'

और 'इ' होते हैं। जैसे :—हसेऊण, हसीऊण (हसित्वा); हसेउं, हसिउं (हसितुम्); हसेअव्वं, हसिअव्वं (हसितव्यम्); हसेहिइ, हसिहिइ (हसिष्यति)

**विशेष**—उक्त नियम अदन्त धातुओं को छोड़ अन्य धातुओं में लागू नहीं होता। जैसे :—काऊण (कृत्वा)

(१७) क्त प्रत्यय के पर में रहने पर धातु के अन्त्य 'अ' का 'इ' होता है। जैसे :—हसिअं, पठिअं (हसितम्, पठितम्)

(१८) ण्यन्त धातु के णि के स्थान में अत्, एत्, आव् और आवे ये चार आदेश होते हैं।

(१९) भाव और कर्म अर्थ में विहित क्त प्रत्यय के पर रहने पर णि का लुक् और (पर्यायेण लुंगभाव होने पर) 'अवि' आदेश होते हैं। णिच् के पर में रहने पर भ्रम धातु के स्थान में विकल्प से 'भमाड' आदेश होता है। जैसे :—कारिअं, कराविअं (कारितम्); सोसिअं, सोसविअं (शोषितम्); तोसिअं, तोसविअं (तोषितम्); कारीअइ, कराविअइ, कारिज्जइ, कराविज्जइ (कार्यते); भमाडइ, भमाडेइ, भामेइ, भमावइ (भ्रामयति)

### धात्वादेशसंबंधी नियम—

(२०) व्यञ्जनान्त धातु के अन्त्य व्यञ्जन के आगे अ आकर मिलता है। जैसे :—हसइ (हसति) इत्यादि।

(२१) अकारान्त धातुओं को छोड़कर अन्य स्वरान्त धातु के अन्त में अकार का आगम विकल्प से होता है। जैसे :—पाइ, पाअइ इत्यादि।

(२२) चि, जि, हु, श्रु, सु, ल्, पू और धू धातुओं के

अन्त में णकार का आगम होता है और इनके दीर्घ स्वर का ह्रस्व होता है। जैसे :—चिणइ, जिणइ, हुणइ, लुणइ इत्यादि।

( २३ ) भाव और कर्म अर्थ में वर्तमान च्यादि धातुओं के अन्त में द्विरुक्त व ( व्व ) का आगम विकल्प से होता है। जैसे :—चिव्वइ, चिणिज्जइ ( चीयते ) इत्यादि।

( २४ ) भाव और कर्म अर्थ में वर्तमान चिञ्च, ह्न और खन धातुओं के अन्त में द्विरुक्त म ( म्म ) का आगम विकल्प से होता है एवं यक का लोप होता है। ह्न धातु के विषय में कर्ता अर्थ में भी द्विरुक्त म ( म्म ) होता है। जैसे :—चिम्मइ, हम्मइ ( चीयते, ह्न्यते )

विशेष—शौरसेनी में यह नियम प्रवृत्त नहीं होता है।

( २५ ) भाव और कर्म अर्थ में वर्तमान दुह, लिह, वह और रुध धातुओं के अन्त्य में द्विरुक्त म ( म्म अथवा किसी-किसी के मत से ष्म ) विकल्प से होते हैं, यक का लोप भी होता है। जैसे :—दुब्भइ, दुहिज्जइ ( दुह्यते ) इत्यादि।

( २६ ) भाव और कर्म में वर्तमान गमादि धातुओं के अन्त्य वर्ण का द्वित्व विकल्प से होता और यक का लोप भी होता है। जैसे :—गम्मइ, गमिज्जइ, हस्सइ, हसिज्जइ ( गम्यते, हस्यते )

विशेष—नीचे लिखे धातु नीचे लिखे अनुसार विशेष नियमों का अनुसरण करते हैं :—

सं० धातु	भावकर्म में ग्रा०	भावकर्ममें सं०
दह	डहइ, डहिज्जइ	दह्यते
बध	वंहइ, वंधिज्जइ	वध्यते
सं + रुध	संरुब्भइ, संरुधिज्जइ	संरुध्यते
अनु + रुध	अण्णरुब्भइ, अण्णरुधिज्जइ	अनुरुध्यते



उ + रुध	उवरुह्यइ, उवरुधिज्जइ	उपरुध्यते
हृ	हीरइ, हरिज्जइ	ह्रियते
कृ	कीरइ, करिज्जइ	क्रियते
तृ	तीरइ, तरिज्जइ	तीर्यते
जू	जीरइ, जरिज्जइ	जीर्यते
अर्ज	विढप्पइ, विढविज्जइ, अजिज्जइ	अर्ज्यते
ज्ञा	णच्चइ, णज्जइ, जाणिज्जइ, णाइज्जइ	ज्ञायते
वि+आ+हृ	वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ	व्याह्रियते
आ + रभ	आढप्पइ, आढवीअइ	आरभ्यते
स्निह	सिप्पइ	स्निह्यते
सिच	सिप्पइ	सिच्यते
ग्रह	घेप्पइ, गण्हिज्जइ	गृह्यते
स्पृश	छिप्पइ	स्पृश्यते

( २७ ) धातु के अन्त्य उवर्ण के स्थान में अव आदेश होता है । जैसे :—हृ धातु का 'एहव' इत्यादि ।

( २८ ) धातु के अन्त्य ऋवर्ण के स्थान में 'अर' आदेश होता है । जैसे :—कृ का कर इत्यादि ।

**विशेष**—वृषादि के ऋकार का 'अरि' आदेश होता है । जैसे :—वृष का वरिस कृष का करिस इत्यादि ।

( २९ ) धातु के इवर्ण और उवर्ण का गुण होता है । जैसे :—नेइ ( नयति ), मोत्तुण ( मुक्त्वा )

( ३० ) रुष आदि धातुओं के स्वर का दीर्घ होता है । जैसे :—रुसइ, पूसइ, सीसइ, तूसइ, दूसइ, ( रुष्यति, पुष्णाति शिनष्टि, तुष्यति, दुष्यति )

( ३१ ) धातुओं में स्वरों के स्थान में अन्य स्वर बाहुल्येन होते हैं । जैसे :—हवइ, <sup>१</sup> हिवइ ( भवति ); चिणइ, <sup>२</sup> चुणइ ( चिनोति ); सहहणं, सहहाणं ( श्रद्धधानम् ); धावइ, धुवइ ( धावति ); रुवइ, रोवइ ( रोदिति )

विशेष—बाहुल्येन कहने से—देइ, लेइ, विहेइ नासइ आदि प्रयोगों में नित्य ही धातु के एकस्वर के स्थान में दूसरा स्वर हुआ ।

( ३२ ) कुछ संस्कृत धातुओं के प्राकृत रूपान्तर नीचे लिखे अनुसार होते हैं :—

संस्कृत धातु	प्राकृत रूपान्तर
कथ	वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, संघ, बोल्ल, चव, जम्प, सीस, साह तथा दुःख अर्थ में णिव्वर ।
जुगुप्स	झुण, दुगुच्छ, दुगुच्छ
बुभुक्ष	णीख पत्त में बुहुक्ख
ध्या	भा
गै	गा
ज्ञा	जाण, मुण
उद् + ध्मा	धुमा
श्रद् + धा	दह ( सहहइ )
पा ( पीने में )	पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट
उद् + वा	ओरुम्वा, वसुआ
नि + द्रा	ओहीर, उड्ड

१. देखिए—भुवेर्होहवहवाः । हेम. ४. ६०

२. देखिए—इसी पुस्तक का ६. २२.

आ + घ्रा	आइग्घ
स्ना	अब्भुत्त ( कहीं कहीं अब्भुक्क )
सम् + स्त्यै	खा
स्था	ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प
उद् + स्था	ठ, कुक्कुर
स्तै	वा, पव्वाय
निर् + मा	निम्मण, निम्मव
क्षि	णिब्भर कहीं कहीं निब्भर और पक्ष में भिज्ज
छादि	णुम, नू ( णू ) म, सन्नुम ढक्क, ओम्बाल
	पव्वाल
निवारि	णिहोड पक्ष में निवार
निपाति	णिहोड, पाड ( पाडेइ )
दू + णिच्	दूम
धवलि	दुम, दूम, धवल
तोलि	ओहाम
विरेचि	ओलुण्ड, उल्लुण्ड, पल्हत्थ, पक्ष में-विरेअई
ताडि	ओहोड, विहोड
मिश्रि	वीसाल, मेलव
उद् + धूलि	गुण्ठ
नश + णिच्	विउड, नासव, हारव, विप्पगाल, पलाव
	पक्ष में नास
भ्रम + णिच्	ताल्लिअण्ट, तमाड पक्ष में भाम, भमाड,
	भमाव
दृश + णिच्	दाव, दंश, दक्खव पक्ष में दरिस
उद् + घाटि	उग्ग पक्ष में उग्घाड
स्पृह + णिच्	सिह

सं + भावि	आसंघ
उद् + नामि	उत्थघ ( उत्थंघ ), उल्लाल, गुलुगुच्छ, उप्पेल, (किसी किसी के मत से उस्याव भी)
प्र + स्थापि	पट्टव, पेण्डव, पट्टाव
वि + ज्ञपि	वोक्क, आवुक्क ( हेमचन्द्र के अनुसार अवुक्क ), विण्णव
अर्पि	अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम, अप्प
यापि	जव, जाव
प्लावि	उम्वाल, पन्वाल, पाव
विकोशि(नामधातुण्यन्त)	पक्खोड ( कसी २ के मत से परकोड )
रोमन्थि	उग्गाल ( हेम०-ओग्गाल ) वग्गोल, रोमंथ
कामि	णिहुव, काम
प्र + काशि	पुठ्व, पआ ( या ) स
कम्पि	विच्छोल, कम्प
आ + रोहि ( पि )	वल, रोव
दोलि	रद्धोल, दोल ( मतान्तर से ढोल भी )
रञ्जि	राव, रञ्ज
घट + णिच्	परिवाड, घड
वेष्टि	परिआल, वेड
क्री	क्किण
वि + क्री	क्के, क्किण, ( विक्केइ, विक्कणइ )
भी	भा, बीह
आ + ली	अल्ली ( अलियइ, अल्लीणो )
नि + ली	णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लुक्क, लिक्क, लिहक्क, निलिज्ज
वि + ली	विरा, विलिज्ज

रु	रुञ्ज, रुण्ट, रव
श्रु	हण, सुण
धु	धूव, धुण
भू	हो, हुव, हव, हु, <sup>१</sup> णिब्बड, <sup>२</sup> हू, <sup>३</sup> हुप्प <sup>४</sup>
कृ	कुण, कर, णिआर, <sup>५</sup> णिट्ठुह <sup>६</sup> संदाण, <sup>७</sup> वावम्फ, <sup>८</sup> णिच्चोल या णिब्बोल, <sup>९</sup> पयल्ल, <sup>१०</sup> पइल्ल, णीलुच्छ <sup>११</sup> कम्म, <sup>१२</sup> गुलल

१. विद्वर्जित प्रत्यय के आने पर भू के स्थान में हु आदेश विकल्प से होता है। हेम. ४. ६१.

२. पृथक् होना और स्पष्ट होना अर्थ में णिब्बड आदेश होता है। हेम. ४. ६२.

३. क्त प्रत्यय के पर में रहने पर हू आदेश होता है। हेम. ४. ६४.

४. प्रभु होना अर्थ में प्र उपसर्ग पूर्व में रहने पर भू के स्थान में हुप्प विकल्प से होता है। हेम. ४. ६३.

५. कारोक्षित अर्थ में। देखो—‘कारोक्षिते णिआरः।’ हेम. ४. ६६.

६. निष्ठम्भ और अवष्टम्भ अर्थों में क्रमशः णिट्ठुह और संदाण आदेश होते हैं। देखो—‘निष्ठम्भावष्टम्भे.....’ हेम. ४. ६७.

७. श्रम अर्थ में। देखो—‘श्रमे वावम्फः।’ हेम. ४. ६८.

८. क्रोध से ओठ मलिन करने अर्थ में। देखो—‘मन्युनौष्ठमालिन्ये....’ हेम. ४. ६९.

९. शिथिल होना या लम्बा पड़ना अर्थ में। देखो—‘शैथिल्यलम्बने....’ हेम. ४. ७०.

१०. निष्पात और आच्छोटन में। हेम. ४. ७१.

११. क्षौरकर्म में। हेम. ४. ७२

१२. चाटुकरण में। हेम. ४. ७३.

स्मृ	कर, कूर ( हेमचन्द्र के मत से भर और झूर ), भर, भल, लड, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह, सर
वि + स्मृ	पम्हुस, विम्हर, वीसर
वि + आ + ह	कोक, पोक, वाहर
मुच	छड्ड, अवहेड, मेल्ल, ( हेमचन्द्र के मत से उसिक भी ) रे अव, णिल्लुञ्छ, धंसाड, णिव्वल <sup>१</sup>
वञ्च	वेहव, वेलव, जूख, उमच्छ
रच	रणह ( हेम० के मत से उग्गह ) अवह, विडविडु, उवहत्थ <sup>२</sup> सारव, समार और केलाय
सिच	सिच्च, सिम्प । पक्ष में सेअ
प्रच्छ	पुच्छ
गर्ज	बुक्क, ठिक्क <sup>३</sup>
राज	रग्घ, छ्ह्य, सह, रीर, रेह, राय
प्र + स्मृ	पयल्ल, उवेल्ल, महमह <sup>४</sup>
नि + स्मृ	नीहर ( हेम० के अनुसार णीहर ), नील, धाड, वरहाड । पक्ष में नीसर
जागृ	जग्ग । पक्ष में जागर
वि + आ + पृ	आजड्ड । पक्ष में वावर

१. दुःखमोचन अर्थ में । देखो—‘दुःखे णिव्वलः ।’ हेम० ४. ९२.

२. उवहत्थ से केलाय तक जितने आदेश हैं सम् और आड् पूर्वक रच के स्थान में विकल्प से होते हैं । देखो हेम० ४. ९५.

३. वृषभ के गर्जन अर्थ में । देखो—‘वृषे ठिक्कः ।’ हेम० ४. ९९.

४. गन्ध-प्रसार में ।

सं + वृ०	साहर, साहट्ट । पक्ष में संवर
आ + ह	सन्नाम । पक्ष में आदर
प्र + ह	सार । पक्ष में पहर
अव + तृ	ओह, ओरस । पक्ष में ओअर
शक	चय, तर, तीर, पार । पक्ष में सक
त्यज	चय
तृ	तर
पारि ( पृ + णिच् )	पार
फक्क	थक्क । किसी के मत से छक्क
शलाघ	सलह
खच	वेअड । पक्ष में खच
पच	सोल्ल, पउल अथवा पउल्ल । पक्ष में पअ
मस्ज	आउड्ड, णिउड्ड, वुड्ड, खुप्प
पुञ्ज	आरोल, वमाल । पक्ष में पुंज
लज्ज	जीह । पक्ष में लज्ज
उद् + विज	उविव
तिज	ओसुक्क
मृज	उग्गुस, लुळ्ळ, पुळ्ळ, पुंस, फुस, पुस,
	लुह, हुल, रोसाण
भञ्ज	वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पवि-
	रञ्ज, करञ्ज, नीरञ्ज
व्रज	वच्च
अनु + व्रज	पडिअग्ग, अग्गुवच्च
अज्ज	विढव, अज्ज
युज	जुञ्ज, जुज्ज, जुप्प
भुज	भुञ्ज, जिम, जेम, कम्म, अण्ह, समाण, चड्ड
उप + भुज	कम्मव

घट	गढ । पक्ष में घड
सं + घट	संगल । पक्ष में संघड
स्फुट	फुट्ट, फुंड, मुर <sup>१</sup>
मण्ड	चिञ्च, चिञ्चिअ, चिञ्चिल्ल, रीड, टिविडिक
तुड	तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उखुड, उल्लुक, गिलुक, लुक, उल्लूर
घूर्ण	घुल, घोल, घुल्ल, पहल्ल
नृत	नच्च
क्वथ	अट्ट, कट
ग्रन्थ	गण्ठ
मन्थ	विरोल, घुसल
ह्लाद और ह्लाद	अवअच्छ
नि + सद	गुमज
छिद	दुहाव, णिच्छल्ल, णिञ्भोड, णिठवर, णिल्लूर, लूर. छिन्द
आ + छिद	ओअन्द, उहाल
विद	विज
मृद	मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड अथवा परणाड
स्पन्द	चुलुचुलु, फन्द
निर् + पद	निठवल, निप्पज
वि, सं + वद	विअट्ट, विलोट्ट, फंस और पक्ष में विसंवय
शद	फड, पक्खोड
आ + कन्द	णीहर । पक्ष में अकन्द
खिद	जूर, विसूर । पक्ष में खिज

१. हास से विकसने अर्थ में ।



रुध	उत्थङ्ग या उत्तङ्ग । पक्ष में रुन्ध
नि + सिध	हक्क । पक्ष में निसेह
क्रुध	जूर । पक्ष में कुञ्भ
जन	जा, जम्म
तन	तड, तडु, तडुव, विरल्ल और तण
तृप्त	थिप्प
उप + सृप	अल्लिअ । पक्ष में उवसप्प
सं + तप	भंख । पक्ष में संतप्प
वि + आप	ओअग्ग । पक्ष में वाव
सं + आप	समाण । पक्ष में समाव
क्षिप	गलत्थ, अडुक्ख, सोल्ल, पेल्ल, णोल्ल, छुह, हुल, परी, घत्त । पक्ष में खिव
उद् + क्षिप	गुलगुञ्छ, उत्थंघ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क, हक्खुव । पक्ष में उक्खिव
आ + क्षिप	णीरव । पक्ष में अक्खिव
स्वप	कमवस, लिस, लोट्ट । पक्ष में सुञ्ज
वेप	आयम्ब, आयञ्भ । पक्ष में वेव
वि + लप	भंख, वडवड । पक्ष में विलव
लिप	लिम्प
गुप	विर, णड । पक्ष में गुप्प
कृप	अवहाव <sup>१</sup>
प्र + दीप	तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त और पक्ष में पलीव
लुभ	संभांव । पक्ष में लुब्भ
क्षुभ	खडर, पड्डुह । पक्ष में खुब्भ

आ + रभ	आरंभ, आढव । पक्ष में आरभ
उप, आ + लंभ	भंख, पचार, वेत्तव । पक्ष में उवालम्भ
जृम्भ	जम्भा <sup>१</sup>
नम	णिसुढ <sup>२</sup> । पक्ष में णव
वि + श्रम	णिव्वा । पक्ष में वीसम
आ + क्रम	ओहाव, उत्थार, छुन्द । पक्ष में अक्कम
भ्रम	टिरिटिल्ल, दुण्डुल्ल, ढण्डल्ल, चक्कम्म, भम्मड, भमड, भमाड, तलअएट, भण्ट, भम्प, भुम, गुम, फुम, फुस, दुम, दुस, परी, पर, भम अई, अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस, उक्कुस, अक्कुस, पच्चडु, पच्छन्द, णिम्मह, णी, णीण, णीलुक्क, पदअ रंभ, परिअल्ल, वोत्त, परिअत्त, णिरिणास, णिवह, अवसेह, अवहर, गच्छ, अहिपच्चुअ, <sup>३</sup> अब्भिड, <sup>४</sup> संगच्छ, उम्मत्थ, <sup>५</sup> अब्भागच्छ, पलोट्ट, <sup>६</sup> पच्चागच्छ
गम	
शम	पडिसा, परिसाम । पक्ष में सम
रम	संखुडु, खेडु, उवभाव, किलिकिञ्च, कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल और पक्ष में रम

१. वि पूर्व में रहने पर उक्त आदेश नहीं होते हैं । देखो—‘अवेर्जृम्भो जम्भा ।’ हेम० ४. १५७ में अवेरिति किम् ? केलिपसरो विश्रम्भइ ।

२. भाराक्रान्त कर्ता में ।

३. आङ् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

४. सम् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

५. अभि और आङ् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

६. प्रति और आङ् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

पूर	अग्घाड, अग्घव, उद्घुम, अङ्गुम, अहिरेम पक्ष में पूर
त्वर	तुअर, जअड, तूर, <sup>१</sup> तुर <sup>२</sup>
क्षर	खिर, भर, पञ्भर, पच्चड, णिच्चल, णिट्ठुअ
चल	चल्ल, चल
उच्छल	उत्थल
वि + गल	थिप्प, णिट्ठुह
दल	विसट्ट, दल
वल	वम्फ, वल
मील	मिल्ल, मील
भ्रंश	फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल पक्ष में भस
नश	णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह, अवहर । पक्ष में नस्स
अव + काश	ओआस
सं + दिश	अप्पाह
दृश	निअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ, अवयङ्ग, वज्ज, सव्वव, देक्ख, ओअक्ख, अवअक्ख, पुलोअ, निअ, अवआस
स्पृश	फास, फंस, फरिस, छिव, छिह, आलुङ्ग, आलिह
प्र + विश	रिअ । पक्ष में पविस
प्र + मृष	पम्हुस

१. त्यादि और शतृप्रत्ययों के पर में रहने पर तूर होता है ।  
जैसे :—तूरई, तूरन्तो ।

२. त्यादि से भिन्न में तुर होता है । जैसे तुरिओ, तुरन्तो ।

प्र + मुष	पम्हुस
पिष	णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चड्डु, पीस
भष	भुक्क, भस
कृष	कड्ढ, साअड्ढ, अञ्च, अणच्छ, आयञ्छ, आइञ्छ, करिस, अक्खोड <sup>१</sup>
गवेष	दुण्डुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्त, गवेस
श्लिष	सामग्ग, अवयास, परिअंत। पक्ष में सिलेस
म्रक्ष	चोप्पड, मक्ख
काङ्क्ष	आह, अहिलङ्ग, अहिलङ्ग, वच्च, वम्फ, मह, सिंह, विलुम्प
प्रति + ईक्ष	सामय, विहीर, विरमाल । पच्च में पडिक्ख
तक्ष	तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ, तक्ख
वि + कस	कोआस, वोसट्ट, विअस
हस	गुञ्ज, हस
खंस	लहस, डिम्भ, संस
त्रस	डर, बोज्ज, वज्ज
नि + अस	णिम, गुम
परि + अस	पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्लत्थ
विर् + श्वस	भंख, नीसस
उद् + लस	ऊसल, ऊसुम्म, णिल्लस, पुल्लआअ, गुञ्जोल्ल, आरोअ, उल्लस
भास	भिस, भास
प्रस	घिस, गस
अव + गाह	ओवाह ( उगाह ), ओगाह ( उगाह )

१. म्यान् से तलवार खींचने अर्थ में ।

आ + रह	चड, वलग्ग, आरुह
मुह	गुम्म, गुम्मड, मुञ्ज
दह	अहिऊल, आलुङ्ग, डह
ग्रह	बिण्ह, हर, पङ्ग, निरुवार, अहिपच्चुअ, घेत् <sup>१</sup>
पच	वोत् <sup>२</sup>

( ३३ ) क्त्वा, तुम और तव्य के पर में रहने पर रुद, भुज और मुच धातुओं के अन्त्य वर्ण का त होता है। जैसे :—रोत्तूण, रोत्तुं, रोत्तव्वं; भोत्तूण, भोत्तुं, भोत्तव्वं; मोत्तूण, मोत्तुं, मोत्तव्वं।

( ३४ ) भूत और भविष्यत् काल के प्रत्ययों एवं क्त्वा, तुम और तव्य के पर में रहने पर कृ धातु का 'का' आदेश होता है।

( ३५ ) कुछ संस्कृत धातुओं के निम्नलिखित प्राकृत आदेश होते हैं :—

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
इष	इच्छ	यम	जच्छ
अस	अच्छ	छिद्	छिंद
भिद्	भिंद	युध	जुह्य
बुध	बुह्य	गृध	गिह्य
क्रुध	कुह्य	सिध	सिह्य
सद्	सड	पत	पड
वृध	बढ	वेष्ट	वेड
संवेष्ट	संवेह्ल	उद् + वेष्ट	उव्वेह्ल, उव्वेढ

( ३६ ) खाद् और धाव धातुओं के अन्त्य वर्ण का लुक् होता है। जैसे :—खाइ, खाअइ; धाइ, धाअइ (खादति, धावति)।

१. २. केवल क्त्वा, तुम और तव्य के पर में रहने पर उक्त आदेश होता है।

( ३७ ) मृज धातु के अन्त्य वर्ण का 'र' आदेश होता है ।  
जैसे :—सिरइ ( सृजति )

( ३८ ) शक आदि धातुओं के अन्त्य अक्षर का द्वित्व होता है । जैसे :—सक्क, लग्ग, कुप्प, नस्स इत्यादि ।

( ३९ ) क्त प्रत्यय के सहित तत्तद् सोपसर्ग अथवा निरूपसर्ग धातुओं के स्थान में नीचे लिखे अफुण्ण आदि आदेश होते हैं :—

संस्कृत	प्राकृत
आक्रान्तः	अफुण्णो
उत्कृष्टम्	उक्कोसं
स्पष्टम्	फुडं <sup>१</sup>
अतिक्रान्तः	वोलीणो
विकसितः	वीसहो ( वोसट्टो )
रुग्णः	लुग्गो
नष्टः	विल्हक्को
प्रमृष्टः	पम्हट्टो
अर्जितम्	विढत्तं
स्पृष्टम्	छित्तं
त्यक्तम्	जढं
क्षिप्तम्	ह्वासिअं
आस्वादितम्	चक्खिअं
स्थापितम्	निमिअं इत्यादि



१. तुलना कीजिए—अवधी के 'फुरे कहत हई' से ।

## सप्तम अध्याय

### [ कुछ विशिष्ट पद ]

प्राकृत के विशेष-विशेष पदों की सिद्धि के लिए विभिन्न प्राकृत व्याकरणों में विशेष-विशेष नियम दिये गये हैं। हम यहाँ उनके विशेष रूप बतला रहे हैं। पादटिप्पणी में विशेष सूत्रों का भी यथासम्भव उल्लेख किया जा रहा है।

प्राकृत	संस्कृत
अगणी, अग्गी <sup>१</sup>	अग्निः
अंकोल्लो <sup>२</sup>	अङ्कोठः
अङ्गारो <sup>३</sup>	अङ्गारः
अच्छेरं, अञ्जरिअं	
अच्छरिअं, अच्छअरं	आश्चर्यम्
अच्छरिज्जं, अच्छरीअं	
अलचपुर <sup>४</sup>	अचलपुरम्
अलसी <sup>६</sup>	अतसी

१. स्नेहाग्न्योर्वा । हेम० २. १०२.

२. अङ्कोठे ल्लः । हेम० १. २००.

३. पक्काङ्गारललाटे वा । हेम० १. ४७. से इ के अभाव पक्ष में ।

४. वल्ल्युत्करपर्यन्ताश्चर्ये वा । हेम० १. ५८. आश्चर्ये । हेम० २. ६६.

अतो रिआइ-रिज्ज-रीअं । हेम० २. ६७.

५. अचलपुरे चलोः । हेम० २. ११८.

६. अतसी-सातवाहने लः । हेम० १. २११.

अणिउँत्तयं, अणिउंतयं <sup>१</sup>	अतिमुक्तकम्
अन्तेउर <sup>२</sup>	अन्तःपुरम्
अन्तेआरी <sup>३</sup>	अन्तश्चारी
अन्नन्नं, अन्नुन्नं <sup>४</sup>	अन्योन्यम्
अप्पा, अत्ता <sup>५</sup>	आत्मा
अम्बं <sup>६</sup>	आम्रम्
अज्जो <sup>७</sup>	आर्यः
अहिमज्जू, अहिमज्जू, अहिमन्नू <sup>८</sup>	अभिमन्युः
अद्धं, अद्धं <sup>९</sup>	अद्धम्
अणं <sup>१०</sup>	ऋणम्
अरुहो, अरहो, अरिहो <sup>११</sup>	अर्हः
अरुहंतो, अरहंतो, अरिहंतो <sup>१२</sup>	
अलाऊ, अलाउं <sup>१३</sup>	अलावुः

१. 'यमुनाचामुण्डा.....' हेम० १. १७८. क्वचिन्न भवति ।  
अइमुंतयं, अइमुत्तयं ।
- २-३. तोऽन्तरि । हेम० १. ६०.
४. 'ओतोऽद्वान्योन्य.....' हेम० १. १५६.
५. आत्मनि पः । वर० ३. ४८.
६. ताम्रात्रे म्बः । हेम० २. ५६. । ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४.
७. व-य्य-र्यां जः । हेम० २. २४. । ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४
८. अभिमन्यौ जजौ वा । हेम० २. २५.
९. श्रद्धिंमूर्द्धोर्धेन्ते वा । हेम० २. ४१.
१०. ऋतोऽत् । हेम० १. १२६. ११. उच्चारति । हेम० २. १११.
१२. उच्चारति । हेम० २. १११.
१३. बालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १. ६६.



अडो, अबडो <sup>१</sup>	अवटः
अवहड <sup>२</sup>	अवहृतम्
अट्टरह <sup>३</sup>	अष्टादश
अट्टी <sup>४</sup>	अस्थि
अल्लं, अद् <sup>५</sup>	आर्द्रम्
आफंसो <sup>६</sup>	अस्पर्शः
आओ, आअओ <sup>७</sup>	आगतः
आइरिओ, आअरिओ <sup>८</sup>	आचार्यः
आओजं <sup>९</sup>	आतोद्यम्
आढिओ <sup>१०</sup>	आहतः
आमेलो <sup>११</sup>	आपीडः
आढत्तो, आरद्धो <sup>१२</sup>	आरब्धः
आणालं <sup>१३</sup>	आलानम्

१. यावत्तावन्नीचितावर्तमानावटप्रावारकदेवकुलैवमेवैवः । हेम० १. २२१
२. आर्ष प्रयोग है ।
३. छस्थानुष्टेष्टासंदष्टे । हेम० २. ३४ । संख्यागद्गदे रः । हे० १. २१९
४. ठोऽस्थिविसंस्थुले । हे० २. ३२. ५. उदोद्वाद्रिं । हेम० १. ८२.
६. 'स्पृशः फासफंस'.....' हे० ४. १८२.
७. व्याकरणप्राकारागते क्रमोः । हेम० १. २६८.
८. आचार्ये चोऽच्च । हेम० १. ७३.
९. च ट्य-यौजः । हेम० २. २४. १०. आहते ङिः । हेम० १. १४३.
११. एत्पीयूषापीडविभीतककीटशो दृशे । हेम० १. १०५. आपेलो, आवेडो ये दो रूप भी देखे जाते हैं । देखो—नीपापीडे मो वा । हेम० १. २३४ आमेलो, आमेलो ।
१२. 'मलिनोभयशुक्तिछुसारब्ध'.....' हेम० १. १३८,
१३. आलाने लनोः । हेम० २. ११७.

आली <sup>१</sup>	आली
आत्तमाणो, आवत्तमाणो <sup>२</sup>	आवर्तमानः
आसीसय ( आसीसा ) <sup>३</sup>	आशीः
आलिट्ठं, आलिद्धं <sup>४</sup>	आशिलष्टम्
इङ्गालो <sup>५</sup>	अङ्गारः
इङ्गुअं <sup>६</sup>	इङ्गुदम्
ईसि <sup>७</sup>	ईषत्
इआणीं	इदानीम्
इत्तिअं <sup>८</sup>	एतावत्
इड्ढी <sup>९</sup>	ऋद्धिः
इक्खू <sup>१०</sup>	इक्षुः
उच्चअं <sup>११</sup>	उच्चैस्
उक्करो, उक्करो <sup>१२</sup>	उत्करः

- 
१. ओदात्यां पङ्क्तौ । हेम० १. ८३ के अभाव में ।
२. 'तस्य धूर्तादौ । हेम० २. ३० । 'यावत्तावज्जीवितावर्तमान....'  
हेम० १. २७१.
३. गोणादयः । हेम० २. १७४
४. आशिलष्टे लघौ । हेम० २. ४९.
५. पक्काङ्गारललाटे वा । हेम० १. ४७.
६. शिथिलेऽङ्गुदे वा । हेम० १. ८९.
७. गौणस्य '...' हेम० २. १२९. के अभाव पक्ष में ईसि होता है ।
८. यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च । हेम० २. १५६.
९. इत्कपादौ । हे० १. १२८.
१०. प्रवासीक्षौ । हे० १. ९५ के अभाव में ।
११. उच्चैर्नीचैस्त्यैअः । हेम० १. १५४.
१२. 'वल्ल्युत्कर....' हेम० १. ५८.

उच्छ्रवो <sup>१</sup>	उत्सवः
उत्थारो, उच्छ्राहो <sup>२</sup>	उत्साहः
ऊसुओ, उच्छुओ <sup>३</sup>	उत्सुकः
उम्बरो, उडम्बरो <sup>४</sup>	उदुम्बरः
उल्लखलं, ओकखलं <sup>५</sup>	उल्लखलम्
उव्वीढं, उव्वूढं <sup>६</sup>	उद्व्यूढम्
उवरिं <sup>७</sup>	उपरि
उव्वभं, उव्वं <sup>८</sup>	ऊद्वर्धम्
उसहो <sup>९</sup>	ऋषभः, वृषभः
उज्जू <sup>१०</sup>	ऋजुः
उऊ, उहू <sup>११</sup>	ऋतुः
उल्लं <sup>१२</sup>	आर्द्रम्
उल्लेइ <sup>१३</sup>	आर्द्रयति
ऊसारो <sup>१४</sup>	आसारः

१. सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २. २२

२. वोत्साहे थो हश्च रः । हेम० २. ४८.

३. सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २. २२.

४. 'दुर्गादेव्युदुम्बर' हेम० १. २७०.

५. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१. ६. ईवोद्व्यूढे । हेम० १. १२०

७. वोपरौ । हेम० १. १०८. अवरिं भी होता है । पकाव ।

८. वोव्वे । हेम० २. ५९.

९. उद्वत्वादौ । हेम० १. १३१. । वृषभे वा । हेम० १. १३३.

१०-११. उद्वत्वादौ । हेम० १. १३१ । रि का अभाव । देखो हेम० १. १४१.

१२-१३. उदोद्वार्द्रे । हेम १. ८२.

१४, ऊद्धारो । हेम० १. ७६.

उच्छ्रु <sup>१</sup>	इक्षुः
ऊसवो <sup>२</sup>	उत्सवः
एकारो <sup>३</sup>	अयस्कारः
एङ्गि, एत्ताहे <sup>४</sup>	इदानीम्
एरिसो <sup>५</sup>	ईदृशः
एआरह	एकादश
एकसि, एकसिअं, एकईआ, एगआ <sup>६</sup>	एकदा
एरावणो <sup>७</sup>	ऐरावतः
ऐ <sup>८</sup>	अयि
ओल्लेइ <sup>९</sup>	आर्द्रयति
ओसढं, ओसहं, <sup>१०</sup>	औषधम्
ओली <sup>११</sup>	आली ( लिः )
कउहं, ककुधं <sup>१२</sup>	ककुदम्
ककुहा <sup>१३</sup>	ककुप्
कण्डुअणं <sup>१४</sup>	कण्डूयनम्

१. प्रवासीक्षौ । हेम० १. ९५.
२. छ का अभाव । देखो-सामर्थ्यात्सुकोत्सवे वा । हेम० २. २२.
३. 'स्थविरविचक्रियास्कार' हेम० १. ६६.
४. एङ्गि एताहे इदानीमः । हेम० २. १३४.
५. 'एत्पीयूष' १. १०५.
६. वैलाहः सि सिअं इआ । हेम० २. १६२.
७. ऐतः एत् । हेम० १. १४८. ८. अयौ वैत् । हेम० १. १६९.
९. उदोद्वाद्दे । हेम० १. ८२. १०. वौषधे । हेम० १. २२७.
११. ओदाल्यां पंतौ । हेम० १. ८३. १२. ककुदे हः । हेम० १. २२५.
१३. ककुभो हः । हेम० १. २१. । 'कउहा' भी देखा जाता है । हेम० १. २२५.
१४. उर्भूहनुमत्कण्डूयवातूले । हेम० १. १२१.

किसं, कसं <sup>१</sup>	कृशम्
कसिणो, कसणो ( रंग में ) } <sub>२</sub>	कृष्णः
कण्हो ( वासुदेव में )	
कसिणं ( णो ) <sup>३</sup>	कृत्स्नम्
किसरं, केसरं <sup>४</sup>	केसरम्
केढवो <sup>५</sup>	कैटभः
कुच्छेअं, कौच्छेअं <sup>६</sup>	कौत्सेयकम्
कन्दो <sup>७</sup>	स्कन्दः
खन्दो <sup>८</sup>	स्कन्दः
खणो ( समय में ) <sup>९</sup>	क्षणः
खप्परं <sup>१०</sup>	कर्परम्
खमा <sup>११</sup>	क्षमा, क्षमा
खंभो <sup>१२</sup>	स्तम्भः
खित्तं <sup>१३</sup>	क्षिप्तम्

१. इत्कृपादौ । हेम० १२८. तथा ऋतोऽत् । हेम० १. १२६.
२. कृष्णे वर्णे वा । हेम० २. ११०. ३. 'हृश्रीही...' हेम० २. १०४.
४. 'एत इद्वा वेदना...' हेम० १. १४६.
५. कैटभे भो वः । हेम० १. २४०. ऐतः एत् । हेम० १. १४८.  
'सटाशकटकैटभे...' १. १९६.
६. कौत्सेयके वा । हेम० १६१. ७. शुष्कस्कन्दे वा । हेम० २. ५.
८. ष्कस्कयोर्नाम्नि । हेम० २. ४. पक्ष में 'कन्दो' होगा ।
९. 'क्षः खः...' हेम० २. ३. १०. 'कुञ्जकर्पर...' हेम० १. १८१.
११. क्षमार्यां कौ । हेम० २. १८.
१२. स्तम्भे स्तो वा । हेम० २. ८. पक्ष में थम्भो होगा ।
१३. क्ष=ख । देखो—हेम० २. ३.

खारा <sup>१</sup>	स्थाणुः
खासञ्चो, खइओ <sup>२</sup>	खचितः
खुडिओ, खण्डिओ <sup>३</sup>	खण्डितम्
खल्लीडो <sup>४</sup>	खल्वाटः
खासिअं <sup>५</sup>	कासितम्
खीलओ <sup>६</sup>	कीलकः
खुज्जो <sup>७</sup>	कुब्जः
खेडओ <sup>८</sup>	द्वेटकः
खेडिओ <sup>९</sup>	स्फेटिकः
गेंदुअं <sup>१०</sup>	कन्दुकः
गग्गरं <sup>११</sup>	गद्गदम्
गड्डो <sup>१२</sup>	गर्तः
गड्डहो, गड्डहो <sup>१३</sup>	गर्दभः
गब्भिणं <sup>१४</sup>	गर्भितम्

१. स्थाणावहरे । हेम० २. ७.      २. 'खचित' हेम० १. १९३.  
 ३. 'वन्द्रखण्डिते' हेम० १. ५३.  
 ४. ईः स्त्यानखल्वाटे । हेम० १. १७४.  
 ५. 'कुब्जकर्परकीले' हेम० १. १८१. में देखो—आर्षेऽन्यत्रापि  
 खासिअं ।  
 ६, ७. 'कुब्जकर्परकीले' हेम० १. १८१.  
 ८, ९. द्वेटकादौ । हेम० २. ६.  
 १०. एच्छय्यादौ । हेम० १. ५७ तथा 'मरकतमदकले' हेम०  
 १. १८२.  
 ११. संख्यागद्गदे रः । हेम० १. २१९.  
 १२. गर्तं डः । हेम० २. ३५.      १३. गर्दभे वा । हेम० २. ३७.  
 १४. गर्भितातिमुक्तके णः । हेम० १. २०८.

गउओ <sup>१</sup>	गवयः
गंभिरीअं	गाम्भीर्यम्
गेह्यं <sup>२</sup>	प्राह्यम्
गलोई <sup>३</sup>	गुड्डी
गह्वई <sup>४</sup>	गृहपतिः
गोला, गोआवरी <sup>५</sup>	गोदा, गोदावरी
गोणो, गउओ, गावो, } <sup>६</sup>	गौः
गउआ, गावीओ, गावी	(पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में)
गारवं, गउरवं <sup>७</sup>	गौरवम्
घरं <sup>८</sup>	गृहम्
चविलो, चविडो <sup>९</sup>	चपेटः
चविडा, चवेडा <sup>१०</sup>	चपेटा
चंदिमा <sup>११</sup>	चन्द्रिका
चाउंडा <sup>१२</sup>	चामुण्डा

१. गवये वः । हेम० १. ५४.

२. एद् प्राह्ये । हेम० १. ७८. ३. 'ओत्कुष्माण्डी' हेम० १. १२४.

४. गृहस्य घरोऽपतौ । हेम० २. १४४. में देखो—अपतौ पर्युदास ।

५. गोला, गोआवरी इति तु गोदागोदावरीभ्यां सिद्धम् । देखो—  
गोणादयः । हेम० २. १७४.

६. गव्यउ आअः । हेम० १. १५८. तथा गोणादयः । हेम० २. १७४.

७. आच्च गौरवे । हेम० १. १६३.

८. गृहस्य घरोऽपतौ । हेम० २. १४४. षा० घरो ।

९, १०. चपेटापाटौ वा । हेम० १. १९८ तथा 'एत इद्वा वेदना  
चपेटा' हेम० १. १४६.

११. चन्द्रिकायां मः । हेम० १. १८५.

१२. 'यमुनाचामुण्डा' हेम० १. १७८.

चइत्त <sup>१</sup>	चैत्यम्
चोरिअ <sup>२</sup>	चौर्यम्
चोग्गुणो, चउग्गुणो <sup>३</sup>	चतुर्गुणः
चोहो ( त्थो ), चउहो ( त्थो ) <sup>४</sup>	चतुर्थः
चोह्ठी ( त्थी ), चउह्ठी ( त्थी ) <sup>५</sup>	चतुर्थी
चोह्ह, चउह्ह <sup>६</sup>	चतुर्दश
चोह्सी, चउह्सी <sup>७</sup>	चतुर्दशी
चोव्वारं, चउव्वारं <sup>८</sup>	चतुर्वारम्
चच्चरं <sup>९</sup>	चत्वरम्
चिहुरं <sup>१०</sup>	चिकुरः
चुच्छं <sup>११</sup>	तुच्छम्
चिलाओ <sup>१२</sup>	किरातः
चिन्धं, चिह्णं <sup>१३</sup>	चिह्नम्
छणो ( उत्सव में ) <sup>१४</sup>	क्षणः

- 
१. त्योऽचैत्ये । हेम० २. १३. के अभाव में ।
  २. 'स्याद्भूम्य' हेम० २. १०७.
  ३. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१.
  - ४, ५. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१. तथा सत्यानचतुर्थी वा । हेम० २. ३३.
  - ६, ७, ८. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१.
  ९. कृत्तिचत्तवरे चः । हेम० २. १२.
  १०. निकषस्फटिकचिकुरे हः । हेम० १. १८६.
  ११. तुच्छे तश्चछौ । हेम० १. २०४.
  १२. किराते चः । हेम० १. १८३ तथा हरिद्रादौ लः । हेम० १. २५४.
  १३. चिह्ने न्धो वा । हेम० २. ५०. १४. क्षण उत्सवे । हेम० २. २०.



छमा ( पृथिवी में ) <sup>१</sup>	क्षमा, दमा
छूढ <sup>२</sup>	क्षिप्तम्
छीअं <sup>३</sup>	क्षुतम्
छुहा <sup>४</sup>	क्षुधा
छुत्तं, छिक <sup>५</sup>	क्षुप्तम्
छालो ( ली ) <sup>६</sup>	छागः ( गी )
छाहा ( अनातप में ) } छाआ ( कान्ति में ) }	छाया
छउमं, छम्मं <sup>७</sup>	छद्म
छड्ढिओ <sup>८</sup>	छर्दिकः
छुच्छं <sup>९</sup>	तुच्छम्
छमी <sup>११</sup>	शमी
छंमुहो <sup>१२</sup>	षण्मुखः
छट्टो <sup>१३</sup>	षष्ठः
छट्टी <sup>१४</sup>	षष्ठी

- 
१. क्षमायां कौ । हेम० २. १८. २. 'वृक्षक्षिप्तयो' हेम० २. १२७.  
 ३. ईः क्षुते । हेम० १. ११२.  
 ४, ५. छोऽद्यादौ । हेम० २. १७. तथा क्षुधो हा । हेम० १. १७.  
 ६. छागे लः । हेम० १. १९१  
 ७. छायायां होऽकान्तौ वा । हेम० १. २४९  
 ८. पद्मछद्ममूर्खद्वारे वा । हेम० २. ११२.  
 ९. 'संमर्द्द' हेम० २. ३६. १०. तुच्छे तश्चछौ । हेम० १. २०४.  
 ११. 'षट्शमी' हेम० १. २६५.  
 १२. 'बज्जणो' हेम० १. २५. तथा हेम० १. २६५.  
 १३, १४. 'षट्शमीशाव' हेम० १. २६५.

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो <sup>१</sup>	सप्तपर्णः
छिरा <sup>२</sup>	शिरा
छुहा <sup>३</sup>	सुधा
छिहा <sup>४</sup>	स्पृहा
जडिलो <sup>५</sup>	जटिलः
जम्मणं, जम्मो <sup>६</sup>	जन्म
जिब्भा, जीहा <sup>७</sup>	जिह्वा
जुण्णं, जिरणं <sup>८</sup>	जीर्णम्
जीअं <sup>९</sup>	जीवितम्
जीविअं <sup>१०</sup>	जीवितम्
जीआ <sup>११</sup>	ज्या
जह, जहा <sup>१२</sup>	यथा
जउण्णा <sup>१३</sup>	यमुना

- 
१. सप्तपर्णे वा । हेम० १. ४९. तथा हेम० १. २६५.
  २. शिरायां वा । हेम० १. २६६. पक्ष में 'सिरा' ।
  ३. षट्शमीशावसुधासप्तपर्णेष्वादेश्छः । हेम० १. २६५.
  ४. स्पृहायाम् । हेम० २. २३.
  ५. जटिले जो भो वा । हेम० १. १९४.
  ६. न्मो मः । हेम० २. ६१. तथा 'अन्त्य' हेम० १. ११.
  ७. 'ईजिह्वा' हेम० १. ९२. तथा ह्यो भो वा । हेम० २. ५७.
  ८. उज्जीर्णे । हेम० १. १०२. जुण्णसुरा । जिण्णे भोअण्ण-मत्ते
  - ९, १०. 'यावत्तावज्जीविता' हेम० १. २७१.
  ११. ज्यायामीत् । हेम० २. ११५.
  १२. 'वाव्ययोत्वाता' हेम० १. ६७.
  १३. 'यमुनाचामुंडा' हेम० १. १७८.

जा, जाव, जित्तिअ <sup>१</sup>	यावत्
जहुड्डिलो, जहिड्डिलो <sup>२</sup>	युधिष्ठिरः
भड्डिलो <sup>३</sup>	जटिलः
भओ <sup>४</sup>	ध्वजः
झुणि <sup>५</sup>	ध्वनिः
टगरं <sup>६</sup>	तगरम्
टसरो <sup>७</sup>	त्रसरः
ठंभो <sup>८</sup>	स्तम्भः
ठीणं <sup>९</sup>	स्त्यानम्
ठड्डो <sup>१०</sup>	स्तब्धः
डोलो <sup>११</sup>	दोलः
डोहलो <sup>१२</sup>	दोहदः
डाहो <sup>१३</sup>	दाहः

१. 'यावत्तावज्जीवितावर्तमाना....' हेम० १. २७१. तथा हेम० १.११
२. युधिष्ठिरे वा । हेम० १. ९६. तथा उतो मुकुलादिष्वत् । हेम० १. १०७.
३. जटिले जो भो वा । हेम० १. १९४.
४. त्वश्वद्वध्वां चछजम्भाः क्वचित् । हेम० २. १५.
५. 'त्वश्वद्वध्वां....' हेम० २. १५ तथा ध्वनिविध्वचो रुः । हेम० १. ५२.
- ६, ७. तगरत्रसरतूवरे टः । हेम० १. २०५.
८. थठावरूपन्दे । हेम० २. ९.
९. ईः स्त्यानखल्वाटे । हेम० १. ७४.
- १०, ११. स्तब्धे ठडौ । हेम० २. ३४.
- १२, १३. दशन-दष्ट-दग्ध-दोला-दण्ड-दर-दाह-दम्भ-दर्भ-कदन-दोहदे-दो वा डः । हेम० १. २१७.

डट्टो <sup>१</sup>	दष्टः
डसनं <sup>२</sup>	दशनम्
डरो ( भय में ) <sup>३</sup>	दरः
डंभो <sup>४</sup>	दम्भः
डंडो <sup>५</sup>	दण्डः
डट्टं ( डट्टो ) <sup>६</sup>	दग्धम्
णिवृत्तं, णिउत्तं, णिअत्तं <sup>७</sup>	निवृत्तम्
णिसीढो, णिसीहो <sup>८</sup>	निशीथः
णिच्चलो <sup>९</sup>	निञ्चलः
णुमण्णो, णिसण्णो <sup>१०</sup>	निषण्णः
णडालं, णिडालं, णलाडं <sup>११</sup>	ललाटम्
तविअं, तत्तं <sup>१२</sup>	तप्तम्
तम्बं <sup>१३</sup>	ताम्रम्
तम्बोलं <sup>१४</sup>	ताम्बूलम्
ता, ताव, तित्तिअं <sup>१५</sup>	तावत्

१. २. ३. ४. ५. ६. वही. ७. निवृत्तवृन्दारके वा । हेम० १. १३२.  
 ८. निशीथपृथिव्योर्वा । हेम० १. २१६.  
 ९. दुःखे णिच्चलः । हेम० ४. ९२ की पादटिप्पणी ५ देखो.  
 १०. उमो निषण्णो । हेम० १. १७४.  
 ११. ललाटे लडोः । हेम० २. १२३ तथा पक्काङ्गारललाटे वा । हेम०  
 १. ४७.  
 १२. शर्षतप्तत्रजे वा । हेम० २. १०५.  
 १३. ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४. तथा ताम्राग्ने म्बः । हेम० २. ५६.  
 १४. 'ओत्कुष्माण्डी...' हेम० १. १२४.  
 १५. 'यावत्तावन्नीविता...' हे० १. २७१. तथा 'यत्तदेतदो...' हेम०  
 २. १५६. एवं १. ११.

तित्तिरो <sup>१</sup>	तित्तिरिः
तिरिच्छी <sup>२</sup>	तिर्यक्
तिक्खं, तिह्णं <sup>३</sup>	तीक्ष्णम्
तेहं, तूहं, तित्थं <sup>४</sup>	तीर्थम्
तोणं, तूणं <sup>५</sup>	तूणम्
तोणीरं <sup>६</sup>	तूणीरम्
तूरं <sup>७</sup>	तूर्यम्
तेरहं	त्रयोदश
तेवीसा <sup>८</sup>	त्रयोविंशतिः
तेत्तीसा <sup>९</sup>	त्रयस्त्रिंशत्
तीसा <sup>१०</sup>	त्रिंशत्
तेवण्णा <sup>११</sup>	त्रिपञ्चाशत्
तंबो <sup>१२</sup>	स्तम्बः

१. तित्तिरौ रः । हेम० १. ९०. २. तिर्यचस्तिरिच्छः । हे० २. १४३.  
 ३. 'सूक्ष्मश्न...' हेम० २. ७५. तथा तीक्ष्णे णः । हेम० २. ८२.  
 ४. तीर्थे हे । हे० १. १०४. ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४ तथा दुःख-  
 दक्षिणतीर्थे वा । हेम० २. ७२.  
 ५. स्थूणातूणे वा । हेम० १. १२५.  
 ६. 'ओत्कुष्माण्डी...' हेम० १. १२४.  
 ७. 'ब्रह्मचर्यतूर्य...' हेम० २. ६३.  
 ८. 'एत्रयोदशादौ...' हेम० १. १६५. संख्यागद्गदे रः । हेम०  
 १. २१९ तथा हेम० १. २६२.  
 ९, १०. वही ।  
 ११. विंशत्यादेर्लुक् । हेम० १. २८. १२. गोणादयः । हेम० २. १७४.  
 १३. 'स्तस्य थो...' हेम० २. ४५ के असमस्तस्तम्बे इत् पर्युदास  
 से तंबो होता है ।

तवो <sup>१</sup>	स्तवः
थेणो, थूणो <sup>२</sup>	स्तेनः
थंभो <sup>३</sup>	स्तम्भः
थवो <sup>४</sup>	स्तवः
थी <sup>५</sup>	स्त्री
थेरो <sup>६</sup>	स्थविरः
थीणं <sup>७</sup>	स्त्यानम्
थाणू <sup>८</sup>	स्थाणुः
थोणा, थूणा <sup>९</sup>	स्थूणा
थोरं, थूलं ( थुल्लो ) <sup>१०</sup>	स्थूलम्
थेरिञ्च <sup>११</sup>	स्थैर्यम्
दुवरो <sup>१२</sup>	तूवरः
दाढा <sup>१३</sup>	दंष्ट्रा

१. स्तवे वा । हेम० २. ४६. से थ के अभाव में ।
२. उः स्तेने वा । हेम० १४७. ३. 'स्तस्य थो' हेम० २. ४५.
४. स्तवे वा । हेम० २. ४६.
५. 'त्रिया इत्थी । हेम० २. १३०. से 'इत्थी' के अभाव में ।
६. स्थविरविचक्रिलायस्कारे । हेम० १. १६६.
७. स्त्यानचतुर्थार्थे वा । हेम० २. ३३. से ठ के अभाव में थीणं होता है । तथा ईः स्त्यान-खल्वाटे । हेम० १० ७४.
८. स्थाणावहेर । हेम० २. ७. से हर अर्थ में ख के अभाव में थाणु होता है । ९. स्थूणातूणो वा । हेम० १. १२५.
१०. थुल्लो, थोरो ( थेरो A. ) सेवादौ वा । हेम० २. ९९.
११. स्याद्भव्यचैत्यचौर्यसमेषु यात् । हेम० २. १०७.
१२. हेमचन्द्र के अनुसार दुवरो रूप नहीं होता है ।
१३. दंष्ट्राया दाढा । हेम० २. १३९.

दडढ <sup>१</sup>	दग्धम्
दंडो <sup>२</sup>	दण्डः
दिण्ण <sup>३</sup>	दत्तम्
दगुवहो, दगुअ-वहो <sup>४</sup>	दनुजवधः
दंभो <sup>५</sup>	दम्भः
दरो ( अल्प में ) <sup>६</sup>	दरः
दस, दह <sup>७</sup>	दश
दसण <sup>८</sup>	दशनम्
दहमुहो, दसमुहो <sup>९</sup>	दशमुखः
दट्टो <sup>१०</sup>	दष्टः
दाहिणो, दक्खिणो <sup>११</sup>	दक्षिणः
दाहो, दाघो <sup>१२</sup>	दाहः
दिवहो, दिवसो <sup>१३</sup>	दिवसः

१. 'दशनदष्टदग्ध...' हेम० १. २१७ से ड के अभाव में । २. वही ।  
 ३. हः स्वप्नादौ । हेम० १. ४६. तथा पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते ।  
 हेम० २. ४३. ४. लुग्भाजनदनुज...' हेम० १. २६७.  
 ५. 'दशनदष्टदग्ध...' हेम० १. २१७, से ड के अभाव में ।  
 ६. वही । ७. दशपाषाणौ हः । हेम० १. २६२.  
 ८. 'दशनदष्टदग्ध...' हेम० १. २१७ से ड के अभाव में ।  
 ९. श का वैकल्पिक ह । देखो—दशपाषाणौ हः । हेम० १. २६२.  
 १०. हेम० १. २१७. के अभाव में ।  
 ११. वैकल्पिक ह । दुःखदक्षिणतीर्थे वा । हेम० २. ७२. तथा दीर्घ—  
 दक्षिणौ हे । हेम० १. ४५.  
 १२. हो षोऽनुस्वारात् । कचिदननुस्वारादपि—दाघो । पक्षे दाहो ।  
 हेम० १. २६४. ।  
 १३. स का वैकल्पिक ह । दिवसे सः । हेम० १. १६३.

दिग्धो, दीहो <sup>१</sup>	दीर्घः
दुहं, दुक्खं <sup>२</sup>	दुःखम्
दुअल्लं, दुऊलं, दुगुल्लं <sup>३</sup>	दुकूलम्
दुग्गावी, दुग्गा-एवी <sup>४</sup>	दुर्गादेवी
दूहवो, दुहओ <sup>५</sup>	दुर्भगः
दुक्कडं <sup>६</sup>	दुष्कृतम्
दुहिआ <sup>७</sup>	दुहिता
दरिओ <sup>८</sup>	दृप्तः
दिअरो, देअरो <sup>९</sup>	देवरः
देउलं, देवउलं <sup>१०</sup>	देवकुलम्
देव्वं, दइव्वं, दइव्वं <sup>११</sup>	दैवम्
दोहलो <sup>१२</sup>	दोहदः

१. हेम० २. ७९. तथा दीर्घे वा । हेम० २९१.
२. वैकल्पिक ह । दुःखदक्षिणतीर्थे वा । हेम० २. ७२.
३. ऊकार का वैकल्पिक अत्व और लकार का द्वित्व । देखो-दुकूले वा लक्ष द्विः । हेम० १. ११९ । आर्ष प्राकृत में दुगुल्लं होता है ।
४. दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतनपादपीठेऽत्तर्दः । हेम० १. २७०.
५. लुकि दुरो वा । हेम० १. ११५. और ऊत्वे दुर्भगसुभगे वः । हेम० १. १९२.
६. प्रत्यादौ डः । आर्षे दुक्कडं । हेम० १. २०६.
७. 'दुहितुभगिन्योः...' हेम० २. १२६ इससे 'धूआ' आदेश के अभाव में ।
८. अरिहते । हेम० १. १४४.
९. एत इद्वा वेदनाचपेटादेवरकेसरे । हेम० १. १४६.
१०. 'यावत्तावत्...' हेम० १. २७१. ११. एच्च दैवे । हेम० १. १५३.
१२. प्रदीपिदोहदे लः । हेम० १. २२१.



दोला <sup>१</sup>	दोला
देरं, दुआरं, दारं, दुवार <sup>२</sup>	द्वारम्
दिही <sup>३</sup>	धृतिः
धूआ <sup>४</sup>	दुहिता
धगुहं, धगू <sup>५</sup>	धनुः
धत्ती, धाई, धारी <sup>६</sup>	धात्री
धिइ	धिक्
धिरत्थु <sup>७</sup>	धिगस्तु
धिई <sup>८</sup>	धृतिः
धिट्टो, धट्टो <sup>९</sup>	धृष्टः
धट्टज्जणो <sup>१०</sup>	धृष्टद्युम्नः
धीरं, धिज्जं <sup>११</sup>	धैर्यम्
नत्तिओ, नत्तुओ <sup>१२</sup>	

१. 'दशनदष्टदग्धदोला...' हेम० १. २१७. से ड के अभाव में ।
२. द्वारे वा । हेम० १. ७९. पञ्चमूर्खद्वारे वा । हेम० २. ११२.
३. धृतेर्दिहिः । हेम० २. १३१.
४. धूआ, दुहिआ । 'दुहितृभगिन्योः...' हेम० २. १२६.
५. धनुषो वा । हेम० १. २२.
६. धान्याम । हे० २. ८१. ह्रस्व से पहले ही रलोप होने पर धाई और पक्ष में धारी ये रूप होते हैं ।
७. गोणादयः । हेम० २. १७४.
८. धृतेर्दिहिः । हेम० २. १३१. इससे 'दिहि' के अभाव में ।
९. मसृणभृगाङ्कमृत्युशृङ्गधृष्टे वा । हेम० १. १३०. तथा हेम० २. ३४.
१०. धृष्टद्युम्ने णः । हेम० २. ९४.
११. ईधैर्ये । हेम० १. १५५. तथा धैर्ये वा । हेम० २. ६४.
१२. 'इदुतौपृष्ठवृष्टि...' हेम० १. १३७.

नोहलिआ <sup>१</sup>	नवफलिका
निहसो <sup>२</sup>	निकषः
निम्बो <sup>३</sup>	निम्बः
निसदो <sup>४</sup>	निषधः
नेड्डं, नीडं <sup>५</sup>	नीडम्
नीमो, नीवो <sup>६</sup>	नीपः
नीमी, नीवी <sup>७</sup>	नीविः
नेरइओ <sup>८</sup>	नैरयिकः
नारइओ <sup>९</sup>	नारकिकः
नेउरं, निउरं, नूउरं <sup>१०</sup>	नूपुरम्
नापिओ <sup>११</sup>	नापितः
निज्मरो <sup>१२</sup>	निर्भरः

१. ओत्पूतर '...' हेम० १. १७०.
२. निकषस्फटिकचिकुरे हः । हेम० १. १८६.
३. निम्बनापिते लण्हं वा । हेम० १. २३०. इसके अभाव में ।
४. निषधे धो ढः । हेम० १. २२६.
५. नीडपीठे वा । हेम० १. १०६.
६. नीपापीडे मो वा । हेम० १. २३४.
७. स्वप्ननीव्योर्वा । हेम० १. २५९,
८. ९. कथं नेरइओ; नारइओ ? नैरयिक-नारकिकशब्दयोर्भविष्यति ।  
देखो—द्वारे वा । हेम० १. ७९.
१०. इदेतौ नूपुरे वा । हेम० १. १२३.
११. निम्बनापिते लण्हं वा । हेम० १. २३० से ण्ह के अभाव में ।  
तथा हेम० १. १७७.
१२. द्वितीयतुर्ययोरुपरि पूर्वः । हेम० २. ९०.

नमोक्कारो <sup>१</sup>	नमस्कारः
नीचञ्च <sup>२</sup>	नीचैः
नावा <sup>३</sup>	नौः
पक्कं, पिक्कं <sup>४</sup>	पकम्
पम्ह <sup>५</sup>	पद्म
पण्णरह <sup>६</sup>	पञ्चदश
पञ्चावण्णा, पण्णणा <sup>७</sup>	पञ्चपञ्चाशत्
पण्णासा <sup>८</sup>	पञ्चाशत्
पडाय <sup>९</sup>	पताका
पट्टण <sup>१०</sup>	पत्तनम्
पाइक्को, पाआई <sup>११</sup>	पदातिः
पोम्मं, पडमं, पम्मं <sup>१२</sup>	पद्मम्
पहो <sup>१३</sup>	पन्था

१. 'नमस्कार' हेम० १. ६२.

२. उच्चैर्नीचैस्वै अः । हेम० १. १५४.

३. नाव्यावः । हेम० १. १६४.

४. पकाङ्गारललाटे वा । हेम० १. ४७.

५. पद्म-श्म-ष्म-स्म-ह्नां म्हः । हेम० २. ७४.

६. पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते । हेम० २. ४३.

७. गोणादयः । हेम० २. १७४. ८. पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते । २. ४३.

९. प्रत्यादौ डः । हेम० १. २०६.

१०. 'वृत्तप्रवृत्त' हेम० २. २९.

११. 'मलिनोभय शुक्ति' हेम० २. १३८.

१२. श्रोतपत्रे । हेम० १. ६१. 'पद्म-छत्र' हेम० २. ११२.

१३. 'पथि पृथिवी' हेम० १. ८८.

परोष्परं <sup>१</sup>	परस्परम्
पारक्कं, पारिक्कं, पारकेरं, पाराकेरं <sup>२</sup>	परकीयम्
पेरन्तो, पज्जन्तो <sup>३</sup>	पर्यन्तः
पल्लट्ठं, पल्लत्थं <sup>४</sup>	पर्यस्तम्
पल्लाणं, पडायानं <sup>५</sup>	पर्याणम्
पलिअं, पलिलं <sup>६</sup>	पलितम्
पल्लङ्को, पलिअंको <sup>७</sup>	पल्यङ्कः
पाअवडणं, पावडणं <sup>८</sup>	पादपतनम्
पावीडं, पाअवीडं <sup>९</sup>	पादपीठम्
पहिहो <sup>१०</sup>	पान्थः ( पथिकः )
पारद्धी <sup>११</sup>	पापद्धिः

१. 'नमस्कारपरस्परे'... हेम० १. ६२.
२. 'परराजभ्यां'... हेम० २. १४८.
३. एतः पर्यन्ते । हेम० २. ६५.
४. पर्यस्ते थठौ । हेम० २. ४७ तथा 'पर्यस्तपर्याण'... हेम० २. ६८.
५. पर्याणौ डा वा । हेम० १. २५२. 'पर्यस्तपर्याण'... हेम० २. ६८
६. पलिते वा । हेम० १. २१२.
७. पल्लङ्को इति च पल्यङ्कशब्दस्य यलोपे द्वित्वे च । पलिअंको इत्यपि चौर्यसमत्वात् । देखो—पर्यस्तपर्याणसौकुमार्ये क्लः । हेम० २. ६८.
८. 'दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतन'... हेम० १. २००.
९. 'दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतन'... हेम० १. २००.
१०. पथीणस्येकट्-पहिओ । हेम० २. १५२.
११. पापद्धौ रः । हेम० १. २३५.

पारेवओ, पारावओ <sup>१</sup>	पारावतः
पाहाणो, पासाणो <sup>२</sup>	पाषाणः
पिहढो, पिढरो <sup>३</sup>	पिठरः
पिउसिआ, पिउच्छा <sup>४</sup>	मितृष्वसा
पिसल्लो, पिसाओ <sup>५</sup>	पिशाचः
पेढं, पीढं <sup>६</sup>	पीठम्
पीअं <sup>७</sup>	पीतम्
पीवलं, पीअलं <sup>८</sup>	पीतलम्
पेउसं <sup>९</sup>	पीयूषम्
पुण्णामो <sup>१०</sup>	पुन्नागः
पुरिसो <sup>११</sup>	पुरुषः
पोप्पलं <sup>१२</sup>	पूगफलम्
पोप्पली <sup>१३</sup>	पूगफली

१. पारावते रो वा । हेम० १. ८०.
२. दशपाषाणो हः । हेम० १. २६२.
३. पिठरे ह्यो वा रश्च ङः । हेम० १. २०१.
४. मातृपितुः स्वसुः सिञ्चलौ । हेम० २. १४२.
५. 'खचितपिशाचयोः...' हेम १. १९३.
६. नोडपीठे वा । हेम० १. १०६.
७. ल इति किम् ? पीअं । देखो—पीते वो ले वा । हेम० १. २१३.
८. पीते वो ले वा । हेम० १. २१३. तथा विद्युत्पत्रपीतान्धाह्नः । हेम० २. १७३.
९. 'एत्पीयूष...' हेम० १. १०५.
१०. पुन्नागभागिन्योर्गो मः । हेम० १. १९०.
११. पुरुषे रोः । हेम० १. १११.
१२. 'श्रोत्पूतरवदर...' हेम० १. १७०.
१३. वही ।

पोरो <sup>१</sup>	पूतरः
पुरिमं, पुर्वं <sup>२</sup>	पूर्वम्
पिधं, पिहं, पुधं, पुहं <sup>३</sup>	पृथक्
पुहई, पुढवी, पुहवी <sup>४</sup>	पृथिवी
पउरिसं <sup>५</sup>	पौरुषम्
पवट्टो, पउट्टो <sup>६</sup>	प्रकोष्ठः
पइण्णा <sup>७</sup>	प्रतिज्ञा
पइट्ठा <sup>८</sup>	प्रतिष्ठा
पडंसुआ <sup>९</sup>	प्रतिश्रुत्
पईव <sup>१०</sup>	प्रतीपम्
पच्चुहो, पच्चुसो <sup>११</sup>	प्रत्यूषः
पढुमं, पढुमं, पढमं, पढमं <sup>१२</sup>	प्रथमम्

१. वही । २. पूर्वस्य पुरिमः । हेम० २. १३५.  
 ३. 'इदुतौवृष्टवृष्टि...' हेम० १. १३७. तथा पृथकि धो वा । हेम० १. १८८.  
 ४. 'पथिपृथिवी...' हेम० १. ८८. तथा उदत्त्वादौ । हेम० १. १३१. एवं निशीथपृथिव्योर्वा । हेम० १. २१६.  
 ५. अउः पौरादौ वा । हेम० १. १६२.  
 ६. 'ओतोऽद्वान्योन्यप्रकोष्ठ...' १. १५६.  
 ७. ८. प्रायः कथन से ड नहीं हुआ । देखो-प्रत्यादौ डः । हेम० १. २०६.  
 ९. प्रत्ययादौ डः । हेम० १. २०६. 'पथिपृथिवी...' हेम० १. ८८. तथा वक्कादावन्तः । हेम० १. २६.  
 १०. प्रायः कथन से ड नहीं हुआ । देखो-प्रत्यादौ डः । हेम० १. २०६.  
 ११. प्रत्यूषे षश्च हो वा । हेम० २. १४.  
 १२. प्रथमे पथोर्वा । हेम० १. ५५. तथा 'मेथिशिथिर...' हेम० १. २१५.

पावासू <sup>१</sup>	प्रवासी
पअट्टं. पउत्तं <sup>२</sup>	प्रवृत्तम्
पसढिलं, पसिढिलं <sup>३</sup>	प्रशिथिलम्
पारो, पाआरो <sup>४</sup>	प्राकारः
पाहुडं <sup>५</sup>	प्राभृतम्
पांगुरणं, पाउरणं, पावरणं <sup>६</sup>	प्रावरणम्
पावारओ, पारओ <sup>७</sup>	प्रावारकः
पलक्खो <sup>८</sup>	प्लक्षः
फणसो <sup>९</sup>	पनसः
फलिहा <sup>१०</sup>	परिखा
फलिहो <sup>११</sup>	परिघः
फरुसो <sup>१२</sup>	परुषः
फालिहदो <sup>१३</sup>	पारिभद्रः

- 
१. प्रवासीक्षौ । हेम० १. ९५. अतः समृद्धयादौ वा । हेम० १. ४४.  
 २. उदत्वादौ । हेम० १. १३१. तथा 'वृत्तप्रवृत्त...' हेम० २. २९.  
 ३. शिथिलेङ्कुदे वा । हेम० १. ८९.  
 ४. 'व्याकरणप्राकारागते...' हेम० १. २६८.  
 ५. उदत्वादौ । हेम० १. १३१. तथा प्रत्यादौ ङः । हेम० १. २०६.  
 ६. प्रावरणौ अङ्गवाऊ । हेम० १. १७५.  
 ७. 'यावत्तावन्जीविता...' हेम० १. २७१.  
 ८. प्लक्षे लात् । हेम० २. १०३. ९. 'पाटिपरुष...' हेम० १. २३२.  
 १०. वही तथा हरिद्रादौ लः । हेम० १. २५४. ११. वही ।  
 १२. 'पाटिपरुष...' हेम० १. २३२.  
 १३. वही तथा हरिद्रादौ लः । हेम० १. २५४.

फलिहं <sup>१</sup>	स्फटिकम्
भङ्गी <sup>२</sup>	भगिनी
भरहो <sup>३</sup>	भरतः
भविअं <sup>४</sup>	भव्यम्
भवन्तो <sup>५</sup>	भवान्
भस्सं, भप्पं <sup>६</sup>	भस्म
भामिणी <sup>७</sup>	भागिनी
भाअणं, भाणं <sup>८</sup>	भाजनम्
भारिआ <sup>९</sup> ( पैशाची में )	भार्या
भिण्डिवालो <sup>१०</sup>	भिन्दिपालः
भिण्फो <sup>११</sup>	भीष्मः
भेडो <sup>१२</sup>	भेरः
भसरो, भसलो <sup>१३</sup>	भ्रमरः
भिउडी <sup>१४</sup>	भ्रुकुटिः

- 
१. स्फटिके लः हेम० १. १९७. तथा 'निकषस्फटिक' हेम० १. १८६. फलिहो भी देखा जाता है ।
२. 'दुहितृभगिन्योः' हेम० २. १२६. बहिणी के अभाव में.
३. 'वितस्तिवसतिभरत' हेन० १. २१४.
४. 'स्याद्भव्य' हेम० २. १०७. ५. गोणादयः । हेम० २. १७४.
६. भस्मात्मनोः पो वा । हेम० २. ५१.
७. पुत्रागभागिन्योर्गो मः । हेम० १. १६०.
८. 'लुगभाजनदनुज' हेम० १. २६७.
९. 'र्यस्नष्टां' हेम० ४. ३१४.
१०. कन्दरिकाभिन्दीपाले ण्डः । हेम० २. ३८.
११. भीष्मे ष्मः । हेम० २. ५४. १२. किरिभेरे रो ङः । हेम० १. २५१.
१३. भ्रमरे सो वा । हेम० १. २४४. १४. इर्भ्रुकुटौ । हेम० १. ११०.



भुलया <sup>१</sup>	भ्रलता
भिम्भलो <sup>२</sup>	विह्वलः
भयप्फइ, भयस्सई <sup>३</sup>	बृहस्पतिः
मघोणो <sup>४</sup>	मघवान्
मअगलो <sup>५</sup>	मदकलः
मडिम्मो <sup>६</sup>	मध्यमः
मज्जह्लो, मज्जह्लो <sup>७</sup>	मध्याह्नः
महुअं, महूअं <sup>८</sup>	मधूकम्
मणोहरं, मणहरं <sup>९</sup>	मनोहरम्
मल्लू ( न्तू ), मण्णू ( न्तू ) <sup>१०</sup>	मन्युः
मोहो, मऊहो <sup>११</sup>	मयूखः
मोरो, मऊरो, मयुरो <sup>१२</sup>	मयूरः

- 
१. उर्ध्वहनूमत्कण्डयवातूले । हेम० १. १२१.
  २. वा विह्वले वौ वक्ष । हेम० २. ५८ पक्ष में विम्भलो, विह्वलो ।
  ३. बृहस्पतौ बहो भयः । हेम० २. १३७. तथा बृहस्पतिवनस्पत्योः  
सो वा २. ६९. षस्पयोः फः । हेम० २. ५३.
  ४. गोणादयः । हेम० २. १७४.
  ५. मरकतमदकले गः । हेम १. १८२.
  ६. मध्यमकतमे द्वितीयस्य । हेम० १. ४८.
  ७. मध्याह्ने हः । हेम० २. ८४. तथा ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४.
  ८. मधूके वा । हेम० १. १२२.
  ९. 'ओतोद्वान्योन्य....' हेम० १. १५६.
  १०. मन्यौ न्तो वा । हेम० २. ४४.
  ११. 'न वा मयूख....' हेम० १. १७१.
  १२. मोरो मऊरो इति तु मोरमयूरशब्दाभ्यां सिद्धम् । देखो—  
हेम० १. १७१.

मरगत्रं <sup>१</sup>	मरकतम्
मड्डिअं <sup>२</sup>	मर्दितम्
मइलं, मलिणं <sup>३</sup>	मलिनम्
मसिणं, मसणं <sup>४</sup>	मसृणम्
महन्तो <sup>५</sup>	महान्
मरहट्टं <sup>६</sup>	महाराष्ट्रम्
मयन्दो <sup>७</sup>	माकन्दः
माउसिआ, माउच्छा <sup>८</sup>	मातृष्वसा
महुरिअं <sup>९</sup>	माधुर्यम्
मञ्जरो, मञ्जारो <sup>१०</sup>	मार्जारः
मेरा <sup>११</sup>	मिरा (मर्यादा अर्थ में)
मुक्कं, मुत्तं <sup>१२</sup>	मुक्तम्
मूसलं, मुसलं <sup>१३</sup>	मुसलम्

१. 'मरकतमदकले'... हेम० १. १८२.
२. 'संमर्दवितर्दि'... हेम० २. ३६.
३. 'मलिनोभयशुक्ति'... हेम० २. १३८.
४. 'मसृणमृगाङ्क'... हेम० १. ३०.
५. गोणादयः । हेम० १. १७४. ( मत्तूण महन्ताः तवस्सन्ति । कुमा० पा० ७. ५१ )
६. महाराष्ट्रे । हेम० १. ६९.      ७. गोणादयः । हेम० २. १७४.
८. मातृषितुः स्वसुः सिआ-छौ । सेम० २. १४२.
९. खयथधभाम् । हेम० १. १८७.
१०. मार्जारस्य मञ्जरवञ्जरो । हेम० २. १३८.
११. मिरायाम् । हेम० १. ८७.
१२. 'शक्तमुक्तदष्ट'... हेम० २. २.
१३. उत्सुभगमुसले वा । हेम० १. ११३.

मुरुखो, मुक्खो <sup>१</sup>	मूर्खः
मुड्ढा, मुद्धा <sup>२</sup>	मूर्धा
मोल्लं <sup>३</sup>	मूल्यम्
मूसओ <sup>४</sup>	मूसिकः
मिअंको, मअंको <sup>५</sup>	मयङ्कः
मडअ <sup>६</sup>	मृतकम्
मट्टिआ <sup>७</sup>	मृत्तिका
मिच्चू, मच्चू <sup>८</sup>	मृत्युः
मिअंगो, मुइंगो <sup>९</sup>	मृदङ्गः
माउअं, मउअं, माउक्कं <sup>१०</sup>	मृदुकम्
माउत्तणं, मउत्तणं, माउक्कं <sup>११</sup>	मृदुत्वम्
मुसा, मूसा, मोसा <sup>१२</sup>	मृषा

- 
१. षट्मङ्कदममूर्खद्वारे वा । हेम० १. ११२.
  २. श्रद्धद्धिमूर्धोऽर्धेन्ते वा । हेम० २. ४१.
  ३. 'ओत्कुष्माण्डी...' हेम० १. १२४.
  ४. 'पथिपृथिवी...' हेम० १. ८८.
  ५. 'मसृणमृगाङ्क...' हेम० १. १३०.
  ६. प्रत्यादौ डः । हेम० १. २०६ । मडअं
  ७. 'वृत्तप्रवृत्तमृत्तिका...' हेम० २. २९.
  ८. 'मसृणमृगाङ्कमृत्यु...' हेम० १. १३०.
  ९. इः स्वप्तादौ । हेम० १. ४६. तथा 'इदुतौ वृष्टवृष्टि...' हेम० १. १२७.
  १०. आत्कृशामृदुकमृदुत्वे वा । हेम० १. १२७. तथा 'शक्तमुक्तदष्ट...' हेम० २. २.
  ११. वही ।
  १२. उदुदोन्मृषि । हेम० १. १३६.

मुसावाआ <sup>१</sup>	मृषावाक्
मेढी <sup>२</sup>	मेथिः
मंसू <sup>३</sup>	श्मश्रु
मसाणं <sup>४</sup>	श्मशानम्
रणं, रत्तं <sup>५</sup>	रक्तम्
रअणं <sup>६</sup>	रत्नम्
राइकं, राअकेरं, रायकं <sup>७</sup>	राजकीयम्
राउलं, राअउलं <sup>८</sup>	राजकुलम्
राई, रत्ती <sup>९</sup>	रात्रिः
रुणं <sup>१०</sup>	रुदितम्
रुक्खो <sup>११</sup>	वृक्षः
रणं <sup>१२</sup>	अरण्यम्
रिच्छो, रिक्खो <sup>१३</sup>	ऋक्षः

१. वही । २. 'मेथिशिथिर'... हेम० १. २१५.  
 ३. चक्रादावन्तः । हेम० १. २६. तथा 'आदेः श्मश्रु'... हेम० २. ८६.  
 ४. वर० ३. ६. तथा आदेः श्मश्रुश्मशाने । हेम० २. ८६.  
 ५. क्तेन दिण्णादयः । वर० ८. ६२.  
 ६. रयणं । 'च्चाश्लाघा'... हेम० २. १०१ तथा रअणं । 'क्लिष्ट-  
 शिष्ट'... वर० ३. ६०.  
 ७. परराजभ्यां कडिकौ च । हेम० २. १४८.  
 ८. 'लुग्भाजनदनुजराजकुले'... हेम० १. २६७.  
 ९. रात्रौ वा । हेम० २. ८८ तथा हेम० २. ८९.  
 १०. क्तेन दिण्णादयः वर० ८. ६२.  
 ११. वर० १. ३२; ३. ३१.; हेम० २. १२७.  
 १२. बालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १. ६६.  
 १३. रिः केवलस्य । हेम० १. १४० तथा ऋक्षे वा । हेम० २. १९.

रिज् <sup>१</sup>	ऋजुः
रिऊ <sup>२</sup>	ऋतुः
रिड्ढी, रिद्धी <sup>३</sup>	ऋद्धिः
रिणं <sup>४</sup>	ऋणम्
रिसहो <sup>५</sup>	ऋषभः
रिसी <sup>६</sup>	ऋषिः
लहुअं <sup>७</sup>	लघुकम्
सुक्को, लुगो <sup>८</sup>	रुग्णः
लोण, लअणं <sup>९</sup>	लवणम्
लाहलो <sup>१०</sup>	लाहलः
लांगलो <sup>११</sup>	लाङ्गलः
लट्टी <sup>१२</sup>	यष्टिः
लिम्बो <sup>१३</sup>	निम्बः

१. 'ऋणज्वृषभ...' हेम० १. १४१. २. वही ।  
 ३. रिः केवलस्य । हेम० १४०.  
 ४. 'ऋणज्वृषभ...' हेम० १. १४१. ५. वही ।  
 ६. 'ऋणज्वृषभ...' हेम० १. १४१.  
 ७. लघुके लहोः । हेम० २. १२२.  
 ८. 'शक्तमुक्तदष्टरुग्ण...' हेम० २. २.  
 ९. न वा मयूख...' हेम० १. १७१.  
 १०. लाहललाङ्गललाङ्गले वादेर्णः । हेम० १. २५६. इससे ण के अभाव में  
 ११. वही ।  
 १२. ष्ट्यानुष्ट्रेष्टासदष्टे । हेम० २. ३४. तथा यष्ट्यां लः । हेम०  
 १. २४७.  
 १३. निम्बनापिते लण्हं वा । हेम १. २३०.

लाऊ<sup>१</sup>  
लाङ्गूलो<sup>२</sup>

अलाबुः  
लाङ्गूलः

व एवं व

वारं<sup>३</sup>  
वारह<sup>४</sup>  
बइल्लो<sup>५</sup>  
वम्हचेरं, वम्भचेरं, वह्मचरिअं<sup>६</sup>  
बहिणी<sup>७</sup>  
वम्महो<sup>८</sup>  
वइरं, वज्जं<sup>९</sup>  
वुंद्रं, वंद्रं<sup>१०</sup>  
वोरं<sup>११</sup>  
वोरी<sup>१२</sup>

द्वारम्  
द्वादश  
बलीवर्द्धः  
ब्रह्मचर्यम्  
भगिनी  
मन्मथः  
वज्रम्  
वन्द्रम्  
वदरम्  
वदरी

१. वालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १. ६६.
२. लाहललाङ्गललाङ्गुले वादेर्णः । हेम० १. २५६. इससे ण के अभाव में ।
३. उत्वाभाव । देखो—हेम० २. ११२. उत्त्वपक्ष में दुवारं होता है.
४. पशपाषाणो हः । हेम० १. २६२. तथा हेम० १. २१९.
५. गोणादयः । हेम० २. १७४.
६. 'स्याद्भव्य...' हेम० २. १०७. हेम० २. ९३. हेम० २. ७४.  
हेम० २. ६३.
७. दुहितृभगिन्योर्धृञ्वा—बहिण्यौ । हेम० २. १२६.
८. मन्मथे वः । हेम० १. २४२.
९. शर्षतप्तवज्रे वा । हेम० २. १०५.
१०. वन्द्रखण्डिते णा वा । हेम० १. ५३.
११. 'श्रोत्पूतवदर...' हेम० १. १७६. १२. वही.

वणस्सई, वणफई <sup>१</sup>	वनस्पतिः
विलया, वणिदा <sup>२</sup>	वनिता
वरिअं <sup>३</sup>	वर्यम्
वेल्ली, वल्ली <sup>४</sup>	वल्ली
वसही <sup>५</sup>	वसतिः
वाहिं, वाहिर <sup>६</sup>	वहिष्
वाउलो <sup>७</sup>	वातूलः
वाणारसी <sup>८</sup>	वाराणसी
वाहो ( नेत्र जल में )	वाष्प
वाप्पो ( धूम में )	
वीसा <sup>९</sup>	विंशतिः
वेइल्लं, विअइल्लं <sup>१०</sup>	विचकिल्लं
विच्छड्डो <sup>११</sup>	विच्छर्दः

१. बृहस्पतिवनस्पत्योः सो वा । हेम २. ६९. तथा षस्पयोः फः ।  
हे० २. ५३.
२. वनिताया विलया । हेम २. १२८.
३. 'स्याद्भव्यचैत्य' हेम० २. १०७.
४. 'वल्ल्युत्कर' हेम० १. ५८.
५. 'वितस्तिवसति' हेम० १. २१४.
६. वहिषो वाहिं-वाहिरौ । हेम० २. १४०.
७. उर्ध्व-हनूमत्कण्डूयवातूले । हेम० १. १२६.
८. 'करेणुवाराणस्यो' हेम० २. ११६.
९. वाष्पे द्वोऽश्रुणि । हेम० २. ७०.
१०. 'ईजिह्वा' हेम० १. ९२. तथा हेम० १. २८.
११. 'स्थविरविचकिला' हेम० १. १६६.
१२. 'संमर्दवितर्दिविच्छर्द' हेम० २. ३६.

विअड्डी <sup>१</sup>	वितद्धिः
विअड्ढो <sup>२</sup>	विदग्धः
वहेडअडो <sup>३</sup>	विभीतकः
वीसंभो <sup>४</sup>	विश्रम्भः
वीसुं <sup>५</sup>	विष्वक्
वीसत्थो <sup>६</sup>	विश्वस्तः
विसढो, विसमो <sup>७</sup>	विषमः
विसंटठुलं <sup>८</sup>	विसंष्टुलं
विहूणो, विहीणो <sup>९</sup>	विहीनः
विभलो, विहलो <sup>१०</sup>	विह्वलः
वीरिअं <sup>११</sup>	वीर्यम्
वच्छो <sup>१२</sup>	वृक्षः
वटं (टो) <sup>१३</sup>	वृत्तम्

- 
१. वही । २. 'दग्धविदग्ध...' हेम० २. ४०.  
 ३. 'एत्पीयूषापीडविभीतक...' हेम० १. १०५.; १. ८८.; १. २०६.  
 ४. सर्वत्र लवरामवन्द्रे । हेम० २. ७९. तथा हेम० १. ४३.  
 ५. 'लुप्तयरव...' हेम० १. ४३. वा स्वरे मध् । हेम० १. २४. तथा  
 'ध्वनि...' हेम० १. ५२.  
 ६. 'लुप्तयरव...' हेम० १. ४३.  
 ७. विषमे मो ङो वा । हेम० १. २४१.  
 ८. ठोऽस्थिविसंस्थुले । हेम० २. ३२.  
 ९. ऊर्हीनविहीने वा । हेम० १. १०३.  
 १०. वा विह्वले वौ वक्ष । हेम० २. ५८.  
 ११. 'स्याद्भव्य...' हेम० २. १०७.  
 १२. रुक्ख आदेश का अभाव । देखो—हेम० २. १२७.  
 १३. 'वृत्तप्रवृत्त...' हेम० २. २९.



बुडढो <sup>१</sup>	बृद्धः
बुडढी <sup>२</sup>	बृद्धिः
वेण्टं, वोण्टं, विण्टं <sup>३</sup>	वृत्तम्
बुन्दारओ <sup>४</sup>	वृन्दारकः
विळ्ळुओ, विळ्ळुओ, विंचुओ, } विळ्ळिओ <sup>५</sup>	वृश्चिकः
वसहो <sup>६</sup>	वृषभः
विढं, वुढं <sup>७</sup>	वृष्टम्
विटी, वुटी <sup>८</sup>	वृष्टिः
बडुयर <sup>९</sup>	बृहत्तरम्
विहप्फई, वुहप्फई, वहप्फई } <sup>१०</sup> वहस्सई, वुहस्सई	बृहस्पतिः
वेळ्ळ <sup>११</sup>	वेणुः
वेडिसो <sup>१२</sup>	वेतसः
विअणा, वेअणा <sup>१३</sup>	वेदना

१. उदत्वादौ । हेम० १. १३१. तथा हेम २. ४०.

२. वही । ३. इदेदोद्वृन्ते । हेम० १. १३९.

४. विवृत्तवृन्दारके वा । बुन्दारया, वन्दारया । हेम० १. १३२.

५. वृश्चिके श्रेष्ठुर्वा । हेम० २. १६. तथा हेम० १. १२८.

६. वृषभे वा वा । हेम० १. १३३. तथा हेम० १. १२६.

७. 'इदुतौ वृष्टवृष्टिः...' हेम० १. १३७. ८. वही ।

९. गोणादयः । हेम० २. १७४.

१०. वा बृहस्पतौ । हेम० १. १३८., २. १३७., २. ६९. २. ५३.

११. वेणौ णो वा । हेम० १. २०३.

१२. इःस्वप्नादौ । हेम० १. ४६. इत्वे वेतसे । हेम० १. २०७

१३. 'एत इद्वा वेदना...' हेम० १. १६६.

वेरुलिञ्चं <sup>१</sup>	वैदूर्यम् ( वैदूर्यम् )
वारणं, वाञ्चरणं <sup>२</sup>	व्याकरणम्
वावडो <sup>३</sup>	व्यापृतः
विउरुसगो <sup>४</sup>	व्युत्सर्गः
वोसिरणं <sup>५</sup>	व्युत्सर्जनम्
सअडं <sup>६</sup>	शकटम्
सक्को, सक्तो <sup>७</sup>	शक्तः
सणिअरो <sup>८</sup>	शनैश्चरः
समरो <sup>९</sup>	शवरः
सुवओ	शावकः
सारंगं <sup>१०</sup>	शाङ्गम्
सिढिलं, सढिलं <sup>११</sup>	शिथिलम्
सिरोवेअणा, सिरविअणा <sup>१२</sup>	शिरोवेदना
सीभरो, सीहरो, सीअरो <sup>१३</sup>	शीकरः

१. वैदूर्यस्य वेरुलिञ्चं । हेम० २. १३३.  
 २. व्याकरणप्राकारागते कगोः । हेम० १. २६८.  
 ३. प्रत्यादौ डः । हेम० १. २०६.  
 ४. गोणादयः । हेम० २. १७४.      ५. वही ।  
 ६. 'कगञ्जतदप' हेम० १. १७७. सयडं । 'सटाशकट'.....  
 हेम० १. १९६.  
 ७. 'शक्तमुक्त' हेम २. २.  
 ८. इत्सैन्धवशनैश्चरे । हेम० १. १४९. सणिच्छरोभी देखा जाता है ।  
 ९. शवरे वो मः हेम० १. २५८.    १०. शाङ्गं हेम० २. १००.  
 ११. शिथिलेङ्गुदे वा । हेम० १. ८९. तथा हेम० १. २१५.  
 १२. श्रोतोद्वान्योन्य' हेम० १. १५६.  
 १३. शीकरे भहौ वा । हेम० १. १८४.

सिप्पी <sup>१</sup>	शुक्तिः
सुङ्गं, सुक्कं <sup>२</sup>	शुक्तं, शुल्कम्
सिंगं, संगं <sup>३</sup>	शृङ्गम्
संकलं <sup>४</sup>	शृङ्खलम्
सोडीरं <sup>५</sup>	शौण्डीर्यम्
सोरिअं <sup>६</sup>	शौर्यम्
सा, साणो <sup>७</sup>	श्वा
सीआणं, सुसाणं <sup>८</sup>	श्मशानम्
सामओ <sup>९</sup>	श्यामाकः
सलाहा <sup>१०</sup>	श्लाघा
सेलिफो, सेलिम्हो <sup>११</sup>	श्लेष्मा
सटा <sup>१२</sup>	सटा

१. मलिनोभयशुक्तिं '...' हेम० २. १३८.
२. शुक्के ङो वा । हेम० २. ११.
३. 'मसृणमृगाङ्कमृत्युशृङ्गं...' हेम० १. १३०.
४. शृङ्खले खः कः । हेम० १. १८९.
५. 'ब्रह्मचर्यतूर्यसौन्दर्यशौण्डीर्यं...' हेम० २. ६३.
६. स्याद् भव्यचैत्यचौर्यसमेषु यात् । हेम० २. १०७.
७. श्वन्शब्दस्य तु सा साणो इति प्रयोगौ भवतः । देखो—ध्वनि विष्वचो रुः । हेम० १. ५२.
८. आर्षे श्मशानशब्दस्य सीआणं सुसाणं इत्यपि भवति । देखो—हेम० २. ८६.
९. श्यामाके मः । हेम० १. ७१.
१०. 'क्षमाश्लाघा...' हेम० २. १०१.
११. लात् । हेम० २. १०६; सेफो, सिलिम्हो २. ५५.
१२. सटाशकटकैटभे ङः । हेम० १९६.

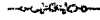
सत्तरी <sup>१</sup>	सप्ततिः
सत्तरह <sup>२</sup>	सप्तदश
समत्थो <sup>३</sup>	समर्थः
संमड्डो <sup>४</sup>	संमर्दः
समत्त <sup>५</sup>	समस्तम्
सररुहं, सरोरुहं <sup>६</sup>	सरोरुहम्
सवंगिओ <sup>७</sup>	सर्वाङ्गीणः
सक्खिणो <sup>८</sup>	साक्षी
सालवाहनो <sup>९</sup>	सातवाहनः
सड्भस <sup>१०</sup>	साध्वसम्
सामच्छ, सामत्थ <sup>११</sup>	सामर्थ्यम्
सुण्हा <sup>१२</sup>	सास्ना
सीहो, सिंघो <sup>१३</sup>	सिंहः

- 
१. सप्ततौ रः । हेम० १. २१०.  
 २. संख्यागद्गदे रः । हेम० १. २१९.      ३. हेम० २. ७९  
 ४. 'संमर्दीवतर्दि...' हेम० २. ३६.  
 ५. असमस्तस्तम्ब इति किम् ? समत्तो, तंबो । देखो—हेम० २. ४५.  
 ६. 'श्रोतोद्वान्योन्य...' हेम० १. १५६.  
 ७. सर्वाङ्गादौनस्येकः । हेम० २. १५१.  
 ८. गोणादयः । हेम० २. १७४.  
 ९. अतसीसातवाहने लः । हेम० १. २११.  
 १०. साध्वसध्वस्थां भः । हेम० २. २६.  
 ११. सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २. २२.  
 १२. उः सास्नास्तावके । हेम० १. ७५.  
 १३. मांसादेर्वा । हेम० १. २९, १. ९२, तथा १. २६४.

सिंहदत्तो <sup>१</sup>	सिंहदत्तः
सिंहराओ <sup>२</sup>	सिंहराजः
सोमालो, सुउमालो, सुकुमालो <sup>३</sup>	सुकुमारः
सुकडं ( आर्ष में ) <sup>४</sup>	सुकृतम्
सूहवो, सुहवो <sup>५</sup>	सुभगः
सुण्हं, सण्हं, सुहमं ( आर्ष में ) <sup>६</sup>	सूक्तम्
सूरिओ <sup>७</sup>	सूर्यः
सूआसो <sup>८</sup>	सोच्छ्वासः
सिधवं <sup>९</sup>	सैन्धवम्
सिण्णं, सेण्णं <sup>१०</sup>	सैन्यम्
सणिद्धं, सिणिद्धं <sup>११</sup>	स्निग्धम्
सुण्हा, सुसा <sup>१२</sup>	स्नुषा
सिआ <sup>१३</sup>	स्यात्

१. बहुलाधिकारात्कचिन्न भवति । देखो—हेम० १. ९२.  
 २. वही । ३. 'न वा मयूख...' हेम १. १७१.  
 ४. प्रत्यादौ डः । हेम० १. २०६.  
 ५. 'ऊत्वे दुर्भगसुभगे...' हेम० १. १९२ तथा हेम० १. १९३.  
 ६. श्रद्धूतः सूक्तमे वा । हेम० १. ११८. तथा २. ७५.  
 ७. 'स्याद्भव्यचैत्य...' हेम० २. १०७.  
 ८. ऊत्सोच्छ्वासे । हेम० १. १५७.  
 ९. इत्सैन्धवशनैश्वरे । हेम० १. १४९.  
 १०. सैन्ये वा । हेम० १. १५० तथा अइदैत्यादौ च । हेम० १. १५१.  
 साइञ्चं भी होता है ।  
 ११. स्निग्धे वादितौ । हेम० २. १०९.  
 १२. स्नुषायां ण्हो न वा । हेम० १. २६१.  
 १३. स्याद् भव्य...' हेम० २. १०७.

सिविणो, सिमिणो <sup>१</sup>	स्वप्नः
हसुमन्तो <sup>२</sup>	हनूमान्
हीरो, हरो <sup>३</sup>	हरः
हडडई, इरडई <sup>४</sup>	हरीतकी
हलिआरो, हरिआलो <sup>५</sup>	हरितालः
हलही, हलिही, हलह्वा <sup>६</sup>	हरिद्रा
हरिअंदो <sup>७</sup>	हरिश्चन्द्रः
हूणो, हीणो <sup>८</sup>	हीनः
हिअं, हिअअं <sup>९</sup>	हृदयम्



- 
१. इः स्वप्नादौ । हेम० १. ४६, हेम० १. २५९. तथा स्वप्ने नात् हेम० २. १०८.
  २. उर्भूहनूमत्कण्डूयवातूले । हेम० १२१. तथा हेम० २. १५९.
  ३. ईर्हरे वा । हेम० १. ५१.
  ४. हरीतक्यामीतोऽत् । हेम० १. ९९.
  ५. 'हरिताले ·····' हेम० २. १२१.
  ६. हरिद्रायां विकल्प इत्यन्ये । देखो 'पथिपृथिवी ···' हेम० १. ८८.
  ७. श्वो हरिश्चन्द्रे हेम० २. ८७.
  ८. ऊर्हीनविहीने वां । हेम० १. १०३.
  ९. इत्कृपादौ । हेम० १. १२८. तथा किसलयकालायसहृदये यः । हेम० १. २६९.

## अष्टम अध्याय

### [ शौरसेनी ]

( १ ) 'प्रकृतिः संस्कृतम्'<sup>१</sup> इस उक्ति के अनुसार शौरसेनी में जितने भी शब्द आते हैं, उनकी प्रकृति संस्कृत है ।

( २ ) शौरसेनी में अनादि में वर्तमान असंयुक्त त का द आदेश होता है । जैसे :—मारुदिणा मन्तिदो ( त का द ); एदाहि, एदाओ ( एतस्मात् )

विशेष—( क ) संयुक्त होने के कारण अज्जउत्त और सउन्तले में त का द नहीं हुआ ।

( ख ) आदि में होने के कारण 'तधा करेध जधा तस्स राइणो अणुक्कम्पणीआ भोमि' में तधा और तस्स के तकारों का द नहीं हुआ ।

( ३ ) लक्ष्य के अनुरोध से शौरसेनी में वर्णान्तर के अधः ( बाद में ) वर्तमान त का द होता है । जैसे :—महन्दो, निश्चिन्दो, अन्दे-उरं ( महान्तः, निश्चिन्तः, अन्तःपुरम् ) ।

विशेष—उक्त नियम संयुक्त त के विषय में काचित्क है ।

( ४ ) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि तकार का दकार विकल्प से होता है । जैसे :—दाव, ताव ( तावत् ) ।

( ५ ) शौरसेनी में इन्नन्त शब्द से आमन्त्रण ( सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति ) के सु के पर में रहने पर पूर्व के 'इन्' के

१. देखो—हेम० १. १. की वृत्ति तथा वर० १२. २.

न का आकार विकल्प से होता है। जैसे :—भो कञ्चुइआ ( भो कञ्चुकिन् ); सुहिआ ( सुखिन् ) अन्यत्र भो तवस्सि ( भो तपस्विन् ); भो मणस्सि ( भो मनस्विन् )।

( ६ ) शौरसेनी में आमन्त्रणवाले सु के पर में रहने पर पूर्ववाले नकारान्त शब्द के न के स्थान में विकल्प से म होता है। जैसे :—भो रायं ( भो राजन् ); भो विअयवम्मं ( भो विजयवर्मन् ) अन्यत्र भयव हुदवह ( भगवन् हुतवह ) होता है।

( ७ ) शौरसेनी में भवत और भगवत् शब्दों से सु विभक्ति के पर में रहने पर पूर्व के नकार का मकार होता है। जैसे :—एदु भवं, समणे भगवं महावीरे । पज्जलितो भयवं हुदासणो ।

( ८ ) शौरसेनी में र्य के स्थान में य्य आदेश विकल्प से होता है। जैसे :—अय्यउत्त पय्याकुली कदम्हि ( आर्यपुत्र पर्याकुलीकृतास्मि ); सुय्यो ( सूर्यः ) पक्ष में अज्जो ( आर्यः ), पज्जाउलो ( पर्याकुलः ); कज्जपरवसो ( कार्यपरवशः )।

( ९ ) शौरसेनी में थ के स्थान में ध विकल्प से होता है। जैसे :—णाधो, णाहो, कधं, कहं; राजपधो, राजपहो ( नाथः, कथं, राजपथः )।

( १० ) शौरसेनी में 'इह' और 'हच्' आदेश के हकार के स्थान में ध विकल्प से होता है। जैसे :—इध ( इह ); होध ( होह = भवथ ); परित्तायध ( परित्तायह = परित्रायध्वे )।

( ११ ) शौरसेनी में भू धातु के हकार का भ आदेश विकल्प से होता है। जैसे :—भोदि, होदि ( भवति )।

---

१. मध्यम पुरुष के बहुवचन में इत्था और ह अथवा ह्य होते हैं।  
दे० इस पुस्तक के छठे अध्याय के वर्तमानकाल के प्रत्ययों में मध्यम पुरुष तथा हेम० ३. १४३.



( १२ ) शौरसेनी में पूर्व शब्द का 'पुरवं' यह आदेश विकल्प से होता है। जैसे :—अपुरवं नाड्यं; अपुरवागदं (अपूर्वं नाट्यम् अपूर्वागतम्); पक्ष में अपुर्व्वं पदं, अपुर्व्वागदं (अपूर्वं पदम्, अपूर्वागतम्)।

( १३ ) शौरसेनी में त्वा प्रत्यय के स्थान में इप और दूण ये आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे :—भविय, भोदूण; हविय, होदूण; पढिय, पढिदूण; रमिय, रन्दूण। पक्ष में—भोत्ता, होत्ता, पढित्ता, रन्ता।

**विशेष**—वररुचि ( १२. ६ ) के अनुसार केवल इय होता है।

( १४ ) शौरसेनी में कृ और गम धातुओं से पर में आनेवाले त्वा प्रत्यय के स्थान में अडुअ (किसी-किसी पुस्तक के अनुसार अदुअ) आदेश विकल्प से होता है। और धातु के टि का लोप हो जाता है। जैसे :—कडुअ, गडुअ। पक्ष में—करिय, करिदूण; गच्छिय, गच्छिदूण।

**विशेष**—वररुचि ( १२. १०. ) के अनुसार दुअ होता है।

( १५ ) शौरसेनी में त्यादि के आदेश<sup>१</sup> इ और ए के स्थान में दि आदेश होता है। जैसे :—नेदि, देदि, भोदि, होदि।

( १६ ) अकार से पर में यदि नियम १५ वाले इ और ए हों तो उनके स्थान में दे और दि ये दोनों आदेश होते हैं। जैसे :—अच्छदे, अच्छदि; गच्छदे, गच्छदि; रमदे, रमदि; किज्जदे, किज्जदि।

१. देखो—इसी पुस्तक के छठे अध्याय के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एकवचन तथा इसी अध्याय का नियम ४।

( १७ ) शौरसेनी में भविष्यत् अर्थ में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर स्सि होता है। जैसे :—भविस्सिदि, करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि ।

विशेष—धातु और प्रत्ययों के बीच में आने के कारण 'स्सि' विकरण है ।

( १८ ) शौरसेनी में अत् से पर में आनेवाले ङसि के स्थान में आदो और आदु ये आदेश होते हैं और शब्द के टि ( अ ) का लोप होता है। जैसे :—दूरादो, दूरादु ( दूरात् ) ।

( १९ ) शौरसेनी में इदानीम् के स्थान में दाणि यह आदेश होता है। जैसे :—अनन्तर करणीयं दाणि आणोवदु अय्यो ।

विशेष—उक्त नियम साधारण प्राकृत में भी लागू होता देखा जाता है ।

( २० ) शौरसेनी में तस्मात् के स्थान में ता आदेश होता है। जैसे :—ता जाव पविसामि । ता अलं एदिणा माणेण ।

( २१ ) शौरसेनी में इत् और एत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के आगे णकार का आगम विकल्प से होता है। इकार के पर में जैसे :—जुत्तणिमं, जुत्तमिमं; सरिसंणिमं, सरिसमिमं; एकार के पर में जैसे :—किणोदं, किमेदं; एवं-णेदं, एवमेदं ।

( २२ ) शौरसेनी में एव के अर्थ में य्येव यह निपात प्रयुक्त होता है। जैसे :—मम य्येव बम्भणस्स; सो य्येव एसो ।

( २३ ) चेटी के आह्वान अर्थ में शौरसेनी में हञ्जे इस निपात का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—हञ्जे चदुरिके ।

( २४ ) विस्मय और निर्वेद अर्थों में शौरसेनी में हीमाणहे इस निपात का प्रयोग किया जाता है। विस्मय में जैसे :—

हीमाणहे जीवन्तवच्छा मे जणणी । निर्वेद में जैसे :—हीमाणहे पत्तिस्सन्ता हगे एदेण निपविधिणो दुव्ववसिदेण ।

( २५ ) शौरसेनी में ननु के अर्थ में णं यह निपात प्रयुक्त होता है । जैसे :—णं अफलोदया; णं अय्यमिस्सेहिं पुढमं य्येव आणत्तं, णं भवं मे अग्गदो चलदि ।

विशेष—आर्ष में णं का वाक्यालङ्कार में भी प्रयोग होता है । जैसे :—नमोत्थु णं जयाणं ।

( २६ ) शौरसेनी में हर्ष प्रकट करने के लिए अम्महे इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—अम्महे एआए सुम्मिलाए सुपल्लिगद्धिदो भवं ।

( २७ ) शौरसेनी में विदूषक के हर्ष द्योतन में 'हीही' इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—हीही भो, संपन्ना मणोरधा पियवयस्सस्स ।

( २८ ) शौरसेनी में व्यापृत शब्द के त का तथा कहीं-कहीं पुत्र शब्द के त का भी ड होता है । जैसे :—वावडो; पुडो पुत्तो ( व्यापृतः, पुत्रः ) ।

( २९ ) शौरसेनी में गृद्ध जैसे शब्दों के ऋकार का इकार होता है । जैसे :—गिद्धो ( गृध्रः ) ।

( ३० ) ब्रह्मण्य, विज्ञ, यज्ञ, और कन्या शब्दों के ण्य, ज्ञ और न्य के स्थान में झ आदेश विकल्प से होता है । किन्तु पैशाची में यही कार्य नित्य ही होता है । जैसे :—ब्रह्मञ्जो, विञ्जो, जञ्जो और कञ्जा । पक्ष में बह्णणो, विण्णो, कण्णा ( ब्रह्मण्यः, विज्ञः, कन्या ) ।

( ३१ ) शौरसेनी में सर्वज्ञ और इङ्गितज्ञ शब्दों के अन्त्य ज्ञ के स्थान में ण होता है । जैसे :—सव्वण्णो, इङ्गिअण्णो ( सर्वज्ञः, इङ्गितज्ञः ) ।

( ३२ ) शौरसेनी में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में णि आदेश और पूर्व स्वर का दीर्घ भी होता है । जैसे :—वणाणि, घणाणि ( वनानि, घनानि ) ।

( ३३ ) शौरसेनी में तिङ् प्रत्ययों के पर में रहने पर भूधातु के स्थान में भो आदेश होता है । जैसे :—भोमि ।

विशेष—लृट् ( अर्थात् भविष्यत् काल के तिङ् ) के पर में रहने पर उक्त नियम लागू नहीं होता । जैसे :—भविस्सिदि ।

( ३४ ) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर दा धातु के स्थान में दे आदेश होता है और केवल लृट् के पर में रहने पर दइस्स आदेश । सामान्यतः तिङ् में जैसे :—देमि । लृट् के पर में रहने पर जैसे :—दइस्स ।

( ३५ ) शौरसेनी में कृब् धातु के स्थान में कर आदेश होता है । जैसे :—करेमि ।

( ३६ ) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर स्था धातु के स्थान में चिट् आदेश होता है । जैसे :—चिट्दि ।

( ३७ ) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर स्मृ, दृश और अस धातुओं के स्थान में क्रमशः सुमर, पेक्ख और अच्छ आदेश होते हैं । जैसे :—सुमरदि, पेक्खदि, अच्छन्ति ( स्मरति, पश्यति, सन्ति ) ।

विशेष—( क ) तिप् के साथ अस धातु के सकार के स्थान में त्थि आदेश होता है । अत्थि । जैसे :—पसंसिदं णात्थि में वाआ-विहवो ।

( ख ) भविष्यत् काल में भिप्-सहित अस के स्थान में विकल्प से स्सं आदेश होता है । पक्ष में धातु के स्वर का दीर्घत्व भी होता है । स्सं; आस्सं ।

( ३८ ) शौरसेनी में स्त्री शब्द के स्थान में 'इत्थी' आदेश होता है। जैसे :—इत्थी ( स्त्री )।

( ३९ ) शौरसेनी में इव के स्थान में विअ आदेश होता है। जैसे :—विअ।

( ४० ) जस् सहित अस्मद् के स्थान में वअं और अम्हे ये दोनों रूप शौरसेनी में होते हैं। जैसे :—वअं और अम्हे ( वयम् )।

( ४१ ) शौरसेनी में सर्वनाम शब्दों से पर में आनेवाली ( सप्तमी-एकवचन की ) ङि विभक्ति के स्थान में सित्वा आदेश होता है। जैसे :—सव्वसित्वा, इदरसित्वा ( सर्वस्मिन् , इतरस्मिन् )।

( ४२ ) शौरसेनी से भावकर्म और कर्ता अर्थों में धातु से परस्मैपद के ही प्रत्यय होते हैं। भाव में जैसे :—किं दाणि दासीएपुत्ता ? दुभित्त्वरुढरङ्क विअ उद्धकं सासाअसि एसा सा सेत्ति। कर्ता में जैसे :—अज्ज वन्दाभि। कर्म में जैसे :—अदो-ज्जेव कामीअदि।

( ४३ ) आश्चर्य शब्द का अच्चरिअ रूप शौरसेनी में होता है। जैसे :—अहह, अच्चरिअ अच्चरिअं।

( ४४ ) शेष शब्दों के साधन प्राकृत अथवा महाराष्ट्री के अनुसार किये जाते हैं।

प्राकृतसर्वस्व के अनुसार शौरसेनी के शब्द :—

शौरसेनी	संस्कृत	विशेष निर्देश्य
अउव्वं	अपूर्वम्	
अगिम्मि	अग्रौ	
अङ्गारो	अङ्गारः	इत् का अभाव
अहिमण्णू	अभिमन्युः	ञ्ज का अभाव
अव्वह्मणं	अब्रह्मण्यम्	
अव्वह्मज्जं ( झं )		

अअं रुक्खो  
अमु जणो  
अमु वहू  
अमु वणं  
अदो कारणादो

अयं वृक्षः  
असौ जनः  
असौ वधूः  
अदो वनम्  
एतस्मात् ( अमुष्मात् )  
कारणात्

अहं  
अम्हे  
अम्हं, अम्हाणं  
इदो  
इअं बाला  
इणं धणं  
इदं वणं  
इङ्गिअज्जो ( ज्जो )  
ईदिसं  
उल्लहलो  
उवरि  
उत्थिदो  
एसो जणो  
कधं  
कत्थ, कस्सि, कहि

अहम्  
वयं, अस्मान्  
अस्माकम्  
इतः  
इयं बाला  
इदं धनम्  
इदं वनम्  
इङ्गितज्जः  
ईदृशम्  
उल्लखलः  
उपरि  
उत्थितः  
एष जनः  
कथम्  
कस्मिन्

एत् का अभाव  
ओत् का अभाव  
अत् का अभाव  
ठ का अभाव

म्मि नहीं हुआ

कण्णआ  
कज्ज ( ज्ज ) आ }

कन्यका

कबन्धो  
किंसुओ  
किरातो

कबन्धः  
किंशुकः  
किरातः

ओत्व का अभाव  
च का अभाव

कीदिसं	कीदृशम्	एत् का अभाव
कुमारी	कुमारी	ह्रस्व का अभाव
कुदो	कुतः	
कुम्हण्डो	कुष्माण्डः	ह का अभाव
केसुओ	किंशुकः	ओत्व का अभाव
कोदूहलं	कौतूहलम्	द्वित्व का अभाव
खणो	क्षण .	छ का अभाव
खीरं	क्षीरम्	छ का अभाव
गद्दहो	गर्दभः	उ का अभाव
चउट्टी	चतुर्थी	ओत् का अभाव
चउद्दही	चतुर्दशी	ओत् का अभाव
चिण्हं	चिह्नम्	न्ध का अभाव
जघा	यथा	ह्रस्व का अभाव
जण्णसेणो	यज्ञसेनः	
जादिसं	यादृशम्	
जुहुट्टिरो	युधिष्ठिरः	अत् का अभाव
दुञ्जमाणो	दह्यमानः	
णईओ	नद्यः	
राणं	नूनम्	
तत्थ, तहि, तस्सि	तस्मिन्	म्मि का अभाव
तए	त्वया, त्वयि	
तधा	तथा	ह्रस्व का अभाव
तादिसं	तादृशम्	
तुण्डं	तुण्डम्	ओत्व का अभाव
तुमं	त्वं अथवा त्वाम्	
तुम्हे	यूयम्, युष्मान्	
तुम्हेहि	युष्माभिः	

तुम्हेहिन्तो	युष्मभ्यम्	
तुम्हाणं	युष्माकम्	
तुम्हेसु	युष्मासु	
तुमोदा	त्वत्	
तुम्ह, ते	तव	
थूलं	स्थूलम्	द्वित्व का अभाव
दस, दह	दश	
दसरहो	दशरथः	
दे	तव	
देअरो	देवरः	इत् का अभाव
देव्वं	दैवम्	अइ का अभाव
नइए	{ नद्या, नद्याः, नद्याः, नद्याम्	
पओट्टो	प्रकोष्ठः	षत्व का अभाव
पासाणो	पाषाणः	ष, ह का अभाव
पावो	पापः	
पिण्डं	पिण्डम्	एत्व का अभाव
पिदणा	पृतना	
पुरुसो	पुरुषः	इत्व का अभाव
पोक्खरं	पुष्करम्	
पोक्खरणी	पुष्करिणी	
फोडओ	स्फोटकः	ख का अभाव
भिन्दिवालो	} भिन्दिपालः	
भिण्डिवालो		
भागुओ, भाणओ	भानवः	
मए	मया	
मंसं	मांसम्	



मइ	मयि	
मऊरो	मयूरः	ओत् का अभाव
मत्	मत्	
मह, मम	मम	
महूसो	मधूकः	ओत् का अभाव
मत्तो, ममादो	मत्	
मादरं	मातरम्	
मालाओ	मालाः	
मिओ	मृतः	
मे	माम्	
मे	मम	
मोत्ती	मुक्ता	
रुक्खो	वृत्तः	ओत् का अभाव
लवणं	लवणम्	ओत् का अभाव
लावण्यं	लावण्यम्	ओत् का अभाव
वअरं	वदरम्	ओत् का अभाव
वब्फो	वाष्पः	
वअं	वयम्	
वहुए	{ वध्वा, वध्वाः, वध्वाः, वध्वाम्	
वहूओ	वध्वः	
वालाए	{ वालया, बालायाः, बालयाः, बालायाम्	
वाउम्मि	वायौ	
विह्ण्फदी	बृहस्पतिः	भ आदिका अभाव
वेअणा	वेदना	इत् का अभाव
वेदसो	वेत्तसः	इत् का अभाव

वो	वः ( युष्मान् , युष्माकम् )	
सहलं	सफलम्	
सरिक्खं	सदृक्षम्	छ का अभाव
सम्महो	सम्मर्दः	उ का अभाव

प्राकृत सर्वस्व के अनुसार शौरसेनी में तिङन्त रूपों के नियम

- (४५) ( क ) धातुओं से परस्मैपद ही होते हैं ।  
 ( ख ) तीनों कालों में प्रायः लट् लकार ही होता है ।  
 ( ग ) त्यादि के तकार का दकार होता है ।  
 ( घ ) बहुवचन में तकार का घकार होता ।  
 ( ङ ) उत्तम पुरुष में म्ह होता है ।  
 ( च ) उत्तम पुरुष में मिप् के साथ स्सम् ही होता है ।  
 ( छ ) ज, ज्ञ, हा, सोच्छं वोच्छं ये सब नहीं होते हैं ।

प्राकृतसर्वस्व के अनुसार शौरसेनी धातु

संस्कृत	शौरसेनी	सिद्ध क्रियापद
भू	भो और हो	भोदि, होदि, क में भूदं
दृश	पेच्छ <sup>१</sup>	पेच्छदि
ब्रू	वुच्च	वुच्चदि
कथ	कघ	कघेदि
घ्रा	जिग्घ	जिग्घदि
भा	भाअ	भाअदि
मृज	फुंस	फुंसदि
घूर्ण	घुम्म	घुम्मदि

१. हेमचन्द्र के अनुसार पेक्ख आदेश होता है । देखो अष्टम अध्याय का नियम ३७ ।

ष्टु	थुण	थुणदि
भी	भा	भादि
सृज	पस	पसदि
चर्च	चव्व	चव्वदि
प्रह	गेण्ड	गेण्डदि
गृह्य	गेज्झ, घेप्प	गेज्झदि, घेप्पदि
शक	सक्कुण, सक	सक्कुणादि, सकदि
म्लै	मिआअ	मिआअदि
उद् + स्था	उत्थ	उत्थेदि
स्वप	सुअ	सुअदि
शीङ्	सुआ	सुआदि
रुध	रोव	रोवदि
रुद	रोद	रोददि
मस्ज	बुड्ढ	बुड्ढदि
दुह्य	दुहीअ	दुहीअदि
उह्य	वहीअ	वहीअदि
लिह्य	लिहीअ	लिहीअदि

प्राकृतसर्वस्व के अनुसार नीचे लिखे शब्दों को भां शौरसेनी में जानना चाहिये ।

भिष्फो ( भीष्मः ), सत्तुग्घो ( शत्रुघ्नः ), जेत्तिकं ( यावत् ), तेत्तिकं ( तावत् ), एत्तिकं ( एतावत् ), भट्टा ( भर्ता ) धूदा, दुहिदिआ ( दुहिता ), इत्थी ( स्त्री ), भादा, भदुओ ( भ्राता, भ्रातरः ), जामादा, जामादुओ ( जामाता, जामातरः ) ।

द्राक् अर्थ में दउत्ति, निश्चय अर्थ में व्खु और खु; इव के अर्थ में व्व; एव के अर्थ में ज्व और जेव तथा ननु के अर्थ में णं प्रयुक्त होते हैं ।

## नवम अध्याय

### [ मागधी ]

( १ ) प्रकृति: शौरसेनी ( वर० ११. २. ) इस वररुचि सूत्र के अनुसार मागधी की प्रकृति शौरसेनी मानी गई है । साथ ही साधारण प्राकृत के शब्द भी मागधी के मूल माने जाते हैं ।

( २ ) मागधी में अदन्द् पुंलिङ्ग शब्दों का प्रथमा के एकवचन में ओकारान्त रूप न होकर एकारान्त रूप होता है । जैसे :—एशे मेशे; एशे पुलिशे ( एष मेषः, एष पुरुषः ); करोमि भन्ते ( करोमि भदन्त ) ।

( ३ ) मागधी में रेफ के स्थान में लकार और दन्त्य सकार के स्थान में तालव्य शकार होते हैं । रेफ का जैसे :— नले, कले ( नरः करः ), स का श जैसे :—हंशे ( हंसः ); दोनों का जैसे :—शालशे, पुलिशे ( सारसः, पुरुषः ) ।

( ४ ) मागधी में यदि सकार और षकार ( अलग-अलग ) संयुक्त हों तो उनके स्थान में स होता है । ग्रीष्म शब्द में उक्त आदेश नहीं होता । संयुक्त सकार में जैसे :—पक्खलदि हस्ती ( प्रस्खलति हस्ती ) बुहस्पदी ( बृहस्पतिः ) मस्कली ( मस्करी ), विस्मये ( विस्मयः ); संयुक्त षकार में जैसे :—शुष्क-दालुं ( शुष्कदारु ), कस्टं कष्टम्, विस्नुं ( विष्णुम् ), उस्मा ( ऊष्मा ), निस्फलं ( निष्फलम् ) धनुस्खण्डं ( धनुस्खण्डम् )

**विशेष—**( क ) उक्त नियम जहाँ लगता है, वहाँ संयोग के आगे-पीछे के वर्णों का लोप नहीं होता ।

( ख ) ग्रीष्म शब्द में उक्त नियम के लागू नहीं होने से गिम्हवाशले ( ग्रीष्मवासरः ) होता है ।

( ५ ) द्विरुक्त ट ( ट्ट ) और षकार से आक्रान्त ( युक्त ) ठकार के स्थान में मागधी में स्त्र आदेश होता है । ट्ट में जैसे :—पस्टे ( पट्टः ), भस्टालिका ( भट्टारिका ), भस्त्रणी ( भट्टिनी ), छ्र में जैसे :—शुस्टु कदं ( सुष्टु कृतम् ) कोस्तागालं ( कोष्ठागारम् ) ।

( ६ ) स्थ और र्थ इन दोनों के स्थान में मागधी में सकार से संयुक्त तकार होता है । स्थ में जैसे :—उवस्तिदे ( उपस्थितः ), शुस्तिदे ( सुस्थितः ); र्थ में जैसे :—अस्तवदी ( अर्थवती ), शस्तवाहे ( सार्थवाहः ) ।

( ७ ) मागधी में ज, घ और य के स्थान में य आदेश होता है । ज का जैसे :—यणवदे ( जनपदः ), अय्युणे ( अर्जुनः ), दुय्यणे ( दुर्जनः ), गय्यदि ( गर्जति ); घ का जैसे :—मय्यं ( मद्यम् ), अय्य किल विय्याहले आगदे ( अद्य किल विद्याहर आगतः । ); य का जैसे :—यादि ( याति ) ।

**विशेष—**इसी पुस्तक के दूसरे अध्याय के चौदहवें नियम के बाधनार्थ य के स्थान में पुनः य का विधान किया जाता है ।

( ८ ) मागधी में न्य, ण्य, ज्ञ और ङ्य इन संयुक्ताक्षरों के

स्थान में द्विरुक्त व्य होता है । न्य का जैसे :—अहिमञ्जु-  
कुमाले, ( अभिमन्युकुमारः ) कञ्जकावलणं ( कन्यकावरणम् );  
ण्य का जैसे :—अबम्हञ्जं ( अब्रह्मण्यम् ), पुञ्जाहं ( पुण्या-  
हर् ); ज्ञ का जैसे :—पञ्जाविशाले ( प्रज्ञाविशालः ) शब्दञ्जे  
( सर्वज्ञः ), अवञ्जा ( अवज्ञा ); ज्ञ का जैसे :—अञ्जली  
( अञ्जलिः ), धणञ्जए ( धनञ्जयः ), पञ्जले ( पञ्जरः ) ।

( ६ ) मागधी में व्रज धातु के जकार का ङञ् आदेश होता है । जैसे :—वञ्जदि ( व्रजति ) ।

**विशेष**—उक्त नियम इसी अध्याय के सातवें नियम का अपवाद है । अन्यथा य आदेश हो जाता है ।

( १० ) मागधी में अनादि में वर्तमान छ के स्थान में शकार से संयुक्त चकार ( च्र ) होता है । जैसे :—गञ्च, गञ्च ( गच्छ, गच्छ ), उञ्चलदि ( उच्छलति ), पिञ्चिले ( पिच्छिलः ), तिरिञ्चि पेस्कदि<sup>१</sup> ( तिरिच्छि पेच्छइ = तिर्यक् प्रेक्षते ) ।

( ११ ) मागधी में अनादि में वर्तमान क्ष के स्थान में जिह्वामूलीय ङक<sup>२</sup> आदेश होता है । जैसे :—यङ्के ( यक्षः ), लङ्कशे ( रक्षसे ) ।

( १२ ) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के क्ष के स्थान में स्क आदेश होता है । जैसे :—पेस्कदि ( प्रेक्षते ), आचस्कदि ( आचक्षते ) ।

**विशेष**—पूर्व नियम ( ग्यारहवें ) का यह नियम अपवाद है ।

१. देखो—अगला नियम ( १२ ) ।

२. प्राकृत-प्रकाश के अनुसार स्क आदेश होकर उसके और लक्षशे रूप होते हैं । दे०—वर० ११. ८.

( १३ ) मागधी में स्था धातु के तिष्ठ के स्थान में चिष्ठ आदेश होता है। जैसे :—चिष्ठदि ( तिष्ठति )।

**विशेष**—किसी-किसी पुस्तक के अनुसार चिद्ध आदेश होकर चिद्धदि रूप भी होता है।

( १४ ) मागधी में अवर्ण से पर में आनेवाले ङस् ( षष्ठी के एकवचन ) के स्थान में आह आदेश विकल्प से होता है। आह के पूर्ववर्ती टि का लोप होता है। जैसे :—हगे न ईदिशाह कम्माह काली ( अहं न ईदृशस्य कर्मणः कारी ); पक्ष में—भीमशेणस्स पञ्चादो हिण्डीअदि।

( १५ ) मागधी में अवर्ण से पर में विद्यमान आम् के स्थान में आहँ आदेश विकल्प से होता है और पूर्व के टि का लोप हो जाता है। जैसे :—जाहँ ( येषाम् ); पक्ष में—जाणं ( येषाम् )।

( १६ ) मागधी में अहम् और वयम् के स्थान में हगे आदेश होता है। जैसे :—हगे शक्कावदालतिस्तणिवाशी धीवले ( अहं शक्कावतारतीर्थनिवासी धीवरः )।

**विशेष**—प्राकृतप्रकाश के अनुसार अहं के स्थान पर हके और अहके भी होते हैं।

प्राकृत-प्रकाश के अनुसार मागधी के विशेष शब्द।

संस्कृत	मागधी	प्रा. प्र. अ.	सूत्र
माषः	माशे	११	३
विलासः	विलाशे	११	३
जायते	यायदे	११	४
परिचयः	पलिचये	११	५
गृहीतच्छलः	गहिदच्छले	११	५

विजलः	वियलो	११	५
निर्भरः	णिञ्भले	११	५
हृदये	हडके	११	६
आदरः	आलले		
कार्यम्	कर्ये	११	७
दुर्जनः	दुय्यणे	११	७
राक्षसः	लस्करो	११	८
दक्षः	दस्के	११	८
अहम्	हके, अहके, हगे	११	९
एष राजा	एशि लाआ	११	१०
एष पुरुषः	एशे पुलिशे	११	१०
हसितः	हशिदु, हशिदि, हशिद	११	११
पुरुषस्य	पुलिशाह, पुलिशश	११	१२
तिष्ठति	चिष्ठदि	११	१४
कृतः	कडे	११	१५
मृतः	मडे	११	१५
गतः	गडे	११	१५
सोढ्वा	सहिदाणि	११	१६
कृत्वा	कारिदाणि		
श्रृगालः	शिआले, शिआलके	११	१६





## दशम अध्याय

### [ पैशाची ]

( १ ) पैशाची की प्रकृति शौरसेनी है ।

( २ ) पैशाची में झ के स्थान में ब्ब होता है । जैसे:—  
पब्बा ( प्रज्ञा ), सब्बा ( संज्ञा ), सब्बब्बो ( सर्वज्ञः ), ब्बानं  
( ज्ञानम् ), विब्बानं ( विज्ञानम् ) ।

( ३ ) राजन् शब्द के रूपों में जहाँ-जहाँ झ रहता है, उस  
झ के स्थान में चिब्ब आदेश विकल्प से होता है । जैसे:—  
राचिब्बा लपितं, रब्बा लपितं ( राज्ञा लपितम् ), राचिब्बो धनं  
रब्बो धनं ( राज्ञो धनम् ) ।

( ४ ) पैशाची में न्य और ण्य के स्थान में ब्ब आदेश  
होता है । जैसे:—कब्बका अभिमब्बू ( कन्यका, अभि-  
मन्युः ) । पुब्बकम्मो, पुब्बाहं ( पुण्यकर्म, पुण्याहम् ) ।

( ५ ) पैशाची में णकार का नकार हो जाता है । जैसे:—  
गुनगनयुत्तो ( गुणगणयुक्तः ), गुनेन ( गुणेन ) ।

( ६ ) पैशाची में तकार और दकार के स्थान में तकार हो  
जाता है । जैसे:—भगवती, पव्वती ( भगवती, पार्वती ) ।  
मतनपरवसो ( मदनपरवशः ), सतनं ( सदनम् ), तामोतरो  
( दामोदरः ), होतु ( होदु शौ० ) ।

( ७ ) पैशाची में लकार के स्थान में ल्ळकार हो जाता है ।  
जैसे:—सळ्ळं, कमळं ( सलिलं कमलम् ) ।

( ८ ) पैशाची में श और ष के स्थान में स होता है ।  
जैसे :—सोभति, सोभनं, ससी ( शोभते, शोभनं, शशी ) ।  
विसमो, विसानो ( विषमः, विषाणः ) ।

( ९ ) पैशाची में हृदय शब्द के यकार के स्थान में पकार हो जाता है । जैसे :—हितपक ( हृदयकम् ) ।

( १० ) पैशाची में डु के स्थान तु आदेश विकल्प से होता  
जैसे :—कुतुम्बकं, कुदुम्बकं ( कुदुम्बकम् ) ।

( ११ ) पैशाची में त्त्वा प्रत्यय के स्थान में तून आदेश होता है । जैसे :—गन्तून, हसितून, पठितून ( गत्वा, हसित्वा, पठित्वा ) ।

( १२ ) पैशाची में ष्टु के स्थान में ढून और त्थून आदेश होते हैं । जैसे :—नढून, नत्थून; तढून, तत्थून ( नष्टु, दष्टु ) ।

( १३ ) पैशाची में कहीं-कहीं र्य, स्त्र और ष्ट के स्थानों में क्रमशः रिय, सिन और सट आदेश होते हैं । जैसे :—भारिया, सिनात्, कसटं ( भार्या, स्नातम्, कष्टम् ) ।

**विशेष—**( क ) प्राकृतप्रकाश ( १०. ७. ) के अनुसार स्त्र के स्थान में सन आदेश होता है । जैसे :—सनानं, सनेहो ( स्नानम्, स्नेहः ) ।

( ख ) नियम १३ में 'कहीं-कहीं' कहने से सुज्जो ( सूर्यः ), सुनुसा और तिद्वो ( दिष्टः ) में उक्त नियम नहीं लगा ।

( १४ ) पैशाची में भाव-कर्मवाले यक् के स्थान में इय्य आदेश होता है । जैसे :—रमिद्यते, पठिद्यते ( रम्यते, पठ्यते ) ।

( १५ ) पैशाची में कृ धातु से पर में आये हुए भाव-कर्मवाले यक् के स्थान में ईर आदेश होता है और धातु के टि ( ऋ ) का लोप हो जाता है । जैसे :—कीरते ( क्रियते ) ।

( १६ ) पैशाची में यादृश, तादृश आदि के दृ के स्थान में

ति आदेश होता है। जैसे:—यातिसो, तातिसो, भवातिसो, अञ्वातिसो, युम्हातिसो, अम्हातिसो ( यादृशः, तादृशः, भवादृशः, अन्यादृशः, युष्मादृशः, अस्मादृशः )।

( १७ ) पैशाची में इच् और एच् ( देखो छठे अध्याय में वर्तमान काल के प्रत्यय ) के स्थान में ति आदेश होता है। जैसे:—वसुआति, भोति, नेति, तेति।

( १८ ) पैशाची में अकार से पर में आनेवाले इच् और एच् के स्थान में ते और ति दोनों आदेश होते हैं। जैसे:—लपते, लपति; अच्छते, अच्छति; गच्छते, गच्छति; रमते, रमति।

( १९ ) पैशाची में डच् और एच् के स्थान में, भविष्यत् काल में, स्सि न होकर एय्य आदेश ही होता है। जैसे:—हुवेय्य<sup>१</sup> ( भविष्यति )।

( २० ) पैशाची में अकार से पर में आनेवाले ङसि के स्थान में आतो और आतु ये दो आदेश होते हैं। जैसे:—तुमातो, तुमातु; ममातो, ममातु।

( २१ ) पैशाची में टा के साथ तद् और इदम् शब्दों के स्थान में नेन और छील्लिङ्ग में नाए आदेश होते हैं। जैसे:—नेन कतसिनानेन ( तेन कृतस्नानेन अथवा अनेन इत्यादि ); पूजितो च नाए ( पूजितश्चानया )।

प्राकृत-प्रकाश के अनुसार पैशाची के विशेष शब्द—

संस्कृत	पैशाची	प्रा. प्र. अ.	सूत्र
मेघः	मेखो	१०	२
गगनम्	गकनं	१०	२
राजा	राचा	१०	२

१. तं तद्धून चिञ्चितं रञ्जा का एसा हुवेय्य ( तां दृष्ट्वा चिञ्चितं राज्ञा का एषा भविष्यति !

निर्भरः	णिच्छरो	१०	२
वडिशम्	वटिशं	१०	२
दशवदनः	दसवत्तनो		
माधवः	माथवो	१०	२
गोविन्दः	गोविन्तो	१०	२
केशवः	केसवो	१०	२
सरभसं	सरफसं	१०	२
शलभः	सलफो	१०	२
संग्रामः	संगामो	१०	२*
इव	पिव	१०	४
तरुणी	तलुनी	१०	५
कष्टम्	कसठं	१०	६
खानम्	सनानं	१०	७
स्नेहः	सनेहो	१०	७
भार्या	भारिआ	१०	८
विज्ञातः	विञ्जातो	१०	९
सर्वज्ञः	सन्वञ्जो	१०	९
कन्या	कञ्जा	१०	९
कार्यम्	कच्चं	१०	११
राज्ञा	राचिना, रञ्जा	१०	१२
राज्ञः	राचिनो, रञ्जो	१०	१२
दत्त्वा	दातूनं	१०	१३
गृहीत्वा	घेत्तूनं	१०	१३
हृदयकम्	हितअकं	१०	१४



## एकादश अध्याय

### [ अपभ्रंश ]

( १ ) अपभ्रंश में किसी एक स्वर के स्थान में कोई एक दूसरा स्वर प्रायः हो जाता है । जैसे :—कच्चित् के लिए अपभ्रंश में कच्च और काच्च; वेणी के लिए वेण और वीण; बाहु के लिए बाह और बाहा; पृष्ठ के लिए पट्टि, पिट्टि और पुट्टि; तृण के लिए तग्ण, तिग्ण और तृग्ण; सुकृतम् के लिए सुकिदु, सुकिउ और सुकृदु; क्लिन्न के लिए किन्नउ, किलिन्नउ; लेखा के लिए लिह, लीह और लेह तथा गौरी के लिए गउरी और गोरी ये रूप विभिन्न स्वरों के आने से होते हैं ।

( २ ) अपभ्रंश में स्वादि विभक्तियों के आने पर प्रायः कभी तो प्रातिपदिक के अनन्त्य स्वर का दीर्घ और कभी ह्रस्व हो जाता है । सु विभक्ति में जैसे :—ढोछ्छा, सामला ( विट, श्यामला, ह्रस्व स्वर का दीर्घ ); धण, सुवण्णरेह ( धण संस्कृत का धन्या है । कुछ लोग प्रिया शब्द के स्थान में धण आदेश मानते हैं । सुवर्णरेखा । इनमें दीर्घ स्वर का

---

१-१. ढोछ्छा सामला धण चम्पावण्णी ।

णाइ सुवण्णरेह कसवट्टइ दिण्णी ॥

( विटः श्यामलः धन्या चम्पकवर्णा ।

इव सुवर्णरेखा कषपट्टके दत्ता ॥ )

ह्रस्व हुआ है । ) स्त्रीलिङ्ग में जैसे :—विट्टीएँ ( पुत्रि ।  
यहाँ ह्रस्व का दीर्घ हुआ है ), पइट्टि ( प्रविष्टा । यहाँ दीर्घ  
का ह्रस्व हुआ है । ), निसिआँ खग्ग ( निशिताः खड्गा ।  
यहाँ दीर्घ का ह्रस्व हुआ है । ), घोडा ( अश्वाः । यहाँ ह्रस्व  
स्वर का दीर्घ हो गया है । )

( ३ ) अपभ्रंश में सु ( प्रथमा के एकवचन ) और अम्  
विभक्तियों के आने पर शब्द के अन्तिम अ के स्थान में उ हो  
जाता है । जैसे :—दहमुहु<sup>३</sup>, तोसिअ-संकरु, चउमुहु, छंमुहु  
( दशमुखः, तोषित-शंकरः, चतुर्मुखं, षण्मुखम् ) ।

( ४ ) अपभ्रंश में पुंलिङ्ग में वर्तमान शब्द ( प्रातिपदिक )  
के अन्त्य अ के स्थान में आ विकल्प से होता है, जब कि उन

१. विट्टीए मइ भणिय तुहुँ मा करु वड्डी दिट्टि ।

पुत्ति सकर्णी भल्लि जिबं मारइ हिअइ पइट्टि ॥

( पुत्रि मया भणिता त्वं 'मा कुरु वक्रां दृष्टिम्' ।

पुत्रि सकर्णा भल्लिर्यथा मारयति हृदये प्रविष्टा ॥ )

२. एइ ति घोडा एह थलि एइ ति निसिआँ खग्ग ।

एत्थु मुणीसम जाणिअइ जो न वि वालइ वगा ॥

( एते ते अश्वाः एषा स्थली एते ते निशिताः खड्गाः ।

अत्र मनुष्यत्वं ज्ञायते यः नापि वालयति बल्गाम् ॥ )

३. दहमुहु भुवण-भयंकरु तोसिअ-संकरु गिगउरहवरि चडिअउ ।

चउमुहु छंमुहु फाइवि एकहिं लाइवि णावइ दइबें घडिअउ ॥

( दशमुखः भुवनभयंकरः तोषितशङ्करः निर्गतः रथवरे आरूढः ।

चतुर्मुखं षण्मुखं ध्यात्वा एकस्मिन् लगित्वा इव दैवेन घटितः ) ।

अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों से पर में सु विभक्ति आई हुई हो ।  
जैसे :—जो<sup>१</sup>, सो ( यः, सः ) ।

विशेष—पुंलिङ्ग में कहने से 'अङ्गहिं अङ्गु न मिलउ हलि' ( अङ्गैः अङ्गं न मिलितं सखि ) में नपुंसक अङ्गु और मिलिउ में ओ नहीं हुआ ।

( ५ ) अपभ्रंश में टा विभक्ति के आने पर शब्द के अन्तिम अ के स्थान में ए हो जाता है । जैसे :—पवसन्तेण<sup>२</sup> ( प्रवसता ), नहेण ( नखेन ) ।

( ६ ) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अकार और डि ( सप्तमी एकवचन ) के स्थान में इकार और एकार होते हैं । जैसे :—तलि घल्लइ<sup>३</sup>, तले घल्लइ ( तले क्षिपत्ति ) ।

( ७ ) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अ के स्थान में, भिस् ( तृतीया के बहुवचन ) के पर में रहने पर, एकार आदेश विकल्प

१. अगलिअ नेह—निवट्टाहं जोअण-लक्खु वि जाउ ।  
वरिस-सएण वि जो मिलइ सहि सोक्खहं सो ठाउ ॥  
( अगलितस्नेहनिर्वृत्तानां योजनलक्षमपि जायताम् ।  
वर्षशतेनापि यः मिलति सखि सौख्यानां स स्थानम् ॥ )
२. जेमहु दिण्णा दिअहहवा दइएँ पवसन्तेण ।  
ताण गणन्तिएँ अङ्गुलिउ जज्जरिआउ नहेण ॥  
( ये मम दत्ताः दिवसाः दयितेन प्रवसता ।  
तान् गणयन्त्याः अङ्गुल्यः जज्जरिताः नखेन ॥ )

३. सायरु उप्परि तणु धरइ तलि घल्लइ रयणाइं ।  
सामि सुभिच्चु वि परिहरइ संमारोइ खलाइं ॥  
( सागरः उपरि तृणानि धरति तले क्षिपति रत्नानि ।  
स्वामी सुभृत्यमपि परिहरति संमानयति खलान् ॥ )

से होता है । जैसे :—लक्खेहिं<sup>१</sup> (लक्ष्मैः); पश्च में गुणहिं (गुणैः) ।

( ८ ) अपभ्रंश में अकारान्त शब्द से पर में आने वाले ङसि विभक्ति के स्थान में हे और हु आदेश होते हैं । जैसे :—  
वच्छहे<sup>२</sup> गृहइ, वच्छहु गृहइ ( वृक्षात् गृह्णाति ) ।

( ९ ) अपभ्रंश में अदन्त शब्द से पर में आने वाले भ्यस् ( पञ्चमी बहुवचन ) के स्थान में हुं आदेश होता है । जैसे :—  
गिरि-सिङ्गहुं<sup>३</sup>, ( गिरिशृङ्गेभ्यः ) ।

( १० ) अपभ्रंश में अदन्त शब्द से पर में आने वाले ङस् ( षष्ठी एकवचन ) के स्थान में सु, हो और स्सु ये तीन आदेश होते हैं । जैसे :—तसु<sup>४</sup> ( तस्य ), दुल्लहहो ( दुर्लभस्य ) सुअणस्सु ( सुजनस्य ) ।

१. गुणहिं न संपइ किति पर फल लिहिआ भुज्जन्ति ।  
केपरि न लहइ बोड्डिअ विगय लक्खोहिं धेप्पन्ति ॥  
( गुणैः न संपत् कीर्तिः परं फलानि लिखितानि भुज्जन्ति ।  
केसरी न लभते कपर्दिकामपि गजाः लक्ष्मैः गृह्यन्ते ॥ )
२. वच्छहे गृहइ फलइं जणु कडु-पल्लव बज्जेइ ।  
तो वि महद्दुसु सुअणु जिवं ते उच्छङ्गि धरेइ ॥  
( वृक्षात् गृह्णाति फलानि जनः कटुपल्लवान् वर्जयति ।  
तथापि महाद्रुमः सुजन इव तान् उत्सङ्गे धरति ॥ )
३. दूरुङ्गाणं पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ ।  
जिह गिरिसिङ्गहुं पडिअ सिल अन्नु विचूरु करेइ ॥  
( दूरोङ्गाणेन पतितः खलः श्यात्मानं जनं मारयति ।  
यथा गिरिशृङ्गेभ्यः पतिता शिला अन्यदपि चूर्णीकरोति ॥ )
४. जो गुण गोबइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु ।  
तसु हउं कलिजुगि दुल्लहहो बलि किज्जउं सुअणस्सु ॥



( ११ ) अपभ्रंश में अदन्त शब्द से पर में आने वाले आम् के स्थान में हं आदेश होता है । जैसे :—तणहं<sup>१</sup> ( तृणानाम् ) ।

( १२ ) इदन्त और उदन्त शब्दों से पर में आने वाले आम् के स्थान में, अपभ्रंश में हुं और हं दोनों आदेश होते हैं । जैसे :—सउणिहं<sup>२</sup> ( शकुनीनाम् ) इत्यादि ।

विशेष—उक्त नियम सुप् सप्तमी-बहुवचन ) में भी लागू होता है । जैसे :—दुहुँ<sup>३</sup> ( द्वयोः ) ।

( १३ ) अपभ्रंश में इदन्त, उदन्त शब्दों से पर में आने वाले ङसि, भ्यस् और ङि के स्थान में क्रमशः हे, हुं और हि आदेश होते हैं । जैसे :—गिरिहे<sup>४</sup>, तरुहे ( गिरेः, तरोः ) भ्यस् का

( यः गुणान् गोपयति आत्मीयान् प्रकटान् करोति परस्य ।

तस्य अहं कलियुगे दुर्लभस्य बलिं करोमि सुजनस्य ॥ )

१. तणहं तइजा भङ्गि न वि तें अबड-यडि वसन्ति ।  
अह जणु लङ्गि वि उत्तरइ अह सह सइ मज्जन्ति ॥  
( तृणानां तृतीया भङ्गी नापि तानि अबटतटे वसन्ति ।  
अथ जनः लङ्गित्वा उत्तरति अथ सह स्वयं मज्जन्ति ॥ )
२. दइवु घडावइ वणि तरुहुँ सउणिहुँ पक्क फलाइं ।  
सो वरि सुक्खु पइट्ठण वि कण्णहिं खलवयणहिं ॥  
( देवः घटयति वने तरुणं शकुनीनां ( कृते ) पक्कफलानि ।  
तद् वरं सौख्यं प्रविष्टानि नापि कर्णयोः खलवचनानि ॥ )
३. धवलु विसूरइ सामिअहो, गरुआ भरु पिक्खेवि ।  
हउं कि न जुत्तउ दुहुँ दिक्खिहिं, खण्डइं दोण्णि करेवि ॥  
( धवलः खिद्यति स्वामिनः गुरुं भारं प्रेक्ष्य ।  
अहं किं न युक्तः द्वयोर्दिशोः खण्डे द्वे कृत्वा ॥ )
४. गिरिहेँ सिलायलु तरुहेँ फलु वेप्पइ नीसावन्नु ।  
घरु मेल्लेप्पिणु माणुसहेँ तो वि न रुच्चइ रन्नु ॥

का हुंः—तरुहुं<sup>१</sup> ( तरुभ्यः ); डि का हि जैसे :—  
कलिहि<sup>२</sup> ( कलौ ) ।

( १४ ) अपभ्रंश में अदन्त शब्द से पर में आने वाले टा के स्थान में ण और अनुस्वार आदेश होते हैं । जैसे :—दइएँ ( दयितेन ), पवसन्तेण ( प्रवसता ) । देखो—इसी अध्याय में नियम ५ की पाद टिप्पणी ।

( १५ ) अपभ्रंश में इकारान्त, उकारान्त शब्दों से पर में आने वाले टा के स्थान में एं, ण और अनुस्वार आदेश होते हैं । जैसे :—अग्गिँ<sup>३</sup> ( अग्निना ); अग्गिणँ ( अग्निना ); अग्गिं ( अग्निना ) ।

( गिरेः शिलातलं तरोः फलं गृह्यते निःसामान्यम् ।

गृहं मुक्त्वा मनुष्याणां तथापि न रोचते अरण्यम् ॥ )

१. तरुहुँ वि वकलु फलु मुणिवि परिहणु असणु लहन्ति ।  
सामिहुँ एत्तिउ अगलउं आयरु भिच्छु गृहन्ति ॥  
( तरुभ्यः अपि वल्कलं फलं मुनयः अपि परिधानम् अशनं लभन्ते स्वामिभ्यः, इयद् अधिकारं भृत्या गृहन्ति । )
२. अह विरल पहाउ जि कलिहि धम्मु ।  
( अथ विरलप्रभाव एव कलौ धर्मः । )
३. अग्गिँ उण्हउ होइ जगु वाएँ सीअलु तेवं ।  
जो पुणु अग्गि सीअला तसु उण्हत्तणु केवं ॥  
( अग्निना उष्णं भवति जगत् वातेन शीतलं तथा ।  
गः पुनः अग्निना शीतलः तस्य उष्णत्वं कथम् ? )
४. विप्पिअ-आरउ इइ वि पिउ तो वि तं आणहि अज्जु ।  
अग्गिण दड्ढा जइ वि घरु तो तें अग्गि कज्जु ॥  
( विप्रियकारकः यद्यपि प्रियः तदपि तमानय अथ ।  
अग्निना दग्धं यद्यपि गृहं तदपि तेन अग्निना कार्यम् ॥ )

(१६) अपभ्रंश में सु, अम्, जस् और शस् विभक्तियों का लोप हो जाता है। देखो इसी अध्याय के नियम २ की पादटिप्पणी ३ में 'एइ ति घोड़ा' इत्यादि में सु, अम्, जस् का लोप।

(१७) अपभ्रंश में षष्ठी विभक्ति का प्रायः लुक् हो जाता है। जैसे:—गय<sup>१</sup> ( गजानाम् )।

(१८) अपभ्रंश में यदि किसी शब्द से संबोधन में जम् विभक्ति आई हो तो उसके स्थान में हो आदेश होता है। जैसे:—तरुणहो, तरुणिहो<sup>२</sup> ( हे तरुणाः हे तरुण्यः )।

**विशेष:—**यह नियम पूर्वोक्त सोलहवें नियम का अपवाद है।

(१९) अपभ्रंश में भिस् और सुप् के स्थान में हिं आदेश होता है। जैसे:—गुणहिं ( गुणैः ); मग्गेहिं<sup>३</sup> तिहिं ( मार्गेषु त्रिषु )।

(२०) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले जस् और शस् ( प्रत्येक ) के स्थान में उ और ओ आदेश होते हैं। जैसे:—अङ्गुलिउ ( अङ्गुल्यः। जस्=उ ); सव्व-

१. संगर-सएहिं लु वणिणअइ देक्खु अम्हारा कन्तु ।

अइमत्तहं चत्तङ्कुसहं गय कुम्भहं दारन्तु ॥

( संगरशतेषु यो वर्णयते पश्य अस्माकं कान्तम् ।

अतिमत्तानां त्यक्ताङ्कुशानां गजानां कुम्भान् दारयन्तम् ॥ )

२. तरुणहो तरुणिहो मुणिउ महं करहु म अण्पहोँ घाउ ।

( हे तरुणाः, हे तरुण्यः (च) ज्ञातं मया आत्मनः धातं मा कुरुत । )

३. भाईरहिं जिँ भारइ मग्गेहिं तिहिं वि पयट्ठइ ।

( भागीरथी यथा भारते मार्गेषु त्रिषु प्रवर्तते । )

ङ्गाउ<sup>१</sup> ( सर्वाङ्गीः । शस्=उ ) ; विलासिणीओ<sup>२</sup> ( विलासिनीः । शस्=ओ ) ।

( २१ ) अपभ्रंश में खील्लिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले टा ( तृतीया-एकवचन ) के स्थान में ए आदेश होता है । जैसे :—ससिमण्डल-चन्दिमए<sup>३</sup> ( शशिमण्डलचन्द्रिकया ) ।

( २२ ) अपभ्रंश में खील्लिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आने-वाले डस् ( षष्ठी-एकवचन ) और डसि ( पञ्चमी-एकवचन ) के स्थान में हे आदेश होता है । जैसे :—मड्भहे,<sup>४</sup> तहे,<sup>५</sup> धणहे<sup>६</sup> इत्यादि ( मध्यायाः, तस्याः, धन्यायाः इत्यादि ) ; बालहे<sup>७</sup> ( बालायाः ) ।

१-२. सुन्दर-सव्वङ्गाउ विलासिणीओ पेच्छन्तरण ।

( सुन्दरसर्वाङ्गीः विलासिनीः प्रेक्षमाणानाम् ॥ )

३. निशं-मुह-करहिं वि मुद्ध कर अन्धारइ पडिपेक्खइ ।

ससि-मण्डल-चन्दिमए पुण काइँ न दूरे देक्खइ ॥

( निजमुखकरैः अपि मुग्धा करमन्धकारे प्रतिप्रेक्षते ।

शशिमण्डलचन्द्रिकया पुनः किं न दूरे पश्यति ? )

४-७. फोडेन्ति जें द्वियडउं अप्पणउं ताहं पराई कवण घृण ।

रक्खेज्जहु लोअहो अप्पणा बालहे जाया विसम थण ॥

( स्फोटयतः यौ हृदयमात्मीयं तयोः परकीया का घृणा ?

रक्षत लोकाः आत्मानं बालायाः जातौ विषमौ स्तनौ ॥ )

तुच्छ मड्भहे तुच्छ-जम्पिरेहे ।

तुच्छच्छरोमावलिहे तुच्छरायतुच्छयरहास हे ।

पियवयणु अलहन्तिअहे तुच्छकाय-वम्मह-निवासहे ॥

अञ्जु तुच्छउँ तहैँ धणहे तं अक्खणह न जाइ ।

कटारि थणंतर मुद्धहे जें मणु विच्चि ण माइ ॥

( तुच्छमध्यायाः तुच्छजल्पनशीलायाः ।

( २३ ) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले भ्यस् ( पञ्चमी-बहुवचन ) और आम् ( षष्ठी-बहुवचन ; के स्थान में हु आदेश होता है । जैसे :—वयंसिअहु ( वयस्याभ्यः अथवा वयस्यानाम् ) ।

( २४ ) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले छि ( सप्तमी-एकवचन ) के स्थान में हि आदेश होता है । जैसे :—महिहि ( मह्याम् ) ।

( २५ ) अपभ्रंश में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले जस् ( प्रथमा-बहुवचन ) और शस् ( द्वितीया-बहुवचन ) के स्थान में इं आदेश होता है । जैसे :—कमलइं<sup>१</sup> अलिउलइं ( कमलानि, अलिकुलानि ) ।

तुच्छाच्छरोमावल्याः तुच्छरागायाः तुच्छतरहासायाः ।

प्रियवचनमलभमानायाः तुच्छकायमन्मथनिवासायाः ॥

अन्यद् यत्तच्छं तस्याः धन्यायाः तदाख्यातुं न याति ।

आश्चर्यं स्तनान्तरं मुग्धायाः येन मनो वर्त्मनि न माति ॥ )

१. भल्ला हुआ जु मारिआ बहिणि महारा कन्तु ।

लज्जेन्तु वयंसिअहु जइ भग्गा घर एन्तु ॥

( भव्यं भूतं यत् मारितः भगिनि अस्मदीयः कान्तः ।

अलज्जियत् वयस्याभ्यः ( नाम् ) यदि भग्नः गृहं ऐष्यत् ॥ )

२. वायसु उडावन्तिअए पिउ दिट्ठउ सहस ति ।

अद्धा वलया महिहि गम अद्धा फुट्ट तडत्ति ॥

( वायसं उडापयन्त्याः प्रियो दृष्टः सहसेति ।

अर्द्धानि वलयानि मह्या गतानि अर्द्धानि स्फुटितानि तटिति ॥ )

१. कमलइं मेह्लवि अलिउलइं करि-गण्डाई महन्ति ।

असुलह-मेच्छण जाहं भलि ते ण वि दूर गणयन्ति ॥

( २६ ) अपभ्रंश में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान कान्त ( जिसके अन्त में असहित क हो ) शब्द से पर में आनेवाले सु ( प्रथमा-एकवचन ) और अम् ( द्वितीया-एकवचन ) के स्थान उं आदेश होता है। जैसे :—इसी अध्याय के नियम २२ की पाद टिप्पणी २ में तुच्छउं ( तुच्छम् ) है। और भग्उं<sup>१</sup> ( भग्नकम् ) इत्यादि को भी देखना चाहिए।

( २७ ) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि से पर में आनेवाले ङसि ( पञ्चमी-एकवचन ) के स्थान में हँ आदेश होता है। जैसे :—जहाँ होन्तउ आगदो, तहाँ होन्तउ आगदो ( यस्मात् भवान् आगतः, तस्मात् भवान् आगतः ) एवं कहाँ ( कस्मात् )।

( २८ ) अपभ्रंश में अकारान्त किम् ( क ) से पर में आनेवाले ङसि के स्थान में इहे आदेश और क के अकार का लोप विकल्प से होता है। जैसे :—किहे<sup>२</sup> ( कस्मात् ), कहाँ ( कस्मात् )।

( २९ ) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों से पर में आने वाले सप्तमी के एकवचन ङि के स्थान में हिं आदेश होता है।

( कमलानि मुक्त्वा अलिकुलानि करिगण्डान् कांक्षन्ति ।

असुलभम् एष्टुं येषां निर्बन्धः ते नापि दूरं गणयन्ति ॥ )

१. भग्उं देखिखवि निअय-बलु, बलु पसरिअउं परस्सु ।

उम्मिह्लइ ससिरेह जिवं करि-करवालु पियस्सु ॥

( भग्नकं दृष्ट्वा निजकं बलं बलं प्रसृतकं परस्य ।

उन्मीलति शशिलेखा यथा करे करवालः प्रियस्य ॥ )

२. जइ तहें तुट्टउ नेहडा मइँ सहुँ न वि तिल-तार ।

तं किहें वड्ढेहिँ लोअणोहिँ जोइज्जउँ सय-वार ॥

( यदि तस्याः त्रुट्यतु स्नेहः मया सह नापि तिलतारः ।

तत् कस्मात् बक्राभ्यां लोचनाभ्यां दृश्ये ( अहं ) शतवारम् ॥ )

जैसे:—जहिं<sup>१</sup>, तहिं, एक्कहिं ( यस्मिन् , तस्मिन् , एकस्मिन् )

( ३० ) अपभ्रंश में अकारान्त यद्, तद् और किम् ( य, त, क ) से पर में आनेवाले षष्ठी के एकवचन डस् के स्थान में आसु आदेश विकल्प से होता है । और शब्द के टि ( अ ) का लोप भी होता है । जैसे:—जासु, तासु, कासु<sup>२</sup> ( यस्य, तस्य, कस्य ) ।

( ३१ ) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान यद्, तद्, किम् ( या, ता, का ) से पर में आनेवाले षष्ठी के एकवचन डस् के स्थान में विकल्प से अहे आदेश और टि ( आ ) का लोप भी होता है । जैसे:—जहे केरउ, तहे केरउ, कहे केरउ ( यस्याः कृते, तस्याः कृते, कस्याः कृते ) ।

( ३२ ) अपभ्रंश में सु और अम् ( प्रथमा-द्वितीया के एकवचन ) के पर में रहने पर यद् और तद् शब्दों के स्थान में

१. जहिं कपिज्जइ सरिण सरु छिज्जइ खग्गिण खरगु ।  
तहिं तेहइ भड-घड-निवहि कन्तु पयासइ मग्गु ॥  
( यस्मिन् कल्प्यते शरेण शरः छियते खज्जेन खड्गः ।  
तस्मिन् तादृशे भट-घटा-निवहे कान्तः प्रकाशयति मार्गम् ॥ )
२. कन्तु महारउ हलि सहिए निच्छइँ रुसइ जासु ।  
अत्थिहिं, सत्थिहिं हत्थिहिं वि ठाउ फेडइ तासु ॥  
( कान्तः अस्मदीयः हला सखिके निश्चयेन रुष्यति यस्य ।  
अस्त्रैः शस्त्रैः हस्तैरपि स्थानमपि स्फोटयति तस्य ॥ )  
जीविउ कास न वल्लहउँ धणु पुणु कासु न इट्ठु ।  
दोणिण वि अवसर-निवडिअइँ, तिण सम गणइ विसिट्ठु ॥  
जीवितं कस्यै न वल्लभकं धनं पुनः कस्य नेष्टम् ।  
द्वे अपि अवसर-निपतितं तृणसमे गणयति विशिष्टः ॥

कमशः ध्रुं और त्रं आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे:—प्रङ्गणि चिट्ठदि नाहु ध्रुं त्रं रणि करदि न भ्रन्ति ( प्राङ्गणे तिष्ठति नाथः यत् यद् रणे करोति न भ्रान्तिम् ); पक्ष में तं बोल्लिअइ जु निव्वहइ ( तत् जल्प्यते यन्निर्वहति ) ।

( ३३ ) अपभ्रंश में नपुंसक-लिङ्ग में वर्तमान इदम् शब्द के स्थान में सु और अम् के पर में रहने पर इमु आदेश होता है। जैसे:—इमु कुलु तुह तणउँ; इमु कुलु देक्खु (इदं कुलं इत्यादि) ।

( ३४ ) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचनों में एतद् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में एह, पुँल्लिङ्ग में एहो और नपुंसक में एहु रूप होते हैं। जैसे:—एह कुमारी, एहो नरु, एहु मणोरह-ठाणु ( एषा कुमारी, एष नरः, एतन्मनोरथस्थानम् । )

( ३५ ) अपभ्रंश जस्-शस् के आने पर एतद् शब्द के स्थान में एइ आदेश होता है। देखो—इसी अध्याय के नियम २ तथा ३ की पादटिप्पणी एइ पेच्छ ( एतान् प्रेक्षस्व ) ।

( ३६ ) अपभ्रंश में जस्-शस् के आने पर अदस् शब्द के स्थान में ओइ आदेश होता है। जैसे:—ओइ<sup>१</sup> ।

( ३७ ) अपभ्रंश में इदम् शब्द के स्थान में आय आदेश स्वादि विभक्तियों के पर में रहने पर होता है। जैसे:—आयइं ( इमानि ), आयेण ( एतेन ), आयहो ( अस्य ) इत्यादि ।

( ३८ ) अपभ्रंश में सर्व शब्द के स्थान में साह आदेश विकल्प से होता है। जैसे:—साहु वि लोउ; सव्वु विलोउ ( सर्वोऽपि लोकः ) ।

१. जइ पुच्छह घर वड्ढाई तो वड्ढा घर ओइ ।

विहलिअ-जण-अब्भुद्धरण कन्तु कुडीरइ जोइ ॥

( यदि पृच्छथ गृहाणि महान्ति तद् महान्ति गृहाणि भ्रमूनि ।

विहलितजनाभ्युद्धरणं कान्तं कुटीरके पश्य ॥ )



## प्राकृत व्याकरण

( ३६ ) अपभ्रंश में किम् शब्द के स्थान में काइँ और कवण आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे:—इसी अध्याय के नियम २१ की पादटिप्पणी एक में देखो—‘काइँ न दूरे देखखइ’ ( किं न दूरे पश्यति ? ) और नियम २२ की पादटिप्पणी दो में ‘ताहँ पराई कवण घृण’ ( तयोः परकीया का घृणा ? ); ‘किं गज्जहि खल मेह’ ( किं गर्जसि खल मेघ ) ।

( ४० ) अपभ्रंश में युष्मद्, अस्मद्-विषयक नियमों को न लिख कर यहाँ हम उनके रूप ही लिख रहे हैं । ये रूप हेमचन्द्र के अनुसार हैं । नियमों के लिए उन्हीं के ४. ३६८ से ४. ३८१ तक सूत्रों को देखना चाहिए ।

अपभ्रंश में युष्मद् शब्द के रूप:—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुहुं	तुम्हे, तुम्हइ
द्वितीया	पइं, तइं	तुम्हे, तुम्हइ
तृतीया	पइं, तइं	तुम्हेहि
पञ्चमी	तउ, तुष्क, तुध ( तुहु )	तुम्हहं
षष्ठी	” ” ” ”	तुम्हहं
सप्तमी	पइं, तइं	तुम्हासु

अपभ्रंश में अस्मद् शब्द के रूप:—

प्रथमा	हउं	अम्हे, अम्हइ
द्वितीया	मइं	अम्हे, अम्हइ
तृतीया	मइं	अम्हेहि
पञ्चमी	महु, मज्झु	अम्हहं
षष्ठी	महु, मज्झु	अम्हहं
सप्तमी	मइं	अम्हासु

( ४१ ) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के बहुवचन में तिङ् का आदेश 'हिं' विकल्प से होता है । जैसे:—धरहिं, करहिं, सहहिं<sup>१</sup> ( धरतः, कुरुतः, शोभन्ते )

( ४२ ) अपभ्रंश में धातु से, वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के एकवचन में, तिङ् के स्थान में 'हि' आदेश विकल्प से होता है । जैसे:—रुअहि ( रोदिषि ), लहहि<sup>२</sup> ( लभसे ); पक्ष में रुअसि इत्यादि ।

( ४३ ) अपभ्रंश में धातु से, वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के बहुवचन में, आनेवाले तिङ् के स्थान में हु आदेश विकल्प से होता है । जैसे:—इच्छहु<sup>३</sup> ( इच्छथ ); पक्ष में—इच्छह ।

१. मुह-कबरि-बन्ध तहें सोह धरहिं ।  
 नं मल्ल-जुञ्जु ससिराहू करहिं ॥  
 ( मुखकबरीबन्धौ तस्याः शोभां धरतः ।  
 ननु मल्ल-युद्धं शशिराहू कुरुतः ॥ )  
 तहें सहहिं कुरल भमर-उल-तुलिअ ।  
 नं तिमिर डिम्भ खेलन्ति मिलिअ ॥  
 ( तस्याः शोभन्ते कुरलाः भ्रमरकुलतुलिताः ।  
 ननु भ्रमरडिम्भाः क्रीडन्ति मिलिताः ॥ )

२. वपपीहा पिउ पिउ भणवि कित्तिउ रुअहि हयास ।  
 तुह जलि महु पुणु वल्लहइ विहुँ वि न पूरिअ आस ॥  
 चातक ( पपीहा ) पिबामि पिबामि ( प्रियः प्रियः )  
 भणित्वा कियत् रोदिषि हताश  
 तव जले मम पुनर्वल्लभे द्वयोरपि न पूरिता आशा ॥ )

३. बलि-अब्भत्थणि महु-महणु लहुईहुआ सोइ ।  
 जइ इच्छहु वडुत्तणउं देहु म मग्गाहु कोइ ॥

( ४४ ) अपभ्रंश में धातु से पर में आनेवाले वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष के एकवचन तिङ् के स्थान में उं आदेश विकल्प से होता है । जैसे:—कड्ढउं(कर्षामि); पक्ष में कड्ढामि (कर्षामि)

( ४५ ) अपभ्रंश में धातु से पर में आनेवाले वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष के बहुवचन तिङ् के स्थान में हुं आदेश विकल्प से होता है । जैसे:—लहहुं<sup>३</sup>, लभामहे ); जाहुं ( यामः ); वलाहुं ( वलामहे ) ।

( ४६ ) अपभ्रंश में हि और स्व के स्थान में इ, उ और ए ये तीनों आदेश विकल्प से होते हैं । इ जैसे:—सुमरि<sup>१</sup>, मेल्लि ( स्मर, सुञ्च ); विलम्बु<sup>२</sup> ( विलम्बस्व ); करे<sup>३</sup> ( कुरु ) पक्ष में—सुमरहि इत्यादि ।

( बल्ले: अभ्यर्थने मधुमथनो लघुकीभूतः, सोऽपि ।

यदि इच्छथ महत्त्वं दत्त मा मार्गयत कमपि ॥ )

२. विहि विणडउ पीडन्तु गह मं धणि करहि बिसाउ ।

संपइ कड्ढउं वेस जिवं छुड अघइ ववसाउ ॥

( विधिर्विनाटयतु ग्रहाः पीडयन्तु मा धन्ये कुफ विषादम् ।

संपदं कर्षामि वेषमिव यदि अर्घति व्यवसायः ॥ )

३. खग्ग-विसाहिउ जहिं लहहुं पिय तहिं देसहिं जाहुं ।

रण-दुब्बिक्खे भग्गाइं विण जुज्जे न वलाहुं ॥

( खड्ग-विसाधितं यत्र लभामहे तत्र देशे यामः ।

रणदुर्भिक्षेण भग्नाः विना युद्धेन न वलामहे ॥ )

१. २. ३. कुञ्जर सुमरि म सल्लइउ सरला सास म मेल्लि ।

कवल जि पाविय विहि-वसिण ते चरि माणु म मेल्लि ॥

भमरा एत्थु वि लिम्बडइ के वि दियहडा विलम्बु ।

घण-पत्तलु छाया-बहुलु फुल्लइ जाम कयम्बु ॥

( ४७ ) अपभ्रंश में भविष्यत्कालिक तिङ्-संबन्धी 'स्य' के स्थान में स आदेश विकल्प से होता है। जैसे:—होसइ<sup>१</sup>; पक्ष में—होहिइ ( भविष्यति ) ।

( ४८ ) संस्कृत के 'क्रिये' इस क्रियापद के स्थान में अपभ्रंश में कीसु यह आदेश विकल्प से होता है। जैसे:—'तसु कन्तहों बलि कीसु ( तस्य कान्तस्य बलिं क्रिये ) ।

संस्कृत धातुओं के अपभ्रंश में आदेश:—

धातु	आदेश	उदाहरण
भू (पर्याप्ति में)	हुच्च	अहरि पहुच्चइ <sup>२</sup> नाहु (अधरे प्रभवति नाथः )
ब्रू	ब्रुव	ब्रुवह <sup>३</sup> सुहासिउ किंपि ( ब्रूत सुभा- षितं किञ्चित् )
"	ब्रोप्प	ब्रोप्पिगु <sup>४</sup> ( उक्त्वा )

- प्रिय एम्बहिं करेँ सेल्लु करि छंडुहि तुहुँ करवालु ।  
जं कावालिय बप्पुडा लेहिं अभग्गु कवालु ॥  
( कुञ्जर स्मर मा सल्लकीः सरलान् श्वासान् मा मुञ्च ।  
कवला ये प्राप्ता विधिवशेन तांश्चर मानं मा मुञ्च ॥  
अमर अत्रापि निम्बके कति दिवसान् विलम्बस्व ।  
घनपत्रवान् छायाबहुलः फुल्लति यावत्कदम्बः ॥  
प्रिय एवमेव कुरु भल्लं करे त्यज त्वं करवालम् ।  
येन कापालिका वराका लान्ति अभग्रं कपालम् ॥ )
१. दिअहा जन्ति ऋडप्पडहिं पडहिं मनोरहं पच्छि ।  
जं अच्छइ तं माणिअइ होसइ करतु म अच्छि ॥  
( दिवसाः यान्ति वेगैः पतन्ति मनोरथाः पश्चात् ।  
यदस्ति तन्मान्यते भविष्यति कुर्वन् मा आस्व ॥ )
२. हेम० ४. ३९०. ३. हेम० ४. ३९१. ४. हेम० ४. ३९१.

व्रज	वुञ्ज	वुञ्जइ, वुञ्जेपिप, वुञ्जेपिपिणु <sup>१</sup>
दृश	प्रस्स	प्रस्सदि <sup>२</sup>
ग्रह	गृण्ह	पढ, गुण्हेपिपिणु, <sup>३</sup> व्रतु (पठगृहीत्वा व्रतम्)
तक्ष	छोक्ष	ससि छोक्षिज्जनु <sup>४</sup> ( शशी अतक्षिष्यत )
तापि	भलक्क	सासानलजाल भलक्किअउ <sup>५</sup> ( श्वासा- नलज्वालासन्तापितम् । )
शल्ल्याय	खुडुक्क	हिअइ खुडुक्कइ <sup>६</sup> ( हृदये शल्ल्यायते )
गर्ज	घुडुक्क	घुडुक्कइ <sup>७</sup> मेहु ( गर्जति मेघः )

( ४६ ) अपभ्रंश में पद के आदि में अवर्तमान किन्तु स्वर से पर में आनेवाले और असंयुक्त क, ख, त, थ, प, फ, वर्णों के स्थान में प्रायः ग, घ, द, ध, ब और भ क्रम से ही होते हैं । जैसे:—पिअमाणुसविच्छोह-गरु (प्रियमनुष्यवित्तोभकरम् ); सुधिँ चिन्तिज्जइ माणु ( सुखं चिन्त्यते मानः ); कधिदु ( कथितम् ); सबधु ( शपथम् ); सभलउ ( सफलम् ) ।

( ५० ) अपभ्रंश में पद के आदि में अवर्तमान असंयुक्त मकार के स्थान में अनुनासिक वकार विकल्प से होता है । जैसे:—कवँलु, भवँरु ( कमलम्, भ्रमरः ); जिँवँ, तिँवँ ( जिम, तिम ) ।

( ५१ ) अपभ्रंश में संयोग के बाद में आनेवाले रेफ का लुक् विकल्प से होता है । जैसे:—जइ केवँइ पावीसु पिउ ( यदि

१. हेम० ४. ३९२.

२. हेम० ४. ३९३.

३. हेम० ४. ३९४.

४. हेम० ४. ३९५.

५. तुलना कीजिए—भोजपुरी के 'भरकना' से । हेम० ४. ३९५.

६. 'काँटे जैसा आचरण करना' इस अर्थ में । हेम० ४. ३९५.

७. तुलना कीजिए—हिन्दी के 'घुडकना' से । हेम० ४. ३९५.

कथञ्चित् प्राप्स्यामि प्रियम्); पक्ष में—जइ भग्ना पारकडा तो सहि मञ्जु प्रियेण ( यदि भग्नाः परकीयास्तत्सखि मम प्रियेण । )

( ५२ ) अपभ्रंश में कहीं-कहीं सर्वथा अविद्यमान रेफ भी होता देखा जाता है । जैसे:—ब्रासु महारिसि एंड भणइ ( व्यासः महर्षिः एतद् भणति ); 'कहीं कहीं' ऐसा कहने से 'वासेण वि भारहखम्भि बद्ध ( व्यासेनापि भारतस्तम्भे बद्धम् । ) में नियम लागू नहीं हुआ ।

( ५३ ) अपभ्रंश में आपद्, विपद्, और संपद् के अन्त्य द् के स्थान में कहीं-कहीं इ हो जाता है । जैसे:—अणउ करन्तहां पुरिसहो आवइ आवइ ( अनयं कुर्वतः पुरुषस्य आपद् आयाति ); विवइ ( विपद् ); संपइ ( संपद् ); 'कहीं-कहीं' कहने से 'गुणहिं' न संपय कित्ति पर' ( उपर्युक्त नियम ७ की पादटिप्पणी ४ ) में संपइ न होकर संपय हुआ ।

( ५४ ) अपभ्रंश में कथं, यथा और तथा के थादि अवयवों के स्थान में हर एक के एम, इम, इह और इध ये चार आदेश होते हैं और पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे:—'केम<sup>१</sup> (केव<sup>२</sup>) समप्पउ दुहु दिणु किध रयणी ह्हु होय' ( कथं समाप्यतां दुष्टं दिनं कथं रात्रिः शीघ्रं भवति ? ) एवं किह; जेम ( वं ), जिम ( वं ), जिह, जिध, तेम ( वं ), तिम ( वं ), तिह तिध होते हैं ।

( ५५ ) अपभ्रंश में यादृश्, तादृश्, कीदृश् और ईदृश् शब्द क्रमशः जेहु, तेहु, केहु और एहु रूप प्राप्त करते हैं । जैसे:—जेहु, तेहु, केहु, एहु<sup>३</sup> ( यादृक्, तादृक्, कीदृक्, ईदृक् )

१. तुलना कीजिए—गुजराती के केम, जेम और तेम से ।

२. तुलना कीजिए—हिन्दी के क्यों, ज्यों और त्यों से ।

३. मई भणिअउ बलिराय तुहुं केहुउ मगण एहु ।

( ५६ ) अकारान्त यादृश, तादृश, कीदृश और ईदृश के स्थान में जइस, तइस, कइस और अइस रूप होते हैं । जैसे:— जइसो, तइसो, कइसो और अइसो ( यादृशः, तादृशः इत्यादि )

( ५७ ) अपभ्रंश में यत्र के रूप जेत्यु और जत्तु तथा तत्र के रूप में तेत्थु और तत्तु होते हैं । जैसे:—जेत्यु, जत्तु ( यत्र ); तेत्थु, तत्तु ( तत्र ) ।

( ५८ ) अपभ्रंश में यावत् के रूप जाम ( जावँ ), जाउं, जामहिं और तावत् के रूप ताम ( तावँ ), ताउ, तामहिं<sup>२</sup> ( तावत् ) ।

जेहु तेहु न वि होइ वढ सइं नारायण एहु ॥

( मया भणितः बलिराज त्वं कीदृग् मार्गणः एषः ।

यादृक्, तादृक् नापि भवति मूर्ख स्वयं नारायणः इदृक् ॥ )

१. जइ सो घडदि प्रयावदी केत्थु वि लेप्पिणु सिक्खु ।

जेत्थु वि तेत्थु वि एत्थु जगि भण तो तहि सारिक्खु ॥

( यदि स घटयति प्रजापतिः कुत्रापि लात्वा शिक्षाम् ।

यत्रापि तत्रापि अत्र जगति भण तदा तस्याः सदक्षीम् ॥ )

२. जाम न निवडइ कुम्भ-यडि सीह-चवेड-चडक्क ।

ताम समत्तहँ मयगलहँ पइ पइ वज्जइ ढक्क ॥

( यावन्न निपतति कुम्भ-तटे सिंहचपेटाचटात्कारः ।

तावत्समस्ताना मदकलानां पदे पदे वाद्यते ढक्का ॥ )

तिलहँ तिलत्तणु ताउँ पर जाउँ न नेह गलन्ति ।

जामहिँ विसमी कज्ज-गइ जीवहँ मज्जे एइ ॥

( तिलानां तिलत्वं तावत् परं यावत् न स्नेहा गलन्ति ।

यावत् विषमा कार्यगतिः जीवानां मध्ये आयाति ॥ )

तामहिँ अच्चउ इयर जणु सुअणु वि अन्तरु देइ ।

(-तावत् आस्तामितरः जनः सुजनोऽप्यन्तरं ददाति ॥ )

( ५६ ) अपभ्रंश में कुत्र के स्थान में केत्थु और अत्र के स्थान में एत्थु रूप होते हैं । जैसे:—केत्थु ( कुत्र ) ; एत्थु<sup>१</sup> ( अत्र )

( ६० ) अपभ्रंश में ( परिमाणार्थक ) यावद् और तावद् के स्थान में जेवड और तेवड रूप विकल्प से होते हैं । इसी प्रकार ( परिमाणार्थक ) इयत् और कियत् के स्थान में एवड और केवड रूप विकल्प से होते हैं । जैसे:—जेवडु अन्तरु रावण रामहँ । तेवडु अन्तरु पट्टण-गामहँ ( यावदन्तरं रावणरामयोः तावदन्तरं पत्तन ( पट्टण )-ग्रामयोः ) एवं एवडु अन्तरु ( इयत् अन्तरम् ) ; केवडु अन्तरु ( कियत् अन्तरम् ) ।

( ६१ ) अपभ्रंश में परस्पर के स्थान में 'अवरोप्पर' रूप होता है । जैसे:—अवरोप्परु जोअन्ताहं सामिउ गञ्जिउ जाहं ( परस्परं युद्धयमानानां स्वामी पीडितः येषाम् ) ।

( ६२ ) अपभ्रंश में कादि ( क + आदि ) व्यञ्जनों में स्थित ए और ओ एवं पदान्त में वर्तमान उं, हुं, हिं और हं का लघु उच्चारण किया जाता है । जैसे:—अत्रु जु तुच्छुँ तहँ धणहे; बलि किज्जुँ सुअणस्सु; दइउ घडावइ वणि तरुहुं; तरुहुं वि वक्कलु; खग्ग विसाहिउ जहिं लहहुं; तणहँ तइज्जी भङ्गि न वि ।

( ६३ ) प्राकृत के नियमानुसार जहाँ म्ह हुआ हो उसका ( म्ह का ) अपभ्रंश में म्भ होता है । जैसे:—संस्कृत में ग्रीष्मः, प्राकृत में गिम्हो और अपभ्रंश में गिम्भो रूप होते हैं ।

( ६४ ) अपभ्रंश में अन्यादृश शब्द के स्थान में अन्नाइस और अवराइस ये आदेश होते हैं । जैसे:—अन्नाइसो, अवराइसो ( अन्यादृशः ) ।

१. इन उदाहरणों के लिए इसी अध्याय के नियम ५७ की पाद-टिप्पणी २ देखो ।



नीचे कुछ अन्य संस्कृत शब्दों के अपभ्रंश रूप मात्र ही दिये जा रहे हैं। विशेष जानकारी के लिए हेमचन्द्र के व्याकरण का अवलोकन करना चाहिए।

संस्कृत	अपभ्रंश	हेम० सूत्र संख्या
प्रायः	प्राउ, प्राइव, प्राइम्ब, पग्गिम्ब	४. ४१४.
अन्यथा	अनु, अन्नह	४. ४१५.
कुतः	कउ, कहन्तिहु	४. ४१६.
ततः, तदा	तो	४. ४१७.
एवं	एम्ब	४. ४१८.
परम्	पर	" "
समम्	समाणु	" "
ध्रुवम्	ध्रुव	" "
मा	मं	" "
मनाक्	मणाउ	" "
किल	किर	४. ४१९.
अथवा	अहवइ	" "
दिवा	दिवे	" "
सह	सहुं	" "
नहि	नाहिं	" "
पश्चात्	पच्छइ	४. ४२०.
एवमेव	एम्बइ	" "
एव	जि	" "
इदानीम्	एम्बहिं, एम्बहि	" "
प्रत्युत	पच्चलिउ	" "
इतः	एत्तहे	" "
विषण्णः	वुन्नउ	४. ४२१
उक्तम्	वुत्तउं	" "

वर्त्मनि	विचि	४. ४२१., ३५०.
शीघ्रम्	वहिल्लउ	४. ४२२.
कलहकारी	घञ्जल	" "
अस्पृश्यसंसर्ग	विट्टाल	" "
भयं	द्रवक्क	" "
आत्मीयम्	अप्पणं	" "
दृष्टि	द्रेहि	" "
गाढ	निच्चडु	" "
साधारण	सड्डल	" "
कौतुक	कोडु	" "
क्रीडा	खेडु	" "
रम्य	खण्ण	" "
अद्भुत	ढक्करि	" "
हे सखि	हेल्लि	" "
पृथक् पृथक्	जुअं जुअ	" "
मूढ	नालिउ, वढ	" "
नव	नवख	" "
अवस्कन्द	दडवड	" "
यदि	छुडु	" "
संबन्धी	केर, तण	" "
मा भैषीः	मग्भीसा	" "
यद् यद् दृष्टम्	जाइट्टिआ	" "
	हुडुरु <sup>१</sup>	४. ४२३.
	घुघ <sup>२</sup>	" "

१. शब्दानुकरण अर्थ में ।

२. चेष्टानुकरण अर्थ में ।

	घइ <sup>१</sup>	४. ४२४.
	खाइ <sup>२</sup>	" "
	केहिं <sup>३</sup>	४. ४२५.
	तेहिं <sup>४</sup>	" "
	रेसिं <sup>५</sup>	" "
	रेसिं <sup>६</sup>	" "
	तणेण <sup>७</sup>	" "
पुनः	पुणु	४. ४२६.
विना	विणु	" "
अवश्यम्	अवसें अवस	४. ४२७.
एकशः	एकसि	४. ४२८.

( ६५ ) अपभ्रंश में नाम ( प्रातिपदिक ) के आगे स्वार्थ में अ, अड, और उल्ल प्रत्यय होते हैं। और स्वार्थिक क प्रत्यय का लुक् भी होता है। जैसे:—बे दोसडा (द्वौ दोषौ) कुडुल्ली (कुटी)।

**विशेषः**—जहाँ अड और उल्ल प्रत्यय होते हैं, वहाँ पूर्व के टि का लोप भी हो जाता है।

( ६६ ) पूर्वोक्त नियमानुसार जो प्रत्यय किये जाते हैं तदन्त नाम से स्त्रीत्व अर्थ के द्योतन में ई प्रत्यय हो जाता है और टि का लोप भी होता है। जैसे:—गोरड + ई = गोरडी।

( ६७ ) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग के द्योतन करने वाले अ प्रत्ययान्त से पर में आने वाले प्रत्यय से पुनः आ प्रत्यय होता है। जैसे:—धूलि = धूल = धूलड = धूलडिआ ( धूलिः )।

**विशेषः**—स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान नहीं रहने पर यह नियम लागू नहीं होता। जैसे:—कन्नडइ ( कर्णे )।

( ६८ ) अपभ्रंश में युष्मदादि शब्दों से पर में आने वाले ईय प्रत्यय का आर आदेश होता है । और उसके पूर्व के टि का लोप भी होता है । जैसे:—तुहारेण ( युष्मदीयेन ); अम्हारा ( अस्मदीयम् ); महारा ( अस्मदीयः ) ।

( ६९ ) अपभ्रंश में इद्म्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आने वाले अतु प्रत्यय के स्थान में एत्तुल आदेश होता है और पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे:—एत्तुलो, केत्तुलो, जेत्तुलो, तेत्तुलो ।

( ७० ) अपभ्रंश में सप्तम्यन्त सर्वादि से पर में आने वाले त्र प्रत्यय के स्थान में एत्तहे आदेश होता है । पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे:—एत्तहे, तेत्तहे ( अत्र, तत्र ) ।

( ७१ ) अपभ्रंश में त्व और तल प्रत्ययों के स्थान में प्रायः ष्पण आदेश होता है । जैसे:—बडुष्पणु ( महत्त्वम् ); पक्ष में—वडुत्तणहो ( महत्त्वस्य ) ।

( ७२ ) अपभ्रंश में तव्य प्रत्यय के स्थान में इएव्वउं, एव्वउं और एवा ये तीन आदेश होते हैं । जैसे:—करिएव्वउं, मरिएव्वउं ( कर्तव्यम्, मर्तव्यम् ); सहेव्वउं ( सोढव्यम् ); सोएवा, जग्गेवा ( स्वपितव्यम्, जागरितव्यम् ) ।

( ७३ ) अपभ्रंश में क्त्वा प्रत्यय के स्थान में इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु आदेश होते हैं ।  
इ जैसे:—मारि ( मारयित्वा ); इड जैसे:—भज्जिउ ( भङ्क्त्वा ),  
इवि जैसे:—चुम्बिअवि ( चुम्बित्वा ); अवि जैसे:—विछोडवि ( विच्छोड्य );  
एप्पि जैसे:—जेप्पि ( जित्वा ); एप्पिणु जैसे:—चएप्पिणु ( त्यक्त्वा ); एवि जैसे:—पालेवि ( पालयित्वा );  
एविणु जैसे:—लेविणु ( लात्वा ) ।

( ७४ ) अपभ्रंश में 'नुम्' प्रत्यय के स्थान में एवं, अण, अणहं, अणहिं, एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु ये आठ आदेश होते हैं । एवं जैसे:—देवं ( दातुम् ); अण जैसे:—करण ( कर्तुम् ); अणहं और अणहिं जैसे:—भुञ्जणहं, भुञ्जणहिं ( भोक्तुम् ); एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु जैसे:—जेप्पि, चएप्पिणु, पालेवि और लेविणु ( जेतुं, त्यक्तुं, पालयितुं और लातुम् ) ।

विशेष:—गम धातु से एप्पिणु आने पर गम्पिणु और गमेप्पिणु रूप होते हैं । उसी तरह एप्पि के रहने पर गम्पि और गमेप्पि रूप होते हैं ।

( ७५ ) अपभ्रंश में तृन् प्रत्यय के स्थान में अणअ आदेश होता है । जैसे:—मारणउ ( ओ ); बोल्लणउ ( मारयिता, कथयिता ) ।

( ७६ ) अपभ्रंश में इव ( उत्प्रेक्षा में ) के अर्थ में नं, नउ, नाइ, नाइव, जणि, जणु ये छः रूप होते हैं ।

नं जैसे:—नं मल्ल जुञ्जु ससिराहु करहिं ( ननु मल्लयुद्धं शशिराहु कुरुतः ) नउ जैसे:—नउ जीवगलु दिण्णु । ( ननु जीवार्गलो दत्तः ) नाइ जैसे:—थाह गवेसइ नाइ । ( स्तोषं गवेषयतीव ) नावइ जैसे:—नावइ गुरु-मच्छर भरिउ । ( ननु गुरु-मत्सर-भरितम् ) जणि जैसे:—सोहइ इन्द्रनीलु जणि कणइ बइट्टउ ( शोभते इन्द्रनीलः ननु कनके उपवेशितः ) जणु जैसे:—निरुषम-रसु पिणं पिएवि जणु । ( निरुषमरसं प्रियेण पीत्सेव ) ।

( ७७ ) अपभ्रंश में लिङ्ग प्रायः बदलते रहते हैं। जैसे:—  
गाय-कुम्भइं ( गजकुम्भानि । कुम्भ शब्द पुल्लिङ्ग है, किन्तु नपुंसक  
के रूप में व्यवहृत हुआ है ) ।

( ७८ ) अपभ्रंश के शेष कार्य सौरसेनी के अनुसार किये  
जाते हैं ।

इति शुभम् ।





# परिशिष्ट

## अक्षरानुक्रम शब्दसूची

अअं ह्रस्वो शौ. ८. ४४.  
 अहमुंतयं १. ३३.  
 अहस्वरिअं १. ८९.  
 अहसो अप. ११. ५६.  
 अउठवं शौ. ८. ४४., पा. २. ९.  
 अक्कंवलं १. २.  
 अक्को ( वि. ) २. १, ३. ३.  
 अक्खह ( वि. ) २. ३.  
 अगणी ७. अ.  
 अगरू ( वि. ) पा. २. १.  
 अगिस्मि शौ. ८. ४४.  
 अगुरुं ( वि. ) २. १.  
 अगगओ १. ४६.  
 अगिगएं अप. ११. १५.  
 अगिगण अप. ११. १५.  
 अगिगणी १. २.  
 अगिगं अप. ११. १५.  
 अगगी ७. अ.  
 अगघो ३. ७., ( वि. ) २. १.  
 अक्को १. ३.  
 अंकोल्ल तेल्लं ( वि. ) ३. ४०.  
 अंकोल्लो ७. अ.  
 अङ्गणं १. ३७.  
 अंगणं १. ३७.  
 अङ्गारो शौ. ८. ४४ ७. अ.  
 अङ्गु अप. ( वि. ) ११. ४.

अङ्गुलिठ अप. ११. २०.  
 अङ्गरिअं शौ. ८. ४३, ७. अ.  
 अच्छअरं ७. अ., पा. १. ५७.  
 अच्छह ६. ६.  
 अच्छति पै. १०. १८.  
 अच्छने पै. १०. १८.  
 अच्छदि शौ. ८. १६.  
 अच्छदे शौ. ८. १६.  
 अच्छन्ति शौ. ८. ३७.  
 अच्छति ६. ६.  
 अच्छुरसा ( वि. ) १. २०, १. २५.  
 अच्छुरा ३. २२, १. २५, १. २०.  
 अच्छुरा-वावार० पा. १. २०.  
 अच्छुरिअं पा. १. ५७, ७. अ.  
 अच्छुरिजं ७. अ., पा. १. ५७.  
 अच्छुरीअं पा. १. ५७. ७. अ.  
 अच्छुरेहि पा. १. २५.  
 अच्छु १. ४२.  
 अच्छुसि ६. ६.  
 अच्छुह ६. ६.  
 अच्छामि ६. ६.  
 अच्छामि ६. ६.  
 अच्छित्था ६. ६.  
 अच्छो ३. १४; पा. १. ४१, १. ४२  
 अच्छोह १. ४१, पा० १. ४१.  
 अच्छेरं ७. अ., ३. २२, १. ५७. पा.  
 १. ५७.



अजसो ( वि. ) २. १.  
 अजिज्जह् ६. २६.  
 अजोग्गो ( वि. ) २. १४.  
 अज्ज-उत्त शौ. ( वि. ) ८. २.  
 अज्जा १. ६५. ३. ५.  
 अज्जो ७. अ., शौ. ८. ८  
 अज्झाओ ३. २४.  
 अज्जलीह् पा. १. ४४.  
 अज्जली मा. ९. ८.  
 अज्जातिसो पै. १०. १६.  
 अटह् ( वि. ) २. ४.  
 अट्टरह् ७. अ.  
 अट्टाए दण्डो अर्द्ध. पा. १. ६.  
 अट्टी ७. अ.  
 अट्टो ७. अ.  
 अट्ट्ह ७. अ.  
 अणं ७. अ.  
 अणित्तयं ७. अ.  
 अणित्तयं ७. अ.  
 अणित्तयं १. ३३.  
 अणुरुधिज्जह् ६. २६.  
 अण्णधा शौ. पा. २. ३.  
 अण्णा पा. ३. ५.  
 अण्णारिसो १. ८७.  
 अण्णरुढमह् ६. २६.  
 अण्णावअण्णुक्कण्ठो पा. १. १५.  
 अत्तुलं ( वि. ) २. १.  
 अत्ता ७. अ.  
 अत्थि ६. ६, शौ. ( वि. ) ८. ३७.  
 अदीहाउसमाणी पा. १. २५.  
 अदो कारणादो शौ. ८. ४४.

अहं ७. अ.  
 अहो ३. ३.  
 अहं ७. अ.  
 अधण्णो ( वि. ) २. ३.  
 अधग्माय कुज्जह् अर्द्ध. पा. १. ६.  
 अधीरो ( वि. ) २. ३.  
 अनु अप. ११. ६४.  
 अनुत्तेन्तो ( वि. ) पा. १. १९.  
 अनुवत्तन्तो ( वि. ) पा. १. १९.  
 अन्तरं १. ३७.  
 अन्तरप्पा १. १९.  
 अन्तरिदा १. १९.  
 अन्ते-आरी ७. अ.  
 अन्ते-उरं ७. अ.  
 अंतरं १. ३७.  
 अन्तावेह् १. ७.  
 अन्दे-उरं शौ. ८. ३.  
 अंधलो स्वा. प्र. ३. ४५.  
 अन्नलं ७. अ.  
 अन्नह् अप. ११. ६४.  
 अन्नाहसो अप. ११. ६४.  
 अन्नुन्नं ७. अ.  
 अपारो ( वि. ) २. १.  
 अपुरवं शौ. ८. १२.  
 अपुरवागदं शौ. ८. १२.  
 अपुब्बं शौ. ८. १२.  
 अपुब्बागहं शौ. ८. १२.  
 अप्पज्जो ३. ५.  
 अप्पणह्भा ( वि. ) ४. ४१.  
 अप्पणा ४. ४१.  
 अप्पणिआ ( वि. ) ४. ४१.

अप्पणो ४. ४१.  
 अप्पणं अप. ११. ६४.  
 अप्पण्णु ३. ५.  
 अप्पमत्तो ( वि. ) २. ९.  
 अप्पं ४. ४१.  
 अप्पा ४. ४१., ७. अ.  
 अप्पाओ ४. ४१.  
 अप्पाणम्मि ४. ४१.  
 अप्पाणा ४. ४१.  
 अप्पाणाओ ४. ४१.  
 अप्पाणाणं ४. ४१.  
 अप्पाणाहितो ४. ४१.  
 अप्पाणे ४. ४१.  
 अप्पाणेण ४. ४१.  
 अप्पाणेषु ४. ४१.  
 अप्पाणेहिं ४. ४१.  
 अप्पाणो ४. ४१.  
 अप्पाणं ४. ४१.  
 अप्पाणस्स ४. ४१.  
 अप्पाहो ४. ४१.  
 अप्पाहितो ४. ४१.  
 अप्पिअं १. ५८.  
 अप्पुल्ल ( वि. ) ३. ४४.  
 अप्पे ४. ४१.  
 अप्पेह १. ५८.  
 अप्पेसुं ४. ४१.  
 अप्पेहिं ४. ४१.  
 अफुण्णो ६. ३९.  
 अब्बह्वञ्जं मा. ९. ८.  
 अभिमञ्जू पै. १०. ४.  
 अमुगो ( वि. ) २. १.

अमुजणो शौ. ८. ४४.  
 अमुणा ४. ४७.  
 अमुणो ४. ४७.  
 अमुग्गि ४. ४७.  
 अमु वणं शौ. ८. ४४.  
 अमु वड्डु शौ. ८. ४४.  
 अमुस्स ४. ४७.  
 अमु ४. ४७.  
 अमू ४. ४७.  
 अमूउ ४. ४७.  
 अमूओ ४. ४७.  
 अमूणे ४. ४७.  
 अमूणो ४. ४७.  
 अमूणं ४. ४७.  
 अमूसु ४. ४७.  
 अमूहिं ४. ४७.  
 अमूहितो ४. ४७.  
 अम्बं ७. अ.  
 अंबं १. ६७.  
 अम्महे शौ. ८. २६.  
 अम्मि हेरू., पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 अग्ग हेरू., पा. ४. ४७. शौ. ४. ४७.  
 अग्गं हेरू., पा. ४. ४७. शौ. ४. ४७.  
 अग्गह अप. ४. ४८.  
 अग्गहं अप. ११. ४०.  
 अग्गकेरं ३. १२.  
 अग्गकेरो ३. ३७.  
 अग्गकेरं ३. १२.  
 अग्गत्तो ४. ४७., हेरू., पा. ४. ४७.  
 अग्गम्मि ४. ४७., हेरू., पा. ४. ४७.

अम्हसु ४. ४७. हेरू., पा. ४. ४७.  
 अम्हहं अप. ११. ४०.  
 अम्हहे अप. ४. ४८.  
 अम्हा ४. ४७.  
 अम्हाण हेरू., पा. ४. ४७.  
 अम्हाणं ४. ४७., शौ. ४. ४७., ८. ४४.,  
 हेरू. पा. ४. ४७.  
 अम्हातिसोपै . १०. १६.  
 अम्हारा अप. ११. ६८.  
 अम्हारिसो १. ८७., ३. २९.  
 अम्हारो अप. ( वि. ) ३. ३८.  
 अम्हासु अप. ११. ४०., हेरू., पा.  
 ४. ४७.  
 अम्हासुंतो हेरू. पा. ४. ४७.  
 अम्हाहि हेरू. पा. ४. ४७.  
 अम्हाहिं ४. ४७.  
 अम्हाहितो हेरू. पा. ४. ४७.  
 अग्नि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 अम्हे ४. ४७., शौ. ८. ४४., ८. ४०.,  
 ४. ४७., अप. ११. ४०., ४. ४८.,  
 हेरू. पा. ४. ४७.  
 अम्हेपव्व १. ४८.  
 अम्हेच्चयं ३. ३८.  
 अम्हेव्व १. ४८.  
 अम्हेसु हेरू. पा. ४. ४७, शौ. ४. ४७.  
 अम्हेसुंतो हेरू. पा. ४. ४७.  
 अम्हेहि अप. ११. ४०, ४. ४७.  
 शौ. ४. ४७.  
 अम्हेहि अप. ४. ४८, हेरू. पा.  
 ४. ४७.  
 अम्हेहितो अप. ४. ४८, शौ. ४. ४७.

अम्हो ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.  
 अयग्मि ४. ४७, ( वि. ) ४. ४७.  
 अया ( वि. ) ४. २९.  
 अय्य मा. ९. ७.  
 अय्यउत्त शौ. ८. ८.  
 अय्युणे मा. ९. ७.  
 अरहंतो ७. अ.  
 अरहो ७. अ.  
 अरिहंतो ७. म.  
 अरिहो ७. अ.  
 अरुहंतो ७. अ.  
 अरुहो ७. अ.  
 अलचपुरं ७. अ.  
 अलसी ७. अ.  
 अलिअं १. ७३.  
 अलिउलइं अप. ११. २५.  
 अलीअं ( वि. ) १. ७३.  
 अलाउं ७. अ.  
 अलाऊ २. १२, ७. अ.  
 अलाव २. १२.  
 अल्लं ७. अ.  
 अवभवो ( वि. ) २. १४.  
 अवभासो १. ९४.  
 अवगअं ( पि. ) १. ९४.  
 अवजसो ( वि. ) २. १४.  
 अवज्जं ३. २३  
 अवज्जा मा. ९. ८.  
 अवडो ७. अ.  
 अवरणहो ३. २८.  
 अवराइसो अप. ११. ६४.  
 अवरिल्लो स्वा. प्र. ३. ४५.

अवरुवं शौ. पा. २. १.  
 अवरुपपरु अप. ११. ६१.  
 अवस अप. ११. ६४.  
 अवसदो ( वि. ) १. ९४.  
 अवसरह १. ९४.  
 अवसँ अप. ११. ६४.  
 अवहडं ७. अ.  
 अवह्यज्जं शौ. ८. ४४.  
 अवह्यण्णं शौ. ८. ४४.  
 अवह्यज्जं शौ. ८. ४४.  
 अस्तवदी मा. ९. ६.  
 अस्मासु अप. ४. ४८.  
 अस्स ४. ४७.  
 अस्सि ४. ४७.  
 अस्सो १. ५२.  
 अस्सं १. ६७.  
 अह ( वि. ) ४. ४७.  
 अहअं ४. ४७.  
 अहके मा. प्रा. प्र. ९. १६, मा. ( वि. )  
 ९. १६.  
 अहग्मि ४. ४७.  
 अहयं. हेरू., पा. ४. ४७.  
 अहरुट्ट १. ६७.  
 अहव १. ६१.  
 अहवह अप. ११. ६४  
 अहवा १. ६१.  
 अहं ४. ४७, हेरू., पा. ४. ४७, शौ.  
 ४. ४७, ८. ४४.  
 अहाजाअं ( वि. ) २. १४.  
 अहिअं २. ३.  
 अहिआई १. ५२.

अहिजाई पा. १. ५२.  
 अहिजो ३. ५., ( वि. ) १. ५६.  
 अहिण्णू १. ५६., ३. ५.  
 अहिमज्जू ७. अ.  
 अहिमज्जू ७. अ.  
 अहिमज्जूकुमाले मा. ९. ८.  
 अहिमण्णू शौ. ८. ४४.  
 अहिमन्नू ७. अ.  
 अहिमुंको १. ३३.  
 अहेसि ( वि. ) ६. ८.  
 अंसुं १. ३३.  
 अंसो १. ३२.

आ

आअओ ७. आ.  
 आअदो २. ६.  
 आअरिओ ७. आ  
 आहदी २. ६.  
 आहरिओ ७. आ.  
 आउण्टणं आ. ( वि. ) २. १.  
 आउदी २. ६.  
 आएण अप. ११. ३७.  
 आओ ७. आ.  
 आओज्जं ७. आ.  
 आगमण्णू १. ५६.  
 आगरिसो ( वि. ) २. १.  
 आगारो ( वि. ) २. १.  
 आचस्कदि मा. ९. १२.  
 आढत्तो ७. आ.  
 आढप्पह ६. २६.

आढवीअह् ६. २६.  
 आढिओ ७. आ.  
 आणा ३. ५.  
 आणालं ७. आ.  
 आणिअं १. ७३.  
 आत्तमाणो ७. आ.  
 आदरो ( वि. ) २. १.  
 आफंसो ७. आ.  
 आमेलो ७. आ.  
 आयइं अप. ११. ३७.  
 आयहो अप. ११. ३७.  
 आयासं ( वि. ) १. ६७.  
 आरद्धो ७. आ.  
 आरम्भो १. ३७.  
 आरंभो १. ३७.  
 आलले मा., प्राप्र. ९. १६.  
 आलिट्ठं ७. आ.  
 आलिद्धं ७. आ.  
 आलिहिदा २. ३.  
 आली ७. आ.  
 आवह् अप. ११. ५३.  
 आवत्तओ ( वि. ) ३. २९.  
 आवत्तणं ( वि. ) ३. २१.  
 आवत्तमाणो ७. आ.  
 आसि ( वि. ) ६. ८.  
 आसीसा ७. आ.  
 आसीसय ७. आ.  
 आसो १. ५१., १. ५२.  
 आस्सं शौ. ( वि. ) ८. ३७.  
 आहरणं २. ३.  
 आहिआई १. ५२.

आहिजाई पा. १. ५२.

इ

इ हेरू., पा. ४. ४७.  
 इअ ( वि. ) १. ५०.  
 इअ उअह० १. ६९.  
 इअ जं० १. ६९.  
 इअग्मि ४. ४७.  
 इअं ( वि. ) ४. ४७.  
 इअं बाला शौ. ८. ४४.  
 इआणि १. ३६.  
 इआणि १. ३६.  
 इआणी ७. इ.  
 इआलो १. ३., ७. इ.  
 इङ्गिअजो ३. ५., शौ. ८. ४४.  
 इङ्गिअजो शौ. ८. ४४.  
 इङ्गिअणू ३. ५.  
 इङ्गिअणो शौ. ८. ३१.  
 इङ्गुअं ७. इ.  
 इङ्गुदी-एल्लं ३. ४०.  
 इच्छह अप. ११. ४३.  
 इच्छहु अप. ११. ४३.  
 इट्टाचुण्णं व्व ( वि. ) ३. १८.  
 इड्ढी १. ८१., ७. ई.  
 इणो ४. ४७.  
 इणं ( वि. ) ४. ४७.  
 इणं धणं शौ. ८. ४४.  
 इत्तिअं ३. ४१., ७. इ.  
 इत्तो ४. ४७.  
 इत्थी शौ. ८. ३८, प्रास. ८. ४५.  
 इदरसिस्वा शौ. ८. ४१

ईदहणू २. ३.  
 इदो ४. ४७, शौ. ८. ४४.  
 इदं ( वि. ) ८. ४७.  
 इदं वणं ८. ४४.  
 इध शौ. ८. १०.  
 इन्धं ( वि. ) २. १.  
 इमस्स ४. ४७.  
 इमस्सि ४. ४७.  
 इमं ४. ४७.  
 इमादो ४. ४७.  
 इमाणं ( वि. ) ४. ४७, ४. २९.  
 इमाए ४. २९.  
 इमिआ ( वि. ) ४. ४७.  
 इमिणा ४. ४७.  
 इमिए ४. २९.  
 इमीणं ४. २९.  
 इमु अप. ११. ३३.  
 इमे ४. ४७.  
 इमेण ४. ४७.  
 इमेहिं ४. ४७.  
 इमेहितो ४. ४७.  
 इमो ४. ४७.  
 इसि १. ५४, पा. १. ५४.  
 इसी १. ८१, १. ८३.  
 इह ४. ४७.  
 इहं १. ३१.  
 ईकखू ७. ई.  
 ईदिशाह मा. ९. १४.  
 ईदिसं शौ. ८. ४४.  
 ईयन्मि ( वि. ) ४. ४७.  
 ईसरो ३. ८, ( वि. ) १. ६७.

ईसि ७. ह.  
 ईसालू ३. ४४.

उ

उइदं २. १.  
 उऊ ७. उ., ( वि. ) २. ६.  
 उऊत्तिओ ( वि. ) ३. २१.  
 उऊरो पा. १. ५७, ७. उ.  
 उऊण्ठा ( वि. ) १. १९, १. ३७.  
 उऊकंठा १. २, १. ३७, १. ३२.  
 उऊका ३. ३., १. २.  
 उऊकट्टं ८. ८१.  
 उऊकेरो. ५. ५७, ७. उ., पा. १. ५७.  
 उऊको पा. ३. ६.  
 उऊकोसं ६. ३९.  
 उऊखअं १. ६१.  
 उऊखाअं १. ६१.  
 उऊअं ७. उ.  
 उऊछणो ( वि. ) १. ७७.  
 उऊछवो ७. उ.  
 उऊछाहो ३. २२. ( वि. ) १. ७७. ७. उ.  
 उऊछुओ ७. उ.  
 उऊऊ ३. १४., ७. उ.  
 उऊजू १. ८३.  
 उऊजू १. ८६., ७. उ, ३. ११.  
 उऊझ हेरू., पा. ४. ४७.  
 उऊझेहिं ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.  
 उऊटो ( वि. ) ३. १८.  
 उऊडबरो ७. उ.  
 उऊणयं १. १७.  
 उऊहीसं ३. २८.

उत्तिमो १. ५४.  
 उत्थारो ७. उ.  
 उत्थिदो शौ. ८. ४४.  
 उत्थेदि शौ., प्रास. ८. ४५.  
 उदू ७. उ., १. ८३, १. ८६, २. ६  
 उद्वं ७. उं.  
 उपसमो २. ८.  
 उप्पल ३. १.,  
 उप्पाओ ( वि. ) पा. १. १९, ३. १.  
 उब्ररुधिज्जह् ६. २६.  
 उबरुह्जह् ६. २६.  
 उबम हेरू. पा. ४. ४७.  
 उबमं ७. उ.  
 उब्वरं १. ३.  
 उब्वरो ७. उ.  
 उब्व हेरू. पा. ४. ४७.  
 उब्वत्तो हेरू. पा. ४. ४७.  
 उब्वहाण हेरू. पा० ४. ४७.  
 उब्वहाणं हेरू. पा० ४. ४७.  
 उब्वहे ४. ४७.  
 उब्वहेहिं ४, ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 उब्वहं ३. २९.  
 उब्वह हेरू. पा. ४. ४७.  
 उब्वहत्तो हेरू. पा. ४. ४७.  
 उब्वहे हेरू. पा. ४. ४७.  
 उब्वहेहिं हेरू. पा. ४. ४७.  
 उल्ललं ७. ३.  
 उल्लहलो शौ. ८. ४४.  
 उल्लेह् ७. उ.  
 उल्लं ७. उ.  
 उवज्जाओ ३. २४.

उवणिअं १. ७३.  
 उवणीओ १. ७३.  
 उवमा २. ९.  
 उवरं ( वि. ) पा. १. १९.  
 उवरि शौ. ८. ४४.  
 उवरिं १. ३३; ७. उ.  
 उवस्तिदे मा. ९. ६.  
 उवहसमाणि ६. १३.  
 उव्विग्गो ( वि. ) ३. ३.  
 उव्वीढं ७. उ.  
 उव्वूढं ७. उ.  
 उव्वलदि मा. ९. १०.  
 उसहो १. ८३., ७. उ., १८६.  
 उरमा मा. ९. ४.  
 उआसो १. ९५.  
 उच्छुओ १. ७७.  
 उज्जा १. ६५.  
 उमओ १. ७७.  
 उमवो ( वि. ) १. ६७., ७. उ.  
 उमसिरो ३. ३५.  
 उमारो ७. उ.  
 उमारिओ ( वि. ) ३. २२.  
 उसित्तो १. ७७.  
 उसुओ १. ७७., ७. उ.  
 उसो १. ५१.  
 उहसिअं १. ९५.  
 ऋ  
 ऋणं १. ८६.  
 ए  
 ए हेरू. पा. ४. ४७.  
 एअ ( वि. ) पा. १. १९.

एअग्नि ( वि. ) ४. ४७.  
 एअस्स ४. ४७  
 एअस्सि ४. ४७.  
 एअं ( वि. ) पा. १. १९., वि. २. ६.  
 एआ ( वि. ) ४. ४७.  
 एआउ ( वि. ) ४. ४७.  
 एआप ४. २९.  
 एआओ ४. ४७., ( वि. ) ४. ४७.  
 एआणं ४. २९.  
 एआरह ७. ए.  
 एआरिसो १. ८७.  
 एआहि ( वि. ) ४. ४७.  
 एआहितो ( वि. ) ४. ४७.  
 एह पेच्छ अप. ११. ३५.  
 एईए ४. २९.  
 एईणं ४. २९.  
 एएसिं ४. ४७.  
 एएसु ४. ४७.  
 एएहिं ४. ४७.  
 एओ ३. १२.  
 एओ एरथ १. १२.  
 एकसि ७. ए.  
 एकल्लो स्वाप्र. ३. ४५.  
 एकईआ ७. ए.  
 एकल्लो स्वाप्र. ३. ४५.  
 एकसिअं ७. ए.  
 एकसि अप. ११. ६४.  
 एकहिं अप. १. २९.  
 एकारो ७. ए.  
 एको ३. १२.  
 एगआ ७. ए.

एगत्तणं ( वि. ) २. ९.  
 एगो ( वि. ) २. १.  
 एणं ४. ४७.  
 एण्हिं ७. ए.  
 एते ४. ४७.  
 एतेहिं ४. ४७.  
 एतेहितो ४. ४७.  
 एतं ४. ४७.  
 एत्तहे अप. ११. ७०., ११. ६४.  
 एत्ताहे ७. ए. ( वि. ) ४. ४७.  
 एत्ताहो ४. ४७.  
 एत्तिअमत्तं १. ६६.  
 एत्तिअमेत्तं १. ६६.  
 एत्तिअं ३. ४२.  
 एत्तिकं शौ., प्रास. ८. ४५.  
 एत्तिलं ३. ४२.  
 एत्तुलो अप. ११. ६९.  
 सत्तो ४. ४७. ( वि. ) ४. ४७.  
 एरथ पा. १. ५७., ४. ४७.  
 एरथु अप. ११. ५९.  
 एदस्स ४. ४७.  
 एदाओ शौ. ८. २.  
 एदानं ४. ४७.  
 एदाहि शौ. ८. २.  
 एदिणा ४. ४७.  
 एदे ४. ४७.  
 एदेण ४. ४७.  
 एदेसु ४. ४७.  
 एदेहिं ४. ४७.  
 एदहं ३. ४२.  
 एउव अप. ११. ६४.



एम्बह अप. ११. ६४.  
 एम्बहि अप. ११. ६४.  
 एम्बहि अप. ११. ६४.  
 एयाए महिमाए पा. १. ४४.  
 एरावणो १. ८८., ७. ए.  
 एरिसो १. ८७., ७. ए.  
 एलया ( वि. ) ४. २९.  
 एव १. ३६.  
 एवहु अप. ११. ६०.  
 एवमेदं शौ. ८. २१.  
 एवं १. ३६.  
 एवं णेदं शौ. ८. २१.  
 एव ( वि. ) पा. १. १९.  
 एवं ( वि. ) पा. १. १९.  
 एशे मा. ( वि. ) ४. ५., मा. ९. २.  
 एशे पुलिशे मा. प्राप्र. ९. १६.  
 एशि लाभा मा. प्राप्र. ९. १६.  
 एस ४. ४७.  
 एसा अच्छी १. ४१.  
 एसा अंजली १. ४४.  
 एसा गरिमा १. ४४.  
 एसा बाहा १. ४५.  
 एसा महिमा १. ४४.  
 एसु ४. ४७.  
 एसो ४. ४७.  
 एसो अंजली १. ४४.  
 एसो गरिमा १. ४४.  
 एसो जणो शौ. ८. ४४.  
 एसो बाहू १. ४५.  
 एसो महिमा १. ४४.  
 एह अप. ११. ३४.

एहिं ४. ४७.  
 एहु अप. ११. ३४., ११. ५५.  
 एहो अप. ११. ३४.

ऐ

ऐ ७. ऐ.

ओ

आभासो १. ९४., १. ९५.  
 ओह अप. ११. ३६.  
 ओखलं ७. उ.  
 ओपिअं १. ५८.  
 ओप्पेह १. ५८.  
 ओमालं १. ४७.  
 ओमल्लं १. ४७.  
 ओली ७. ओ.  
 ओल्लेह ७. ओ.  
 ओसठ ७. ओ.  
 ओसरह १. ९४.  
 ओसहं ७. ओ.  
 ओसिअन्तो १. ७३.  
 ओहणं १. ९४.  
 ओहसिअं १. ९५.

क

कअग्गहो १. २., २. १.  
 कअणं ७. क.  
 कअं १. ८०., ( वि. ) २. ६.  
 कअंधो ७. क.  
 कअम्बो ७. क.  
 कअलं ७. क.  
 कहअवं ७. क.  
 कहआ ४. ४७.

कहमे ७. क.  
 कह्रवं १. ९०.  
 कह्लासो १. ९०.  
 कह्वाहं ७. क.  
 कहसो अप. ११. ५६.  
 कई २. १.  
 कउ अप. ११. ६४.  
 कउवखेअओ १. ९३.  
 कउरओ १. ९३.  
 कउला १. ९३.  
 कढहं ७. क.  
 कउहा० पा. १. २६., १. २६.  
 ककुधं ७. क.  
 ककुहा ७. क.  
 कंकोहो १. ३३.  
 कच्चं पै. प्राप्र. १०. २१.  
 कञ्चु अप. ११. १.  
 कज्जभा शौ. ८. ४४.  
 कज्जपरवसो शौ. ८. ८.  
 कज्जं ३. २३.  
 कञ्चुओ १. १.  
 कञ्चुइभा शौ. ८. ४.  
 कञ्चुओ १. ३७.  
 कञ्चुओ १. ३२., १. ३७.  
 कञ्जभा शौ. ८. ४४.  
 कञ्जा पै. प्राप्र. १. २१., शौ. ८. ३०.  
 कञ्जका पै. १०. ४.  
 कञ्जकावलणं मा. ९. ८.  
 कट्टं ३. १८.  
 कडणं ७. क.  
 कडुअ शौ. ८. १४.

कडे मा. प्राप्र. ९. १६.  
 कड्डउं अप. ११. ४४.  
 कड्डामि अप. ११. ४४.  
 कणअं २. ८.  
 कणवीरो ७. क.  
 कणेरू ७. क.  
 कण्टओ १. ३७.  
 कंटओ १. ३७.  
 कण्डं १. ३७.  
 कण्डुअणं ७. क.  
 कंडं १. ३७.  
 कण्णभा शौ. ८. ४४.  
 कण्ण उरं ( वि. ) १. २.  
 कण्णा शौ. ८. ३०.  
 कणिणआरो ७. क.  
 कण्णरो ७. क.  
 कण्हो ७. क., ३. २८, ( वि. ) १. ८१.  
 कत्तरी ( वि. ) ३. २१.  
 कत्तिओ ( वि० ) ३. २१.  
 कत्तो ४. ४७.  
 कथ शौ. ८. ४४, ४. ४७.  
 कदो शौ. ( वि. ) ४. ४७, ४. ४७.  
 कधं शौ. ८. ४४, ८. ९.  
 कधिदु अप. ११. ४९.  
 कधेदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 कंधा ( वि. ) २. ३.  
 कन्दो ७. क.  
 कञ्जडइ अप. ( वि. ) ११. ६७.  
 कञ्जधो शौ. ८. ४४.  
 कमढो २. ४.  
 कमधो ७. क.  
 कमलइ अप. ११. २५.

कमलं पै. १०. ७.  
 कमो ( वि. ) ३. ३२.  
 कम्पद् ( वि. ) २. ९, १. ३७.  
 कम्पद् १. ३७.  
 कम्मसं ( वि. ) ३. ३.  
 कम्माह मा. ९. १४.  
 कम्मि ४. ४७.  
 कम्मो १. ३९.  
 कम्हा ४. ४७.  
 कम्हारो ३. २९, ७. क.  
 कयग्गहो पा. २. १.  
 कय्ये मा. प्राप्र. ९. १६.  
 कर ६. २८.  
 करण अप. ११. ७४.  
 करणिज्जं २. १५.  
 करला ७. क.  
 कररुहो १. ४३.  
 कररुहं १. ४३.  
 करहि अप. ११. ४१.  
 कराविअद् ६. १९.  
 कराविज्जद् ६. १९.  
 कराविअं ६. १९.  
 करिण्णवउं अप. ११. ७२.  
 करिणी ( वि. ) ४. २९.  
 करिज्जद् ६. २६.  
 करिदूण शौ. ८. १४.  
 करिय शौ. ८. १४.  
 करिस ( वि. ) ६. २८.  
 करिसो १. ७३.  
 करिस्सिदि शौ. ८. १७.  
 करीसो ( वि. ) १. ७३.

करे अप. ११. ४६.  
 करेमि शौ. ८. ३५.  
 कलओ १. ६१.  
 कलम्बो १. ३७, ७. क.  
 कलंबो १. ३७.  
 कलाओ २. ९.  
 कलिहि अप. ११. १३.  
 कले मा. ९. ३.  
 कल्हारं ३. ३१.  
 कवण अप. ( वि. ) ४. ४७. ११ ३९.  
 कवँल्लु अप. ११. ५०.  
 कवट्टिअं ७. क.  
 कवोलो २. ९.  
 कव्वं ( वि. ) ३. ३.  
 कसटं पै. १०. १३, प्राप्र. १०. २१.  
 कसणो ७. क.  
 कसं ७. क.  
 कसिणो ७. क., पा. ३. ६.  
 कसिणं ७. क.  
 कसटं मा. ९. ४.  
 कस्स ४. ४७.  
 कस्सि ४. ४७.  
 कस्सि शौ. ८. ४४.  
 कह १. ३६.  
 कहन्तिहु अप. ११. ६४.  
 कहमवि १. ४९.  
 कहं २. ३. शौ. ८. ९., १. ३६., अप.  
 ( वि. ) ४. ४७.  
 कहं पि १. ४९.  
 कहावणो ३. ९., ७. क.  
 कहां अप. ११. २७., ११. २८.

कहां अप. ( वि. ) ४. ४७.  
 कहि शौ. ८. ४४.  
 कहिं ४. ४७.  
 कहे अप. ११. ३१.  
 कहेहि २. ३.  
 कं ४. ४७.  
 कसं १. ४३, १. ३६.  
 कंसो १. ३२.  
 कंसिओ १. ६३.  
 कंसुअं ७. क.  
 का ( वि. ) ४. ४७.  
 काह अप. ( वि. ) ४. ४७.  
 काहमो ६. ८.  
 काहं अप. ११. ३९.  
 काठणं १. ३४.  
 काउणो ७. क.  
 काऊण ३. ३६., ( वि. ) ६. १६.,  
 १. ३४.  
 काए ४. ३२.  
 काओ ४. ३२.  
 काए अप. ११. १.  
 काणं ४. ४७.  
 कामीअदि शौ. ८. ४२.  
 कारिदाणि मा. प्राप्र. ९. १६.  
 कारिअं ६. १९.  
 कारिजह ६. १९.  
 कालओ १. ६१.  
 काला ४. २०., ४. ४७.  
 कालाअसं ७. क. ( वि. ) पा. १. १९.  
 कालासं ( वि. ) पा. १. १९., ७. क.  
 काली ४. २९.

कालो ( वि. ) २. १.  
 कास ४. ४७.  
 कासह १. ५१.  
 कासओ १. ५१.  
 कासवो १. ५१., २. ९.  
 कासी ६. ७.  
 कासु अप. ( वि. ) ४. ४७., अप.  
 ११. ३०., ४. ३२.  
 कासं १. ३६.  
 काहं ६. ८., ६. ९.  
 काहावणो ७. क.  
 काहिइ ६. ८.  
 काहिथा ६. ८.  
 काहिमि ६. ८., ६. ९.  
 काहिसि ६. ८.  
 काहिति ६. ८.  
 काही ( वि. ) १. ९., ६. ७.  
 काहीअ ६. ७.  
 काहे ४. ४७.  
 कि १. ३६.  
 किअ ( वि. ) ४. ४७.  
 किअं २. १.  
 किई १. ८१.  
 किअं १. ८१.  
 किअी ७. क., पा. ३. ६.  
 किअळं १. ८१.  
 किअदि ८. १६.  
 किअदे शौ. ८. १६.  
 किणा ४. ४७.  
 किणहो ( वि. ) १. ८१.  
 किती ( वि. ) ३. २१.

किध अप. ११. ५४.  
 किन्नत अप. ११. १.  
 किति १. ५०.  
 किमवि १. ४९.  
 किमेदं शौ. ८. २१.  
 किर अप. ११. ६४.  
 किरातो शौ. ८. ४४.  
 किरिआ ७. क.  
 किलिट्ठं ३. ३२.  
 किलिणं ३. ३२., ७. क.  
 किलिन्नत अप. ११. १.  
 किलिस्सह ३. ३२.  
 किलेसो ३. ३२.  
 किवणो १. ८१.  
 किवा १. ८१.  
 किवाणं १. ८१.  
 किविणो १. ५४.  
 किवो १. ८१.  
 किसरं ७. क.  
 किसरो १. ८१.  
 किसलअं ७. क.  
 किसलं ७. क.  
 किसानू १. ८१.  
 किसिओ १. ८१.  
 किसो १. ८१.  
 किसं ७. क.  
 किसुअं ७. क.  
 किह अप. ११. ५४.  
 किहे अप. ११. २८.  
 कि अप. ११. ३९., (वि.) ४. ४७.,  
 १. ३६.

किं गेदं शौ. ८. २१.  
 किपि १. ४९.  
 किसुअं १. ३६., ७. क.  
 किसुओ शौ. ८. ४४., (वि.) १. ३७.  
 किस्सा (वि.) ४. ४७.  
 कीए (वि.) ४. ४७., ४. ३२.  
 कीआ (वि.) ४. ४७.  
 कीई (वि.) ४. ४७.  
 कीओ ४. ३२.  
 कीदिसं शौ. ८. ४४.  
 कीणो ४. ४७.  
 कीरह ६. २६.  
 कीरते पै. १०. १५.  
 कीलह २. ४.  
 कीस ४. ४७.  
 कीसु अप. ११. ४८., ४. ३२.  
 कीसे (वि.) ४. ४७.  
 कुजहलं ७. क.  
 कुवखेअओ १. ९३.  
 कुच्छेअअं ७. क.  
 कुटुम्बकं पै. १०. १०.  
 कुहुस्सी अप. ११. ६५.  
 कुहारो २. ४.  
 कुतुम्बकं पै. १०. १०.  
 कुदो (वि.) १. ४६., शौ. ८. ४४.  
 कुप्प ६. ३८.  
 कुप्पलं ३. १६.  
 कुब्जं ७. क.  
 कुमरो १. ६१.  
 कुमारो १. ६१.  
 कुमारी शौ. ८. ४४., (वि.) ४. २९.

कुम्हण्डो शौ. ८. ४४.  
 कुरुचरा ४. २८.  
 कुरुचरी ४. २८.  
 कुलभं ( वि. ) पा. १. १९.  
 कुलं १. ४१., ४. ४१.  
 कुलाई ४. ३९, ४. ४१.  
 कुलाई ४. ३९.  
 कुलाणि ४. ४१., ४. ३९.  
 कुलदाहिपो १. ११.  
 कुलो १. ४१.  
 कुम्भा ( वि. ) ३. ३.  
 कुवलभं ( वि. ) पा. १. १९.  
 कुसुम पयरो ३. १०.  
 कुसुम-पयरो ३. १०.  
 कुसो २. १९.  
 कुंपलं १. ३३.  
 के ४. ४७.  
 केढवो ७. क., १. ८८.  
 केण ४. ४७.  
 केणवि १. ४९.  
 केणावि १. ४९.  
 केत्तिभं ३. ४२.  
 केत्तिलं ३. ४२.  
 केत्तुलो अप. ११. ६९.  
 केत्थु अप. ११. ५९.  
 केदह ३. ४२.  
 केम अप. ११. ५४.  
 केर अप. ११. ६४.  
 केरवं १. ९०.  
 केरिसो १. ८७., ७. क.  
 केलं ७. क.

केलासो १. ८८., १. ९०.  
 केली ७. क.  
 केवट्टो ३. २१.  
 केवड्डु अप. ११. ६०.  
 केवँ अप. ११. ५४.  
 केसरं ७. ६.  
 केसवो पै. प्राप्र. १०. २१.  
 केसिं ४. ४७.  
 केसु ४. ४७.  
 केसुभं १. ३६., ७. क.  
 केसुओ शौ. ८. ४४.  
 केहिं अप. ११. ६४., ४. ४७.  
 केहितो ४. ४७.  
 केहु अप. ११. ५५.  
 कैभवं पा. १. १., १. ८९.  
 को ४. ४७.  
 कोउहलं ३. १२.  
 कोउहल्ल ७. क., ३. १२.  
 कोऊहलं ७. क.  
 कोट्टिमं १. ७९.  
 कौंडं ( वि. ) २. ४.  
 कोत्थुहो १. ९१.  
 कोदूहलं शौ. ८. ४४.  
 कोन्तलो १. ७९.  
 कौंचा १. ९१.  
 कोड्डु अप. ११. ६४.  
 कोप्परं ७. क.  
 कोमुई १. ९१.  
 कोसलो ( वि. ) १. ९३.  
 कोसंबी १. ८१.  
 कोसिओ १. ९१.

कोस्तागालं मा. ९. ५.  
 कोहडी ७. ६.  
 कोहणडी ७. क.  
 कोहलं ७. क.  
 कोहली ७. क.  
 कौच्छेभञं ७. ६.  
 कौरवा पा. १. १.  
 कखु शौ. ८. ४५.  
 ख  
 खह्वं १. ६१.  
 खह्वो ७. ख.  
 खभो ३. १३.  
 खगं १. ४३.  
 खगो १. २., ३. १., १. ४३.  
 खन्दो ७. ख.  
 खंधावारो ३. १७.  
 खंधो ३. १७.  
 खट्टा ( वि. ) २. ४.  
 खडगो ( वि. ) २. ४.  
 खणौ ३. १५., ७. ख. शौ. ८. ४४.  
 खण्डिभो ७. ख.  
 खण्ण अप. ११. ६४.  
 खण्णू ३. १२.  
 खप्परं ७. ख.  
 खमा ७. ख.  
 खम्भो पा. ३. ६.  
 खंभो ७. ख.  
 खलिअं पा. ३. ६., ३. १., पा. ३. १.  
 खल्लीडो ७. ख.  
 खसिभो ७. ख.  
 खाभइ ६. ३६.

खाइ ६. ३६.  
 खाइअं १. ६१.  
 खाइं अप. ११. ६४.  
 खाणू ३. १२., ७. ख.  
 खासिअं ७. ख.  
 खित्तं ७. ख.  
 खिद्यति ३. १३.  
 खीणं ३. १३.  
 खीरं शौ. ८. ४४.  
 खीलभो ७. ख.  
 खु शौ. ८. ४५.  
 खुजो ७. ख.  
 खुडिभो ७. ख.  
 खुडुक्कइ अप. ११. ४८.  
 खेडभो ७. ख.  
 खेडिभो ७. ख.  
 खेडु अप. ११. ६४.

ग

गभा २. १.  
 गढभा ७. ग.  
 गढभो ७. ग.  
 गढडो १. ९३.  
 गउरवं ७. ग.  
 गउरी अप. ११. १.  
 गभो २. १., ( वि. ) २. ६.  
 गकनं पै. प्राप्र. १०. २१.  
 गगारं ७. ग.  
 गच्छति पै. १०. १८.  
 गच्छते पै. १०. १८.  
 गच्छदि शौ. ८. १६.

गच्छदे शौ. ८. १६.  
 गच्छ ६. ९.  
 गच्छिद्रूण शौ. ८. १७.  
 गच्छिद्य शौ. ८. १४.  
 गच्छिस्सिदि शौ. ८. १७.  
 गज्जह ( वि. ) २. ३.  
 गज्जतो ( वि. ) २. ३.  
 गहुअ शौ. ८. १४.  
 गडे मा. प्राप्र. ९. १६.  
 गहुहो ७. ग.  
 गहुो ७. ग.  
 गंठी १. ४४.  
 गण्हिज्जह ६. २६.  
 गदहो शौ. ८. ४४., ७. ग.  
 गन्वून पै. १०. ११.  
 गन्धउडि १. १३.  
 गन्धो ( वि. ) २. १.  
 गदिभणं शौ. ( वि. ) पा. २. १.,  
 ७. ग.  
 गमिज्जह ६. २६.  
 गमेप्पि अप. ( वि. ) ११. ७४.  
 गमेप्पिणु अप. ( वि. ) ११. ७४.  
 गम्पि अप. ( वि. ) ११. ७४.  
 गम्पिणु अप. ( वि. ) ११. ७४.  
 गंभिरिअं ७. ग.  
 गम्मह ६. २६.  
 गय अप. ११. १७.  
 गयकुम्महं अप. ११. ७७.  
 गयां पा. २. १.  
 गय्यदि मा. ९. ७.  
 गरुआअह ६. १.

गरुआह ६. १.  
 गरुई १. ७५.  
 गरुओ १. ७६.  
 गरुलो २. ४.  
 गरुई १. ७५., ७. ग.  
 गश्च मा. ९. १०.  
 गहवई ७. ग.  
 गहिअं १. ७३.  
 गहिदच्छले मा. प्राप्र. ९. १६.  
 गहिरं १. ७३.  
 गहो ३. ३.  
 गाई ४. ३७.  
 गाढजोव्वणा ( वि. ) २. १४.  
 गारवं ७. ग.  
 गाकी ४. ३७., ७. ग.  
 गावीओ ७. ग.  
 गावो ७. ग.  
 गाहा २. ३.  
 गिट्ठी १. ८१.  
 गिड्दी १. ८१.  
 गिंठी १. ३३.  
 गिद्धो शौ. ८. २९.  
 गिग्हो ३. २९.  
 गिरउ हेरू. ४. १९.  
 गिरोअ हेरू. ४. १९.  
 गिरवो हेरू. ४. १९.  
 गिरा १. २१., पा. १. २१.  
 गिरि ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गिरि ४. १९., हेरू. ४. १९., १. २८.  
 गिरिण ४. १९.  
 गिरिणं ४. १९.



गिरिणा ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गिरिणो ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गिरित्तो ४. १९. हेरू. ४. १९.  
 गिरिम्मि ४. १९. हेरू. ४. १९.  
 गिरि-सिङ्गहुं अप. ११. ९.  
 गिरि सुंतो ४. १९.  
 गिरि-हितो ४. १९.  
 गिरिस्स ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गिरिहे अप. ११. १३.  
 गिरी ४. १९. हेरू. ४. १९.  
 गिरीउ हेरू. ४. १९.  
 गिरीओ हेरू ४. १९.  
 गिरीओ ४. १९.  
 गिरीज हेरू. ४. १९.  
 गिरीणं हेरू. ४. १९.  
 गिरीस ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गिरीसुं ४. १९. हेरू. ४. १९.  
 गिरीसुतो हेरू. ४. १९.  
 गिरीहिं ४. १९.  
 गिरीहि ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गिरीहितो हेरू. ४. १९., हेरू. ४. १४.  
 गिम्भो अप. ११. ६३.  
 गिम्ह-वाशले मा. ( वि. ) ९. ४.  
 गुज्झं ३. ३०  
 गुडो ( वि. ) २. ४.  
 गुणहि अप. ११. ७.  
 गुणहि अप. ११. १९.  
 गुणाइं पा. १. ४३.  
 गुणो १. ४३.  
 गुणं १. ४३.  
 गुण्ठी १. ३३.

गुत्तो ३. १.  
 गुनगनयुत्तो पै. १०. ५.  
 गुनेन पै. १०. ५.  
 गुम्फइ ( वि. ) २. ११.  
 गुरउ हेरू. ४. १९.  
 गुरओ हेरू. ४. १९.  
 गुरवो हेरू. ४. १९.  
 गुरु ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुई ३. ३३.  
 गुरुउ हेरू. ४. १९.  
 गुरुओ १. ७६., हेरू. ४. १९.  
 गुरुण ४. १९.  
 गुरुणं ४. १९.  
 गुरुणा ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुणो ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुत्तो ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुम्मि ४. १९. हेरू. ४. १९.  
 गुरुञ्जावा १. ६७.  
 गुरुवी ३. ३३.  
 गुरुस्स ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुहितो ४. १९.  
 गुरुं ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुञ्जं १. ३३.  
 गुरु ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुउ हेरू. ४. १९.  
 गुरुओ हेरू. ४. १९.  
 गुरुण हेरू. ४. १९.  
 गुरुणं हेरू. ४. १९.  
 गुरुसु ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुसुं ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुसुंतो हेरू. ४. १९.

गुरुहिँ ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुहिँ ४. १९., हेरू. ४. १९.  
 गुरुहितो हेरू. ४. १९.  
 गुलो ( वि. ) २. ४.  
 गृह्णेषु अप. ११. ४८.  
 गेज्जदि शौ., प्रास. ८. ४५.  
 गेण्डदि शौ., प्रास. ८. ४५.  
 गेंडुअ ( वि. ) १. ५७.  
 गेणहीअ ६. ८.  
 गेन्दुअ पा. १. ५७., ७. ग.  
 गेह्ण ७. ग.  
 गोभावरी ७. ग.  
 गोट्टी ३. १.  
 गोणो ७. ग.  
 गोदमो १. ९१.  
 गोरही अप. ११. ६६.  
 गोरी ( वि. ) ४. २९., अप. ११. १.  
 गोला ७. ग.  
 गोविन्तो पै., प्राप्र. १०. २१.  
 गोवेह् २. ९.

घ

घअं १. ८०.  
 घइ अप. ११. ६४.  
 घङ्गल अप. ११. ६४.  
 घडह् २. ४.  
 घडो २. ४.  
 घंटा ( वि. ) २. ४.  
 घरं ७. घ.  
 घिणा १. ८१.  
 घुघ अप. ११. ६४.

घुडुक्कह् अप. ११. ४८.  
 घुम्मदि शौ., प्रास. ८. ४५.  
 घुसिणं १. ८१.  
 घेत्तण ३. ३६.  
 घेत्तून पै., प्राप्र. १०. २१.  
 घेप्पह् ४. २६.  
 घेप्पदि शौ., प्रास. ८. ४५.  
 घोडा अप. ११. २.

च

चइत्तं ( वि. ) ३. १९., ७. च.  
 चइत्तो १. ९०.  
 चउग्गुणो ७. च.  
 चउट्टो ७. च., शौ. ८. ४४.  
 चउट्टो ७. च.  
 चउण्हं ४. ४८.  
 चउत्थो ७. च.  
 चउत्थो ७. च.  
 चउह्सी ७. च.  
 चउह् ७. च.  
 चउह्ही शौ. ८. ४४.  
 चउमुहु अप. ११. ३.  
 चउरो ४. ४८.  
 चउम्मारं ७. च.  
 चउसु ४. ४८.  
 चऊह् ४. ४८.  
 चऊहितो ४. ४८.  
 चण्णेषु अप. ११.७४., अप. ११.७३.  
 चक्कं ३. ३.  
 चक्काओ ( वि. ) १. १३.  
 चक्खिअं ६. ३९.  
 चक्खु १. ४१.

चक्खुहं १. ४१.  
 चक्खरं ७. च.  
 चहु पा. १. ६१.  
 चत्तारि ४. ४८.  
 चत्तारो ४. ४८.  
 चन्दो १. ३७.  
 चन्दो ( वि. ) ३. ३.  
 चन्दिमा ७. च.  
 चन्दो १. ३७., ( वि. ) ३. ३.  
 चमरं १. ६१.  
 चममं ( वि. ) १. ४०., ( वि. )  
 पा. १. ४०.  
 चविडा ७. च.  
 चविडो ७. च.  
 चविलो ७. च.  
 चवेडा ७. च.  
 चव्वदि शौ., प्रास. ८. ४५.  
 चाउण्डा ७. च.  
 चाहु पा. १. ६१.  
 चामरं १. ६१.  
 चिट्ठहं ( वि. ) २. ४.  
 चिट्ठदि मा०, ( वि. ) १. १३., शौ.  
 ८. ३६.  
 चिणहं ६. २२., ६. ३१.  
 चिणिज्जहं ६. २३.  
 चिण्हं १. ६८., शौ. ८. ४४.  
 चिन्धं ७. च.  
 चिम्महं ६. २४.  
 चिलाओ ७. च.  
 चिक्खहं ६. २३.  
 चिष्ठदि मा., प्रास. १. १६., मा. १. १३.

चिहुरं ७. च.  
 चिह्वं ७. च.  
 चुभहं ३. १., पा. ३. १.  
 चुच्छं ७. च.  
 चुणहं ६. ३१.  
 चुण्णो १. ६७.  
 चुम्बिदि अप. ११. ७३.  
 चेण्हं १. ६८.  
 चेतो १. ९०.  
 चोगुणो ७. च.  
 चोट्टी ७. च.  
 चोट्टो ७. च.  
 चोरथी ७. च.  
 चोरथो ७. च.  
 चोदसी ७. च.  
 चोदहं ७. च.  
 चोरिअं ७. च.  
 चोरिआ १. ४४.  
 चोरिओ १. ४४.  
 चोरो ( वि. ) २. १.  
 चोव्वारं ७. च.  
 छ  
 छहं ( वि. ) ३. १४.  
 छउमं ७. छ.  
 छट्टी ७. छ.  
 छट्टा ७. छ.  
 छड्ढिओ ७. छ.  
 छणा ३. १५., ७. छ.  
 छत्तवणो ७. छ.  
 छत्तिवणो ७. छ.  
 छमा ७. छ.

छमो ७. छ.  
 छम्मं ७. छ.  
 छाभा ७. छ.  
 छाली ७. छ.  
 छालो ७. छ.  
 छाहा, २. १७., ७. छ., ४. ३०.  
 छाही ४. ३०.  
 छिक्कं ७. छ.  
 छित्तं ६. ३९.  
 छिपह ६. २६.  
 छिरा ७. छ.  
 छिहा ७. छ.  
 छीअं ७. छ.  
 छीणं ३. १३.  
 छुच्छं ७. छ.  
 छुहु अप. ११. ६४.  
 छुत्तं ७. छ.  
 छुहा १. २२., ७. छ.  
 छूढं ७. छ.  
 छूढो पा. ३. ८.  
 छेच्छं ६. ९.  
 छोल्लिज्जन्तु अप. ११. ४८.  
 छंसुहु अप. ११. ३.  
 छमुहो ७. छ.

ज

जअह ६. ९., ६. १४.  
 जह अहं १. ४८.  
 जह १. ६४., २. १.  
 जहशं अप. ( वि. ) १. ८७.  
 जहसो अप. ११. ५६.

जहहं १. ४८.  
 जउंणा ७. ज.  
 जओ ( वि. ) २. ६.  
 जक्खो पा. ३. ६.  
 जगोवा अप. ११. ७२.  
 जजो ३. २३.  
 जज्जो शौ. ८. ३०.  
 जडालो ३. ४४.  
 जडिलो ७. ज.  
 जढं ६. ३९.  
 जणि अप. ११. ७६.  
 जणु अप. ११. ७६.  
 जणवक्केण १. २.  
 जणसेणो शौ. ८. ४४.  
 जण्ह ३. २८.  
 जत्तु अप. ११. ५७.  
 जत्तो ४. ४५.  
 जथ ४. ४५.  
 जथज्जलिणा पा. १. ४४.  
 जदो ४. ४५.  
 जधा शौ., पा. २. ३., शौ. पा. १.  
 ६१., शौ. ८. ४४.  
 जमलं स्वाप्र. ३. ४५.  
 जमो २. १४.  
 जम्परो ३. ३५.  
 जम्मणं ७. ज.  
 जम्मो ३. २६., ७. ज., १. ३९., पा.  
 १. ३९.  
 जम्मि ४. ४५.  
 जग्हा ४. ४५.

जरिजइ ६. २६.  
 जलभरो ( वि. ) २. १.  
 जलचरो ( वि. ) २. १.  
 जलं १. २८.  
 जसो १. ३९., पा. १. ३९., १. १४.,  
 १. १६.  
 जस्स ४. ४५.  
 जरिंस ४. ४५.  
 जह १. ६१., ७. ज.  
 जहट्टिअं १. ७.  
 जहणं २. ३.  
 जहा १. ६१., ७. ज.  
 जहाँ अप. ११. २७.  
 जहिट्टिलो १. ७५., ७. ज.  
 जहि अप. ११. २९., ४. ४४.  
 जहुट्टिलो १. ७५., ७. ज.  
 जहे अप. ११. ३१., अप. पा. ४. ४५.  
 जा ( वि. ) पा. १. १९., ७. ज.  
 जाइ २. १४.  
 जा इट्टिभा अप. ११. ६४.  
 जाउं अप. ११. ५८.  
 जाओ ४. ३२., ४. ४५.  
 जाणं शौ., पा. ४. ४५.  
 जाणं मा. ९. १५., ३. ५., ४. ४५.  
 जाणिजइ ६. २६.  
 जातिसं पै. ( वि. ) १. ८७.  
 जादिसं शौ. ( वि. ) १. ८७., शौ.  
 ८. ४४.  
 जाम अप. ११. ५८.  
 जामहिं अप. ११. ५८.  
 जामाउओ १. ८३.

जामादुओ १. ८३.  
 जारो ( वि. ) २. १.  
 जाला पा. ४. ४५.  
 जाव ( वि. ) पा. १. १९., ७. ज., १.  
 १६.  
 जावँ अप. ११. ५८.  
 जास ४. ४५.  
 जासु अप. पा. ४. ४५., अप. ११. ३०.  
 जासुंतो ४. ४५.  
 जाहितो ४. ४५.  
 जाहँ मा. ९. १५.  
 जाहं ट. पा. ४. ४५.  
 जाहुं अप. ११. ४५.  
 जाहे पा. ४. ४५.  
 जि अप. ११. ६३.  
 जिभइ १. ७३.  
 जिभउ १. ७३.  
 जिग्घदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 जिण ४. ४५.  
 जिणइ ६. २२.  
 जिणधम्मो ( वि. ) २. ३.  
 जिणणं ७. ज.  
 जित्तिअं ३. ४१., ७. ज.  
 जिध अप. ११. ५४.  
 जिब्भा ७. ज.  
 जिम अप. ११. ५४.  
 जिवँ अप. ११. ५४., ११. ५०.  
 जिह अप. ११. ५४.  
 जी ४. ४६.  
 जीभइ ( वि. ) १. ७३.  
 जीअं ( वि. ) पा. १. १९., ७. ज.

जीभा ७. ज.  
 जीभो २. १., ४. ३२.  
 जीया ४. ४६.  
 जीरह् ६. २६.  
 जीविअं ( वि. ) पा. १. १९., ७. ज.  
 जीहा ७. ज.  
 जु अप. ११. ३२.  
 जुगुच्छह् ३. २२.  
 जुगं ३. २.  
 जुणं ७. ज.  
 जुत्तंगिमं शौ. ८. २१.  
 जुत्तमिमं शौ. ८. २१.  
 जुवह्-अणो ( वि. ) १. ८.  
 जुहुट्टिरो शौ. ८. ४४.  
 जे ४. ४५.  
 जेण ४. ४५.  
 जेत्तिअं ३. ४२.  
 जेत्तिकं शौ. प्रास. ८. ४५.  
 जेत्तिलं ३. ४२.  
 जेत्तुळो अप. ११. ६९.  
 जेत्थु अप. ११. ५७.  
 जेदु शौ. पा. ६. ९.  
 जेह्हं ३. ४२.  
 जेप्पि अप. ११. ७३., ११. ७४.  
 जेम अप. ११. ५४.  
 जेव शौ. ८. ४५.  
 जेवहु अप. ११. ६०.  
 जेवँ अप. ११. ५४.  
 जेसिं ४. ४५.  
 जेसु ४. ४५.  
 जेहु अप. ११. ५५.

जेहिं ४. ४५.  
 जो ४. ४५., अप. ११. ४.  
 जोगो १. २.  
 जोणहा ३. २८.  
 जोणहालो ३. ४४.  
 जोव्वणं १. ९१., ३. १.  
 उजेव शौ. ८. ४५.  
 जं १. ३१., ४. ४५.

झ

झभो ७. झ.  
 झडिलो ७. झ.  
 झलक्किअउ अप. ११. ४८.  
 झाणं ३. २४.  
 झिउजह् ३. १३.  
 झुणि ७. झ.  
 झे ४. ४७.

ञ

ञ्जानं पे. १०. २.

ट

टगरं ७. ट.  
 टंकः ( वि. ) २. ४.  
 टसरो ७. ट.

ठ

ठढ्हो ७. ठ.  
 ठंभो ७. ७.  
 ठविअं १. १६., पा. १. ६१.  
 ठाई ( वि. ) २. ४.  
 ठाविअं १. ६१.  
 ठासी ६. ७.  
 ठाही ६. ७.

डीणं ७. ७.

ड

डज्झमाणो शौ. ८. ४४.

डट्टो ७. ड.

डह्हो ७. ड.

डह्हं ७. ड.

डडो ७. ड.

डंभो ७. ड.

डरो ७. ड.

डसह २. ७.

डसनं ७. ड.

डहह २. ७.

डहिज्जह ६. २६.

डहह ६. २६.

डाहो ७. ड.

डिंभो ( वि. ) २. ४.

डोलो ७. ड.

डोहलो ७. ड.

ढ

ढक्करि अप. ११. ६४.

ढोक्का अप. ११. २.

ण

णअणं १. ४१., २. १.

णअणो १. ४१.

णभरं २. १.

णहसोत्तं १. ८.

णई २. ८.

णईओ शौ. ८. ४४.

णई सोत्त २. ८.

णउण १. ६०.

णउणा १. ६०.

णउणाह १. ६०.

णउला ४. ६.

णउलेसु ४. ९.

णउलेहिं ४. ९., ४. १०.

णउलेहि ४. १०.

णउलेहिं ४. १०.

णउलो २. १.

णउलं ४. ७.

णउले ४. १४.

णउलेमि ४. १४.

णउलस ४. १३.

णओ २. १.

णक्कचरो ( वि. ) २. १., १. २.

णक्कह ६. २६.

णक्का ३. २०.

णज्जह ६. २६.

णट्टह ३. २१.

णट्टओ ३. २१.

णडालं ७. ण.

णडो २. ४.

णडं ( वि. ) २. ४.

णस्थि ( वि. ) १. १५.

णराओ १. ६१.

णरो २. ८.

णलाउ ७. ण.

णलं ( वि. ) २. ४.

णहं पा. १. ४०., १. १६., २. ३.

णा हेरू. पा. ४. ४६.

णाहज्जह ६. २६.

णाणं ३. ५., ३. २४.

णाघो शौ. ८. ९.  
 णाराभो १. ६१.  
 णाली ( वि. ) २. ४.  
 णाहो शौ. ८. ९.  
 णिभक्तं ७. ण.  
 णिउअं १. ८३.  
 णिउक्कण्ठं ( वि. ) १. १९.  
 णिउत्तं ७. ण.  
 णिच्चलो ७. ण.  
 णिच्चलो ( वि. ) ३. २२.  
 णिच्छुरो पै. प्राप्र. १०. २१.  
 णिजिज्ञले मा. प्राप्र. ९. १६.  
 णिडालं ७. ण.  
 णिहा १. ६८., शौ. ( वि. ) १. ६८.  
 णिहालू ३. ४४.  
 णिरभो ( वि. ) १. ७०.  
 णिरावाधं १. १९.  
 णिरुत्तरं १. १९.  
 णिवडह १. ७१.  
 णिवुत्तं ७. ण.  
 णिवुअं १. ८३.  
 णिवुई १. ८३.  
 णिवुदी २. ६.  
 णिसण्णो ७. १.  
 णिसिअरो १. ६४.  
 णिसीहो ७. ण.  
 णिसीहो ७. ण.  
 णिस्सहो ( वि. ) १. ७०.  
 णिहुअं १. ८३.  
 णिहुदं १. ८३.  
 णीसहो १. ७०.

णीसासो १. ७०.  
 णीडं ( वि. ) २. ४.  
 णुमज्जइ १. ७१.  
 णुमण्णो १. ७१., ७. ण.  
 णूणं शौ. ८. ४४.  
 णे ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४६., हेरू.  
 पा. ४. ४७.  
 णेहा १. ६८.  
 णेण ४. ४६. हेरू. पा. ४. ४६., ४. ४७.  
 णेणं ४. ४७.  
 णेसु हेरू. पा. ४. ४६.  
 णेसुं हेरू. पा. ४. ४६.  
 णेहिं ४. ४६., ४. ४७.  
 णेहो ३. १., पा. ३. १.  
 णो ४. ४७.  
 णोआ २. १.  
 ण हेरू. पा. ४. ४६., ४. ४७.  
 णं ४. ४६. शौ. ८. २५. ( वि. ) ८. २५.  
 शौ. ८. ४५.  
 ण्हव ६. २७.  
 ण्हाऊ ३. २८.  
 ण्हाणं ३. २८.  
 त  
 तइ १. ६४., ४. ४७., हेरू., पा. ४.  
 ४७., शौ. ४. ४७.  
 तइअं १. ७३.  
 तइआ हेरू. पा. ४. ४६.  
 तइत्तो हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 तइशं अप. ( वि. ) १. ८७.  
 तइसो अप. ११. ५६.  
 तइं अप. ४. ४७., अप. ११. ४०.



तड अप. ११. ४०.  
 तडहोत अप. ४. ४७.  
 तपु शौ. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.,  
 शौ. ८. ४४.  
 तओ ( वि. ) २. ६.  
 तच्च आ. ( वि. ) ३. २२.  
 तण अप. ११. ६४.  
 तणहं अप. ११. ११.  
 तणु अप. ११. १.  
 तणुई ३. ३३.  
 तणेण अप. ११. ६४.  
 तणं १. ८०.  
 तत्तु अप. ११. ५७.  
 तत्तो ४. ४६., ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तत्तं ७. त.  
 तत्थं शौ. ८. ४४., ४. ४६.  
 तत्थून पै. १०. १२.  
 तत्थं आ. ( वि. ) ३. २२.  
 तदो ४. ४६., ४. ४७.  
 तद्धून पै. १०. १२.  
 तधा शौ. ( वि. ) ८. २., शौ. पा.  
 २. ३०., शौ. ८. ४४., शौ. पा.  
 १. ६१.  
 तध्रुहोत अप. ४. ४७.  
 तमवि १. ४९.  
 तमे ४. ४७.  
 तमेण पा. १. ३९.  
 तमो १. ३९.  
 तंपि १. ४९.  
 तम्बोलं ७. त.  
 तम्बं ७. त.

तंबं १. ६७.  
 तंबो ( वि. ) ३. २५., ७. त.  
 तम्मि ४. ४६.  
 तम्हा ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.  
 तयाणि १. ७३.  
 तरणी १. ३८., पा. १. ३८.  
 तरिज्जह् ६. २६.  
 तरुणहो अप. ११. १८.  
 तरुणिहो अप. ११. १८.  
 तरुहुं अप. ११. १३.  
 तरुहे अप. ११. १३.  
 तरू ( वि. ) २. १.  
 तलवेण्टं १. ६१.  
 तलावो २. ४.  
 तलि अप. ११. ६.  
 तलुनी पै. प्राप्र. १०. २१.  
 तवह् २. ९.  
 तवसि शौ. ८. ५.  
 तविअं ७. त.  
 तवो ७. त.  
 तसु अप. ११. १०.  
 तसु शौ. ( वि. ) ८. २., ४. ४६.  
 हेरू. पा. ४. ४६.  
 तस्मि शौ. ८. ४४.  
 तस्सि ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.  
 तह १. ६१., शौ. ४. ४७., अप. पा.  
 ४. ४६.  
 तहत्ति १. ५०.  
 तहाँ अप. ११. २७.  
 तहि. शौ. ८. ४४.  
 तहिं अप. ११. २९., ४. ४६.

तहितो हेरू. पा. ४. ४७.  
 तहे अप. ११. २२., अप. ११. ३१.  
 ता ( वि. ) पा. १. १९. शौ. ८. २०.,  
 ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६., ७. त.  
 ताउं अप. ११. ५८.  
 ताओ ( वि. ) २. ६., ४. ३२., ४. ४६  
 ताणं ४. ४६., शौ. पा. ६. पा. ४.  
 ४६., ४. ४६.  
 तातिसं पै. ( वि. ) १. ८७.  
 तातिसो पै. १०. १६.  
 तादिसं शौ. ८. ४४., शौ. ( वि. )  
 १. ८७.  
 ताम अप. ११. ५८.  
 तामहिं अप. ११. ५८.  
 तामोत्तरो पै. १०. ६.  
 तारिसो १. ८७.  
 तालवेण्टं १. ३.  
 तालवेण्टं १. ६१.  
 ताला हेरू. पा. ४. ४६.  
 ताव १. १६., ( वि. ) पा. १. १९.,  
 शौ. ८. ४., ७. त.  
 तावें अप. ११. ५८.  
 तास हेरू. पा. ४. ४६.  
 तासु अप. ११. ३०., अप., पा. ४. ४६.  
 ताहितो ४. ४६.  
 ताहे हेरू. पा. ४. ४६.  
 ताहं ट. पा. ४. ४६.  
 तिअस-ईसो १. १५.  
 तिअसीसो १. १५.  
 तिअखं ७. त.  
 तिट्टो पै. ( वि. ) १०. १३.

तिणा हेरू. पा. ४. ४६.  
 तिणु अप. ११. १.  
 तिणुवी ३. ३३.  
 तिण्णि ४. ४८.  
 तिण्णं ४. ४८.  
 तिण्हं ३. २८.  
 तिन्तिअ ३. ४१., ७. त.  
 तिन्तिरो ७. त.  
 तिथ्यं १. ७४., ७. त., १. ६७.  
 तिध अप. ११. ५४.  
 तिण्ण १. ८१.  
 तिम अप. ११. ५४.  
 तिरिच्छी ७. त.  
 तिरिश्चि मा. ९. १०.  
 तिवें अप. ११. ५०., अप. ११. ५४.  
 तिह अप. ११. ५४.  
 तिहिं अप. ११. १९.  
 तिहं ७. त.  
 ती ४. ४७.  
 तीआ ४. ४७.  
 तीओ ४. ३२.  
 तीरइ ६. २६.  
 तीसा १. ३५., ७. त.  
 तीसु ४. ४८.  
 तीहिं ४. ४८.  
 तीहितो ४. ४८.  
 तु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुइ ४. ४७.  
 तुप् ४. ४७.  
 तुच्छुं अप. ११. २६.  
 तुज्ज ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.,  
 अप. ११. ४०.

तुञ्जत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुञ्जग्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुञ्जं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुञ्जसु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुञ्जाण हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुञ्जाणं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुञ्जासु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुञ्जाहितो ४. ४७.  
 तुञ्जेसु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुञ्जेहि हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 तुञ्जे शौ. ४. ४७.  
 तुण्डं शौ. ८. ४४.  
 तुण्हिओ ३. १२.  
 तुण्हिको ३. १२.  
 तुध अप. ११. ४७.  
 तुब्भ हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भत्तो हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भग्मि हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भसु हेरू. ४. ४७.  
 तुब्भाण हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भाणं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भासु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भे हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भेसु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भेहि हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुब्भं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुम ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमइ ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमए ४. ४७., हेरू. पा. ४७.  
 तुमत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.

तुम ४. ४७., शौ. ४. ४७., ८. ४४.  
 तुमहितो ४. ४७.  
 तुमग्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमाइ ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमाण. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमाणं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमातु पै. १०. २०.  
 तुमातो पै. १०. २०.  
 तुमादो शौ. ८. ४४.  
 तुमे ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमेसु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुमो हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुम्म ४. ४७.  
 तुग्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुग्मइं अप. ११. ४०.  
 तुग्म ४. ४७., शौ. ४. ४७. शौ.  
 ८. ४४. हेरू. पा. ७. ४७.  
 तुग्मकेरो ३. ३७.  
 तुग्मत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुग्मग्मि हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुग्मसु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुग्महं अप. ४. ४७., अप. ११. ४०.  
 तुग्मं अप. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुग्माइं अप. ४. ४७.  
 तुग्हाण ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुग्हाणं शौ. ४. ४७., शौ. ८. ४४.  
 हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुग्हादो शौ. ४. ४७.  
 तुग्हारिसो १. ८७., २. १६.  
 तुग्हासु अप. ११. ४०., अप. ४. ४७.  
 हेरू. पा. ४. ४७.

तुम्हाहितो शौ. ४. ४७., ४. ४७.  
 तुम्हे शौ. ४. ४७., शौ. ८. ४४., अप. ४. ४७., अप. ११. ४०.  
 तुम्हेच्चयं ३. ३८.  
 तुम्हेसु ४. ४७., शौ. ८. ४४., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुम्हेसुं शौ. ४. ४७.  
 तुम्हेहिं अप. ११. ४०. ४. ४७., शौ. ४. ४७., ८. ४४.  
 तुम्हेहितो शौ. ८. ४४.  
 तुयहत्तो हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुयह हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुयहे हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुयहेहिं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुव ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुवत्तो हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 तुवमिम ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुवरए ६. ४.  
 तुवरसे ६. ४.  
 तुवसु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुवाण हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 तुवाणं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुवे ४. ४७.  
 तुवेसु हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुवं ४. ४७.  
 तुसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुह ४. ४७. अप. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुहत्तो हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 तुहमिम ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुहसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.

तुहाण ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुहाणं हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुहारेण अप. ११. ६८.  
 तुहु अप. ११. ४०.  
 तुहुं अप. ११. ४०.  
 तुहेसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुहं ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 तुम्हेहिं ४. ४७.  
 तुद्य ४. ४७.  
 तुद्यत्तो ४. ४७.  
 तुद्याण ४. ४७.  
 तुद्युहोत अप. ४. ४७.  
 तुद्ये ४. ४७.  
 तुद्येसु ४. ४७.  
 तुं ४. ४७.  
 तृणं ७. त.  
 तूरं ७. त.  
 तूसइ ६. ३०.  
 तूहं ७. त., १. ७४.  
 तृणु अप. ११. १.  
 ते ४. ४६ शौ. ८. ४४., हेरू. पा. ४. ४६., ४. ४७., शौ. ४. ४७.  
 तेअस्स पा. १. ३९., पा. १. ३१.  
 तेओ १. ३९.  
 तेति पै. १०. १७.  
 तेत्तहे अप. ११. ७०.  
 तेत्तिअं ३. ४२.  
 तेत्तिकं शौ. प्रास. ८. ४५.  
 तेत्तिलं ३. ४२.  
 तेत्तीसा ७. त.

तेत्तुलो अप. ११. ६९.  
 तेथु अप. ११. ५७.  
 तेदहं ३. ४२.  
 तेण ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.  
 तेम अप. ११. ५४.  
 तेरह ७. त.  
 तेरहो १. ५७.  
 तेळोक्कं ( वि. ) ३. १०.  
 तेळ्ळं ३. ११.  
 तेळ्ळकं १. ८८.  
 तेळ्ळोक्कं ( वि. ) ३. १०.  
 तेवहु अप. ११. ६०.  
 तेवँ अप. ११. ५४.  
 तेवण्ण ७. त.  
 तेवीसा ७. त.  
 तेसि ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.  
 तेसु ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.  
 तेसुं हेरू. पा. ४. ४६.  
 तेहं ७. त.  
 तेहि ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६., अप.  
 ११. ६४.  
 तेहितो ४. ४७.  
 तेहु अप. ११. ५५.  
 तं ४. ४६., ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४६.  
 १. ३१., अप. ११. ३२.  
 तंसं १. ३३., पा. ३. ८.  
 तो ४. ४७., अप. ११. ६४.  
 तोणं ७. त.  
 तोणीरं ७. त.  
 तोण्डं १. ७९.  
 तोसविअं ६. १९.

तोसिअ-संकरु अप. ११. ३.  
 तोसिअं ६. १९.  
 त्रं अप. ११. ३२.

थ

थवो ७. थ.  
 थंभो ७. थ.  
 थाणू ७. थ.  
 थिण्णं ३. १२.  
 थो ७. थ.  
 थोणं ३. १२., ७. थ.  
 थुई ३. २५.  
 थुणदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 थुञ्जो ७. थ., ३. १२.  
 थूणा ७. थ.  
 थूणो ७. थ.  
 थूलं शौ. ८. ४४., ७. थ.  
 थेणो ७. थ.  
 थेरिअं ७. थ.  
 थेरो पा. ३. ६., ७. थ.  
 थोअं ३. २५.  
 थोणा ७. थ.  
 थोत्तं ३. २५.  
 थोरो ३. १२.  
 थोरं ७. थ.

द

दभालू २. १.  
 दहपं अप. ११. १४.  
 दहवअं १. ८९.  
 दहच्चं १. ८९.

दहवज्जो ३. ५.  
 दहणं १. ८९.  
 दहवणू ३. ५.  
 दहवं ७. द., ३. १२.  
 दहव्वं ३. १२., ७. द.  
 दहस्स शौ. ८. ३४.  
 दउत्ति शौ. ८. ४५.  
 दक्खिणो ( वि. ) १. ५३., ७. द.  
 दट्ठो ७. द.  
 दडवड अप. ११. ६४.  
 दड्ढं ७. द.  
 दणुभवहो ७. द.  
 दणु इन्दरुहिर० १. १०.  
 दणुवहो ७. द.  
 दण्डो ७. द.  
 दत्तं ( वि. ) १. ५४.  
 दद्धं ३. ३६.  
 दमदमाअह ६. १.  
 दमदमाह ६. १.  
 दंभो ७. द.  
 दयालू पा. २. १.  
 दरिओ ७. द.  
 दरो ७. द.  
 दलिहो २. १८.  
 दवग्गी पा. १. ६१.  
 दवो ( वि. ) २. १.  
 दस ७. द., शौ. ८. ४४.  
 दसणं ७. द.  
 दसरहो शौ. ८. ४४.  
 दसवतनो पै. प्राप्र. १०. २१.  
 दसमुहो ७. द.

दस्के मा. प्राप्र. ९. १६.  
 दह शौ. ८. ४४., ७. द.  
 दहसुहु अप. ११. ३.  
 दहसुहो ७. द.  
 दहि ४. ४१.  
 दहि ईसरो १. ९.  
 दहिं ४. ४१.  
 दहीईं ४. ४१.  
 दहीईं ४. ४१.  
 दहीणि ४. ४१.  
 दहीसरो १. ९.  
 दहो ३. ४., पा. ३. ४.  
 दाव शौ. ८. ४.  
 दावग्गी पा. १. ६१.  
 दाघो ( वि. ) २. २०., ७. द.  
 दातूनं पै. प्राप्र. १०. २१.  
 दाडिमं ( वि. ) २. ४.  
 दाढा ७. द.  
 दाणवो ( वि. ) २. १.  
 दाणिं शौ. ८. १९.  
 दाणं ४. ४६.  
 दामं १. ४०.  
 दारं ७. द., ( वि. ) ३. ३.  
 दालिमं ( वि. ) २. ४.  
 दाहिणो १. ५३.  
 दाहिणो ७. द.  
 दाहिमि ६. ९.  
 दाहो ७. द.  
 दाहं ६. ९.  
 दि. हेरू. पा. ४. ४७.  
 दिअरो ७. द.

दिभहो २. १.  
 दिवभो १. ७१.  
 दिवणो १. ७१.  
 दिभो १. ७१., ( वि. ) ३. ३.  
 दिग्घो ७. द.  
 दिट्टो ३. ६., १. ८१., ३. १८.  
 दिट्ठं १. ८१.  
 दिट्ठं ति १. ५०.  
 दिण्णं ७. द., १. ५४.  
 दिप्पह २. ७.  
 दिवसो ७. द.  
 दिवहो ७. द.  
 दिवे भप. ११. ६४.  
 दिसा० पा. २. २४.  
 दिसा १. २४.  
 दिहा गयं ( वि. ) १. ७२.  
 दिही ७. द.  
 दीभो २. १५.  
 दीज्जो २. १५.  
 दीसइ ( नि. ) ६. १५.  
 दीहरं स्वाप्र. ३. ४५.  
 दीहाउसो १. २५.  
 दीहाऊ १. २५., पा. १. २५.  
 दीहो ७. द.  
 दुभल्लं ७. द.  
 दुभाई ( वि. ) ३. ३.  
 दुभारं ७. द.  
 दुइअं १. ७३.  
 दुइभो १. ७१.  
 दुउणो १. ७१.  
 दुऊलं ७. द.

दुक्कडं ७. द.  
 दुक्करं ( वि. ) ३. १७.  
 दुक्खं ७. द.  
 दुगुल्लं ७. द.  
 दुग्गा-प्वी ७. द.  
 दुग्गावी ७. द.  
 दुइं ३. १.  
 दुणि ४. ४८.  
 दुब्भइ ६. २५.  
 दुय्यणे मा. ९. ७., मा. प्राप्र. ९. १६.  
 दुरागदं १. १९.  
 दुरुत्तरं १. १९.  
 दुल्लहहो भप. ११. १०.  
 दुल्लहो २. ३.  
 दुवअणं १. ७१.  
 दुवरो ७. द.  
 दुवाई १. ७१.  
 दुवारिभो १. ९२.  
 दुवारं ७. द.  
 दुवे १. ७१., ४. ४८.  
 दुसहो १. ७८.  
 दुस्सहो १. १८.  
 दुस्सहो विरहो ( वि. ) १. ७८.  
 दुहभो १. ७८., ७. द.  
 दुहा इअं १. ७२.  
 दुहा किज्जदि १. ७२.  
 दुहा वि० ( वि. ) १. ७२.  
 दुहि ४. ४७.  
 दुहिभा ४. ३१., ७. द.  
 दहिज्जइ ६. २५.  
 दुहिदिभा शौ. प्रास. ८. ४५.

दुहितो ४. ४७.  
 दुहोअदि शौ. प्रास. ८. ४५. ७  
 दुहुँ अप. ( वि. ) ११. १२.  
 दुहं ७. द.  
 दूरादु शौ. ८. १८.  
 दूरादो शौ. ८. १८.  
 दूसइ ६. ३०.  
 दूमहो १. १८., १. ७८.  
 दूसासणो १. ५१.  
 दूहओ १. ७८.  
 दूहवो ७. द.  
 दे ४. ४६., ४. ४७., हेरू. पा. ४.  
 ४७., शौ. ४. ४७., शौ. ८. ४४.  
 देअरो ७. द., शौ. ८. ४४.  
 देइ ( वि. ) ६. ३१.  
 देउलं ७. द.  
 देच्छं ६. ९.  
 देदि शौ. ८. १५.  
 देमि शौ. ८. ३४.  
 देरं ७. द.  
 देव ४. १४.  
 देव-उलं ७. द.  
 देवत्तो ४. १४., ४. ११., ४. १२.  
 देव-थुई ३. १०.  
 देव-थुई ३. ११.  
 देवदत्त ( वि. ) १. ५४.  
 देवस्स ४. १३., ४. १४.  
 देवा ४. १४., १. ४३., ४. ६., पा.  
 ४. ११.  
 देवाउ ४. ११., ४. १४., ४. १२.  
 देवाओ ४. ११., ४. १२., ४. १४.

देवाण ४. ८., ४. १४.  
 देवाणि १. ४३.  
 देवाणं ४. १४., ४. ८.  
 देवासुंतो ४. १४.  
 देवाहि ४. ११., ४. १२., ४. १४.  
 देवाहित्तो ४. १४., ४. ११.  
 देवाहित्तो ४. १२., ४. १४.  
 देवीए एत्थ १. १२.  
 देवे ४. १४.  
 देवेण ४. ८., ४. १४.  
 देवेणं ४. १४.  
 देवेम्मि ४. १४.  
 देवेसु ४. ९., ४. १४.  
 देवेसुं ४. १४.  
 देवेसुंतो ४. १२.  
 देवेहि ४. १०., ४. १२., ४. १४.  
 देवेहिं ८. ९., ४. १४., ४. १०.  
 देवेहिं ४. १४., ४. १०.  
 देवेहित्तो ४. १४.  
 देवो ( वि. ) २. १., ४. १४., ४. ५.  
 देवं ४. १४., ४. ७., अप. ११. ७४.  
 देव्वं ७. द., शौ. ८. ४४.  
 दो ४. ४८.  
 दोणि ४. ४८.  
 दोणं ४. ४८.  
 दोण्हं ४. ४८.  
 दोदुहिसुंतो हेरू. पा. ४. ४७.  
 दोदुहिहित्तो हेरू. पा. ४. ४७.  
 दोला ७. द.  
 दोवअणं १. ७१.  
 दोसडा अप. ११. ६५.



दोसु ४. ४८.  
 दोहगं १. ९१.  
 दोहलो ७. द.  
 दोहा ह्रं १. ७२.  
 दोहा किर्जादि १. ७२.  
 दोहि ४. ४८.  
 दोहि ४. ४८.  
 देहितो ४. ४८.  
 दोहो ३. ४.  
 दंसणं १. ३३.  
 द्रवक्क अप. ११. ६४.  
 द्रहो ३. ४., पा. ३. ४,  
 द्रेहि अप. ११. ६४.  
 द्रोहो ३. ४.  
 द्विरओ १. ७१.

घ

घट्टज्जणो ७. घ.  
 घट्टो ७. घ.  
 घण अप. ११. २.  
 घणवन्तो ३. ४४.  
 घणहे अप. ११. २२.  
 घणाणि नौ. ८. ३२.  
 घणिरो ( वि. ) ३. ४४.  
 घणुहधरो पा. १. २७.  
 घणुहं ७. घ., १. २७.  
 °घणू पा. १. २७.  
 घणू १. २७., ७. घ.  
 घणंजओ ( वि. ) २. १.  
 घणञ्जप् मा. ९. ८.  
 अत्ती ७. घ.  
 घत्थं ३. ३.

धनुस्खण्डं मा. ९. ४.  
 धम्मिखं १. ६८., शौ. ( वि. ) १. ६८.  
 धग्मेखं १. ६८.  
 धरहिं अप. ११. ४१.  
 धाअह ६. ३६.  
 धाह ६. ३६.  
 धाई ७. घ.  
 धारी ७. घ.  
 धावह ६. ३१.  
 धिह ७. घ.  
 धिई ७. घ.  
 धिई १. ८१.  
 धिज्जं ७. घ.  
 धिट्टो ७. घ.  
 धिप्पह २. ७.  
 धिरत्थु ७. घ.  
 धीरं ३. ९.; ७. घ.  
 धुत्तो ( वि. ) ३. २१.  
 धुरा १. २१.  
 °धुरा पा. १. २१.  
 धुवह ६. ३१.  
 धूआ ७. घ.  
 धूदा शौ. प्रास. ८. ४१.  
 धूलद्धिआ अप. ११. ६७.  
 धेणु ४. ३७.  
 धेणुं ४. ३७.  
 धेणू ४. ३३., ४. ३७.  
 धेणूअ ४. ३७.  
 धेणूआ ४. ३७.  
 धेणूह ४. ३७.  
 धेणूड ४. ३३., ४. ३७.

धेणूष ४. ३७.  
 धेणूभो ४. ३३., ४. ३७.  
 धेणूण ४. ३७.  
 धेणूणं ४. ३७.  
 धेणूदो ४. ३७.  
 धेणूसु ४. ३७.  
 धेणूसुं ४. ३७.  
 धेणूसुंतो ४. ३७.  
 धेणूहि ४. ३७.  
 धेणूहिं ४. ३७.  
 धेणूहितो ४. ३७.  
 ध्रुवु अप. ११. ६४.  
 ध्रु अप. ११. ३२.

न

नह ४. ३७.  
 नह-गामो ३. १०.  
 नह गामो ३. १०.  
 नहं ४. ३७.  
 नई २. १.; २. ८., ४. ३७.  
 नईअ ४. ३७.  
 नईआ ४. ३७.  
 नईवू ४. ३७.  
 नईप ४. ३७., शौ. ८. ४४.  
 नईओ ४. ३७.  
 नईण ४. ३७.  
 नईणं ४. ३७.  
 नहदो ४. ३७.  
 नईसु ४. ३७.  
 नईसुं ४. ३७.  
 नईसुंतो ४. ३७.

नईहि ४. ३७.  
 नईहिं ४. ३७.  
 नईहिं ४. ३७.  
 नईहितो ४. ३७.  
 नउ अप. ११. ७६.  
 नओ पा. २. १.  
 नकरं पै. ( वि. ) पा. २. १.  
 नक्कंचरो ( वि. ) पा. २. १.  
 नक्खा ३. १२.  
 नगो ३. २.  
 न जुत्तं ति १. ५०.  
 नणन्दा ४. ३१.  
 नत्तिओ ७. न.  
 नत्तुओ ७. न.  
 नत्तंचरो ( वि. ) पा. २. १.  
 नत्थून पै. १०. १२.  
 नद्धून पै. १०. १२.  
 नमोकारो ७. न.  
 नम्म० पा. १. ३९.  
 नम्मो १. ३९.  
 नयणा पा. १. ४१.  
 नयणाहं पा. १. ४१.  
 नयणं पा. २. १.  
 नयरं पा. २. १.  
 नरिन्दो १. ६७.  
 नरो २. ८.  
 नले मा. ९. ३.  
 नवख अप. ११. ६४.  
 नवह्लो स्वाप्र. ३. ४५.  
 नस्स ६. ३८.  
 नहा ३. १२.

नहुल्लिहणे आवन्धत्तीर्षु १. १२.  
 नहेण अप. ११. ५.  
 नहं १. ४०.  
 नह्य ४. ४७.  
 नाह अप. ११. ७६.  
 नाए पै., पा. ४. ४६., पै. १०. २१.  
 नाडी ( वि. ) २. ४.  
 नापिओ ७. न.  
 नारद्धो ७. न.  
 नालिउ अप. ११. ६४.  
 नावइ अप. ११. ७६.  
 नावा ७. न.  
 नासइ ( वि. ) ६. ३१.  
 नाहि अप. ११. ६४.  
 नाहो २. ३.  
 निउरं ७. न.  
 निक्कामं ( वि. ) ३. १७.  
 निक्खं ३. १७.  
 निच्चट्ट अप. ११. ६४.  
 निच्चलो ३. १.  
 निच्चिन्दो शो. ८. ३.  
 निच्चं ३. १९.  
 निउहारो ७. न.  
 निट्टुरो ३. १.  
 निण्णं ३. २४.  
 निप्फेसो ३. २७.  
 निमिअं ६. ३२.  
 निम्बो ७. न.  
 निम्मल्लं १. ४७.  
 निरुत्तरं १. १९.  
 निवत्तओ ३. २१.

निवत्तणं ( वि. ) ३. २१.  
 निविडं ( वि. ) २. ४.  
 निवो १. ८१.  
 निसदो ७. न.  
 निसाओरो १. १३.  
 निसिआ अप. ११. २.  
 निस्फळं मा. ९. ४.  
 निस्सहं १. १८.  
 निहसो ७. न.  
 निहिओ ३. १२.  
 निहित्तो ३. १२.  
 निही १. ४४.  
 °निही पा. १. ४४.  
 नीच्चअं ७. न.  
 नीडं ३. १२., ७. न.  
 नीमी ७. न.  
 नीमो ७. न.  
 नीला ४. २९.  
 नीली ४. २९.  
 नीलुप्पलं १. ६७.  
 नीवी ७. न.  
 नीवो ७. न.  
 नीसहो १. ५१.  
 नीसहं १. १८.  
 नीसासो पा. ३. ८.  
 नीसो १. ५१.  
 नूउरं ७. न.  
 नूण १. ३६.  
 नूणं १. ३६.  
 नेह ६. २९.  
 नेउरं ७. न.

नेलं ३. १२.

नेळुं ३. १२., ७. न.

नेति पै. १०. १७.

नेदि शौ. ८. १२.

नेन पै., पा. ४. ४६, पै. १०. २१.

नेरहओ ७. न.

नोहलिआ ७. न.

नं. अप. ११. ७६.

न्यायः ( वि. ) २. ८.

प

°पभं पा. १. ३९.

पभट्टं ७. प.

पभटं १. ५२.

पभरो १. ६२.

पभारो १. ६२.

पभावई २. १.

पहटा १. ४७., ७. प., ( वि. ) २. ५.

पहटाणं ( वि. ) २. ५.

पहट्टि अप. ११. २.

पहट्टिअं १. ४७.

पहण्णा ( वि. ) २. ५., ७. ५.

पहवं ( वि. ) २. ५.

पहं अप. ४. ४७., अप. ११. ४०.

पई ( वि. ) १. ९.

पईवो २. ९.

पईवं ७. प.

पउअं १. ६१.

पउट्टो ७. प.

पउत्तं ७. प.

पउत्ती १. ८३.

पउमं ७. प.

पउरिसं १. ९३., ७. प.

पओ १. ३९.

पओट्टो शौ. ८. ४४.

पक्कं ७. प.

पखलो ( वि. ) २. ३.

पगिगम्व अप. ११. ६४.

पङ्को १. १., १. ३७.

पंको १. ३७.

पंत्ती १. ३२.

पच्चओ ३. १९.

पच्चच्छं ३. १९.

पच्चलिउ अप. ११. ६४.

पच्चुसो ७. प.

पच्चुहो ७. प.

पच्चह् अप. ११. ६४.

पच्छा ३. २२.

पच्छिमं ३. २२.

पच्छं ३. २२.

पजन्तो पा. १. ५७.

पजत्तं ३. १.

पजन्तो ७. प.

पउजन्तं ३. २३.

पउजा ३. ५.

पउजाउलो शौ. ८. ८.

पउजाओ ३. २३.

पउजुण्णो ३. २४.

पञ्जा ४. ५०.

पञ्जावण्णा ७. प.

पञ्जाहिं ४. ५०.

पञ्जले मा. ९. ८.

पञ्जा पै. १०. २.  
 पञ्जाविशाले मा. ९. ८.  
 पट्टणं ७ प.  
 पट्टि अप. ११. १.  
 पट्टं १. ८२.  
 पठिभं ६. १७.  
 पठितून पै. १०. ११.  
 पठिय्यते पै. १०. १४.  
 पडाभा शौ. ( वि. ) पा. २. १.  
 पढाया ७. प.  
 पढायाणं ७. प.  
 पडिप्फही ३. २७.  
 पडिप्फही १. ५२.  
 पडिमा २. ५.  
 पडिवभा १. ५२.  
 पडिवणं २. ५.  
 पडिवही २. ६.  
 पडिसरो २. ५.  
 पडिसिद्धी १. ५२.  
 पडिसुभा १. ३३.  
 पडिसुदं १. ३३.  
 पडंसुभा ७. प.  
 पडई ( वि. ) २. ९.  
 पडित्ता शौ. ८. १३.  
 पडिदूण शौ. ८. १३.  
 पढन्तो ६. १२.  
 पढमाणो ६. १२.  
 पढमं ७ प.  
 पडिय शौ. ८. १३.  
 पढुम पा. २. ३.  
 पढुमं ७. प.

पण्णरह ७. प.  
 पण्णा ३. ५., ३. २४.  
 पण्णावण्णा ७. प.  
 पण्णासा ७. प.  
 पण्णो ( वि. ) १. ५६.  
 पण्हा १. ४२.  
 पण्हो १. ४२., ३. २८.  
 पत्तलं स्वाप्र. ३. ४५.  
 पत्थरो पा. १. ६१., ३. २५.  
 पत्थारो पा. १. ६१.  
 पन्थो १. ३७.  
 पंथो १. ३७.  
 पमुहेण २. ३.  
 पमुक्कं ( वि. ) ३. १०.  
 पम्मुक्कं ( वि. ) ३. १०.  
 पम्मं ७. प.  
 पम्ह ७. प.  
 पम्हट्टो ६. ३९.  
 पयावई पा. २. १.  
 पय्याकुलीकदग्धि शौ. ८. ८.  
 पर अप. ११. ६४.  
 परहुओ १. ८३.  
 परामुट्टो १. ८३.  
 परिट्टा १. ४७.  
 परिट्टिभं १. ४७.  
 परिठविभं १. ६१.  
 परिठाविभं १. ६१.  
 परित्तायध शौ. ८. १०.  
 परोप्परं ७. प.  
 परोहो १. ५२.  
 परंमुहो १. ३२.

पलकखो ७. प.  
 पलंबघणो ( वि. ) २. ३.  
 पलिअंको ७. प.  
 पलिअं ७. प.  
 पलिचये मा. प्राप्र. ९. १६.  
 पलित्तो २. ७.  
 पलिलं ७. प.  
 पलिविअं १. ७३.  
 पलीवेइ २. ७.  
 पल्लङ्को ७. प.  
 पल्लरथं ७. प.  
 पल्लट्टं ७. प.  
 पल्लाणं ७. प.  
 पल्हाओ ३. ३१.  
 पवट्टो ७. प.  
 पवत्तओ ( वि. ) ३. २१.  
 पवत्तणं ( वि. ) ३. २१.  
 पवसन्तेण अप. ११.५., अप. ११.१४.  
 पवहो १६२., पा. १. ६१.  
 पव्वतीं पै. १०. ६.  
 पवासू १. ५२.  
 पवाहो १. ६२., पा. १. ६१.  
 पवो ( वि. ) ३. ३२.  
 पसढिलं ७. प.  
 पसदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 पसिअ १. ७३.  
 पसिढिलं ७. प.  
 पसिद्धी १. ५२.  
 पसुत्तं १. ५२.  
 पस्टे मा. ९. ५.  
 पहरो पा. १. ६१.

पहारो पा. १. ६१.  
 पहिहो ७. प.  
 पहुच्चइ अप. ११. ४८.  
 पहुदि १. ८३.  
 पहुवी पा. २. ३.  
 पहो ७. प.  
 पाअइ ६. २१.  
 पाअउं १. ५२.  
 पाअवडणं ७. प.  
 पाअवीडं ७. प.  
 पाआई ७. प.  
 पाआरो ७. प.  
 पाइ ६. २१.  
 पाइक्को ७. प.  
 पाउअं १. ६१., १. ८३.  
 पाउरणं ७. प.  
 पाउसं पा. १. २४.  
 पाउसो १. २४., १. ३८., १. ८३.,  
 पा. १. ३८.  
 पाओ ( वि. ) १. ९.  
 पांगुरणं ७. प.  
 पाडिप्फद्धी १. ५२.  
 पाडिविआ १. ५२.  
 पाडिवया ( वि. ) १. २०.  
 पाडिसिद्धी १. ५२.  
 पाणिअं १. ७३.  
 पाणिणीआ ( वि. ) ३. ३७.  
 पाणीअं ( वि. ) १. ७३.  
 पारओ ७. प.  
 पारकेरं ७. प.  
 पारकं ( वि. ) ३. ३७., ७. प.  
 पारद्धी ७. प.

पाराभो ( वि. ) पा. १. १९.  
 पाराकेरं ७. प.  
 पारावभो ( वि. ) पा. १. १९., ७. प.  
 पारिकं ७. प.  
 पारेवभो ७. प.  
 पारो ७. प.  
 पारोहो १. ५२.  
 पालेवि अप. ११. ७३., अप. ११. ७४.  
 पावडणं ७. प.  
 पावरणं ७. प.  
 पावारभो ७. प.  
 पावासू ७. प., १. ५२.  
 पावीडं ७. प.  
 पावीसु अप. ११. ५१.  
 पावो शौ. ८. ४४.  
 पावं ( वि. ) २. १., २. ९.  
 पासह् १. ५१.  
 पासाणो शौ. ८. ४४., ७. प.  
 पासिद्धी १. ५२.  
 पासुत्तं १. ५२.  
 पासू १. ३६.  
 पासं पा. ३. ८.  
 पाहाणो ७. प.  
 पाहुडं ७. प.  
 पाहुदं १. ८३.  
 पिभ हेरू. ४. २३.  
 पिभड हेरू. ४. २३.  
 पिभभो हेरू. ४. २३.  
 पिभरमि ४. २३.  
 पिभरस्स ४. २३.  
 पिभरहितो ४. २३.

पिभरा हेरू. ४. २३., ४. २३.  
 पिभराणं ४. २३.  
 पिभरादो ४. २३.  
 पिभरे हेरू. ४. २३., ४. २३.  
 पिभरेण ४. २३., हेरू. ४. २३.  
 पिभरेणं हेरू. ४. २३.  
 पिभरेसु ४. २३.  
 पिभरेहि हेरू. ४. २३.  
 पिभरेहिं हेरू. ४. २३.  
 पिभरेहिं ४. २३.  
 पिभरो ४. २३., हेरू. ४. २३.  
 पिभरं ४. २३., हेरू. ४. २३.  
 पिभवो हेरू. ४. २३.  
 पिभा ४. २३., हेरू. ४. २३.  
 पिभापिभं १. ८.  
 पिड अप. ११. ५१.  
 पिडभो १. ८३.  
 पिडङ्गा ७. प.  
 पिडणा हेरू. ४. २३.  
 पिडणो हेरू. ४. २३.  
 पिडवणं १. ८४.  
 पिड सिभा ७. प.  
 पिऊ हेरू. ४. २३.  
 पिऊहिं हेरू. ४. २३.  
 पिऊहिं हेरू. ४. २३.  
 पिऊहि हेरू. ४. २३.  
 पिभोत्ति १. ५०., ( वि. ) १. ६९.  
 पिक्क पा. १. ५४., १. २., ३. ३.,  
 ७. प.  
 पिच्छी ३. २०.  
 पिट्टं १. ६८., १. ८२.

पिष्टि अप. ११. १.  
 पिढरो ७. प.  
 पिण्डं १. ६८., शौ. ८. ४४., शौ.  
 ( वि. ) १. ६८.  
 पिस्थी १. ८१.  
 पिदणा शौ. ८. ४४., ४. २३.  
 पिद्गुणो ४. २३.  
 पिद्गुणं ४. २३.  
 पिद्गुम्नि ४. २३.  
 पिद्गुसुं ४. २३.  
 पिद्गुहितो ४. २३.  
 पिधं ७. प.  
 पियगमण ( वि. ) २. १.  
 पिल्लुट्टं ३. ३२.  
 पिव पै. प्राप. १०. २१.  
 पिरिचले मा. ९. १०.  
 पिसल्लो ७. प.  
 पिसाभो ७. प.  
 पिसाजी ( वि. ) २. १.  
 पिहढो ७. प.  
 पिहं १. ३१., ७. प.  
 पीअलं स्वा. प्र. ३. ४५., ७ प.  
 पीअं ७. प.  
 पीआपीअं १. ८.  
 पीडिअं ( वि. ) २. ४.  
 पीढं ७. प.  
 पीणभा ( पा. ) ( वि. ) ३. ३९.  
 पीणत्तणं ३. ३९.  
 पीणिमा ३. ३९.  
 पीवलं स्वाप्र. ३. ४५.; ७. प.  
 पुंलं १. ३३.

पुञ्जकम्मो पै. १०. ४.  
 पुञ्जाहं मा. ९. ८., पै. १०. ४.  
 पुष्टि अप. ११. १.  
 पुट्टी १. ४२.  
 पुट्टो ३. १८.  
 पुट्टं १. ४२.; १. ८३.  
 पुडो शौ. ८. २८.  
 पुढमं ७. प.  
 पुढवी ७. प.  
 पुहुमं ७. प.  
 पुणु अप. ११. ६४.  
 पुण्णमंतो ( वि. ) ३. ४४.  
 पुण्णामो ७. प.  
 पुत्तो शौ. ८. २८.  
 पुधं ७. प.  
 पुप्फं ( वि. ) २. ११.; ३. २७.  
 पुरओ १. ४६.  
 पुरंदरो ( वि. ) २. १.  
 पुरा १. २१.  
 पुरिमं ७. प.  
 पुरिक्कं ( वि. ) ३. ४४.  
 पुरिसो ७. प.  
 पुरिसो त्ति ( वि. ) १. ६९., १. ५०.  
 पुरुषो शौ. ८. ४४.  
 पुलिशशश मा. प्राप्र. १९. १६.  
 पुलिशाह मा. प्राप्र. ९. १६.  
 पुलिशो मा. ९. ३.  
 पुलोमी १. ९२.  
 पुव्वण्हो १. ६१., ३. २८.  
 पुव्वण्हो १. ६१.  
 पुश्वं ७. प.



पुहह १. ८३.  
 पुहई ७. प.  
 पुहवी ७. प.  
 पुहवीमो १. ११.  
 पुहुवी १. ८३., ३. ३३.  
 पुहं ७. प.  
 पूसइ ६. ३०.  
 पूसो १. ५१.  
 पेअं २. १५.  
 पेडसं ७. प.  
 पेखदि शौ. ८. ३७.  
 पेच्छदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 पेज्जं २. १५.  
 पेट्टं १. ६८.  
 पेढं ७. प.  
 पेण्डं १. ६८.  
 पेम्मं ३. ११.  
 पेरन्तो पा. १. ५७., ७. प.  
 पेरन्तं १. ५७.  
 पेस्कदि मा. ९. ११.  
 पोक्खरणी शौ. ८. ४४.  
 पोक्खरिणी ३. १७.  
 पोक्खरं शौ. ८. ४४., ३. १७., १. ७९.  
 पोत्थअं १. ७९.  
 पोप्पली ७. प.  
 पोप्पलं ७. प.  
 पोम्मं ७. प.  
 पोरो ७. प.  
 पंसनो १. ६३.  
 पंसुरं पा. १. ६१.  
 पंसू १. ३६., १. ६३.

प्रयाग-जलं ( वि. ) २. १.

प्रसदि अप. ११. ४८.

प्राह्मव अप. ११. ६४.

प्राह्व अप. ११. ६४.

प्राउ अप. ११. ६४.

प्रियेण अप. ११. ५१.

फ

फकवती पै. ( वि. ) पा. २. १.

फणसो ७. प.

फणी ( वि. ) २. ११.

फन्दनं १. ३.

फन्दणं ३. २७.

फरुसो ७. फ.

फलमवहरइ १. ३०.

फलिहो ७. फ.

फलिहं ७. फ.

फलिहा ७. फ.

फलं १. २८.

फलं अवहरइ १. ३०.

फाडेइ ( वि. ) २. ४., २. २०.

फालिहो ७. फ.

फालेइ ( वि. ) २. ४., २. १०.

फासो पा. ३. ८.

फुडं ६. ३९.

फुंसदि शौ. प्रास. ८. ४५.

फोडओ शौ. ८. ४४.

फंसो १. ३३., ३. २७.

ब

बहक्को ७. ब.

बडुत्तणहो अप. ११. ७१.

बडुप्पणु अप. ११. ७१.

बंधवो १. ३७.  
 बन्धवो १. ३७.  
 बन्धिज्जह्व ६. २६.  
 बम्भचेरं ( वि. ) ३. २९.  
 बम्हचेरं ३. २९.  
 बम्हणो १. ६१., ३. २९.  
 बम्हा ३. २९.  
 बहिणां ७. ब.  
 बह्मणो शो. ८. ३७.  
 बाम्हणो १. ६१.  
 बारह ७. ब.  
 बालहे अप. ११. २२.  
 बालाए शौ. ८. ४४.  
 बाह अप. ११. १.  
 बाहा अप. ११. १.  
 बाहाए पा. १. ४५.  
 बाहूसु पा. १. ४५.  
 बीओ ( वि. ) १. ९.  
 बुझा ३. २०.  
 बुद्धि शौ. प्रास. ७. ४५.  
 बुद्धी १. ८३.  
 बुद्धि हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धिअ ४. ३७.  
 बुद्धितो हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धिं ४. ३७., हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धी ४. ३७., हेरू. ४. ३७., ४. ३३.  
 बुद्धीअ ४. ३४., हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धीआ ४. ३७. हेरू. ४. ३७., ४. ३४.  
 बुद्धीह ४. ३७., हेरू. ४. ३७., ४. ३४.  
 बुद्धीउ ४. ३३., ४. ३७., हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धीए ४. ३४., ४. ३७., हेरू. ४. ३७.

बुद्धीओ ४. ३३., ४. ३७., हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धीण ४. ३७., हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धीणं ४. ३७., हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धीसु ४. ३७., हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धीसुं ४. ३७., हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धीसुनो हेरू. ४. ३७.  
 बुद्धीहितो हेरू. ४. ३७.  
 बुधो १. ३३.  
 बुहस्पदी मा. ९. ४.  
 बोह्मणउ अप. ११. ७५.  
 ब्रह्मजो शौ. ८. ३०  
 बुवह अप. ११. ४८.  
 ब्रोपिणु अप. ११. ४८.,

भ

भभवं ४. ४२  
 भहणी ७. भ.  
 भइरवो १. ८९.  
 भगवती पं. १०. ६.  
 भगवं शौ. ८. ७.  
 भगउं अप. ११. २६.  
 भग्गो ३. २.  
 भज्जा ३. २३.  
 भज्जिउ अप. ११. ७३.  
 भट्टा शौ. प्रास. ८. ४५.  
 भडो २. ४.  
 भणह्व ६. ६.  
 भणए ६. ६.  
 भणह्व ६. ६.  
 भणन्ति ६. ६.  
 भणन्ते ६. ६.

भणमि द. द.  
 भणसि द. द.  
 भणसे द. द.  
 भणित्था द. द.  
 भणिमो द. द.  
 भणिरे द. द.  
 भणेमो द. द.  
 भणामो द. द.  
 भणामि द. द.  
 भत्तल हेरू. ४. २३.  
 भत्तलो हेरू. ४. २३.  
 भत्तारग्भि ४. २३., हेरू. ४. २३.  
 भत्तारस्स ४. २३. हेरू. ४. २३.  
 भत्तारहितौ ४. २३.  
 भत्तारा ४. २३., हेरू. ४. २३.  
 भत्ताराउ हेरू. ४. २३.  
 भत्ताराओ हेरू. ४. २३.  
 भत्ताराण हेरू. ४. २३.  
 भत्ताराणं ४. २३. हेरू. ४. २३.  
 भत्तारादो ४. २३.  
 भत्तारासुंतो हेरू. ४. २३.  
 भत्ताराहि हेरू. ४. २३.  
 भत्ताराहितो हेरू. ४. २३.  
 भत्तारे ४. २३., हेरू. ४. २३.  
 भत्तारेण ४. २३., हेरू. ४. २३.  
 भत्तारेसु ४. २३. हेरू. ४. २३.  
 भत्तारेसुंतो हेरू. ४. २३.  
 भत्तारेहिं ४. १३. हेरू. ४. २३.  
 भत्तारेहि हेरू. ४. २३.  
 भत्तारेहितो हेरू. ४. २३.  
 खत्तारं ४. २३. हेरू. ४. २३.

भत्तारो ४. २३. हेरू. ४. २३.  
 भत्तिवन्तो ३. ४४.  
 भत्तुणा ४. २३. हेरू. ४. २३.  
 भत्तुणो ४. २३. हेरू. ४. २३.  
 भत्तुण ४. २३.  
 भत्तुग्मि ४. २३. हेरू. ४. २३.  
 भत्तुसु ४. २३.  
 भत्तुस्स हेरू. ४. २३.  
 भत्तुहि ४. २३.  
 भत्तुहितो ४. २३.  
 भत्तु हेरू. ४. २३.  
 भत्तुओ हेरू. ४. २३.  
 भत्तुणं हेरू. ४. २३.  
 भत्तुण हेरू. ४. २३.  
 भत्तुसु हेरू. ४. २३.  
 भत्तुसुंतो हेरू. ४. २३.  
 भत्तुहिं हेरू. ४. २३.  
 भत्तुहि हेरू. ४. २३.  
 भत्तुहितो हेरू. ४. २३.  
 भत्तं ३. १.  
 भद्दं ३. ४.  
 भद्दं ३. ४.  
 भन्ते मा. ९. २.  
 भणं ७. भ.  
 भमया स्वाप्र. ३. ४५.  
 भमाडह द. १९.  
 भमाडेह द. १९.  
 भमावह द. १९.  
 भमिअ ३. ३६.  
 भमिरो ३. ३५.  
 भयफह ७. भ.

भयव शौ. ८. ६.  
 भयवं शौ. ८. ७.  
 भयस्सई ७. भ.  
 भरधो शौ. ( वि. ) पा. २. १.  
 भरहो ७. भ.  
 भवओ ( वि. ) १. ४६.  
 भवन्तो ( वि. ) १. ४६.; ७. भ.  
 भवँरू अप. ११. ५०.  
 भवातिसो पै. १०. १६.  
 भविअं ७. भ.  
 भविय शौ. ८. १३.  
 भविस्सिदि शौ. ८. १७. शौ. ( वि. )  
 ८. ३३.  
 भवं ४. ४२. शौ. ८. ७.  
 भसरो ७. भ.  
 भसलो ७. भ.  
 भस्टालिका मा. ९. ५.  
 भस्टिणी मा. ९. ५.  
 भस्सं ७. भ. ( वि. ) पा. १. १९.  
 भाअदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 भाहरही २. १.  
 भाउओ १. ८३.  
 भाणओ शौ. ८. ४४.  
 भाणुओ शौ. ८. ४४.  
 भाणं ( वि. ) पा. १. १९.; ७. भ.  
 भादा शौ. प्रास. ८. ४५.  
 भादि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 भादुओ शौ. प्रास. ८. ४५.  
 भामिणी ७. भ.  
 भामेई ६. १९.  
 भारिआ पै. प्राप्र. १०. २१. पै. ७. भ.

भारिया पै. १०. १३.  
 भिउडी ७. भ.  
 भिऊ १. ८१.  
 भिंगारो १. ८१.  
 भिंगो १. ८१.  
 भिण्डिवालो ७. भ. शौ. ८. ४४.  
 भिन्दिवालो शौ. ८. ४४.  
 भिण्फो ७. भ. शौ. प्रास. ८. ४५.  
 भिण्मलो ७. भ.  
 भिसभ १. २३.  
 भिसिणी २. १३.  
 भीमशेणस्स मा. ९. १४.  
 भुई १. ८३.  
 भुञ्जणहं अप. ११. ७४.  
 भुञ्जणहिं अप. ११. ७४.  
 भुत्त ३१.  
 भुमया स्वाप्र. ३. ४५.  
 भुक्तया ७. भ.  
 भूदं शौ. प्रास. ८. ४५.  
 भे हेरू. पा. ४. ४७. हेरू. ४. ४७.  
 भेच्छं ६. ९.  
 भेडो ७. भ.  
 भेत्तुआण पा. ३. ३६.  
 भोअणमेमं ( वि. ) १. ६६.  
 भोअ्हा ३. २०.  
 भोच्छं ६. ९.  
 भोत्ति पै. १०. १७.  
 भोत्तव्वं ६. ३३.  
 भोत्ता शौ. ८. १३.  
 भोत्तुआण ३. ३६.  
 भोत्तुं ६. ३३.

भोत्तण ६. ३३.

भोदि शौ. ८. ११., शौ. ८. १५.

शौ. प्रास. ८. ४५.

भोदी ४. ४३.

भोदूण शौ. ८. १३.

भोमि शौ. ८. ३३.

म

मभगलो ७. म.

मभङ्को २. १.

मभंको ( वि. ) १. ८३.

मभणो २. १.

मभा ४. ४७.

मह शौ. ८. ४४., ४. ४७. शौ. ४.

४७., हेरू. पा. ४. ४७., अप.

४. ४८.

महत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.

महदु हेरू. पा. ४. ४७.

महदो ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.

महलं ७. म.

महं शप. ११. ४०.

महंअपवखे ( वि. ) ३. ३७.

मउअं ७. म.

मउढं १. ७५.

मउणं १. ९३.

मउत्तणं ७. म.

मउली १. ९३.

मउलो २. १.

मउलं १. ७५.

मउरो शौ. ८. ४४.

मउरो ७. म.

मऊहो ७. म.

मए ४. ४७. शौ. ८. ४४., शौ. ४.

४७., हेरू. पा. ४. ४७.

मएसु ४. ४७.

मओ १. ८०., २. १.

मरगओ १. ४६

मरगू ३. १.

मरगोहिं अप. ११. १९.

मरगो ( वि. ) २. १.

मघोणो ७. म.

मच्चू, ७. म.

मच्छरो ३. २२.

मजारो पा. १. ६१.; ७. म.

मज्जं ३. २३.

मज्ज हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जत्तो हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जग्मि हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जसु हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जहे अप. ११. १२.

मज्जहो ७. म.

मज्ज्हाण हेरू. पा. ४. ४७.

मज्ज्हाणं हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जिमो ७. म.

मज्ज्जु अप. ११. ४०.

मण्णसु हेरू. पा. ४. ४७.

मण्णं हेरू. पा. ४. ४७.; ३. २४.

मण्णं ३. ३०.

मण्णरो ७. म.

मण्णिआ ७. म.

मण्णं ७. म.

मण्णे मा. प्राप्र. ९. १६.

मड्डिअं ७. म.  
 मढा २. ४.  
 मणअं स्वा. प्र. ३. ४५.  
 मणस्त्रि शौ. ८. ५.  
 मणहरं ७. म.  
 मणाउ. अप. ११, ६४.  
 मणासिला १. ५१.  
 मणिअं स्वाप्र. ३. ४५.  
 मणोउजं ३. ५.  
 मणोणं ३. ५.  
 मणोरहो २. ३., ७. म.  
 मणंसिणी १. ३३. १. ५२.  
 मणंसिला १. ३३.  
 मणंसी १. ५२.  
 मण्डलभगं १. ४३.  
 मण्डलभगो १. ४३.  
 मंडुक्को ३. ११.  
 मणू ७. म.  
 मतन-परवसो पै. १०. ६.  
 मत् शौ. ८. ४१.  
 मत्तो हेरू. पा. ४. ४७. ; ४. ४७. ;  
 शौ. ४. ४७. शौ. ८. ४४.  
 मधुरीअं पा. १. ६१.  
 मचूसो १. ५१.  
 मन्तिदो शौ. ८. २.  
 मन्तू ७. म.  
 मढभीसा अप. ११. ६४.  
 मम ४. ४७. शौ. ८. ४४.  
 हेरू. पा. ४. ४७. शौ. ४. ४७.  
 ममए ४. ४७.  
 हेरू. पा. ४. ४७.

ममत्तो ४. ४७.  
 हेरू. पा. ४. ४७.  
 ममदुहि ४. ४७.  
 ममम्मि ४. ४७.  
 हेरू. पा. ४. ४७.  
 ममसु हेरू. पा. ४. ४७. ४. ४७.  
 ममाइ ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.  
 ममाण हेरू. पा. ४. ४७.  
 ममाणं हेरू पा. ४. ४७.  
 ममातु पै. १०. २०.  
 ममातो पै. १०. २०.  
 ममादो शौ. ८. ४४. शौ. ४. ४७.  
 ममासुंतो ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.  
 ममाहितो हेरू पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 ममेसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 ममेसुंतो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 ममं ४. ४७.  
 मम्महो ३. २६.  
 मयङ्को पा. २. १.  
 मयणो पा. २. १.  
 मयन्दो ७. म.  
 मयि अप. ४. ४८.  
 मयुरो ७. म.  
 मय्यं मा. ९. ७.  
 मरगअं ७. म.  
 मरलो पा. १. ६१.  
 मरहदं ७. म.  
 मरालो पा. १. ६१.  
 मरिपुवउं अप. ११. ७२.  
 मलिणं ७. म.  
 मरलू ७. म.

मरुलं ( वि. ) ३. ३.  
 मसणं ७. म.  
 मसाणं ७. म.  
 मसिणं ७. म.  
 मस्कली मा. ९. ४.  
 मह हेरू. पा. ४. ४७., शौ. ४. ४७.,  
 ४. ४७., शौ. ८. ४४.  
 महत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 महन्तो ७. म.  
 महन्दो शौ. ८. ३.  
 महग्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 महसु हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 महाण हेरू. पा. ४. ४७.  
 महाणं ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 महारा अप. ११. ६८.  
 महिमा पा. १. ४४.  
 महिवालो २. ९.  
 महिविट्टं ( वि. ) १. ८२.  
 महिहि अप. ११. २४.  
 महु ४. ४१., अप. ११. ४०. अप.  
 ४. ४८.  
 महुं ४. ४१.  
 महुभरो २. ३.  
 महुअं ७. म.  
 महुइं १. १०.  
 महुरिअ ७. म.  
 महुव ३. ४५.  
 महुअं ७. म.  
 महुइं ४. ४१.  
 महुइं ४. ४१.  
 महुओ ८. ४४.

महुणि ४. ४१.  
 महिसु हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 महो २. ३.  
 महं हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.  
 मद्य ४. ४७., अप. ४. ४८.  
 मद्यत्तो ४. ४७.  
 मद्याणं ४. ४७.  
 मद्य अप. ४. ४८.  
 मद्यलो ७. म.  
 माअ ४. ३७.  
 माअं ४. ३७.  
 माआ ७. ३७.  
 माआअ ४. ३७.  
 माआइ ४. ३७.  
 माआण ४. ३७.  
 माआणं ४. ३७.  
 माआदो ४. ३७.  
 माआसु ४. ३७.  
 माआसुं ४. ३७.  
 माआसुतो ४. ३७.  
 माआहितो ४. ४७.  
 माइणो ( वि. ) १. ८५.  
 माइ-मण्डल १. ८५.  
 माउअं ३. १२. ७. म.  
 माउआ १. ८३.  
 माउक्कं ३. १२.; ७. म.  
 माउच्चा ७. म.  
 माउत्तणं ७. म.  
 माउ मण्डलं १. ८५., १. ८४.  
 माउ-सिआ ७. म.  
 माउहरं १. ८५., १. ८४.

माऊ १. ८३.  
 माए ४. ३७.  
 माएहि ४. ३७.  
 माएहिँ ४. ३७.  
 माएहिँ ४. ३७.  
 माज्जारो पा. १. ६१.  
 माणुसो २. ८.  
 माणंसिणी १. ५२.  
 माणंसी १. ५२.  
 माथत्रो पै. प्राप्र. १०. २१.  
 मादु १. ८३.  
 मादरं शौ. ८. ४४.  
 मादुहरं १. ८५.; १. ८४.  
 मादुमण्डलं १. ८४.; १. ८५.  
 मारणउ अप. ११. ७५.  
 मारणओ अप. ११. ७५.  
 मारि अप. ११. ७३.  
 मारुदिणा शौ. ८. २.  
 माला ४. ३३.  
 मालाउ ४. ३३.  
 मालाओ शौ. ८. ४४.  
 मालाओ ४. ३३.  
 माशे मा. प्राण. ९. १६.  
 मामलं १. ३६.  
 मास १. ३६.  
 माहवीलदा २. ३.  
 माहप्पो १. ४१.  
 माहप्पं १. ४१.  
 माहो २. ३.  
 मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.  
 मिअंको ७. म.

मिअंगो ७. म.  
 मिभाअदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 मिइको पा. १. ५४.  
 मिओ शौ. ८. ४७.  
 मिच्चू ७. म.  
 मिच्छा ३. २२.  
 मिट्ठं १. ८१.  
 मिमे ४. ४७.  
 मिमं हेरू. पा. ४. ४७.  
 मिरिअं १. ५४.  
 मिलानं ३. ३२.  
 मि लउ अप. ( वि. ) ११. ४.  
 मिलिच्छो १. ६७.  
 भिसात्तिअ स्वाप्र. ३. ४५.  
 मिहुणं २. ३.  
 मी ४. ४७.  
 मुअको ( वि. ) १. ८३.  
 मुहंगो १. ५४.; ७. म.  
 मुक्को ३. १२.  
 मुक्कं ७. म.  
 मुक्खो ७. म.  
 मुग्गरो ३. १.  
 मुग्गो ३. १.  
 मुज्जाय ( अ ) णो १. ९२.  
 मुट्टो ३. १८.  
 मुडाल १. ८३.  
 मडटा ७. म.  
 मुढे १. ३३.  
 मुंडा १. ३३.  
 मुत्ताहलं २. ११.  
 मुत्ती ( वि. ) ३. २१.



सुत्तो ( वि. ) ३. २१.  
 सुत्तं ३. १.; ७. म.  
 सुद्धा ७. म.  
 सुद्धाअ ४. ३४.  
 सुद्धाइ ४. ३४.  
 सुद्धाए ४. ३४. ( वि. ) १. ९.  
 सुद्धं ३. १.  
 सुनिदो १. ६७.  
 सुखो ७. म.  
 सुसलं ७. म.  
 सुसा ७. म.  
 सुसावाभा ७. म.  
 सुहत्तो ( वि. ) ३. २१.  
 सुहं २. ३.  
 मूओ ३. १२.  
 मूसओ ७. म.  
 मूसलं ७. म.  
 मूसा ७. म.  
 मे शौ. ८. ४४. ४. ४७.; हेरू. पा.  
 ४७. शौ. ४. ४७.  
 मेखो पै. प्राप्र. २. २१.  
 मेढी ७. म.  
 मेरा ७. म.  
 मेळि. अप. ११. ४६.  
 मेहला २. ३.  
 मेहो २. ३.  
 मेशे मा. ( वि. ) ४. ५.  
 मा. ८. २.  
 मो हेरू. पा. ४. ४७.  
 मोच्छ ६. ९.  
 मोण्डं १. ७९.

मोडं ( वि. ) २. ४.  
 मोत्तव्वं ६. ३३.  
 मोत्ता १. ७९.  
 मोत्ती शौ. ८. ४४.  
 मोत्तुण ६. २९.  
 मोत्तुं ३. ३६.; ६. ३३.  
 मोत्तूण ६. ३३.  
 मोरो ७. म.  
 मोत्तलं ७. म.  
 मोसा. ७. म.  
 मोहो ७. म.  
 मं हेरू. पा. ४. ४७.; ४. ४७.  
 शौ. ४. ४७.; अप. ११. ६४.  
 मंजारो १. ३३.  
 मंसलं १. ३६.  
 मंसुल्लो ३. ४४.  
 मंसं १. ६३., शौ. ८. ४४., १. ३६.  
 मंस्सु ७. म.  
 म्मि हेरू. पा. ४. ४७.,  
 ४. ४७.  
 म्हा ६. ६.  
 मिह ६. ६.  
 म्हो ६. ६.  
 य  
 यणवदे मा. ९. ७.  
 यदि मा. ९. ७.  
 यंति १. ५०.  
 यस्के मा. पा. ९. ११.  
 यस्के मा. ९. ११.  
 यातिसो पै. १०. १६.  
 यादि मा. ९. ७.

घायदे मा. प्राप्र. ९. १६.  
युग्हातिसो पै. १०. १६.  
यवेव शौ. ८. २२.

र

रभ्रं ( त्रि. ) २. ६.  
रभ्रसो २. १.  
रभ्रदं २. १.; २. ६.  
रभ्रणं ७. २. २. १.  
रभ्रो पा. ३. ६.  
रच्छा ३. २२.  
रब्जा पै. प्राप्र. १०. २१.  
रब्जो पै. प्राप्र. १०. २१.  
रब्जा पै. १०. ३.  
रब्जो पै. १०. ३.  
रणं ७. ६.  
रणगा हेरू. ४. ४१.; ४. ४१.  
रणगो ४. ४१.  
रणगो हेरू. ४. ४१.  
रणं ७. २.  
रत्ती ७. २.; ३. ३.  
रत्तं ७. २.  
रन्ता शौ. ८. १३.  
रन्दूण शौ. ८. १३.  
रमणिलज्जं २. १५.  
रमणीयं २. १५.  
रमति पै. १०. १८.  
रमते पै. १०. १८.  
रमदि शौ. ८. १६.  
रमदे शौ. ८. १६.  
रमिभ ३. ३६.

रमित्य शौ. ८. १३.  
रमित्यते पं. १०. १५.  
रयणीअरो १. १३.  
रसा-अलं २. १.  
रसा-यलं पा. २. १.  
रसालो ३. ४४.  
रस्सी ३. २. ( त्रि. ) ३. २९.  
राभ-उलं १. १५., ७. २.  
राभफेरं ७. २.  
राभम्मि ४. ४१.  
राभस्स ४. ४१.  
राअं ४. ४१.  
राभा ४. ४१.  
राभाणो ४. ४१.  
राभाणं ४. ४१.  
राभाण्ण ४. ४१.  
राभाद्द ४. ४१.  
राभादो ४. ४१.  
राभाहितो ४. ४१.  
राइकं ( त्रि. ) ३. ३७., ७. २.  
राइणा हेरू. ४. ४१., ४. ४१.  
राइणो ४. ४१. हेरू. ५. ४१.  
राइणं ४. ४१. हेरू. ४. ४१.  
राइत्तो हेरू. ४. ४१.  
राइम्मि हेरू. ४. ४१., ४. ४१.  
राइहितो ४. ४१.  
राई ७. २.  
राईण हेरू. ४. ४१.  
राईणं हेरू. ४. ४१.  
राईसु हेरू. ४. ४१.  
राईसुं हेरू. ४. ४१.

राईहि हेरू. ४. ४१.  
 राईहि हेरू. ४. ४१.  
 राईहि हेरू. ४. ४१.  
 राउलं १. १५. ७. ४.  
 राए ४. ४१.  
 राएण हेरू. ४. ४१.  
 राएण हेरू. ४. ४१.  
 राएसु हेरू. ४. ४१., ४. ४१.  
 राएसु हेरू. ४. ४१., ४. ४१.  
 राएहि हेरू. ४. ४१.  
 राएहि हेरू. ४. ४१.  
 राएहि हेरू. ४. ४१., ४. ४१.  
 राओ ( वि. ) १. ६२.  
 राचा पै. प्राप्र. १०. २१.  
 राचिजा पै. १०. ३.  
 राचिजो पै. १०. ३.  
 राचिना पै. प्राप्र. १०. २१.  
 राचिनो पै. प्राप्र. १०. २१.  
 राजपधो शौ. ८. ९.  
 राजपहो शौ. ८. ९.  
 राय हेरू. ४. ४१.  
 रायकं ७. ४.  
 रायत्तो हेरू. ४. ४१.  
 रायग्मि हेरू. ४. ४१.  
 रायस्स हेरू. ४. ४१.  
 राया हेरू. ४. ४१.  
 रायाण हेरू. ४. ४१.  
 रायाणो हेरू. ४. ४१.  
 रायाणं हेरू. ४. ४१.  
 राये हेरू. ४. ४१.  
 रायं हेरू. ४. ४१., शौ. ८. ६.

राहा २. ३.  
 रिऊ २. १., १. ८६., ( वि. ) २. ९.,  
 ७. ४.  
 रिखो ७. ४.  
 रिच्छो ७. ४.  
 रिज्जू १. ८६., ७. ४.  
 रिड्ढी ७. ४.  
 रिणं १. ८६., ७. ४.  
 रिद्धी १. ८६., ७. ४.  
 रिसहो १. ८६., ७. ४.  
 रिसी १. ८६., ७. ४.  
 रुअसि अय. ११. ४२.  
 रुअहि अय. ११. ४२.  
 रुक्खा १. ४३.  
 रुक्खाइं १. ४३.  
 रुक्खो शौ. ८. ४४., ७. ४.  
 रुक्खे मा. ( वि. ) ४. ५.  
 रुक्मी ( वि. ) ३. १६.  
 रुहो ३. ४.  
 रुद्रो ३. ५.  
 रुणं ७. ४.  
 रुप्पिणी ३. १६.  
 रुप्पी पा. ३. ६.  
 रुप्पं ३. १६.  
 रुवइ ६. ३१.  
 रुसइ ६. ३०.  
 रेभो २. ११.  
 रेसि अय. ११. ६४.  
 रेसिं अय. ११. ६४.  
 रोअदि २. १.  
 रोचिरो ३. ३५.

रोच्छं ६. ९.  
 रोत्तव्वं ६. ३३.  
 रोत्तं ६. ३३.  
 रोत्तण ६. ३३.  
 रोददि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 रोवह् ६. ३१.  
 रोवति शौ. प्रास. ८. ४५.

ल

लक्षणं ७. ल.  
 लक्ष्णेहि अप. ११. ७.  
 लक्षणं ३. १३.  
 लग्ग ६. ३८.  
 लग्गं ३. २.  
 लङ्घणं १. ३७.  
 लघणं १. ३७.  
 लज्जिरो ३. ३५.  
 लब्धुणं १. ३७.  
 लट्ठी ३. १८.; ७. ल.  
 लदत्तो हेरु. ४. ३७.  
 लदार्हितो ४. ३७.  
 लदा ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदाऊ ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदाह् ७. ३७. हेरु. ४. ३७.  
 लदाउ ४. ३७. हेरु. ४. ३७.  
 लदाए ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदाओ ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदाण ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदाणं ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदादो ४. ३७.  
 लदासु ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदासुं ४. ३७., हेरु. ४. ३७.

लदासुंनो हेरु. ४. ३७.  
 लदाहि ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदाहिं ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदाहिं ४. ३७., हेरु. ४. ३७.  
 लदान्तो हेरु. ४. ३७.  
 लदं ४. ३७. हेरु. ४. ३७.  
 लपति प. १०. १८.  
 लपते पं. १०. १८.  
 लवणं शौ. ८. ४४.  
 लस्कशो मा. पा. ९. १६.  
 मा. प्राप्र. ९. १६.  
 लस्कशो मा. ९. ११.  
 लहहि अप. ११. ४२.  
 लहहुं अप. ११. ४१.  
 लहु २. ३.  
 लहुअं ७. ल.  
 लहुई ३. ३३.  
 लहुवी ३. ३३.  
 लाअणं २. १.  
 लाऊ ७. ल.  
 लाङ्गलो ७. ल.  
 लांगलो ७. ल.  
 लायणं पा. २. १.  
 लावण्यं शौ. ८. ४४.  
 लासं ३. ८.  
 लाहअं २. ३.  
 लाहलो ७. ल.  
 लिच्छह् ३. २२.  
 लिम्बो ७. ल.  
 लिह अप. ११. १.  
 लिहह् २. ३.

लिहीभदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 लीह अप. ११. १.  
 लुङ्को ७. ल.  
 लुगो ७. ल., ६. ३९.  
 लुणइ ६, २२.  
 लुम्पइ ( वि. ) २. ३.  
 लेइ ( वि. ) ६. ३१.  
 लेविणु अप ११. ७३., अप. ११. ७४.  
 लेह अप. ११. १.  
 लोभणो १. ४१., पा. १. ४१.  
 °लोभणो पा. १. ४१.  
 लोभण १. ४१.  
 लोभो २. १.  
 लोणं ७. ल.  
 लोद्धो १. ७९.  
 लोहिभाभइ ६. १.  
 लोहिभाइ ६. १.

## व

वभणो १. ४१.  
 वभणं २. १.; २. ८., १. ४१.,  
 वभरं शौ. ८. ४४.  
 वभं शौ. ८. ४४.; ४. ४७. शौ. ८. ४०.  
 वहभभो १. ८९.  
 वहभालिभो १. ९०.  
 वहभालीभो १. ८९.  
 वहप्सां १. ८९.  
 वहपहो १. ८९.  
 वहरं ७. व.  
 वहरं १. ९०.  
 वहसवणो १. ९०.

वहसालो १. ८९.  
 वहसाहो १. ८९.  
 वहसिभो १. ९०.  
 वहसंपाभणो १. ९०.  
 वहस्साणरो १. ८९.  
 वक्कलं ३. ३.  
 वक्खाणं ३. ७.  
 वग्गा १. २.  
 वग्गो ३. ३. ( वि. ) २. १.  
 वंक १. ३३.  
 वच्छहु अप. ११. ८.  
 वच्छहे ११. ८.  
 वच्छाभो ( वि. ) १. ९.  
 वच्छा चलन्ति १. ६.  
 वच्छेण १. ३४.  
 वच्छेणं १. ३४.  
 वच्छेसु १. ३४.  
 वच्छेसुं १. ३४.  
 वच्छं १. २८.  
 वच्छो ३. २२., ७. व.  
 वज्जं ३. २३., ७. व.  
 वञ्जणीयं १. ३.  
 वंचणं १. ३२.  
 वज्जिअं १. ३७.  
 वंजिअं १. ३७.  
 वञ्जदि मा. ९. ९.  
 वटिशं पै. प्राप्र. १०. ३१.  
 वट्टी ३. २१.  
 वट्टो ७. व.  
 वट्ट ७. व.  
 वहभागलो २. १.

वहिसं ( वि. ) २. ४.  
 वहड्यरं ७. व.  
 वहड्ही १. ८०.  
 वहड अप. ११. ६४.  
 वणम्मि १. २९.  
 वणं ४. ३८.  
 वणंमि १. २९.  
 वणस्सई ७. व.  
 वणाणि शौ. ८. ३२.  
 वणिदा ७. व.  
 वणही ३. २८.  
 वत्ता ३. २१.  
 वत्तिभा ( वि. ) ३. २१.  
 वत्तिओ ( वि. ) ३. २१.  
 वदणं शौ. ( वि. ) पा. २. १.  
 वनप्फई ७. व.  
 वन्दामि शौ. ८. ४२.  
 वन्दित्ता ( वि. ) ३. ३६.  
 वन्दित्तु ( वि. ) ३. ३६.  
 वन्दं ७. व.  
 वळफो शौ. ८. ४४.  
 वग्फह १. ३७.  
 वंफह १. ३७.  
 वग्भचेरं ७. व.  
 वग्महो ७. व.  
 वग्मिओ १. ७३.  
 वग्मो १. ३९.  
 वग्हचेरं ३. ९.; ७. व.  
 वयणा पा. १. ४१.  
 वयणाई पा. १. ४१.  
 वयं शौ. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.,  
 ( वि. ) १. ४०.

वयंसिअद्दु अप. ११. २३.  
 वयंसो १. ३३.  
 वरिअं ७. व.  
 वरिस ( वि. ) ६. २८.  
 वलभा १. ६१.  
 वलयाणलो पा. २. १.  
 वलवामुहं २. ४.  
 वलही २. ४.  
 वलाभा १. ६१.  
 वलाहुं अप. ११. ४५.  
 वलिसं ( वि. ) २. ४.  
 वल्ला पा. १. ५७., ७. व.  
 वसही ७. व.  
 वसहो १. ८०.; ७. व.  
 वसुधाति पै. १०. १७.  
 वसो ( वि. ) १. ८१.  
 वहप्फई ७. व.  
 वहस्सई ७. व.  
 वहिरो २. ३.  
 वहिञ्जउ अप. ११. ६४.  
 वहीअदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 वहु ४. ३७.  
 वहुए शौ. ८. ४४.  
 वहुमुहं १. ८.  
 वहुहुत्तं ३. ४३.  
 वहुं ४. ३७.  
 वहू ४. ३३., ४. ३७.  
 वहूअ ४. ३७.  
 वहूआ ४. ३७.  
 वहूई ४. ३७.  
 वहूव ४. ३३.

- वहूपृ ४. ३७.  
 वहूओ ४. ३३., ४. ३७., शौ. ८. ४४.  
 वहूण ४. ३७.  
 वहूणं ४. ३७.  
 वहूदो ४. ३७.  
 वहूमुह १. ८.  
 वहूसु ४. ३७.  
 वहूसुं ४. ३७.  
 वहूसुंतो ४. ३७.  
 वहूहिं ४. ३७.  
 वहूहिं ४. ३७.  
 वहूहिं ४. ३७.  
 वहूहितो ४. ३७.  
 वहैडभडो ७. व.  
 वह्यचरिभं ७. व.  
 वाभरणं ७. व.  
 वाभा १. २०.  
 वाभ्राच्छलं पा. १. २०.  
 वाभा. विहवो पा. १. २०.  
 वाउणा २. १.  
 वाउग्मि शौ. ८. ४४.  
 वाउलो ३. १२., ७. व.  
 वाउल्लो ३. १२.  
 वाणारसी ७. व.  
 वाप्पो ७. व.  
 वारणं ७. व.  
 वारं ( वि० ) ३. ३., ७. व.  
 वावडो शौ. ८. २८., ७. व.  
 वास इसी १. ९.  
 वासा १. ५१.  
 वासेण अण. ११. ५२.
- वासेसी १. ९.  
 वाहइ २. ३.  
 वाहरिजइ ६. २६.  
 वाहिओ ३. १२.  
 वाहित्तो ३. १२.  
 वाहित्तं १. ८१.  
 वाहिप्पइ ६. २६.  
 वाहिरं ७. व.  
 घाहिं ७. व.  
 वाहो २. ३.; ७. व.  
 विअ शौ. ८. ३९.; १. १०.  
 विअहलं ७. व.  
 विअड्डी ७. व.  
 विअड्ढो ७. व.  
 विअणा ७. व.  
 विअणो पा. १. ५४.  
 विअणं १. ५४,  
 विअय. वग्मं शौ. ८. ६.  
 वि भवयासो १. १०.  
 विआणं २. १.  
 विआरिज्जो ३. ४४.  
 विआरुज्जो ३. ४४.  
 विउणो ( वि. ) ३. ३.  
 विउदं २. ६.  
 विसलं २. १.  
 विउस्सग्गो ७. व.  
 विओओ २. १.  
 विओहो २. १.  
 विकासरो १. ५१.  
 विक्कओ १. २.  
 विक्कवो ३. ३.

विच्चि अप. ११. ६४.  
 विच्छद्दो ७. व.  
 विच्छुओ ७. व.  
 विच्छोङ्ग-गरु अप. ११. ४९.  
 विच्छोडवि अप. ११. ७३.  
 विज्जणं ( वि. ) २. १.  
 विज्जला स्वाप्र. ३. ४५.  
 विज्जा ३. २३.  
 विज्जू ( वि. ) १. २०.  
 विज्जं ३. २०.  
 विञ्चुलो १. ८१.  
 विञ्छिओ ७. व.  
 विञ्छुओ ७. व.  
 विज्जातो पै. प्राप्र. १०. २१.  
 विज्जो शौ. ८. ३०.  
 विज्जानं पै. १०. २.  
 विट्ठाल अप. ११. ६४.  
 विट्ठी ७. व.  
 विट्ठीए अप. ११. २.  
 विट्ठं ७. व.  
 विडवो २. ४.  
 विड्ढा ३. ११.  
 विड्ढी १. ८१.  
 विडत्तच्छरसं पा. १. २५.  
 विडत्तं ३. ३९.  
 विडप्पह् ६. २६.  
 विडविज्जह् ६. २६.  
 विणि ४. ४८.  
 विणु अप ११. ६४.  
 विण्ठ ७. व.  
 विण्णाणं ( वि. ) ३. ५., ३२४.

विण्णो शौ. ८. ३०.  
 विण्हू १. ६८.; ३. २८.  
 वित्तिण्हो १. ८१.  
 वित्ती १. ८१.  
 वित्तं १. ८१.  
 विट्ठुरो ( वि. ) २. १.  
 विट्ठाओ ( वि. ) १. ७५.  
 विण्णस्स देहि १. ६.  
 विग्भलो ७. व.  
 विमृओ ३. २९.  
 विथले मा. प्राप्र. ९. १६.  
 विथयाहले मा. ९. ७.  
 विरसमालक्खिमोएण्हि १. १२.  
 विरहग्गी १. ६७.  
 विलम्बु अप. ११. ४६.  
 विलथा ७. व.  
 विलाशे मा. प्राप्र. ९. १६.  
 विलासणीओ अप. ११. २१.  
 विलिअं १. ७३. १. ५४.  
 विल्लं १. ६८.  
 विस्सहक्को ६. ३९.  
 विवह् अप. ११. ५३.  
 विसडो ७. व.  
 विसमह्ओ १. ५५.  
 विसमओ १. ५५.  
 विसमो ७. व. पै. १०. ८.  
 विमानो पै. १०. ८.  
 विसी १. ८१.  
 विसो ( वि. ) १. ८१.  
 विसं ( वि. ) २. १३.  
 विसंट्ठुकं ७. व.



विस्नुं मा. ९. ४  
 विस्मये मा. ९. ४.  
 विहृप्फई ७. व.  
 विहृप्फदी शौ. ८. ४४  
 विहृलो ७. व., ३. ९.  
 विहृसन्नि ६. १३.  
 विहा १. ८१.  
 विहि ४. ४८.  
 विहिओ ३. १२.  
 विहित्तो ३. १२.  
 विही १. ४४.  
 विहीणो ७. व.  
 विहूणो ७. व.  
 विहेह् ( वि. ) ६. ३१.  
 विज्ज्ञो ३. २४.  
 विज्ञो पा. ३. ८.  
 विहिओ १. ८१.  
 वीण अप. ११. १.  
 वीरिअं ७. व.  
 वीसथो ७. व.  
 वीलहो ६. ३९.  
 वीसभो ७. व.  
 वीसा १. ३५. ७. व.  
 वीसामो १. ५१.  
 वीसमह् १. ५१.  
 वीससह् १. ५१.  
 वीसासो १. ५१.  
 वीसुं १. ३१.; १. ५१., ७. व.  
 वुच्चह् ( वि. ) ६. १५.  
 वुच्चदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 वुजह् अप. ११. ४८.

वुजेष्पि अप. ११. ४८.  
 वुजेष्पिणु अप. ११. ४८.  
 वुहं ७. व.  
 वुहो ७. व.  
 वुह्दी ७. व.  
 वुह्दो १. ८३., ७. व.  
 वुत्तउं अव. ११. ६४.  
 वुत्ताओ १. ८३.  
 वुन्दारभा ७. व.  
 वुंदावणं १. ८३.  
 वुंद् १. ८३.  
 वुन्दं ७. व.  
 वुन्नउ अप. ११. ६४.  
 वुहृप्फह् ७. व.  
 वुहृस्सई ७. व.  
 वेअणा ७. व. शौ. ८. ४४.  
 वेआलिओ १. ९०.  
 वेह्लं ७. व.  
 वेच्छं ६. ९.  
 वेज्जं ३. २३.  
 वेडिसो १. ५४.; ७. व., पा. १. ५४.  
 वेण अप. ११. १.  
 वेणि ४. ४८.  
 वेण्टं ७. व.  
 वेणणं ४. ४८.  
 वेण्हू १. ६८.  
 वेदसो शौ. ८. ४४.  
 वेरुलिअं ७. व.  
 वेरं १. ९०.  
 वेल् ७. व.  
 वेल्लं १. ६८.

वेङ्गो पा. १. ५७; ७. व., १. ५७.

वेविरो ३. ३५.

वेसिओ १. ९०.

वेसवणो १. ९०. वेसु ४. ४८.

वेसु ४. ४८.

वेसंपाअणो १. ९०.

वेहृष्वं १. ८८,

वेहितो ४. ४८.

वेकुठो ( वि. ) २. ४.

वो हेरू. पा. ४. ४७., शौ. ८. ४४.

वोक्कन्तं १. ७९.

वोपटं ७. व.

वोभी ७. व.

वोरं ७. व.

वोलीणो ६. ३९.

वोसट्टो ६. ३९.

वोसिरणं ७. व.

वंसिओ १. ६३.

वह्यइ ६. २६.

व्रासु० अण. ११. ५२.

व्व शौ. ८. ४५.

व्वावडो शौ. ( वि. ) पा. २. १.

श

शब्बल्ले मा. ९. ८.

शस्तवाहे मा. ९. ६.

शालसे मा. ९. ३.

शिआलके मा. प्राप्र. ९. १६.

शिआले मा. प्राप्र. ९. १६.

शुस्क-दालु मा. ९. ४.

शुस्टु कदं मा. ९. ५.

शुस्तिदे मा. ९. ६. हेरू. पा. ४. ४६.

स

सअडं ७. स.

सअडं २. १.

सअणं २. ८.

सइ १. ६४., १. १.

सई २. १.

सउण ( वि. ) २. १.

सउणिहं अण. ११. १२.

सउत्तले शौ. ( वि. ) ८. २.

सउरा १. ९३.

सउहं १. ९३.

सक ६. ३८.

सकअं १. ३५.

सकदि ( वि. ) शौ. प्रास. ८. ४५.

सकारो १. ३५.

सक्कुणादि शौ., प्रास. ८. ४५.

सक्को १. २., ७. स.

सक्खिणो ७. स.

सक्खं १. ३१.

सक्का १. १.

सक्को १. १., १. ३७.

संकतो ३. ८.

संकरो ( वि. ) २. १.

संखो १. ३७., ( वि. ) २. ३.

संगच्छं ६. ९.

संगमो ( वि. ) २. १.

संगामो पै. प्राप्र. १०. २१.

संगं ७. स.

संघो ( वि. ) २. ३.

संचावं ( वि. ) २. १.

सच्चं ३. १९.

सज्जणो ( वि. ) १. १६.  
 सज्जो ३. १.  
 सज्जसं ७. स.  
 सज्जाओ ३. २४.  
 सज्जो ३. ३०.  
 सन्धा १. ३७.  
 सञ्जा पै. १०. २.  
 सङ्दल अप. ११. ६४.  
 सढा ७. स.  
 सढिलं ७. स.  
 सढो २. ४.  
 सणिधरो ७. स.  
 सणिधं स्वाप्र. ३. ४५.  
 सणिद्धं ७. स.  
 सण्हो १. ३७.  
 संढो १. ३७.  
 सण्णा ३. ५.  
 सण्हं ३. ३.; ३. ३८., ७. स.  
 सतनं पै. १०. ६.  
 सत्तरह ७. स.  
 सत्तरी ७. स.  
 सत्तार्वीसा ( वि. ) १. २., १. ७.  
 सत्तुधं १. ३५.  
 सत्तुधो शौ. प्रास. ८. ४५.  
 सत्तो ७. स.  
 सद्दहणं ६. ३१  
 सद्दहाणं ६. ३१.  
 सद्दो ३. ३.  
 सद्दा १. १७.  
 सनानं पै., प्राप्र. १०. २१.  
 पै. ( वि. ) १०. १३.  
 सनेहो पै., प्राप्र. १०. २१., पै.  
 ( वि. ) १०. १३.

सन्तो ( वि. ) १. ४६.  
 सण्णओ ३. १.  
 सण्णं ३. २७.  
 सबधु ११. ४९.  
 सभरी २. ११.  
 सभलउ अप. ११. ४९.  
 सभिवखू ( वि. ) १. १६.  
 समत्तं ७. स.; ( वि. ) ३. २५.  
 समत्थो ७. स.  
 समरो ७. स.  
 समाणु अप. ११. ६४.  
 समिद्धी १. ५२.; १. ८१.  
 समुद्धो ३. ४.  
 समुद्धो ३. ४.  
 समुहं १. ३६.  
 ०सम्मं पा. १. ४०. ( वि. ) १. ४० ;  
 १. ३१.  
 सम्मद्धो शौ. ८. ४४.  
 सम्महो ३. २९.  
 सयढं पा. २. १.  
 सयणो ( वि. ) ३. ३४.  
 सरध १. २३.  
 सरधो १. ३८.; पा. १. ३८.; पा.  
 १. २३.  
 सरद्धो पा. १. २३.  
 सरफसं पै., प्राप्र. १०. २१.  
 सररुहं ७. स.  
 सरिया १. २०.  
 सरिवखं शौ. ८. ४४.  
 सरिच्छो १. ८७.; १. ५२.  
 सरिया ( वि. ) १. २०.

सरिसमिमं शौ. ८. २१.  
 सरिसो १. ८७.  
 सरिसणिमं शौ. ८. २१.  
 सरेण पा. १. ३९.  
 सरो १. ३९., ३. २.; पा. ३. २.;  
 ( वि. ) ३. २९.  
 सरोरूहं ७. स.  
 सर्वे ( वि. ) ४. ४४.  
 सलफो पै., प्राप्र. २१.  
 सलाहा ७. स.  
 सलिलं पै. १० ७.  
 सवलो २. १२.  
 सवहुमानं ( वि. ) २. १.  
 सवहो २. ३., २. ९. २. २.  
 सव्वओ १. ४६.  
 सव्वङ्गाउ अप. ११. २०.  
 सव्वजो ( वि. ) १. ५६., ३. ५.  
 सव्वओ पै. प्राप्र. १०. २१.,  
 पै. पा. १५६.  
 सव्वज्जो पै. १०. २.  
 सव्वणू १. ५६, ३. ५.  
 सव्वणो शौ. पा. १. ५६.,  
 शौ. ८. ३१  
 सव्वत्तो ४. ४५.  
 सव्वत्थ ४. ४५.  
 सव्वदो ४. ४५.  
 सव्वग्गि ४. ४५.  
 सव्वशित्वा शौ. ८. ४१.  
 सव्वस्स ४. ४५.  
 सव्वस्सि ४. ४५.  
 सव्वहिं ४. ४५.  
 सव्ववाणं ४. ४५.

सव्वु अप. ११. ३८.  
 सव्वे ४. ४५.  
 सव्वेण ४. ४५.  
 सव्वेसि ४. ४५.  
 सव्वेसु ४. ४५.  
 सव्वेसुं ४. ४५.  
 सव्वेहितो ४. ४५.  
 सव्वो ४. ४५.  
 सव्वं ४. ४५., ( वि. ) ३. ३.  
 सव्वंगिओ ७. स.  
 ससा ४. ३१.  
 ससिमण्डलचन्दिमए अप. ११. २१.  
 ससी पै. १०. ८.  
 सहभारो ( वि. ) २. १.  
 सहकारो ( वि. ) २. १.  
 सहचरो ( वि. ) २. १.  
 सहरी २. ११.  
 सहलं शौ. ८. ४४.  
 सहहिं अप. ११. ४१.  
 सलिलसेअ-संभमुग्गादो ४. ड., पा.  
 १. १५.  
 सहा २. ३.  
 सहावो २. ३.  
 सहिदाणि मा. प्राप्र. ९. १६.  
 सही २. ३.; ४. ३३.  
 सहीउ ४. ३३.  
 सहीओ ४. ३३.  
 सहुं अप. ११. ६४.  
 सहेंउ अप. ११. ७२.  
 सा ४. ४७., ७. स.  
 साओ २. १.  
 साणो ७. स.

सामभो ७. स.  
 सामच्छं ७. स.  
 सामत्थं ७. स.  
 सामला अप. ११. २.  
 सामिद्धी १. ५२.  
 सारंगं ७. स.  
 सारिच्छो १. ५२.  
 सालवाहनो ७. स.  
 सालाहणो ( वि. ) १. १३.  
 साओ २. २.; २. ९.  
 सासाभसि शौ. ८. ४२.  
 सासं १. ५१.  
 साहणा ४. २२.  
 साहणी ४. २८.  
 साहु अप. ११. ३८.  
 साहू २. ३.  
 सि ६. ६.  
 सिआ ७. स.  
 सिगारो १. ८१.  
 सिगं ७. स.  
 सिघो १. ३६.; २. २०., ७. स.  
 सिट्टी १. ८१., ३. १८.  
 सिट्टं १. ८१.  
 सिटिलं ७. स.  
 सिणद्धो ३. १.  
 सिणिद्धं ७. स.  
 सिण्णं ७. स.  
 सिस्थं ३. १.  
 सिनातं पै. १०. १३.  
 सिदूरं १. ६८.  
 सिधवं ७. स.  
 सिप्पह ६. २६.

सिप्पी ७. स.  
 सिभा २. ११.  
 सिमिणो ७. स.  
 सिथालो १. ८१.  
 सिरइ ६. ३७.  
 सिर विभजा ७. स.  
 सिरिमंतो ( वि. ) ३. ४४.  
 सिरिसो १. ७३.  
 सिरोवेभजा ७. स.  
 सिरं १. १६., १. ४०. पा. १. ४०.  
 सिलिद्धं ३. ३२.  
 सिलोभो ३. ३२.  
 सित्रिणो १. ५४., पा. १. ५४., ७. स.  
 सिं ४. ४६., ४. ४७.  
 सिंहदत्तो ७. स.  
 सिंहराभो ७. स.  
 सीभरो ७. स.  
 सीभाणं ७. स.  
 सीउभाण ३. ३६.  
 सीभरो ७. स.  
 सीसइ ६. ३०.  
 सीसो १. ५१.  
 सीसं पा. ३. ८.  
 सीहरो ७. स.  
 सीहो १. ३६.; २. २०., ७. स.  
 सुभणस्सु अप. ११. १०.  
 सुभदि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 सुभादि शौ. प्रास. ८. ४५.  
 सुहदी २. ६.  
 सुउमालो ७. स.  
 सुउरिसो ( वि. ) १. १३.; २. १.  
 सुकढं आ. ७. स.

सुकिउ अफ. ११. १.  
 सुकिदु अफ. ११. १.  
 सुकुमालो ७. स.  
 सुकुसुमं ( वि. ) २. १.  
 सुकृदु अफ. ११. १.  
 सुक्कपक्खो ( वि. ) ३. ३२.  
 सुक्कं ७. स.  
 सुगदो ( वि. ) २. १.  
 सुगन्धत्तणं १. ९२.  
 सुघिं अफ. ११. ४९.  
 सुङ्गं ७. स.  
 सुज्जो पै. ( वि. ) १०. १३.  
 सुणाउ ६. १४.  
 सुणो १. ९२.  
 सुण्हा ७. स.  
 सुण्हं ७. स.  
 सुतरं ( वि. ) २. १.  
 सुतारं ( वि. ) पा. २. १.  
 सुत्तं ३. १.  
 सुत्तसा पै. ( वि. ) १०. १३.  
 सुन्दरिष्णं १. ९२.  
 सुन्देरं पा. १. ५७., १. ९२., १. ५७.  
 सुन्देर ३. ९.  
 सुप्पणहा ४. २९.  
 सुप्पणही ४. २९.  
 सुमणाण ( वि. ) पा. १. ४०.  
 सुमणं ( वि. ) १. ४०.  
 सुमरदि दौ. ८. ३७.  
 सुमरहि अफ. ११. ४६.  
 सुमरि अफ. ११. ४६.  
 सुमिणो भा. पा. १. ५४.

सुय्यो दौ. ८. ८.  
 सुरगधो ( वि. ) ३. ३३.  
 सुवह् १. ५९.  
 सुवओ ७. स.  
 सुवण्णरह अफ. ११. २.  
 सुवणिओ १. ९२.  
 सुवे कअं ३. ३४.  
 सुवे जना ३. ३४.  
 सुसा ७. स.  
 सुसाणं ७. स.  
 सुहवो ७. स.  
 सुइमं आ. ७. स.  
 सुहिआ जो. ८. ५.  
 सुहुमं आ. ( वि. ) ३. ३३.  
 सूअअं २. १.  
 सूआसो ७. स.  
 सूई २. १.  
 सुरिओ ७. स.  
 सुरिसो ( वि. ) १. १३.  
 सूहधो ७. स.  
 से ४. ४६. ; ४. ४७., शौ.पा. ४. ४६.  
 सेच्चं १. ८८.  
 सेज्जा १. ५७. ; पा. १. ५९ ; ३. २३.  
 सेण्णं ७. स.  
 सेत्तं १. ८८.  
 सेदूरं १. ६८.  
 सेभालिआ २. ११.  
 सेलो १. ८८.  
 सेलिफा ७. स.  
 सेलिग्ही ७. स.  
 सेवा ३. १२.  
 सेन्वा ३. १२.

सेव्वे ( वि. ) ४. ४४.  
 सेसो २. १९.  
 सेहालिआ २. ११.  
 सो अप. ११. ४., ४. ४६ ; हेरू. पा.  
 ४. ४६.  
 सो भ ( वि. ) २. १.  
 सोभमल्लं १. ७५.  
 सोउभाण ( वि. ) ६. ३६.  
 सोएवा अप. ११. ७२.  
 सोच्चा ३. २०.  
 सोच्छिह् ६. ९.  
 सोच्छिरथा ६. ९.  
 सोच्छिन्ति ६. ९.  
 सोच्छिमि ६. ९.  
 सोच्छिमो ६. ९.  
 सोच्छिसि ६. ९.  
 सोच्छिस्सं ६. ९.  
 सोच्छिहिह् ६. ९.  
 सोच्छिहिभि ६. ९.  
 सोच्छिहिमो ६. ९.  
 सोच्छिहिसि ६. ९.  
 सोच्छ ६. ९.  
 सोडोरं ७. स.  
 सोत्त ३. ११.  
 सोभति पं. १०. ८.  
 सोभनं प. १०. ८.  
 सोमालो ७. स.  
 सोम्मो ३. २.  
 सोरिअं ७. स.  
 सोवह् १. ५९.  
 सोसविअं ६. १९.

सोसिअं ६. १९.  
 सोहह् २. ३.  
 सोहग्गं १. ९१.  
 सोहणं २. ३.  
 सोहिल्लो ३. ४४.  
 सौदामिणी शौ. ( वि. ) पा. २. १.  
 सौअरिअं पा. १. १.  
 संवारो २. २०.  
 संजत्तिओ १. ६३.  
 संजदो २. ६.  
 संजमो ( वि. ) २. १४.  
 संजा ३. ५.  
 संजादो २. ६.  
 संजोओ ( वि. ) २. १४.  
 संज्ञा १. ३७., ३. ८.; पा. ३. ८.  
 संठविअं १. ६१.  
 संठाविअं १. ६१.  
 संगा ३. २४.  
 संदह्वो ( वि. ) ३. १६.  
 संपह् अप. ११. ५३.  
 संपई ( वि. ) २. ५.  
 संपअं ( वि. ) २. ६.  
 संपआ १. २०.  
 संपदि २. ६.  
 सपथ अप. ११. ५३.  
 संपया ( वि. ) १. २०.  
 संफासो १. ५१.  
 संमड्डो ७. अ.  
 संमुहो १. ३२.  
 संमुहं १. ३६.  
 संरुधिज्जह् ६. २६.

संरुव्वह् ६. २६.  
 संवट्टिअं ३. २१.  
 संवत्तओ ( वि. ) ३. २१.  
 संवत्तणं ( वि. ) ३. २१.  
 सवरो ( वि. ) २. १.  
 संवुदी २. ६.  
 संवुदं १. ८३.  
 संसाराए सुखं अहं. पा. १. ६.  
 संसिद्धिओ १. ६३.  
 सहरह् ( वि. ) १. ३७.  
 संहारो २. २०.  
 स्सं शौ. ( वि. ) ८. ३७.

ह्

हआसो ( वि. ) २. ६.  
 हउ अप. ४. ५८.  
 हउं अप. ११. ४०.  
 हके मा. ४. ४८. मा. ( वि. ) ९. १६,  
 मा० प्राप्र. ९. १६.  
 हगे मा. ४. ४८., मा. ८. १६. मा.  
 प्राप्र. ९. १६.  
 हजे शौ. ८. २३.  
 हडक्के मा. प्राप्र. ९. १६.  
 हडडई ७. ४.  
 हणुमन्तो ७. ४.  
 हत्थो ३. ६., ३. २५.  
 हदो २. ६., ४. ५.  
 हम्मह् ६. २४.  
 हरडई ७. ४.  
 हरिअदो ७. ४., ४. ५.  
 हरिआलो  
 हरिज्जर ६. २६.

हरो ७. ४.  
 हलदा ४. ३०., २. १८., ७. ४.  
 हलदी ७. ४. ३०.  
 हलिआरो ७. ४.  
 हलिओ १. ६१.  
 हलिदी ७. ४.  
 हवह् ६. ३१.  
 हवहिह् पा. ६. ८.  
 हविय शौ. ८. १३.  
 हविहिह पा. ६. ८.  
 हशिद मा. प्राप्र. ९. १३.  
 हशिदि मा. प्राप्र. ९. १३.  
 हशिदु मा. प्राप्र. ९. १६.  
 हस ६. ९.  
 हसह् ६. १४., ६. २०.  
 हसउ ६. ९., ६. १४.  
 हसन्नु ६. ९.  
 हसन्तो ६. १२.  
 हसंतो ६. १४.  
 हसमाणा ४. ५९.  
 हसमाणो ६. १२.  
 हसमाणी ४. २९.  
 हसमि ६. ५.  
 हससु ६. ९.  
 हससु ६. ९.  
 हसह ६. ९.  
 हसहि ६. ९.  
 हसामि ६. ९.  
 हसामो ६. ६., ६. ९.  
 हसिअह ६. १५.  
 हसिअव्वं ६. १६.



हसिअं ढ. १७.  
 हसिउं ढ. १६.  
 हसिऊण ढ. १६.  
 हसिज्जइ ढ. १५.; ढ.; ढ. २६.  
 हसितून पै. १०. ११.  
 हसिसु ढ. ३.  
 हसिमो ढ. ३.  
 हसिरो ढ. ३५.  
 हसिस्सामो ढ. ८.  
 हसिस्सं ढ. ८.  
 हसिहामो ढ. ८.  
 हसिहिइ ढ. १६.  
 हसिहित्था ढ. ८.  
 हसेअव्वं ढ. १६.  
 हसिहि ढ. ८.  
 हसिहिनित्त ढ. ८.  
 हसिहिसि ढ. ८.  
 हसेइ ढ. १४.  
 हसेउ ढ. १४.  
 हसइं ढ. १४.  
 हसेउं ढ. १४.  
 हसेऊण ढ. १६.  
 हसेउज्ज ढ. १०.  
 हसेउज्जसु ढ. ९.  
 हसेउज्जह ढ. ९.  
 हसेउजा ढ. १७.  
 हसेउजे ढ. ९.  
 हसेन्तु ढ. ९.  
 हसेतो ढ. १४.  
 हसेसु ढ. ३.  
 हसेमो ढ. ८.

हसेहिइ ढ. १६.  
 हस्ती मा. ९. ४.  
 हस्सइ ढ. २६.  
 हालिथो १. ६१.  
 हिअं १. ८. १. ७. ह., शो. ( वि. )  
 पा. २. १.  
 हिअं ७. ह., १. ८१.  
 हितअकं पं. प्राप्र. १०. २१.  
 हितकं पै. १०. ९.  
 हितयं मा. ( वि. ) पा. २. १.  
 हिषइ ढ. ३१.  
 ही शौ. ४. ४७.  
 हीणो ७. ह.  
 हीमाणहे शौ. ८. २४.  
 हीरइ ढ. २६.  
 हीरो ७. ह.  
 हीही शौ. ८. २७.  
 हुणइ ढ. २२.  
 हुत्तं ३. १२.  
 हुवित्था पा. ६. ८.  
 हुविहिनित्त पा. ६. ८.  
 हुविहिसि पा. ६. ८.  
 हुविहिहि पा. ६. ८.  
 हुवेय्य पै. १०. १९.  
 हुडुरु अप. ११. ६४.  
 हुअं ३. १२.  
 हुणो ७. ह.  
 हु कत्तार ( वि. ) ४. २२.  
 हु कुळ ४. ४१.  
 हु पिअ ४. २२. ; ४. २३.  
 हु पिअर ४. २२. ; ४. २३.

हे पिभरा ४. २३.  
 हे भत्तार ४. २२. ; हेरु. ४. २३.  
 हे भत्तारा ४. २२., हेरु ४. २२.  
 हे भभवं ४. ४२.  
 हे भवं ४. ४२.  
 हे लदाओ ४. ३७.  
 हे लवे ४. ३७. ; हेरु. ४. ३७.  
 हेक्लि अप. ११. ६२.  
 हे मभव ४. ४५.  
 होइ इह १. १४.  
 होज पा. ६. ८.  
 होजइ ६. ११.  
 होजा पा. ६. ८.  
 होजाइ ६. ११.  
 होजहिइ पा. ६. ८.  
 होजाहिइ पा. ६. ८.  
 होतु पं. १०. ६.  
 होत्ता शौ. ८. १३.  
 होदि शौ. ८. ११., शौ. प्राप्., ८. ४५.,  
 शौ. ८. १५.  
 होदूण शौ. ८. १३.  
 होध शौ. ८. १७.  
 होसइ पा. ६. ८., अप. १८. ४७.  
 होस्स पा. ६. ८.  
 होस्साम ६. ८.  
 होस्साम पा. ६. ८.  
 होस्सामि ६. ८., पा. ६. ८.

होस्सासु पा. ६. ८., ६. ८.  
 होस्सामो ६. ८., पा. ६. ८.  
 होहाम ६. ८.  
 होहामि ६. ८. पा. ६. ८.  
 होहासु ६. ८.  
 होहामो ६. ८. पा. ६. ८.  
 होहिइ ६. ८. पा. ६. ८., अप. ११. ४७.  
 होहिओ पा. ६. ८.  
 होहित्थ ६. ८.  
 होहित्था पा. ६. ८.  
 होहिन्ति ६. ८., पा. ६. ८.  
 होहिणं ६. ८.  
 होहिम ६. ८. पा. ६. ८.  
 होहिमि पा. ६. ८.  
 होहिमु ६. ८. पा. ६. ८.  
 होहिमो पा. ६. ८.  
 होहिरे ६. ८.  
 होहिसि ६. ८.  
 होहिस्सा पा. ६. ८.  
 होहिह ६. ८.  
 होहिहि पा. ६. ८.  
 होहिहिसि पा. ६. ८.  
 होहिह पा. ६. ८.  
 होही पा. ६. ८.  
 हं ४. ४७., हेरु. पा. ४. ४७.  
 हंशे आ. ९. ३.  
 ह्यासिअं ६. ३८.

## सहायक ग्रन्थ-सूची

- ( १ ) सिद्धहेमशब्दानुशासन, अष्टम अध्याय ( हेमचन्द्रकृत )
- ( २ ) प्राकृतसर्वस्व
- ( ३ ) प्राकृत-प्रकाश
- ( ४ ) प्राकृतमञ्जरी
- ( ५ ) कुमारपालचरित ( प्राकृतद्वयाश्रय काव्य )
- ( ६ ) रावणवहो ( सेतुबन्ध काव्य )
- ( ७ ) प्राकृत व्याकरण ( हृषीकेश भट्टाचार्य विरचित ) : संस्कृत एवं अंग्रेजी
- ( ८ ) अभिज्ञानशाकुन्तल ( कालिदास विरचित )
- ( ९ ) विक्रमोर्वशीय ( कालिदास विरचित )
- ( १० ) मुद्राराक्षस ( विशाखदत्त विरचित )
- ( ११ ) पाणिनीयाष्टक ( अष्टाध्यायीसूत्रपाठ )
- ( १२ ) गण्डवहो

# संस्कृत साहित्य का इतिहास

( बृहत् संस्करण )

श्री वाचस्पति गैरोला

इस ग्रन्थ को लिखते समय यह ध्यान रखा गया है कि पाठक परम्परा और पूर्वाग्रह के मोह में न पड़कर प्रत्येक विवादग्रस्त प्रश्न का समाधान स्वयं कर सकें। पाठक पर अपने विचार लादने की अपेक्षा उपयुक्त यह समझा गया है कि विभिन्न मतवादों की समीक्षा करके वह स्वयं ही विषय के सही ध्येय को ग्रहण कर सकें। भारतीयता या विदेशीपन का पक्षपात त्याग कर किसी भी विद्वान् के स्वस्थ और सही विचारों को उधार लेने में सङ्कोच नहीं किया गया है। पुस्तक की विषय-सामग्री और उसकी रूप-रेखा का गठन भी ऐसे ढङ्ग से किया गया है, जिससे संस्कृत भाषा की आधारभूत भावभूमि का परिचय प्राप्त होने के साथ-साथ सम-सामयिक परिस्थितियों का भी अध्ययन हो सके। आर्यों के आदि देश एवं आर्य-भाषाओं के उद्भव से लेकर उन्नीसवीं सदी तक की सहस्राब्दियों में संस्कृत-साहित्य की जिन विभिन्न विचार-वीथियों का निर्माण हुआ और भारत के प्राचीन राजवंशों के प्रश्रय से संस्कृत भाषा को जो गति मिली, उसका भी समावेश पुस्तक में देखने को मिलेगा।

मूल्य २०-००

# संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

( परीक्षोपयोगी संस्करण )

श्री वाचस्पति गैरोला

संस्कृत-साहित्य के इतिहास का यह संक्षिप्त संस्करण इस उद्देश्य से लिखा गया है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित इतिहासविषयक ज्ञान के संवर्धनार्थ विद्यार्थीवर्ग का इससे लाभ हो सके। पाठ्यक्रम की दृष्टि से संस्कृत-साहित्य के इतिहास पर राष्ट्रभाषा हिन्दी में जो अनेक अन्य पुस्तकें लिखी गई हैं वे या तो सर्वांगीण नहीं हैं अथवा उनमें छात्रों के उपयोगी इतिहास के वैज्ञानिक अध्ययन की क्रमबद्ध रूपरेखा का अभाव है।

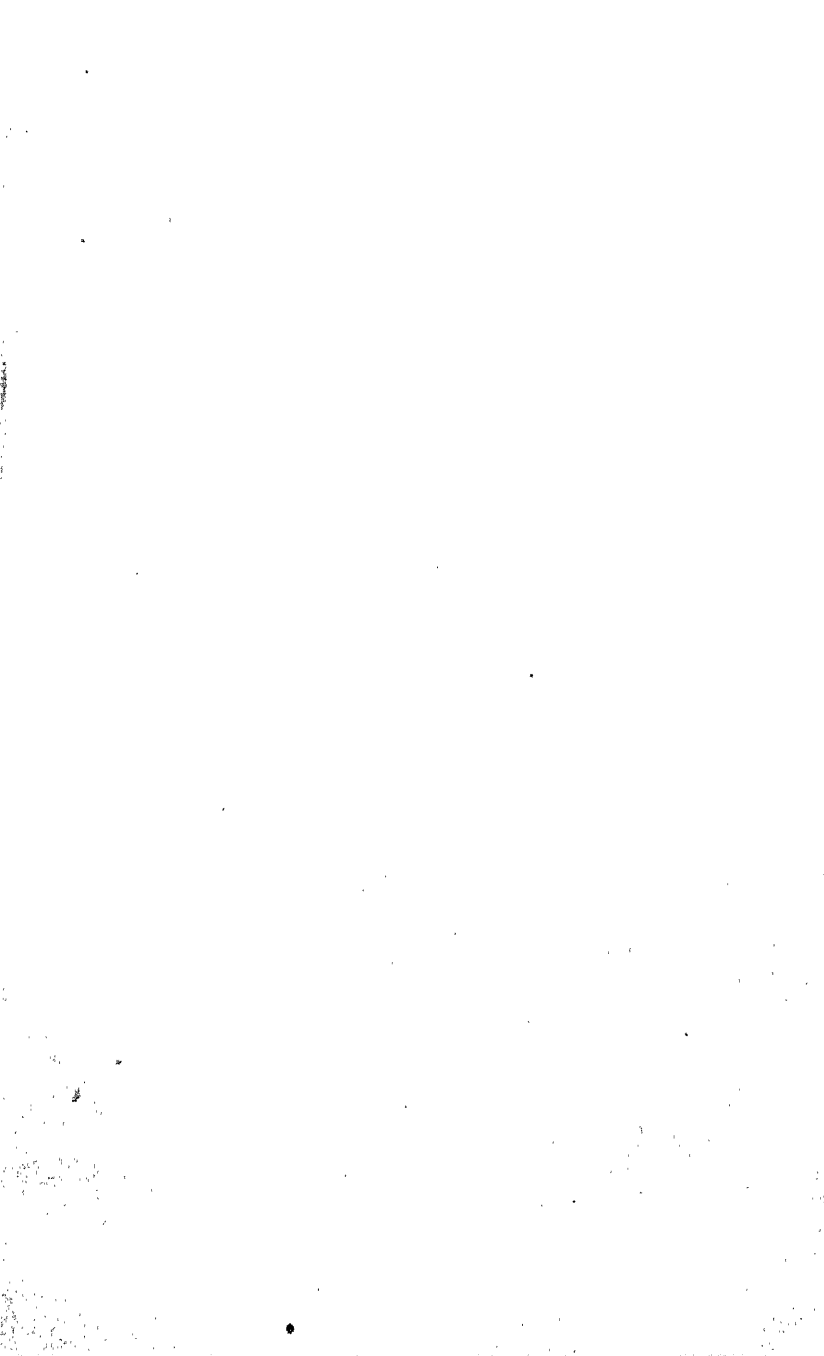
यह इतिहास पाठ्यक्रम की दृष्टि से तो लिखा ही गया है; किन्तु संस्कृत के बृहद् वाङ्मय का आमूल ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करने का भी इसमें उद्योग किया गया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि संस्कृत के छात्रों को वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत-साहित्य के इतिहास का अध्ययन कराया जाय, जिससे कि उनकी मेधाशक्ति का स्वतंत्र रूप से विकास हो सके और प्रस्तुत विषय पर उनके भाव-विचारों को नई दिशा में अग्रसर होने का अवकाश मिल सके।

मूल्य ८-००

---

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी-१



C

Central Archaeological Library,  
NEW DELHI.

Call No. 491.35/Mis

Author— 29065

Title— यज्ञदीपिका

Borrower No.

Date of Issue

Date of Return

*"A book that is shut is but a block"*

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY  
GOVT. OF INDIA  
Department of Archaeology  
NEW DELHI.

Please help us to keep the book  
clean and moving.